शोधपूर्ण धार्मिक मासिक पत्र-

श्रीसर्वेश्वर

का

श्रीसुन्दराङ्क

(प्रथम भाग)

श्रीवृन्दावन

वर्ष ३१

शोधपूर्ण धार्मिक मासिक-पत्र 'श्रीसर्वेश्वर' का विशेषाङ्क

श्रीसुन्दराङ्क

(प्रथम भाग)
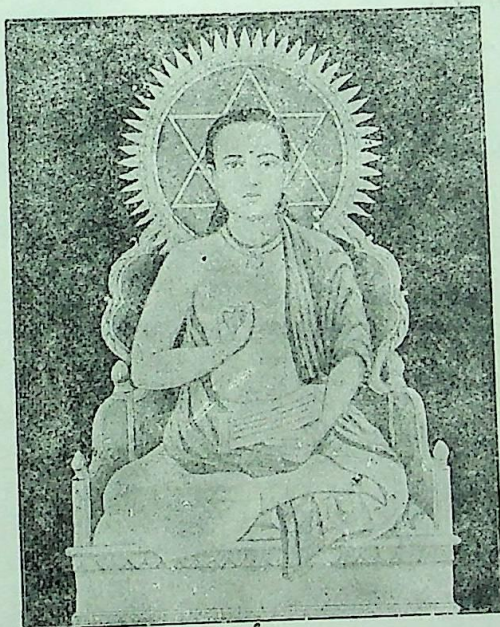
सम्पादक :

अधिकारी व्रजवल्लभशरण

वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

सञ्चालक :
अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री 'श्रीजी'
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ श्रीनिम्बार्कतीर्थ
(सलेमाबाद) किशनगढ़ (राजस्थान)

卐

प्रकाशक व सम्पादक :
अ० श्रीव्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य पंचतीर्थ
श्री श्रीजी मन्दिर, वृन्दावन (मथुरा)

卐

प्रकाशन तिथि :
होलिकोत्सव सं० २०३९

卐

न्यौछावर :
१५) पुस्तकालय संस्करण

卐

मुद्रक :
श्रीव्रजमोहनलाल शर्मा
श्रीसर्वेश्वर प्रेस, वृन्दावन

शोधपूर्ण धार्मिक मासिक-पत्र श्रीसर्वेश्वर के विशेषाङ्क "श्रीसुन्दराङ्क" की—

* विषय-सूचि *

प्रकाशकीय

श्रीसर्वेश्वर पत्र की स्थापना तीस वर्ष पूर्व साम्प्रदायिक साहित्य के प्रकाशन मठ-मन्दिरादि-लोकहितैषी संस्थाओं का ऐतिहासिक परिचय, सनातन वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार एवं महत्वपूर्ण विविध विषयों के शोधकार्यार्थ की गई थी। यद्यपि उस उद्देश्य की यथेच्छ पूर्ति तो नहीं हो पाई तथापि जो कुछ इस पत्र ने कार्य किया इससे आंशिक उद्देश्य पूर्ति के साथ-साथ प्रेमी पाठकों का बहुत कुछ हित हुआ है, यह पाठकों के पत्रों और उनके ममत्व से प्रमाणित होता है। कुछ अप्राप्य एवं दुर्लभ ग्रन्थों का भी प्रकाशन हुआ है, शोध सामग्री भी पत्र के माध्यम से उपलब्ध हुई है। आर्थिक स्थिति यदि उन्नत होती तो निश्चय ही यह पत्र और भी विशिष्ट उन्नत अवस्था में पहुँच सकता था, फिर भी जिस स्थिति में अपना जीवन बनाये हुए है यह भी कम गौरव नहीं हैं।

बहुत से प्रेमी पाठकों का सुन्दरकुंवरी के ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ वर्षों से अनुरोध चल रहा था, इस वर्ष उनके अनुरोधानुसार "सुन्दराङ्क विशेषाङ्क" का निर्णय हुआ, किन्तु प्रथम भाग ही प्रकाशित किया जा सका। जिसमें श्रीसुन्दरकुंवरीजी की रचनाओं में छोटे-बड़े ७ ग्रन्थ प्रकाशित किये जा सके हैं। उनका विषय, कथानक आदि के सम्वन्ध में डा० श्रीनारायणदत्त शर्मा लिखित प्रस्तावना और आचार्य पं० श्रीनन्दकिशोर शर्मा द्वारा लिखित सिंहावलोकन पाठकों को अवश्य पढ़ना चाहिये जिससे साधारण पढ़ा लिखा भी व्यक्ति श्रीसुन्दरकुंवरी के काव्यकानन में प्रवेशार्थ पथ प्रशस्त कर लेगा।

पहले इन ग्रन्थों को बुंदी (राजस्थान) की महाराणी ने प्रकाशित करवाया था किन्तु अमूल्य वितरण करने से वे अब अप्राप्य हो चुके हैं। बड़ी कठिनाई से पं० श्रीउदयशंकरजी शास्त्री आगरा को बूँदी के कवाड़ियों से एक प्रति प्राप्त हो गई। उन्हीं शास्त्रीजी के सौजन्य से वह ग्रन्थ मिला और उसमें से सात ग्रन्थों का प्रकाशन करवाकर पाठकों की सेवा में यह भेंट रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है। उससे इसमें कुछ अन्तर कर दिया गया है, वह यह कि—रचनाकाल के अनुसार इन ग्रन्थों का पूर्वा पर क्रम रख दिया गया है।

यद्यपि प्रूफ सशोधन कार्य बड़ी सावधानी से किया गया है तथापि त्रुटि रह जाना स्वाभाविक है। प्रेमी पाठक सोच समझकर पढ़ें और जहाँ त्रुटि दिखाई दे उसे सूचित करने की कृपा करें ताकि आगे के द्वितीय संस्करण में उसका संशोधन करने की चेष्टा की जाय।

सुन्दरकुंवरीजी की जीवनी जितनी जैसी अवगत हो सकी, उतनी वैसी प्रकाशित कर दी गई है। चित्र नहीं मिल सका। बहुत-सी चिट्ठियाँ भी हैं किन्तु वे सब प्रकाशित नहीं की जा सकीं हैं। प्रभु की कृपा हुई तो दूसरे भाग का जब प्रकाशन होगा तब उनका प्रकाशन करा दिया जायेगा।

आशा है विलम्ब आदि हमारी त्रुटियों को प्रेमी पाठक क्षमा करेंगे और पूर्ववत् स्नेह रखते हुए पत्र में अपने ममत्व सम्बन्ध को अक्षुण्ण बनाये रक्खेंगे।

प्रकाशक—**'श्रीसर्वेश्वर'**

एष सर्वेश्वर एष सर्वज्ञ एषोऽन्तर्य्याम्येष योनिः सर्वस्य प्रभवाप्ययौ हि भूतानाम् (मा. उ. ६)

देवेन्द्र–मौलि–मन्दार–मकरन्द–कणारुणाः ।
विघ्नं हरन्तु श्रीराधाकृष्णपादाब्जरेणवः ।।

वर्ष ३१ { श्रीधाम वृन्दावन, जनवरी फरवरी १९८३ ई० श्रीनिम्बार्काब्द ५०७८ } अङ्क १-२

शरन गहे की लाज

जोग तप दान व्रत संजम नियम जेते,
विविध विधान मुक्ति हेतु ऐसे काज हैं।
येऊ गुन नांहि मेरे भक्ति कित भाग्य,
याहि सुन्दर विहात जन्म कैसे भय भाज है ।।
कालि व्यालि नीरो अब तातैं है अधीरो,
चित्त सिन्धु भव तीरो तुमि करुना जहाज हो।
वृन्दावनदेव छाप दासिता मो भेव यातें,
शरन गहे की हे अनाथ नाथ लाज है ।।

—श्रीसुन्दरकुंवरीजी

मंगला शासनम्

[अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरण देवाचार्यजी महाराज]

सनन्दनाद्यैः परि सेविताय, युग्म स्वरूपेण बिराजिताय।
चक्राङ्कितायाति मनोहराय, नमोऽस्तु सर्वेश्वर माधवाय॥

वेद पुराण आदि शास्त्रों और प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से विश्व की परिवर्तन शीलता का अनुभव होता है। पृथ्वी जल तेज वायु आदि पदार्थों में प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहता है। काल (समय) में भी प्रतिक्षण नवीनता की अनुभूति होती है। अव्यक्त (प्रलय) काल में विश्व की जैसी स्थिति रहती है वैसी व्यक्त अवस्था (सृष्टि काल) में नहीं रहती, बदलती ही रहती है। सूर्य का प्रकाश और ताप उदय मध्याह्न और अस्त इन तीनों समयों में एकसा नहीं रहता। इस प्रकार दैशिक और शासकीय सभी परिस्थितियां बदलती ही रहती हैं।

आश्चर्य नहीं, किसी समय हमारा यह पुष्कर क्षेत्र समुद्र का मध्य भाग रहा हो। यहां ही शेष-शायी भगवान् विष्णु की नाभि से समुत्पन्न पुष्कर (कमल) का प्रादुर्भाव होकर उस पर चतुर्मुख ब्रह्माजी की अभिव्यक्ति हुई। इसी स्थल पर सनकादिकों ने ब्रह्माजी से वन्ध मोक्ष सम्बन्धी प्रश्न किया और हंसावतार धारण करके स्वयं भगवान् ने उसका समाधान किया। अतः यही पुष्कर क्षेत्र किसी समय हंसावतार स्थल के नाम से ख्यात रहा, आगे चलकर यही निम्बार्क तीर्थ नाम से व्यवहृत होने लगा। विश्व के प्रत्येक देशमें ऐसे "ख्याति-परिवर्तन" होते ही रहते हैं। इसी प्रकार शासनमें परिवर्तन होता रहता है। यहाँ अजमीढ, अजयपाल, पृथ्वीराज आदि आदि अनेक शासक हुए। चौहान, राष्ट्रकूट (राठौर) यवन, ख्रिश्चियस आदि कितने ही शासकों के वंश परिवर्तित हो चुके। जन तंत्र शासन की पार्टियां भी परिवर्तित हुई और होती भी रहेंगी ही। अगणित नगर बसे और उजड़ गये। यद्यपि क्षेत्र वही है किन्तु वन उपवन नगर ग्राम सरोवर जन समूह पशु पक्षी सरसता नीरसता आदि विभिन्न प्रकार के दृश्य वदलते ही रहे हैं।

आज से चारसौ वर्ष पूर्व भारत के सम्राट यवन शासकों से अनुवन्धित राष्ट्रकूट (राठौर) भाटी आदि नरेशों का इस क्षेत्र पर शासन था। महाराजा किशनसिंहजी ने किशनगढ और उनके पौत्र महाराजा रूपसिंहजी ने रूप नगर बसाया। उन्हीं रूपसिंहजी के पौत्र महाराजा राजसिंह और उनकी महारानी तथा सन्तानों में सांवन्तसिंह (नागरीदास) जी सुन्दरकुंवरि आदि परम भक्त हो गये हैं। उनकी रचनायें वड़ी सरस ओजपूर्ण हैं, उनकी ये रचनायें व्रजभाषा हिन्दी साहित्य के लिये अनुपम देन हैं।

भक्तिमती श्रीसुन्दरकुंवरि का चित्त निरन्तर वेदवेद्य शिव विरंचि आदि से संसेवित श्रीयुगल-किशोर प्रभु के चरणों में निरन्तर तन्मय रहता था, यह उनकी रचनाओं से प्रमाणित होता है। वास्तव में वे श्रीनिकुञ्जेश्वर प्रिया प्रीयतम की दिव्य सहचरी थीं। भगवच्चरणों में ऐसा अनुराग दिव्यधाम से अवतरित व्यक्तियों का ही हो सकता है। जो इनकी ऐसी रचनाओं का अनुशीलन करते हैं उन्हें भी निकुञ्ज कैंकर्य्य की निश्चित प्राप्ति हो जाती है:—

निगम मृग्ययोर्युग्म पादयोः, शिवविरंचिभिः सेव्य मानयोः।
यदमलं मनो योऽर्पयत्य हो, भवति निश्चितं कुञ्जकिङ्करी॥

※ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ※

※ प्रस्तावना ※

[ले०—डा० श्रीनारायणदत्त शर्मा एम० ए० पी-एच० डी०]

जन्म, वंश परिचय और व्यक्तित्व ––

राजस्थान की महिला कवियित्रियों में श्रीसुंदरकुंवरि का नाम मुर्धा पर है। प्रेम अधीरा मीरा की भाँति उनका हृदय भी प्रेम रस से ओत प्रोत है प्रेमावेग और रूप माधुरी में वे दोनों समान हैं परन्तु मीरा में जहाँ वियोग और एकान्त साधना का स्वर प्रधान है इन्होंने भगवान् श्रीराधामाधव की ललित मधुर रसमयी निकुंज लीलाओं का भान किया है। इनकी वाणी में प्रेम के सभी रूप स्नेह, प्रेम, प्रणय आदि की व्यंजना बड़े मार्मिक और हृदयग्राही ढंग से हुई है। सुंदर कुंवरि का काव्य श्रीश्यामाश्याम के अनुराग की अनुपम वाणी है जहाँ उन प्रेमास्पदों की लीलाओं के माध्यम से परस्पर अतिशय अनुगती सहज लाड़ प्यार, हास परिहास, सखियों द्वारा सेवा समर्पण ओर माता पिता, परिजन, परिकर के लोग सभी के ममता मय दुलार की वासंती छटा प्रत्येक समय विद्यमान रहती है। श्रीनंदनंदन और वृषभानुजा ही नहीं उनके अनुरागी विशाल हृदय में श्रीसीतारामजी के सहज शृंगार, विलास और केलि क्रीड़ा की विशद अनुभूति भी विद्यमान है जिसकी अभिव्यंजना "राम रहस्य" में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से हुई है।

सुंदर कुंवरि का जन्म सं० १७९१ वि० में रूपनगर कृष्णगढ़ नरेश राठौर वंशीय महाराज राजसिंह की पत्नी महारानी वांकावती से हुआ था। कुंवर सांवतसिंह जो कालान्तर में भक्तवर नागरीदास (कृष्णगढ़ नरेश) के नाम से प्रसिद्ध हुए, इनके वंधु थे। इनके दूसरे बन्धु बहादुरसिंह भी थे परन्तु इनकी विशेष घनिष्टता नागरीदास जी से ही थी। महारानी वांकावती परम विदुषी धर्मशीला और प्रभुचरणानु-रागिनी थी। उन्होंने "ब्रजदासी भागवत" नाम से श्रीमद्‌भागवत का ब्रजभाषा में सरस काव्य शैली में छन्दोवद्ध अनुवाद किया था। नागरीदासजी की व्रजनिष्ठा, श्रीवृन्दावनबिहारी श्यामा श्याम की प्रेमाभक्ति, वृन्दावन वास और नित्य लीला माधुरी दर्शन में अत्यन्त आसक्ति थी। सुंदरकुंवरि के व्यक्तित्व पर इनके सद्‌गुणों का गहरा प्रभाव पड़ा। नागरीदासजी ने चार वर्ष की अवोध अवस्था से ही इन्हें श्रीनिम्बार्क तीर्थ (सलेमावाद) पीठ के अधीश्वर, विविध सदगुण, कला और शुभ संस्कार विभूषित श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी से निम्वार्क वैष्णवीय दीक्षा दिलवादी थी। श्रीसुंदरकुंवरि ने अपने ग्रन्थ "मित्र शिक्षा" में अपना परिचय देते हुए इसको मुक्त कण्ठ से वर्णन किया है :—

श्रीवृन्दावन देव प्रभु, तिनकी दासित छाप।
लही वाल वय में सर्वाहि, उदये भाग्य अमाप ॥
श्रीप्रभुजी निज दासता छाप जवै मोहि दीन।
तव वय वर्ष चतुर्थ में, हौं जु हुती मति हीन ॥ (मित्र शिक्षा)

सुंदरकुंवरि की चांदकुमारी और फतहकुमारी दो बहिनें और भी थीं। परन्तु माता पिता परिवारी जन और वन्धु वांधव सभी का लाड़चाव और ममता इन पर ही अधिक थी। यह इनके ग्रन्थों में श्रीराधा और श्रीसीताजी के सुसराल और मैके में प्यार दुलार के भाव पूर्ण वर्णनों से स्पष्ट लक्षित होता है। उन्होंने "मित्र शिक्षा" में स्वयं भी लिखा है कि मैं वाल्यावस्था में बड़ी चंचल थी। महलों में नहीं ठहरती थी। वाल सखियों के साथ वाहर खेल कूद में ही मेरा मन लगता था। मैं पिताजी की विशेष लाड़िली थी और उनसे जब कभी मुंहवाद भी कर दिया करती थी :—

हौं पिताहि लड़बावरी, विधि जैसे वोलंत।
तौते प्रति उत्तर करत ....॥

दीक्षित होने के समय भी इनका वाल चापल्य चलता रहा। पकड़वा कर बुलाया गया परन्तु वे रुकीं नहीं। तदनन्तर सावंतसिंह (नागरीदास) इन्हें लाये। श्रीगुरुदेव ने परम कृपा करके इन्हें तिलक कण्ठी दिये और आशीर्वाद प्रदान किया :—

निज कर कंठी छाप पुनि, मो गर वाँधी आप।
कर धरि शिर कहि मंत्र श्रुति नाथ हरी भव ताप॥ (मित्र शिक्षा)

मित्र शिक्षा की रचना वि० सं० १८६२ में हुई। यह इनकी अंतिम रचना है और इनके जीवन परिचय का प्रमुख आधार है।

सुंदरकुंवरि का विवाह सं० १८२२ वि० मे राघवगढ़ खींची महाराज वलभद्रसिंह के पुत्र महाराज वलवन्तसिंह के साथ हुआ था। वे शूरवीर और काव्य रसिक थे। दूसरो ओर इनके पिता राजसिंह, पितामह मानसिंह, प्रपितामह रूपसिंह स्वयं सुकवि और कवियों के आश्रयदाता थे। इस प्रकार काव्य रचना में इनका पैतृक अधिकार था। इनकी माता वांकावती और बनीठनी से भी इन्हें काव्य प्रेरणा मिली।

सुंदर कुंवरि रचित ११ ग्रन्थ उपलब्ध हैं जिनके नाम और रचना काल इस प्रकार है। १. नेहनिधि सं० १८१७ वि०, २. वृन्दावन गोपी महात्म्य सं० १८२३ वि०, ३. संकेत युगल सं० १८३० वि०, ४. रसपुंज सं० १८३४ वि०, ५. प्रेम संपुट सं० १८४५ वि०, ६. सार संग्रह सं० १८४५ वि०, ७. रंगझर सं० १८४५ यि०, ८. गोपी महात्म्य सं० १८४६ वि०, ९. भावना प्रकाश सं० १८४९ वि०, १०. रामरहस्य सं० १८५३ वि०, ११. पद संग्रह तथा फुटकर कवित्त (समय समय पर) और मित्र शिक्षा सं० १८६२ वि०। सुन्दरकुंवरि ने अपने सभी ग्रन्थों के अंत में पुष्पिका में ग्रन्थ रचना का काल, स्थान आदि का संक्षेप में उल्लेख किया है। निम्बार्क सम्प्रदाय, सलेमाबाद पीठ (परशुराम पुरी) श्रीवृन्दावन देवाचार्य और श्रीसर्वेश्वरशरण देवाचार्य के प्रति इस पुष्पिका में विशेष निष्ठा प्रदर्शित की गई है और अपनी काव्य रचना को श्रीआचार्य चरणों में अपनी भक्ति का प्रसाद कहा है। भावना प्रकाश की पुष्पिका में वह लिखती हैं :—

रूपनगर नृप राज सिंघ, गोवर्द्धन धर दास।
वांकावति रानी सु जिह, भक्ति सुहृदय निवास॥
हौं तनया तिनकी जु मम, सुंदर कुंवरि सुनाम।

सन सलेमावाद के, लहि दासयुत अभिराम॥

श्री वृन्दावनदेव की, छाप भाग्य वर माल।
निगम अगम जिन भेव दै, कीनी पतित निहाल॥
सम्वत यह नव दून सै, उणंचास उपरंत।
साके सत्रहसै रु पुनि, चउदह लहौ गनंत॥

श्रीसुन्दर कुंवरि वृषभानुजा श्रीराधा और श्यामसुन्दर ब्रजराज कुंवर की नित्य नव नेह वर्णित सौन्दर्य की अनन्य उपासिका थीं। उनके नेत्र द्वय उन एक प्राण दो देह, रसिक विलासी की प्रेममयी छटा से सदैव पूरित रहें उनकी यही सबसे बड़ी कामना थी। अष्ट सहचरियों से सेवित और तीन करोड़ यूथेश्वरियों से पोषित पालित उन युगल वर का दिव्य वृन्दावन में विनोद विलास उनके मन में रमता रहे ओर उनके अनन्य किंकरी भाव पर सभी की कृपा एवं श्रीस्वामिनीजी का अनुग्रह हो यही उनकी सबसे बड़ी साध थी।[1] साधना की दृष्टि से "श्रीमन मंजरि सखी" श्रीवृन्दावनदेव जी का सखी नाम को वे अपनी स्वामिनी मानती थीं और "हरि गुरु भक्ति सुभक्त जन की चरन रज वंदना" उनके वंश का परम इष्ट था :—

श्री मन मंजरी सखी, तहां स्वामिनी है मेरी।
तिन दासुत कै छाप सर्न मुँहि यहिठां केरी॥ (प्रेम संपुट पृ० ६२)

अनूठी काव्य रसिकता, प्रभु चरणों में प्रेमानुराग, उनकी लीलाओं में अनन्य गति, विनय शील सम्पन्नता सुंदरकुंवरि में कुल परंपरा से स्वतः सहज से प्राप्त हो गई थीं। विशद काव्य रचना, अनुपम रस विलास, भाव विभोरता ओर अद्भुत प्रेम व्यंजना के इन काव्य प्रासादों को खड़ा करके भी उन्होंने बड़ी निरभिनानता मे संत, ज्ञानी जन और रसिकों से इन्हें सतर्कता से पढ़ने और काव्य गुण दोष पर विचार करते हुए चिंतन शील रहने की आगाही की है, क्योंकि इस रस मार्ग की साधना ही एक दुर्गम पंथ है :—

काव्य दोष घटि वढ़ि अरथ योग्य अयोग्य विचारि।
सन्त विवेकी रसिक जन, पढ़ियो सबै संभारि॥ (रंगझर पृ० १२७)

परिस्थितियां और उनका प्रभाव :—

नेह निधि—

इस ग्रन्थ की रचना सं० १८१७ वि० में हुई और यह श्रीसुन्दरकुंवरि का सबसे पहला काव्य ग्रन्थ है। श्रीश्यामा श्याम के अनन्य प्रेम से परिपूर्ण इस ग्रन्थ में उनकी सहज रीझ खीझ के अनन्तर हास-विलास और रति विलास का सुन्दर वर्णन है।

इस ग्रन्थ के कथानक का प्रारम्भ श्रीश्यामसुन्दर के गुड़ी (पतंग) उड़ाने से होता है। वे नित्य प्रति अपने अटा की छत पर जाकर पतंग उड़ाते हैं। उनकी दर्शन रस-लुब्धा गोप पत्नियाँ उड़ती पतंग की

१—प्रेम संपुट पृष्ठ ६२।

सुन्दर छवि देखने हेतु छत पर आ इकट्ठी होती हैं। उनका उद्देश्य गुड़ी की हलचल देखना कम श्यामसुन्दर के दर्शन और छेड़छाड़ में रुचि लेना अधिक है। अतः जब कभी गुड़ी की डोर में गुड़ी (गांठ) पड़ जाती है तो उनका मन बहुत प्रसन्न होता है। क्योंकि इससे उन्हें आकुलता होती है। वे किसी की सहायता चाहते हैं, नम्रता से बोलते हैं, खीझते भी हैं। श्रीराधा का भी इसमें योग रहता है।

एक दिन ऐसा हुआ कि श्रीप्रियाजी उच्च आवास पर चढ़ी। वहां उलझी डोर पतंग थीं जिसे श्रीराधा ने छिपाकर रख दिया और चुपके श्रीयशोदाजी के पास आ बैठीं। उनके मुख पर घूंघट पड़ा था। पतंग ढूंढ़ते ढूंढ़ते श्रीकृष्ण वहाँ आ पहुँचे और छबीले शब्दों में पूछने लगे "मेरी गुड्डी कहाँ गई? इसका रहस्य श्रीराधाजी के नेत्रों में छिपा था परन्तु घूंघट की ओट से कोई नहीं जान सकता था। बनावटी गुस्से में उन्होंने बड़ी आतुरता में यशोदाजी से कहा कि श्रीराधारानी मेरी पतंग क्यों नहीं देती?

रिसमिस लसही रचन यों आतुरता सरसाय।
कहत मात सौं मो गुड़ी देत न काहि हिरात॥[१]

घटना प्रसंग से अनजान होने के कारण माँ यशोदा ने पहले तो श्रीराधा से कहा, 'पतंग दे क्यों नहीं देती? कहाँ छिपा दी है? परन्तु फिर संभल कर श्रीकृष्ण को ही उत्तर दिया कि "लालन! हठ छोड़ो। उस पतंग को जाने दो दूसरी लेकर उड़ा लो।" इस पर रसिक शिरोमणि (श्रीकृष्ण) बोले कि, "मैं वही पतंग लूंगा। चोरों के लक्षण अलग ही होते हैं। मैंने उन लक्षणों से चार को पहचान लिया है"। तब यशोदा बोलीं, "कि यदि तुम ऐसे चतुर हो तो गुड्डी को मंगा क्यों नही लेते" श्रीकृष्ण बोले "मैं चोर का नाम और उसका निसान नहीं जानता और जहाँ पतंग उलझी है उस मकान को भी नहीं जानता। चोर यहीं कहीं अलग निवास है।" तब नंदरानी ने श्रीराधा से कहा, 'तुम यहां बैठी हो, क्या तुमने गुड्डी को गिरते हुए अथवा किसी को आते हुए देखा है। यह नंदजी का लाड़ला कुंवर है, सब किसी को चोरी लगाता है।"

नाम ठाम जानों न हौं, अरुझी जहां प्रवास।
यहां ही है कहुं चोर की सबते न्यारी वास॥[२]

श्रीराधा ने लज्जा से दबी होने के कारण कुछ उत्तर न दिया। उनके नेत्रों की भाव भंगिमा, इतराहट और खीझ से चोरी का आभास होगया। अतः श्रीयशोदा ने यह जानकर कि रात्रि का एक याम व्यतीत होगया है श्रीकृष्ण को शयन हेतु जाने को कहा। वे अपना मन राधा के पास छोड़ कर शरीर से चले गए। तदनन्तर यशोदाजी की आज्ञा से श्रीराधा भी अट्टालिका पर चन्द्रिका दर्शन हेतु चली गई। दोनों के मन में मान भड़क उठा था।

ऊँचे उज्वल महल पर चंद्रमा की निर्मल चांदनी की बिछावट में श्रीराधा एकान्त में जा बैठीं। तब मनमंजरी सखी ने श्रीश्यामसुन्दर से श्रीराधा के मान की बात कही। उनको बहुत चिन्ता होगई और

---

१. नेह निधि, सुन्दर कुंवरि कृत पृष्ठ १।
२. नेह निधिः सुन्दरकुंवरि कृत पृष्ठ १।

उसका उपाय खोजने लगे। सव से पहले एक सखी को मनावन हेतु भेजा। कहलवाया मोहन तुम्हारी शाख चाहते हैं। कृपा दृष्टि से उनका सिंचन करो। सखी ने जाकर श्रीराधा से सब कुछ निवेदन किया परन्तु उन्होंने सखी को उलटे पैर लौटा दिया। श्रीकृष्ण को वेकली थी। अत: वे चल दिये और सखी उनको मार्ग में लौटती हुई मिली। उसने उत्तर दिया "मेरी कोई वात कारगर न हो सकी। आप स्वयं चलें।"

निकट आय तिय कह्यौ, बात कछु लखी न मेरी।

उक्ति जुक्ति करि थकी न मानति मानिन तेरी।।[२]

तब चतुर मोहन ने साँवरी सखी का वेश बनाया। वे अचकची में सखियों के झुंड में जा मिले। उनने गले में फूलों का सुन्दर हार, हाथों में गजरे और अन्य आभूषण धारण किये थे। श्रीश्यामा के पास जाकर इन्हे पहनाने और अन्य प्रकार से मनाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वे मनी नहीं। तब श्रीराधा ने ललिताजी से कहा यह अनजान कौन सखी है? कहाँ से आई है? मुझ पर निरंतर मोहनी डाल रही है।

तब नवल श्याम सखी कहने लगी "इनके पति (श्रीकृष्ण) ने मुझे चतुर जानकर इनके मानिनी होने के कष्ट का निवेदन किया और इन्हें अपने पास ले आने को कहा है। पहचान के लिये मैं उनकी वंशी लाई हूँ और अपने उरोजों को उनके पास बदले में छोड़ आई हूँ"। श्रीश्यामा ने कहा 'ये कैसी अनोखी बात कहती है। इतने में श्याम सखी ने आसरा लेकर श्रीश्यामाजी की बांह पकड़ कर कहा "यहा अकेली क्या करती हो उधर श्यामसुन्दर बुला रहे हैं। देर क्यों करती हो?"

वेगि बुलावत हैं उतैं, चंदाननि सु कुंवारि,

मेरी सौंह उठ छांड़ि हठ, काहे करति अवारि।।[१]

स्याम सखी ने सौगंध दिलाकर जब श्रीराधाजी से चलने को कहा तो वे मुस्कराती उठ खड़ी हुईं। नवल सखी (श्याम सखी) मदन दुंदुभी करती हुई उसके साथ चली। ललिताजी बड़ी प्रसन्न हुईं। सखियों ने कहा यह नवेली नारी बड़े शकुन से आई है।। श्रीराधा कुछ सतराईं। सखी जन हँसने लगीं। नवल सखी ने तुरन्त अपना वेश परिवर्तन करके नायक रूप धारण किया श्रीश्यामा ने श्वेत साड़ी पहनी। दोनों कोमल कुसुम शैया पर प्रेम से आनंद विभोर हुए रस की बातें करते रहे। सारी रात्रि यों ही बीत गई :— इन रसिकों की प्रेम कथा का वारापार नहीं।

पोंढ़त नहिं रिझवार, जात सब रैन विहानी।

रसिक चतुर दृग रीझ असर की अकथ कहानी।।[२]

संकेत सुगल —

श्रीसुन्दरकुंवरि के प्रेम संपुट, रस पुंज, नेह निधि, भावना प्रकाश आदि ग्रन्थों की भाँति संकेत सुगल भी नित्य विहार रस विषयक एक आख्यान काव्य है। अन्य ग्रन्थों में जिस प्रकार नंदीसुर, प्रेम

---

१. वही वही पृष्ठ ३।

१. नेह निधि, सुन्दरकुंवरि कृत पृष्ठ ४।

२. वही वही पृष्ठ ५।

सरोवर आदि स्थलों को इस रस विहार की रंगभूमि बनाया गया है 'संकेत सुगल' में वह रम्य स्थली "संकेत" है जहाँ श्रीराधा माधव की मधुर चर्चा का यह अनुपम प्रसंग उद्‌भूत हुआ है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में अपने इष्ट श्यामा श्याम, गणेश, सरस्वती, गुरुदेव आदि की वंदना करने के अनंतर ग्रन्थ का प्रारम्भ करते हुए कवियित्री ग्रन्थ रचना का उद्देश्य स्पष्ठ करती हुई कहती हैं :—

राधा नंद कुमार कौ, रहसि विहारज नित्त।
ताकी बात सु कहति हौं, कछुक ध्यान धरि चित्त॥
नंदीसुर वरसान विच रमण सुथल संकेत।
जाकी महिमा अगम सो, निगम कहत जिहि नेत॥
निगम कहत जिहि नेत तहाँ की कहु कछु बातैं।
जुगल रहसि सुख रंग हरन मन ह्वै ही जातैं॥[१]

इस प्रकार नंदीसुर और वरसाने के वीच जो सुरम्य संकेत स्थल है, जिसे वेद 'नेति नेति' कहते है वहां पर श्यामा श्याम के रहसि विनोद का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है।

वृषभानुजा श्रीराधा और नंदनंदन श्रीकृष्ण ब्रज के जीवन, उसके प्राण धन हैं। सव ब्रजजन इनकी केलि क्रीड़ा रस विलास का आनंद लेते हैं। नंद यशोदा, राजा वृषभानु एवं उनकी रानी कीर्ति का तो कहना ही क्या है। ये नागर नवलकिशोर परस्पर एक दूसरे के चितचोर हैं, वे कामदेव की साक्षात् मनोहर मूर्ति हैं और प्रेमासव के मद से सदैव चकचूर रहते हैं। प्रेम मद की वेवसी में वे सव सुध बुध छोड़कर प्यारी पिया का और पिया प्यारी का रूप धारण कर लेते हैं।[२] संकेत सुगल में इसी कोतुक का वर्णन है।

एक समय की बात है कि चन्द्रमा की निर्मल रात्री में जब चन्द्रिका चारों ओर छिटक रही थी 'संकेत' की शोभा वड़ी विचित्र थी, यमुना जल में पड़ती हुई चांदनी की झिलमिलाहट और यमुना पुलिन की जगमग जगमग से मन नितान्त उद्वेगकारी हो रहा था। अनेक पुष्पों की समधुर गंध, त्रिविध समीर की मंद मंद बहुत मत अंध भौंरों की गुंजार, कुंज कुंज में रस विलास के साधनों की अतिशयता, पुलिन के वीच एक स्थल में सुगन्धित पुष्पों की विछायत कर उसके वीचों बीच अत्यन्त शोभा संयुक्त पलका डाला गया था जिसके चारों ओर मोतियों की झालरें, जुही की लड़ें पड़ी थीं, और गुलाब के दलों की विछावट थी। श्रीश्यामा श्याम पान आरोगे, पुष्पों के आभूषणों से सुसज्जित हुए, विविध शृंगारों से सुशोभित, मन में मौज भरे, प्रिया तमूरा लिए श्यामसुन्दर वैन वजाते हुए रंग विहार में आनन्दित थे कि रूप रसासव के आस्वादन से रस की चसक में परस्पर रीझते, ओर झूमने झुकने लगे ओर वेवसी की दशा में पहुंच गए। श्रीप्रियतम की काम के प्रकोप से सुध वुध जाती रही और उन्होंने निशंक होकर प्रियाजी का गाढ़ आलिंगन किया जिससे वे खीझ गईं। वे अत्यन्त लज्जित और खिजी हुई थीं।

१, संकेत सुगल, सुंदरकुंवरि कृत पृष्ठ ३६।
२. ,, वही पृष्ठ ३६।

लजी खजी झिझकी झुकी बैठी ऐंठी भौंह।
दीठि सखिन सौं जोरि कैं, दई पीठ दै सौंह॥

आवेश पूर्णता में उन्होंने सखियों को एकत्र कर श्रीश्यामसुन्दर को अत्यन्त झुंझलाहट में अपनी सौगन्ध दिलाई कि "मुझे तुम्हारी यह वान विलकुल नहीं सुहाती, यहां से उठ जाओ" यहीं तक नहीं उन्होंने प्रियतम की ओर पीठ करली। परन्तु इतने पर भी श्रीश्यामसुन्दर ने मुस्करा कर कहा कि ऐसा ही करना था तो पहले मोहनी जाल डाल कर विना मोल के क्यों खरीद लिया था?

कुछ मुंह जोरी हुई। तव मनमोहन वहां से चलकर निकटवर्ती लताओं की ओट में चले गए। वे प्रियाप्रेम से अतन के वशीभूत थे। दो सखी उनको साथ में मिल गई थी जिन्होंने उनका सहचरी वेश वना दिया और श्यामा सखी के नाम से श्रीप्रियाजी की सेवा में भेज दिया वो उनकी पैर चम्पी करने लगी।

पलकांतर विरह में प्रियाजी छटपटाने लगीं। वेसुध हो गईं। सखियों से कुछ सतरा कर बोली। सखी वीजना करने लगीं। सांवरी पीछे खड़ी थी। उससे कहा तू कौन है? कहां से आई है? तब उसने उत्तर दिया, "मेरा नाम मोहनी है मुझे महर ने कुछ काम से नंदनंदन के पास भेजा था। वे मार्ग में ही मिल गए। मैंने उनसे पूछा, ऐसे मलीन मन क्यों हो रहे हो, तो उन्होंने तुम्हारे द्वारा सौगन्ध दिलाने की वात बताई। तब मैं उनका फैंट पकड़ कर इधर ले जारही थी परन्तु वे सौगन्ध के डर से उधर ही रहे।" इसका श्यामा को विश्वास हो गया और वे उससे मन की बातें वतराने लगीं।

एक कलहांतरिता नायिका के रूप में प्रियाजी ने सब कुछ कह डाला। तव सखियों ने कहा इस ढिठाई का महर को उलाहना देना चाहिये। तब नवल सखी ने कहा 'प्रियाजी मैं ने मार्ग में जाते हुए श्यामसुन्दर से वंशी छीन ली है इसे बजाओ। वंशी जूठी होने से प्रियाजी ने निषेध कर दिया।

निदान श्रीराधा को शृङ्गार करके श्यामसुन्दर बनाया गया और श्यामसुन्दर श्यामा के वेष में पहले ही थे। सखी जन रंगल मंगल ठिठोली करने लगीं। प्रियाजी ने अपने श्यामसुन्दर वेष में नायकोचित क्रिया कलाप और हाव भावादि सम्पन्न किए जिससे श्यामा सखी लज्जा और आँतरिक प्रेम से अत्यन्त आनन्दित हुई। मां यशोदा को भी बुलाकर इस रूप परिवर्तन का दर्शन कराया गया और उन्होंने प्रसन्न होकर रत्न आभूषण वार फेर किये। तदनंतर अनेक विनोद क्रीड़ा ओर रस रंग होते रहे जिसमें रात्रि लगभग समाप्त हो गई। प्रातःकाल होने पर यमुना में स्नान और जल विहार होता रहा। तदनन्तर लाल ललना ने मधुर भोजन किया। सुगंधित जल से आचमन करके बीड़ी आरोगी और श्रम संवलित होकर रहस्यपूर्ण शयन को चल दिये। ललितादिक ने बाहर से पर्दा डालकर वाद्य यंत्रों पर मधुर गान और तान लगाना प्रारम्भ किया। सुन्दरकुंवरि कहती है—इस प्रकार श्रीश्यामाश्याम का अनवरत लीला विलास जिसमें नित्य नवल स्नेह स्फुरित होता है श्रीगुरु कृपा के प्रसाद से मैं कुछ वर्णन कर सकी हूँ।

श्रीमुख कृपा प्रसाद ते, फुरी कछुक हिय आन।
ताते सुन्दर कुंवरि किय, निज मति रूप वखान॥ (संकेत सुगल पृ० ४६)

रस पुंज :—

शीर्षक से जैसा आभास होता है यह ग्रन्थ श्रीराधामाधव की नित्य विहार लीला रस का कोष है। इसमें उनके कुल परंपरानुसार गोचारण और गिरिराज पूजन के माध्यम से वन में प्रेम मिलन का प्रसंग बड़े उत्कर्ष के साथ वर्णित है। बरसाने से कुछ दूरी पर नंदीसुर में श्रीनन्दराय का निवास है और वरसाने में राजा वृषभानु का, दोनों की सम्पत्ति का वारापार नहीं, नन्दरायजी के पुत्र श्रीकृष्ण नायक हैं वे गोप ग्वालों के साथ गोचारण हेतु वन की ओर आते हैं। श्रीराधा की आयु १४ वर्ष है वे गोप सुताओं के साथ गिरिराज पूजन के लिए निकलती हैं। मार्ग में दोनों दलों का मिलान होता है। गोपजन गोपियों से गोरस की मांग करते हैं। वे कहते हैं वन हमारे हैं दधि का दान दो। गोपियाँ उत्तर देती हैं वन राजा वृषभानजी हैं नंदरायजी को तो यहाँ लाकर वसा दिया है। इस प्रकार अनेक रसपूर्ण तर्क वितर्क चलते हैं। अन्त में श्रीराधा प्रस्ताव करती हैं कि गुण दिखाकर, सब को रिझाकर दान लो, जवर्दस्ती ठीक नहीं। इस पर नट नागर द्वारा नृत्य गीत, तान तमूरे पर राग रंग होता है जिससे राधा रीझती हैं और उन्हें प्रसन्न देखकर ललिताजी घोषणा करती हैं कि अब हम दधि दान को वखशीश करती हैं।[1] ग्वाल वालों समेत श्रीकृष्ण दधि भोजन करते हैं। तव ललितादिक ने श्रीश्यामसुन्दर से कहा, "आज संकेत में एक और अद्भुत कौतुक होगा।" और वे चल दीं।

उधर श्रीकृष्ण ने ग्वालों से कहा, "तुम्हारी गाएँ हैं, मेरी नहीं दीख रहीं, मैं उन्हें स्वयं ढूंढ़ने जाता हूँ" और वे संकेत की ओर चल दिये।

संकेत में श्रीश्यामसुन्दर का श्रीराधा एवं गोपीजन से संमिलन हुआ वहाँ वैन, मृदंग, वादन, नृत्य गीत का संयोजन हुआ बड़ा कौतुक हुआ। तदनन्तर श्रीयशोमति का भेजा हुआ छाक आदि मधुर भोजन आगया जिसे खाकर सभी तृप्त हुए। उदर अघा गए, दृग नहीं। फिर श्रीश्यामाश्याम निभृत निकुंज में एकान्त रमण हेतु पधारे। कुंज ओट में सखी जन सारंग राग गाने लगीं अन्य सखियाँ विछुड़ गईं। थोड़ा दिन रहने पर प्रिया प्रियतम गलवांही देकर वन विहार हेतु चल दिये।

वन शोभा निरीक्षण प्रसंग में सुन्दर कुंवरि की वस्तु व्यापार निरीक्षण शक्ति, कवित्व शक्ति, प्रतिभा आदि का भूरि भूरि परिचय मिलता है। प्रियाजी कभी फूल तोड़ती हैं तो पुष्प ऊँचाई पर होने पर प्रियतम ऊन्हें कन्धे पर चढ़ा लेते हैं, कभी फूलों की गेंद वनाकर खेलते हैं, सरोवर में पिचकनि खेलते हैं, कभी वैठकर श्रृङ्गार करते हैं, प्यारी के पैरों में महावर लगाते हैं, मालती लता परिवेष्टित कुंज में झूला झूलते हैं, प्रियतम झोटा देते हैं। भौंरों से जब राधा चौंकती हैं तो प्रियतम अपनी अंग ओट में हृदय से लगा लेते हैं, कभी ताली बजाकर राधा भागती हैं तो कृष्ण पकड़ लेते हैं। राधा वंशी वजाती हैं श्रीकृष्ण

---

१. यह सुन नट नागर नचे, लिए सखा गन संग।
गावत वैन वजात कर, कउतक रहसि उमंग॥ (रस पुंज पृष्ठ ५४)

ललिता सखी—आवहु श्याम सुजान जू, वगसीसत अव दान।
सब दधि भोजन देत है, [illegible] ॥ (रसपुंज पृष्ठ ५४)

नृत्य करते हैं। कभी प्रियाजी वंशी चुरा लेती हैं—प्रियतम परेशान होते हैं, हा हा खाने पर वंशी लौटा देती हैं। कभी प्रिया तनिक सी बात पर रूठ जाती हैं तो प्रियतम आकुल होकर उनके चरणों में शिर रख कर मनाते हैं। इसी हँसी खेल में श्यामसुन्दर के सखा आ मिलते हैं। श्रीराधा ललिताजी के गलवांही डाले कंवल फिराती हूई चली जाती हैं।

सखाजन बोले, "भैया कृष्ण खूब गाय घेरीं आज तो सवेरे से सांझ कर दी।"

भैया जू आए भले, निज गैयन कौं हेर।
किते दूर ऐसे गए, ह्वै गई सांझ सवेर ॥[1]

कोई कहने लगा कि "भैया ये कामदेव से तप्त मुद्रा लेने गए थे जिसकी चित्र विचित्र छापें इनके अंग प्रत्यंगों पर देख सकते हो।"

कोऊ कह भैया ये गए, करन मदन सुर ताप।
ताके चित्र बिचित्र तन लै आए जू छाप ॥[2]

ग्वालों की इस ठठोली पर श्रीश्यामसुन्दर ने सहज मुस्करा कर वेणु वादन किया, गोधन इकठ्ठा होगया ओर ग्वाल मंडली घर की और लौटने लगी। श्रीकृष्ण सवसे आगे थे। उनका मुखमंडल गोरज रंजित था, मोर चन्द्रिका शिर पर सुशोभित थीं, कंठ और वक्षस्थल में श्रेष्ठ मालाएँ पड़ीं आभा वढ़ा रही थीं।

इधर नंदनंदन के दिन भर के वियोग में गोपी ग्वालिनों की दयनीय दशा हो चुकी थी। वे अपने प्राण प्यारे की दर्शनोत्सुकता में घर से निकलीं। पनघट का सामान लेकर—गागर, ईंडुरी, रस्सी, शृङ्गार सज्जा से पूरित, नवउन्मेष और प्रेम समर्पण का आवेश साथ में लिए रस पुंज का यह सव से रसपूर्ण स्थल है। जहां पनघट पर ग्वालिनों के साथ नंदकुमार का हास विलास, दोनों ओर से छेड़छाड़ और प्रेमोत्कर्ष का सजीव और अनूठा चित्र कवियित्री द्वारा प्रस्तुत हो सका है:—

इनकों लखि त्रिय गन भई, बिवस प्रेम मतवार।
ये पनघट पै एकले ठाढ़े नंदकुमार ॥
केउ घूमै केउ छकि परी, केउ पट उघरी सीस।
केउ अंचर बिसरी सुतिन अंग जक छवि दीस ॥
केउ चितवति ह्वै चित्रसी, केउ दृग मिलि मुसकात।
केउ अधवोरी गगरिया, गहि रहि गई चितात ॥
केउ जल लै गृह कों चली, सास त्रास संग भान।
तिन कंकन रेतहिं धरचो, हेरन मिस फिर आन ॥
केउ चंदानन चंचला, हँसत कपोल वढ़ाय।
केउ गागर सिर धरत नहिं, इँडुरी नीर वुड़ाय ॥[3]

---

१. २. रसपुंज, सुन्दरकुंवरि कृत पृष्ठ ५६।
३. रस पुंज, सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ५६।

पनघट पर गोपीजन का यह हाल देखकर श्रीश्यामसुन्दर ने भी कुछ क्रीड़ा करना प्रारम्भ किया। उन्होंने किसी की ईंडुरी चुराली, तो किसी के हार को संभाल दिया, किसी के कपोल का हाथ से स्पर्श करके उसका घूंघट हटा दिया, किसी का अंचल ठीक कर दिया, किसी की गागर उँचाई और किसी को मुस्करा कर आने जाने से टोक दिया, किसी के उरोजों पर पुष्प वरसाये और अतर लगाया। इस प्रकार अपने दर्शन और स्पर्श से गोपी ग्वालिनों के उत्ताप को दूर किया।[1] जब तक वे श्रीराधाजी के महल के आगे तक पहुँचे इसी प्रकार हास विनोद चलता रहा।

मोहन को आता देख मां यशोदा ने आरती उतारी। अपना अंचल बढ़ाकर नंद नंदन को उसमें लेकर गोरज झाँकी दर्शन किया। तदनन्तर गोदोहन की बारी आई जिसमें श्रीराधा और गोपी ग्वालिनों से विविध कौतुक चलते रहे। तदनन्तर श्रीश्यामसुन्दर नंदजी से मिले। वलदाऊ आज उनके साथ न थे इस कारण विशेष प्रेम से उनका आलिंगन किया। तब मां यशोदा ने श्रीश्यामा श्याम को भोजन कराया। उनका परस्पर एक दूसरे को कौर देना, अरस परस से लजाना, मां से दृष्टि बचाकर खिलवाड़ करना बड़ा रोचक था। श्रीकृष्ण अँगड़ाने लगे और शयनागार में चले गए। श्रीराधा सास का पद चापन करने लगीं। थोड़ी देर में छिटकती चाँदनी देखकर आंख मिचौनी खेल खेलने की तैयारी की। मां ने आज्ञा दे दी।

गोपी जन की 'चखमूंदनी' क्रीड़ा चल रही थी। उसमें श्रीश्यामसुन्दर ने कौतुक हेतु ओट देकर प्रवेश किया और दाई को उठा कर उसके स्थान पर स्वयं बैठ गये। उन्होने अपना सांवरी सखी का रूप बना लिया था। श्रीनंदनंदन के कर स्पर्श आदि से श्रीराधा को वड़ी खीझ हुई परन्तु उनके हँस देने पर उन्होंने चख मूंदन करा लिया :—

चख मूंदनी खेलत ही जु प्रिया, तहाँ ओट ह्वै आये प्रिया रस भीने।
दाई उठाइ कै वाव लै वैठि, सखी कौ सरूप मनोहर लीने।
नेह नहो वेई आंखें गहीं, अधरामृत लै मन वांछित कीने।
प्यारी रिसानी डरी थहरानी, चकी अकुलानी चितै हँसि दीने॥

विशेष रात्रि होने पर ललिता सखो ने सास के आदेश से चख मूंदन खेल वंद कराया और श्रीश्यामाश्याम शयनार्थ रंग महल में पधारे। दोनों प्रेम रसासव से पूर्ण पलंग पर बैठे थे। बाहर से पर्दे डाल दिये गये और ललितादिक ने कहानी कहने का अनुरोध किया।

कहानी वर्णन में व्यंजना द्वारा प्रकारांतर से श्रीश्यामसुन्दर की दिन दिन की मनोरम क्रीड़ाओं का ही वर्णन है। जिसमें उन्हें अनेक गोपी जन का प्रेम पात्र बताया गया और त्रिलोक सुन्दरी राजपुत्री को उनकी परम प्रेमिका बताई गई परन्तु अन्य से भी दक्षिण नायक रूप मैं प्रेमाकर्षण व्यक्त किया गया। इससे श्रीराधा को अनरस हुआ। श्रीकृष्ण ने कहा "यह झूंठा झगड़ा है" प्रिया ने कहा, "नहीं सच्चा है।" तब कहानी कहने वाली नवला सखी को बुलाया गया। उसने कहा बात तो सच ही है, नगर नगर घर घर

१. रस पुंज सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ५६, ५७।

प्रसिद्ध है। तब प्रिया मुस्कराई और श्रीकृष्ण ने सतराने चोर की भांति आंखें बंद करलीं। श्रीसुन्दरकुंवरि कहती हैं कि श्यामाश्याम का यह नव नित्य विहार रसिकों का प्राणाधार है :—

नव नव नित विहार व्रज, दम्पति प्रेम प्रसंग।
रसिकन प्रान अधार है, रहै वारता वंग॥ (रस पुंज पृष्ठ ६१)

प्रेम संपुट :—

"रस पुंज" की भांति प्रेम संपुट भी श्रीश्यामाश्यामके नित्य नवल प्रेमका छोटा संपुट ही नहीं एक विशाल आगार है। इसमें एक प्राण दो देह श्रीवृषभानु कुमारी और ब्रजराज कुंवर का अष्ट सहचरी और तीन करोड़ यूथेश्वरियों द्वारा सेवित नित्य विहार जिसका वर्णन श्रीनारद ने शौनकों से 'प्रेम संपुट' नामक देकर किया था बड़े उत्साह और उत्कर्ष सहित वर्णित है। मंगला चरण करती हुई श्रीसुन्दरकुंवरि कहती हैं कि राधा माधव के जुगल विनोद और वृन्दावन विलास के रंग में लीन होकर अपनी स्वामिनी मन मंजरी सखी एवं अन्य समस्त सखी सहचरियों की कृपा और उनके अनुग्रह की याचना करती हुई उनके ही प्रभाव से मैं उनके मतानुसार इस अलौकिक परम आस्वाद्य रस का वर्णन करती हूँ। गणपति और सरस्वती जी भी मुझ पर कृपा करें।

"प्रेम संपुट" नित्य विहार रस परक एक आख्यान काव्य है जिसकी रंग स्थली वरसाने के आस पास की पावन भूमि है। इसमें प्रेम सरोवर नामक एक देव दुर्लभ स्थान है। यह गुल्म लता कुंज पुंज पद्म पत्र पुष्प और तरनि तनूजा तट मंडित पैड़ी से सुसज्जित है। वहाँ की देवी श्रीवृन्दाजी अनन्त फलदायिनी है। जहां जड़ जंगम सबको आनन्द है। श्रीराधा और नन्दकुमार यहां के रसिक शिरोमणि मधुप हैं जिनसे यहाँ का प्रेम विनोद नित्य नूतन रहता है। "प्रेमा सव छकि जिन विनोद नित नवल यहां के"।[1]

प्रेम संपुट का आख्यान नित्य की भांति एक दिन श्रीराधाजी का सखियों सहित वरसाने से क्रीड़ा हेतु इस पुष्प स्थली में पदार्पण करनेसे शुरू होता है। वे सब चली जा रही थीं कि मनमोहन सामने से आते हुए मिले। वलदाऊ और गोपादि भी साथ थे। दृष्टि पड़ते ही सखियों का मार्ग रोक कर पहले तो इन्होंने चुहल बढ़ाई परन्तु वलदाऊ का संकोच होने से सखियां अलग होगईं और कौतुक करने लगीं। श्रीश्याम-सुन्दर ने यह देख कर श्रीवलदाऊ को गोप ग्वालों सहित दूसरी ओर भेज दिया और स्वयं वृन्दादेवी के मंदिर में प्रवेश कर एक गोपी; नवल त्रिया का रूप धारण किया और अन्य गोपियों में मिलने को चली। उसकी छवि बड़ी मनोहर थी :—

मुख घूंघट झीने दुकूल, चंचल दृग झमकै।
विजई मानहुँ मदन केत है, फहरन रमकै॥
छवि छलकै छलकाय आय प्यारी पद परसै।
इत अजान उत जान प्रेम रस रीति न सरसै॥[2]

---

१. प्रेम संपुट, सुन्दर कुंवरि की वाणी पृष्ठ ६३।
२. वही वही पृष्ठ ६४।

नवल तिया ने जब प्रियाजी का पाद स्पर्श किया तो अनजान पन जनित कौतूहल से उन्होंने पूछा, "सोलह श्रृङ्गारों युक्त गोपी तुम बड़ी भाग्यशालिनी हो; बताओ तुम किधर से आरही हो ? तुम्हारा आज प्रथम सम्मिलन ही है परन्तु तुम कुछ सोचती हुई सी, चकित सी प्रतीत होती हो इसका रहस्य मेरी समझ में नहीं आ रहा ?

इस पर नवल त्रिया ने लम्बी गंभीर सांस लेकर कहा, "आप यहां माननीया राजकुमारी हैं मेरे दुःख का निवारण कर सकती हैं इस कारण आपके पास आई हूँ। बात यह है कि मां यशोदा का लड़वावरौ कन्हैया इन दिनों खुल कर अनीति कर रहा है, सर्वथा निशंक, छली, लंगर और लवार है। उसने सभी मार्गों, नगरों, घर घर पर घेरा डाल रखा है और बड़े बड़े घर की गोप कुमारियों की लज्जा और कुल मर्यादा भंग करदी है। उसके मन में यौवन धन और रूप का भारी मद है जिसके आगे वह किसी को नहीं गिनता। उसे थोड़ी शंका है तो केवल आपकी है। इस कारण इस वेकली में में आपके पास आई हूं। ऐसी अनीति कहीं अन्यत्र नहीं सुनी गई जिसके कारण मुख पर लाली आरही है परन्तु आपके संकोच से कुछ नहीं कह पा रही हूँ।[१]

अपने परम प्रिय प्राणाश्रय नंदनंदन का यह अपवाद श्रीराधाजी को बहुत बुरा लगा। उन्होंने विविध तर्क देकर नवल त्रिया के आरोपों का खंडन किया। नाटकीय कौतूहल से परिपूर्ण यह प्रसंग बड़ा ही रोचक बन पड़ा है और उसमें कवियित्री की काव्य प्रतिभा और तर्क बुद्धि दोनों अपने चरमोत्कर्ष पर देख पड़ते हैं। प्रियाजी ने अंत में उससे कहा, "मैं तुम से गर्व की बात नहीं करती, उन मेरे प्राणनाथ का प्रेम और रार जो कुछ भी है मुझ तक ही सीमित है। विधाता ने हम दोनों को एक प्राण दो देह बनाया है।" नवल तिया इस पर ठठ्ठा मार कर हँसी। कहने लगी कि "तुम योंही बातें मारती हो, झूँठ कहते तनिक भी नहीं लजाती। वह छलिया श्यामसुन्दर तो औरों के रंग रंगा है।" श्रीराधा को यह बात बहुत बुरी लगी उन्होंने कहा, "नवला तू नई है, अभी गौने को आई है परन्तु बड़ी प्रवीनता भरी है, सब कुछ बनावटी और झूंठ समझती है यदि तुझे विश्वास नहीं तो परीक्षा देकर मैं उनका और अपना एक प्राण दो देह रूप अभी दिखलाती हूँ।"

तदनन्तर सच्चे मन से प्रियाजी ने श्रीनन्दनन्दन का कई बार आह्वान किया और हर बार नवल तिय वेषधारी श्यामसुन्दर प्रत्येक बार उनके प्रियतम रूप में उपस्थित हुए परन्तु छद्म वेष होने से जब श्यामसुन्दर होते तो नवल तिया नहीं और नवल तिया होती तो श्यामसुन्दर नहीं। अतः प्रियतमा श्रीराधा बड़ी हैरानी में पड़ गईं। अन्त में उन्होंने सखी जन के समक्ष यह समस्या रखी और श्रीश्यामसुन्दर के साथ जाकर नवल तिया को ढूंढ़कर लाने का आग्रह किया। परन्तु श्यामसुन्दर और सखी गण सभी भोली प्रियाजी की इस आकुलता में अनूठा रस ले रहे थे।

श्री ललितादिक ओर हेरि बोली जु पियारी।
सखी दृगन सब सहस लखत क्रीड़ा सुखकारी॥[२]

१, प्रेम संपुट, सुंदरकुंवरि कृत पृष्ठ ६४।
२. प्रेम संपुट, सुंदरकुंवरि कृत, पृष्ठ [illegible]

परन्तु श्रीप्रियाजी को चैन कहां ? वे सर्वथा अधीर हो रही थीं। तब ललिताजी ने उनसे कहा, 'ऐसे अधीर होने से काम न चलेगा, हमने उस ठगिनी नवल तिया को देखा है। हम आपको उनका हाथ पकड़वा देंगी परन्तु आप पहले ये नये आभूषण पहनो। तव सखी जन ने श्रीश्यामा को पुष्पों के आभूषणों से श्यामसुन्दर का रूप दिया परन्तु प्रियाजी को इसका आभास न था। वे बरावर कहती रहीं —

करि मो वचन प्रमान, झूंठि कै वाहि लजाऔ।
मेरी सौं अब ही बताहु जिन मोहि खिजाऔ॥
हौं न रहौं वाहि किये विना सरमौंही सब में।
छल छुटाय हरवाय नचाऊँ हर्षों तब मैं॥[१]

प्रियाजी के इस प्रकार सौगन्ध खाने पर श्यामसुन्दर सतराने लगे परन्तु उनका हाथ प्रियाजी को पकड़वा दिया गया और मेंहदी आदि से उन्हें अनूठा रूप दिया गया। विशाखा ने अवसर पाकर कहा कि नवल दूलह दुलहिन रूप में इनके विवाह का आज आनन्द लिया जाय। सब को इस प्रस्ताव से प्रसन्नता हुई और सखी जन वर पक्ष और कन्या पक्ष दो विभागों में वट गईं।

तदनन्तर नृत्य, गान, वादयंत्र, श्रृङ्गार सेहरा आदि पूरी तैयारी से वरात चढ़ी, तोरण, गांठ वंधन, हथलोई, कन्या दान, शाखोच्चार, आशीर्वाद आदि सब रस्में पूरी की गईं। कंकण खोलने के समय बड़ा कौतूहल हुआ। तदनन्तर विविध प्रकार के व्यंजनों से तृप्त होकर नव दम्पति ने शयन किया। सखियां मधुर राग से गाने लगीं :—

रहसि रंगीले विलसहीं, रहसि रंगीलों सैन।
रहसि रंगीलिन उमग किय रहसि रंगीली रैन॥

प्रातः होते ही श्रीश्यामा श्याम उनीदे उठे और सखी जन ने उन्हें उठाकर सेवा प्रारम्भ करदी।

सार संग्रह —

सुन्दर कुंवरि का यह ग्रन्थ सब सारों का सार है। इसमें वैष्णव भक्त, भक्ति, भगवान् उनको प्राप्त करने के उपाय, भक्तजनों की रहनी, कहनी उनके विविध लक्षण, दशा और साम्प्रदायिक तत्व इसमें सब कुछ समाविष्ट है। कवियित्री का कथन है कि उन्होंने इसे समस्त धर्म तत्व, आचार, भक्ति, सेवा साधना और प्रेम लक्षणा भक्ति के माध्यम से श्रीराधामाधव के सहचरी परिकर में प्रवेश आदि अनेक गूढ़ रहस्य और अंतर्भेदों को व्यक्त करने हेतु इसकी रचना की है।

सब सारन को सार यह, लीनो सोधि विचार।
श्री हरि अन्तर भेव है, परम गूढ़ निरधार॥
संग्रह सार जु नाम है, ताकौ अर्थ सु येह।
सब सारन कौ सार लै, किय एकत्र अछेह॥[२]

---

१. प्रेम संपुट, सुन्दरकुंवरि कृत, पृष्ठ ७०।
२. सार संग्रह, सुन्दरकुंवरि की वाणी, पृष्ठ ६३।

इस ग्रन्थ की रचना संवत १८४५ वि० में कार्तिक शुक्ला ९ चंद्रवार को समाप्त हुई थी।

ग्रन्थ का प्रारम्भ श्रीश्यामाश्याम की वंदना से हुआ है और कहा गया है कि निगमादिक जिन भगवान को 'नेति नेति कह कर वर्णनातीत मानते हैं वे प्रभु सदैव भक्तों का गुणगान करते रहते हैं। भक्तों की अपार महिमा है। जिन भक्तों का मन भगवान में लगा है और उनका अहर्निश चिंतन करते हैं भगवान् भी उनका उसी प्रकार चिंतन करते रहते हैं :—

निज चित श्रीहरि लीन है, हरि चित जिन जन लीन।
हरि जल जन मन मीन है, जन जल हरि मन मीन ॥[1]

ऐसे वैष्णव भक्तों की रीति, क्रिया, स्वभाव, दशा आदि लक्षणों और प्रभाव का अपने मतानुसार मैं इस ग्रन्थ में वर्णन करती हूँ। इसका वर्णन अत्यन्त रहस्य पूर्ण है जिनको श्रीशिवजी ने शिवा से भी पूर्व में कहा था।

रीति क्रिया स्वभाव जिन दशा रूप दरसाव।
वरनौं निज मत सत्य सव, अद्भुत अमित प्रभाव ॥[2]

इस संकल्प के अनन्तर सब से पहले वैष्णवों के प्रभाव का वर्णन है जिसमें कहा गया है कि वैष्णव के स्मरण मात्र से भगवान् उनकी सहायतार्थ तुरन्त प्रकट होते हैं और उनसे सदैव प्रसन्न रहते हैं। उनके सत्संग से अजामिल जैसे पापियों का सहज उद्धार होजाता है। वैष्णवों के पद स्पर्श से तीर्थ पवित्र हो जाते हैं। वैष्णवों की रक्षा हेतु प्रभु अवतार लेते हैं, प्रह्लाद आदि भक्तों की रक्षा हेतु उन्होंने हरिण्यकशिपु हिरण्याक्ष, रावण आदि का वध किया। दैत्यराज वलि को वामनावतार धारण कर स्वर्ग प्राप्ति की कामना से मुक्त किया, कर्म वन्धन छुड़ाया और स्वयं उसका द्वारपाल होना स्वीकार किया।[1]

तदनन्तर वैष्णव जन की रीति का वर्णन है जिसमें कहा गया है कि वैष्णव भक्त गृहस्थ के कर्म भगवद् अर्थ करे। उन्हें भगवत्कार्य समझे। जो वैष्णव प्रभु भक्ति में मग्न रहते हैं और मुक्ति की भी लालसा नहीं करते उनसे प्रभु प्रसन्न होते हैं। जैसे पतिव्रता स्त्री का मन अपने पति में ही रहता है ऐसी अनन्यता से भक्ति करनी चाहिये। वैष्णव में विनय और दीनता आवश्यक है। शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य और कान्ता भाव में से भगवान् से भक्त का कोई एक सम्बन्ध होना आवश्यक है। वह गुरु के माध्यम से होता है। अतः दीक्षा लेना वैष्णवता की पहली शर्त है। प्रभु गुणों का कीर्तन, उनकी लीलाओं का श्रवण और चिंतन, परिक्रमा और तीर्थादि दर्शन हाथों से प्रभु की सेवा, शीश नवाकर वंदना और पद रज ग्रहण एवं चरणामृत ग्रहण आदि नवधा भक्ति का वैष्णवों को अभ्यास करते रहना चाहिये।

वैष्णव भक्तों के स्वभाव में क्षमा, सत्य, निष्कामना, शांति, निर्लोभ, सभी जीवों पर दया, सब

---

१. वही वही पृष्ठ ७८।
२. वही वही पृष्ठ ७८।
३. सार संग्रह, सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ७६।

को सम्मान देना, प्रभु चर्चा एवं प्रभु स्मरण, सब पर समान दृष्टि और हर्ष शोक, दुःख सुख में समभाव रहता है।

सब कै भला विचार ही, करुणा जुत्य जु चित्य।
दीनन पै जु दयाल अति, प्रभु सम्बध हित नित्य।।
छमा सत्य निह कामना, शांत चित्त निर्लोभ।
प्रभु सुमिरन चरचा विनय हृदय भक्त नित गोभ।।[1]

वैष्णवों का रूप वर्णन करते हुए कवियित्री ने कहा है कि अपने अपने सम्प्रदाय की चाल के अनुसार वैष्णव चंदन से तिलक करते हैं उनके गले में कंठी हृदय पर तुलसी की माला सुशोभित रहती है और श्रीकृष्ण की लीलाओं के विविध रसासव से उनके नेत्रों में प्रेम की खुमारी देख पड़ती है। सर्वेश्वर प्रभु की अनन्त कृपा से छकित होने के कारण उनका छवि-उन्माद भी दर्शनीय होता है।

वैष्णवों को अपनी देह दशा की सुध वुध नहीं होती। उनके हृदय में कहरी जहरी श्यामसुन्दर की लहर सरसती रहती है जो करोड़ों सुधाधारों की शीतलता से भी अधिक शीतल है। जिससे आगे और कोई सुख नहीं है। प्रेमाधिक्य से विवश वैष्णव कभी मर्मान्तिक घाव से घायल, कभी मदिरा सेवी से भी अधिक मतवाला, कभी चोर की भांति चतुराई से अन्तर्भाव धारण करने वाला और कभी पागलों की भांति श्वास प्रश्वास के वेगाधिक्य से प्रकम्पित प्रतीत होता है।

कहरी जहरी चाय की, लहरैं उर सरसान।
कोटि सुधा सीरन सिचत, तिहि सुख गनै न आन।।
किधौं विविश घट घाय नै, कैधौं मद मतवार।
किधौं चतुर निधि चोर है, कैधौं वहै वयार।।

घायल, मतवाले, चोर और वावलों की दशाओं से युक्त वैष्णव भक्तों की सुन्दर कुंवरि ने आगे चल कर बड़ी सुन्दर व्याख्या प्रस्तुत की है। उसके अनन्तर पूर्व में इंगित नवधा भक्ति का विस्तृत रूप से प्रतिपादन करते हुए उसे प्रेम लक्षणा भक्ति का आदि स्रोत कहा है। प्रेम लक्षणा भाव सिद्धि की दशा है जिसे प्राप्त करने पर साधक और साध्य में कोई अन्तर नहीं रह जाता इसके भी १० भेद हैं जिनका वर्णन करना वहुत कठिन है।

प्रेम लक्षणा की भाव सिद्धि की दशा में साधक के सभी आशय लीन हो जाते हैं और साधक को प्रभु के अतिरिक्त किसी प्रकार की सुध वुध नहीं रहती। शवरी को देह गेह का कुछ भी भान न रहा उसने प्रभु को जूठे वेर अर्पण किये। इसी प्रकार गो० तुलसीदास को श्रीगोवर्द्धननाथ के गिरधारी रूप का अहसास छोड़ कर उनसे धनुष वाण धारण करने का आग्रह किया। नरसी के आग्रह पर भगवान् ने सांवल शाह

१. वही वही पृष्ठ ७९।
२. सार संग्रह, सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ८०।

बनकर हुंडी की वर्षा की। नामदेव, पीपा, धना, सेना नाई, गोविंद ग्वाल, कबीर और मीरा आदि भगवद् जन भी इसी प्रकार सिद्ध भावना को प्राप्त हो चुके थे।[1]

इसी प्रकार ब्रज वृन्दावन में गूढ़ रहस्य मय श्रीकृष्ण का राधाजी सहित जो नित्य विहार है जिसमें प्रेम लक्षणा भक्ति सम्पन्न साधकों को श्रीराधामाधव के अरस परस का लाभ होता है।

सार संग्रह में नित्य विहार का बड़ा ही रोचक वर्णन है। उसकी महत्ता प्रतिपादन करने वाली एक कथा का भी इसमें वर्णन है कि एक बार मुनि नारदजी अपने पिता श्रीब्रह्माजी के पास गए तो उनको वे किन्हीं सर्व शक्तिमान प्रभु का ध्यान करते पाये। उन्हें भ्रम हुआ कि ब्रह्मा समस्त सृष्टि के रचयिता प्रमुख देव हैं। इनसे भी बड़ा और कौन देव है जिसका ये ध्यान कर रहे हैं। ध्यान छूटने पर उन्होंने ब्रह्माजी से अपनी जिज्ञासा कही तो उसके निवारण हेतु उन्होंने उनसे भगवान् विष्णु के पास जाने को कहा। वहां पहुंचने पर उन्हें विष्णु भी किन्हीं अनन्त शक्तिमान का ध्यान करते मिले और ध्यान छूटने पर उन्होंने नारदजी की जिज्ञासा जाननी चाही। नारदजी ने कहा मैंने अपने पिता श्रीब्रह्माजी को किन्हीं सर्वेश्वर का ध्यान करते देखा और आपको भी। कृपया आप स्पष्ट बताएँ आप किनका ध्यान करते हैं और उनकी क्या महत्ता है ?

नारदजी की इस जिज्ञासा की शांती के लिए श्रीविष्णु ने उन्हें श्रीनारायण अवतारी भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र सर्वेश्वर को सब से बड़ा, सब का आराध्य देव बताया। उनके लीला निवास हेतु श्रीवृन्दावन, श्रीराधा और अन्य यूथेश्वरी और सखी सहचरियों का प्रादुर्भाव हुआ। वृन्दावन विहारी के इस नित्य विहार दर्शन और उसमें योगदान के लिए देव गण कीट पतंग, पशु पक्षी, वृक्ष वल्लरी रूप धारण किये अपना सौभाग्य मानते हैं। इस प्रकार विविध सम्प्रदायों में वैष्णव भक्तों का रहस्य विभिन्न प्रकार से प्रतिपादित हुआ है।

> ते चहुं मारग भक्ति के, तामैं भिन्न न आन।
> भाव सिद्ध विग्रसु लहन, राम कृष्ण इक जान॥
> जिह विध राचै रंग अति, त्योंहीं दे पुट संग।
> बौरो रेनी प्रेम मन रंगिये स्याम अभंग॥[2]

१. सार संग्रह, सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ८६।
२. सार संग्रह, सुन्दरकुंवरि की वाणी पृष्ठ ९२।

श्रीसुन्दरकुंवरीजी के दो ग्रन्थों का संक्षिप्त—

सिंहावलोकन

[लेखक—पं० नन्दकिशोर शर्मा, साहित्याचार्य, एम. ए. अनुसंधाता]

श्रीसर्वेश्वर के इस सुन्दराङ्क विशेषाङ्क में श्रीसुन्दरकुंवरीजी के द्वादश ग्रन्थों में से सात ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ है, उनमें ६१ पेजोंवाले चार ग्रन्थों का कथानक और वैशिष्ट्य विद्वद्वर डा० श्रीनारायण-दत्त शर्मा द्वारा लिखित प्रस्तावना में अभिव्यक्त हो गया है, जो पाठकों के लिये विशेष हितकारी अतएव रुचिवर्द्धक पठनीय होगा। अवशिष्ट ६७ पेजोंवाले दो ग्रन्थों पर श्रीसम्पादक महोदय के आदेशानुसार यथा बुद्धिवलोदय संक्षिप्त रूप से सिंहावलोकन किया जाता है।

यद्यपि श्रीसुन्दरकुंवरी के सभी ग्रन्थों पर हिन्दी टीका होना आवश्यक प्रतीत होता है, जिसमें उनके काव्य के प्रत्येक शब्द का विवेचन किया जाय तो पाठकों को विशेष लाभ हो सकता था, तथापि डा० शर्मा की प्रस्तावना और मेरे द्वारा किया हुआ सिंहावलोकन भी अवश्य मार्गदर्शन में सहयोगी बनेंगे। इसी उद्द`श्य से इस कृति में हमारी प्रवृत्ति हुई है।

वृन्दावन गोपि-माहात्म्य :—

गोविन्द के साथ गोपी, ग्वाल और वृन्दावन का सायुज्य सम्बन्ध है। अतः श्रीसुन्दरकुंवरीजी ने जहाँ अपने ग्रन्थ नेहनिधि, रसपुञ्ज आदि में नन्दनन्दन श्रीकृष्ण और वृषभानुनन्दिनी का वर्णन किया है वहाँ इस ग्रन्थ में वृन्दावन गोपी एवं ग्वालों का माहात्म्य प्रतिपादित किया है। इस ग्रन्थ के कथानक को पाँच परिसम्वादों द्वारा उपन्यस्त किया गया है सर्वप्रथम नैमिषारण तीर्थ में शौनक आदि ऋषियों का नारद के प्रति प्रश्न, तथा श्वेतदीप में अनिरुद्ध व नारद सम्वाद सत्यलोक में ब्रह्मा और नारद क्षीर-सागर में विष्णु और ब्रह्मा तथा परम विचित्र स्थान में भ्रमर एवं शुकसम्वाद पौराणिक आख्यान परम्परा के रूप में उपस्थित किया है, यद्यपि इन सभी कथानकों का उपक्रम प्रकारान्तर से श्रीश्याम-सुन्दर की विभिन्न ललित लीलाओं का ही वर्णन है तथापि इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में मंगलाचरण करते हुए कवयित्री ने श्रीराधा नाम को वेदों का गुप्त धन और भगवान् विष्णु का ध्येय कहा है। शौनक ऋषि नारदजी से प्रश्न करते हैं कि वैष्णवी माया परम विचित्र है, जिसके वशीभूत होकर मनुष्य नाना क्लेशों से पड़ित है, तो नारदजी उत्तर देते हैं कि संसार में पाँच प्रत्यूह हैं। जिनके अधीन होकर मनुष्य श्रीकृष्ण का चिन्तन नहीं करता है। तथा गर्भस्थ होकर अनेक नारकीय यातनाओं को सहता है, परन्तु जिनकी मति रति श्रीप्रभु चरणों में है, श्रीकृष्ण उन्हीं की सहायता करते हैं—

श्रीहरि स्वामी करत हैं सेवक रछ्या नित्त।
सब विधि ते सामर्थ्य प्रभु भक्त जनन के मित्त ।।[1]

और जैसे जैसे प्रभु चरणों में प्रीति बढ़ती है त्यों त्यों करुणा वरुणालय श्रीहरि की कृपा भी उत्तरोत्तर भक्त पर होने लगती है। शौनकजी प्रश्न करते हैं कि कौन पर्वत, नदी और ग्राम भगवान श्यामसुन्दर को प्रिय है, तो नारदजी कहते हैं कि भगवान् विष्णु के सुदर्शनचक्र से सेवित तथा बीस योजन में विस्तीर्ण मथुरा मण्डल के अन्तर्गत वृन्दावन वन व श्रीगिरिराज पर्वत, यमुना नदी और नन्दग्राम विशेष प्रिय हैं। अष्टसिद्धियाँ और नवनिधियाँ वहाँ नित्यविहार करती हैं तथा वहाँ के निवासी मुक्ति को भी कामना नहीं करते हैं—

अष्टसिद्धि नवनिद्ध सेवत हैं वहि ठाहि।
वासी जे वा ठौर के मुक्तिहु चाहत नाहि ।।[2]

तदनन्तर श्रीअनिरुद्ध तथा नारद प्रसंग के माध्यम से वृन्दावन दर्शन के प्रति मोह का वर्णन किया गया है। कवयित्री कहती हैं कि वृन्दावन श्रीराधायुक्त कृष्ण का निज रूप है—

मेरो वह निजरूप है जो श्रीराधा जुक्त।
प्रिय अत्यन्त वृन्दाविपुन जहाँ विहरत अनुरक्त ।।[3]

वृन्दावन की प्राप्ति विभिन्न आराधनाओं का फल है, अनिरुद्धजी ने मानसरोवर में स्नान करके कन्यारूप की प्राप्ति के उपरान्त ही नारदजी को वृन्दावन-दर्शन का आशीर्वाद दिया है तथा देवर्षि नारदजी ने कन्यारूप प्राप्त करके श्रीराधा सहित कृष्ण की अत्यन्त रमणीय लीला एवं लीलास्थलों का दर्शन किया है। यद्यपि श्रीराधा की सहचरियों के अनेक यूथ हैं, परन्तु उनमें प्रधान आठ यूथेश्वरी हैं जिनकी समता उमा रमा भी नहीं कर सकती हैं तथा उनके नाम इस प्रकार हैं—१. ललिता, २. विशाखा, ३. चम्पकलता, ४. सुचित्रा, ५. इन्दुलेखा, ६. रंगदेवी, ७. सुदेवी और आठवीं तुंगविद्या है। गोपी प्रमुखा श्रीराधा कृष्ण की आत्मारूपा हैं जिसकी समता त्रिलोक में भी नहीं हो सकती है—

राधाकृष्ण आतम सद्रूप। कहिं त्रिलोक उपमा जिन जूर ।।[4]

तथा श्रीकृष्ण के अनेक सखा हैं जिनमें वल्लभ प्रमुख हैं। भृङ्गाधिपति भगवान् एवं ब्रह्मा के कथानक द्वारा श्रीराधाकृष्ण की वंशतालिका का उल्लेख किया है। तदुपरान्त श्याम-श्यामा की मान-लीला का दृश्य उपस्थित किया है जिसमें रसरूप रासेश्वर एवं रासेश्वरी के नित्यविहार का समुज्वल रूप मुखरित हुआ है। नन्दिनी नामक सखी कन्यारूप धारी नारद को परम गोप्य व दिव्य निकुञ्जों में श्यामाश्याम के दर्शन कराती है तथा श्रीराधा की महिमा का वर्णन करती है—

---

१. सुन्दरकुंवरि कृत, वृन्दावन गोपि महात्म पृष्ठ १०।
२. ,, ,, ,, पृष्ठ ११।
३. ,, ,, ,, पृष्ठ १२।
४. ,, ,, ,, पृष्ठ २१।

शिव विरंचि सनकादि शेष सब। भाग्य गनत जिहि दरस लहत जब ।।
सो श्रीराधा के दर्शन हित। लोभी महा लालसा लगि नित ।।

श्रीराधाजी कुञ्ज पर परम रम्य हैं—

कंचन भूमि तहाँ मणि मण्डित। कल्पवृक्ष अनपार अखण्डित ।।
शोभा अद्भुत जहाँ अलौकिक। विधिहू कहि न सकत मति जकि थकि ।।

इसी प्रसङ्ग के मध्य में काव्य-प्रतिभा का परिचय देते हुए कवयित्री ने रीतिकालीन कवियों की भाँति नायक, नायिका एवं दूती धर्म का स्वारस्यपूर्ण सफल वैज्ञानिक चित्रण किया है।

नन्दिनी श्रीकृष्ण से पूछती हैं कि वृषभानकुंवरी राधा ने मान क्यों किया ? तो श्यामसुन्दर उत्तर देते हैं कि स्त्रीस्वभाववश यह उनकी सहज वामता है—

है स्त्रिय स्वभाव ही एसो। तामें कछु थिरता नहीं तैसो ।।
छिन में प्रश्न छिनहि कछु और। लहिन परत तिय गति के तौर ।।

नायक का धर्म दृष्टव्य है—

प्रसन्न करै रूठी तिय को पति। यही धर्म है नायक को नित ।।
निज स्त्रिय पति प्रसन्न न करे। सो दुहुँ लोकहि बन्धन परे ।।

मानवती नायिका को मनाने में दूती का विशेष सहयोग होता है, अतः नन्दिनी श्रीश्याम की आतुरता का वर्णन करती है—

मलिन वदन और मलिन मन दृगिन अवनि दिसि जोर।
यहि गति सो मोकर कही तुमको विनय निहोर ।।

परन्तु कलहान्तरिता श्रीराधा कब माननेवाली थी मान मोचन हेतु कुञ्ज में जाकर श्यामसुन्दर स्वयं मनुहार करते हैं—

आतुर प्रिय वृजराज कुँवरि प्यारी पै आवत ।।
× × × ×
बातैं प्रीत प्रतीत बढ़ावन की उच्चारी।
लगे परम पुनि पाय तबै मुसक्यानी प्यारी ।।

पुनः नारदजी रासलीला का दर्शन करना चाहते हैं, तो श्रीकृष्ण कन्या रूपधारी नारद को श्रीकृष्ण गंगा में स्नान करके नर रूप प्राप्त करने का संकेत करते हैं, तदनुसार नररूप प्राप्त करके देवर्षि नारद व्रजविहार की अनन्त लीलाओं का दर्शन करके परम आनन्द का अनुभव करते हैं। और अपने भाग्य की सराहना करते हैं—

सुरगन पावत भेद नहीं सो दरशन में लीन।
ताही के मधि रैन दिन रहत चित्त मो लीन ।।

इस प्रकार आदि पुराण के कथानक भाषावद्ध करके कवयित्री ने अपनी काव्य प्रतिभा का प्रदर्शन किया है।

रंगझर—

श्रीसुन्दरकुंवरीजी द्वारा इस ग्रन्थ की रचना शक संवत् १७१० में हुई, शीर्षक के अनुसार ही इस काव्य में श्रीराधासर्वेश्वरी एवं सर्वेश्वर प्रभु के एकान्त रस का निर्झर प्रवाहित हुआ है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में श्रीव्रजराजकुमार की सार सर्वस्वा निधिरूप, अलवेली वृषभानुनन्दिनी श्रीराधा के चरण-कमल की वन्दना की गई है। तदनन्तर सलेमाबाद स्थित आचार्यप्रवर श्रीवृन्दावनदेवजी महाराज, गणेशजी व ज्ञानाधिष्ठात्री सरस्वतीदेवी की वन्दना की गई है।

श्रीराधा व सर्वेश्वर प्रभु के नित्य नूतन एवं प्रतिक्षण प्रवर्द्धित प्रेम केलि की कुञ्ज नन्दगाँव, बरसाना, गोवर्द्धन, संकेत व प्राकृतिक रमणीयता का आगार श्रीवृन्दावनधाम है। श्रीसुन्दरकुंवरीजी कहती हैं कि अपार ललित लीलाओं के स्थल वृन्दावन में ऋतुराज वसन्त के साथ अनंग की नित्य स्थिति है—

लीला ललित अपार जहँ दम्पति प्रेम प्रसंग।
षट्ऋतु लै ऋतुराज तहँ सेवत समय अनंग॥

श्रावण मास में हरियाली तीजों पर वृषभानुकुमारी ने माता-पिता से मिलन के भाव से व्रजराज किशोर को बरसाने चलने के लिए संकेत किया है। बरसाने में वृषभानजी का दिव्य भवन है जिसे देखकर ब्रह्मा विष्णु भी चकित हो जाते हैं—

अजब जलूस अपार रचन जो भान भवन की।
ब्रह्मा विष्णु महेश चकित मति कहन कवन की॥

जिसमें श्रीकिशोरीजी अपनी सहचरियों के साथ श्रावणमास की हरियाली तीजों के दिन अनेक प्रकार की लीलाएँ करती हैं कभी दिव्य सिंहासन पर आरूढ़ होकर झूलती हैं। श्यामसुन्दर भी सखी वेश में श्रीराधाजी से मिलते हैं जिनकी शोभा दृष्टव्य है—

मानहुँ मत्त अरैल चाल आई मतवारी।
कछु लतान कै ओट लखी कोइ इक सुकुमारी॥
झीनी चूनर बोचि अंग छबि अद्भूत झलकै।
नीलमणिन की बेलि फली मोतिन यनु ललकै॥

प्रेमासव से छके हुए श्रीकृष्ण अपना तन मन सब ही हार गये हैं। कथानक में नवल सखी एवं ढाढ़न प्रसंग बड़े उत्कर्ष के साथ वर्णित है। तथा किशोरी श्रीराधा का वर्णन नवल सखी के रूप में श्याम इस प्रकार करते हैं—

कुँवरि तिहारि सौंहि वसीकृत मन्त्र नसानी।
गति मति मेरी हरी बनत नहीं कछू वखानी॥

तथा श्यामा के साथ श्याम झूला झूलना चाहते हैं। इसी बीच प्रेमवारि वरसने लगा है। इसी प्रसंग में युगलविहार देखने की लालसा से अवधूतनि का प्राकट्य होता है तथा अवधूतिन पूर्वजन्म की

कथा सुनाती है कि मेरे पिता श्रीव्यासजी हैं और मेरा नाम शुकदेव था। तथा झूलालीला में ही चोरी लीला का प्रसंग उपस्थित किया है, श्रीललिताजी कहती हैं कि श्रीभान के आज्ञा के बिना यहाँ आते हैं, अतः चोर हैं—

ललिता जू तब कही सुनो वह चोर कहावे।
आज्ञा बिन श्रीभानराय कै जो छिप आवे॥

और कंगन छिपाने का आरोप लगाती हैं। तदनन्तर प्रातः श्यामसुन्दर अपने नगर नन्दगाँव में चले जाते हैं और श्रीराधा बरसाने में तभी उपनन्द की रानी कहती है कि—

झूलो सबै झूलो अबै लालन बुले हौं कबै।
तीज लाह लीजै संग जुगल झुलाय कै॥

तदुपरान्त श्रीकृष्ण राधाजी को बरसाने से विदा कराकर लाते हैं और झूलन उत्सव होता है।

श्यामा-श्याम का यह नित्यविहार अलौकिक एवं दिव्य है, जिसका संकेत कवयित्री ने इस प्रकार किया है—

महा अलौकिक गूढ़ है सब सारन कौ सार।
निगम अगम भाषत जुगल वृन्दा विपुन विहार॥

तथा यह विहार स्वर्ग, मुक्ति और वैकुण्ठ से भी ऊपर है—

सुर्ग लहत मुक्तहु लहत वयकुण्ठहु लहि जाहि।
वृन्दाविपुन विहार यह दुर्लभ प्रापति ताहि॥

विषय भाषा और शैली के आधार पर रंगझर श्रेष्ठ काव्य है। इसकी जितनी प्रशंसा की जाय वह अपूर्ण ही कही जायगी।

इस अङ्क में कवयित्री की सभी रचनायें नहीं आ सकी हैं—गोपी माहात्म्य, भावना प्रकाश, पद और राम रहस्य तथा युगल ध्यान, मित्र शिक्षा आदि ग्रन्थ नहीं आ सके हैं। भावना प्रकाश और मित्र-शिक्षा ये दोनों ग्रन्थ सबमें विशालकाय ग्रन्थ है। रामरहस्य में श्रीराम के रासविलास, विविध श्रृङ्गार, खानपान, वेशभूषा धारण लाड़चाव दुलार समस्त जनकपुर और अवधजनों का उनके प्रति प्रेमाकर्षण लोकमर्यादा लोक व्यवहार आदि सभी सरस सांगोपांग प्रतिपादित हुए हैं। निश्चय ही कवयित्री की यह सर्वश्रेष्ठ कृति है। इनकी काव्य औजस्विता श्रेष्ठ चिन्तनशैली उक्तिचातुर्य, भाषा की प्रौढ़ता एवं प्रवाह इन्हें हिन्दी के श्रेष्ठ कवि और माधुर्य भाव के उपासकों में उच्च आसन पर ला बिठाते हैं। भावनाप्रकाश भी इनकी अनूठी रचना है। विविध छन्द और पदों कीं रचनायें बड़ी सरस हैं। अतः जब इनकी आधी से भी अधिक अवशिष्ट रचनाओं का प्रकाशन होगा, तब साहित्यिकों को उनके अनुशीलन करने का सुन्दर स्वर्ण अवसर प्राप्त हो सकेगा।

व्यवस्थापकीय

श्रीसर्वेश्वर के प्रेमी पाठक महानुभावो !

आपका यह श्रीसर्वेश्वर पत्र ३० वर्ष पूर्ण करके ३१वें वर्ष में प्रविष्ट हो रहा है। इसके विशेषांक विशिष्ट उपयुक्त हैं, इसे सभी जानते हैं। उनमें बहुत से विशेषांक तो अप्राप्य ही हो चुके हैं। सन् ७३–७४ ई० के पश्चात् इधर जो विशेषांक प्रकाशित हुए उनकी भी बहुत थोड़ी-थोड़ी ही प्रतियाँ बची हुई हैं। बहुत से सज्जन सर्वेश्वर के साधारण अङ्कों की फाइलें भी चाहते हैं, लेकिन अब उनकी पूरी फाइलें मिलना भी दुष्कर है। फिर भी उन सज्जनों की माँगों के अनुसार पुराने वर्षों के जितने अंक उपलब्ध हैं उन्हें भेजकर उनको सन्तुष्ट किया जाता है।

यद्यपि प्रायः सभी ग्राहक महानुभावों का अपने आत्मीय श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र में पूर्ण स्नेह है, अतएव सभी ममत्व पूर्वक सहयोग करते हैं। बहुत से सज्जन अपने आप वार्षिक शुल्क भेज देते हैं, उन्हें तकाजा करने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती। तथाऽपि कुछ ऐसे भी सज्जन हैं जिन्हें शुल्क भेजने का ध्यान नहीं रहता। जब नवम्बर मास में मनिआर्डर फार्म जाता है तब उन्हें स्मरण होता है तो मनि-आर्डर भर के भेज देते हैं। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जिन्हें कई बार स्मरण दिलाया जाय तब कहीं वे शुल्क भेजते हैं। ऐसी स्थिति में हम सभी ग्राहक महानुभावों से अनुरोध करते हैं कि ऐसी भूल न की जाय जिससे आपके पत्र की गतिविधियाँ दयनीय हों।

वर्तमान समय की महँगाई, कर्मचारियों की दलबन्दियाँ, विद्युत की असुविधा आदि अपरिहार्य असुविधाओं के कारण सर्वप्रकार शीघ्रता किये जाने की लालसा रखते हुए भी विशेषाङ्क हम ठीक समय पर प्रस्तुत नहीं कर सके इससे हमें बड़ी खिन्नता है।

विशेषाङ्क को जितना हम सजधज के साथ प्रकाशित करना चाहते थे वह भी नहीं हो पाया। मुद्रण भी उतना सुन्दर नहीं हो सका है जैसा कि हमारी उत्कण्ठा थी। फिर भी हमें पूर्ण विश्वास है कि इस "सुन्दरकुंवरी वाणी अङ्क" को पढ़कर सभी ग्राहक महानुभाव पूर्ण सन्तुष्ट होंगे। क्योंकि यह वाणी अनूठी अनुपम है।

अन्त में विलम्ब के लिये हम क्षमा-याचना करते हुए उन सज्जनों से अनुरोध करेंगे कि जिन सज्जनों का वार्षिक शुल्क न आया हो वे शीघ्रता से भेज दें ताकि उन्हें अङ्क भेजने में सुविधा हो सके। साथ ही साथ प्रत्येक पाठक यदि एक-एक ग्राहक बढ़ाकर पत्र के प्रचार-प्रसार द्वारा लोकहित में प्रवृत्त हो जाय तो यह पाठकों की एक विशेष सेवा होगी। इस सेवा से जन मानस को भी सन्तोष होगा और आपके श्रीसर्वेश्वर-पत्र की उन्नति भी।

श्रीसर्वेश्वर-पत्र के संरक्षक तथा आजीवन सदस्य—

यद्यपि पत्र-पत्रिकाओं के सभी प्रेमी पाठकों को ही संरक्षक समझना चाहिये। उन्हीं के लिये इनका आविर्भाव और संचालन होता है। पाठकों के स्नेह से सिंचित होकर ही ये पत्र-पत्रिकायें पल्लवित पुष्पित और फलित होती हैं, तथापि पाठक और पत्र-पत्रिका आदि सभी के संरक्षक हैं श्रीसर्वेश्वर प्रभु। सञ्चालक हैं श्रीसर्वेश्वर प्रभु ! प्रभु का प्रातिनिध्य सम्प्राप्त जगद्गुरु वर्तमान श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी महाराज। इनके अतिरिक्त जो प्रेमी पाठक आजीवन सदस्य बन जाते हैं वे भी श्रीसर्वेश्वर-पत्र के संरक्षकों में ही परिगणित होते हैं। कारण वे जीवनभर का वार्षिक शुल्क एक मुस्त २५१) रु० जमा करा देते हैं, जो स्थायीकोश के रूप से किसी सुरक्षित बैंक या अन्य सुप्रतिष्ठित संस्था में स्थापित कर दिया जाता है और उसका सूद प्रतिवर्ष प्राप्त होता रहता है। जो पत्र के प्रकाशन में लगता रहता है।

तथापि आरम्भ में १६-१७ वर्षों तक कोई आजीवन सदस्य नहीं बनाया गया। सत्रह वर्ष बाद किसी सज्जन के अनुरोध से सन् १९६९ में श्रीसर्वेश्वर का आजीवन सदस्य बनना आरम्भ हो गया फिर भी पत्र के संचालक सम्पादक व्यवस्थापक आदि कार्यकर्त्ताओं ने किसी से कुछ अनुरोध नहीं किया अतः वह क्रम बहुत धीमी गति से चला। जिन उदार महानुभावों ने स्वयं आजीवन सदस्य बनने की इच्छा प्रकट की उनका नाम अंकित कर लिया गया, उन सज्जनों की शुभ नामावली यहां प्रकाशित कर देना उचित एवं आवश्यक है, अतः क्रमशः वह दी जाती है—

१—महन्त श्रीकुञ्जविहारीशरणजी महाराज वलांगिर (उड़ीसा)
२—महान्त श्रीबालकृष्णशरणजी महाराज लीम्वडी सौराष्ट्र
३—महान्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी महाराज (उदयपुर)
४—महान्त श्रीहरिवल्लभदासजी महाराज किशनगढ़ रैनवाल (जयपुर)
५—भक्तवर श्रीभागीरथजी भराडिया सेंधवा (म० प्र०)
६—राजगुरु महन्त श्रीगङ्गादासजी महाराज भरतपुर (राजस्थान)
७—महन्त श्रीश्यामाचरणदासजी महाराज कलकत्ता (बंगाल)
८—भक्तिमती श्रीमती विमला माहेश्वरी कलकत्ता (बंगाल)
९—भक्तवर श्रीसत्यनारायण तिलोकचन्दजी मुसद्दी कलकत्ता (बंगाल)
१०—भक्तिमती श्रीमती मदालसादेवी लोहिया कलकत्ता (बंगाल)
११—श्रीवंशीधर चैरीटेविल ट्रस्ट सम्वलपुर (उड़ीसा)
१२—श्रीहल्केप्रसादजी दुवे छत्तरपुर (म० प्र०)
१३—श्रीसूरजकरण किशनलालजी मूंदड़ा गोंदिया (म० प्र०)
१४—श्रीलूणकरणजी वायेती महाराजागंज हैदराबाद (आंध्र)
१५—श्रीश्यामसुन्दरजी रामनिवासजी राठी इन्दौर छावनी
१६—श्रीरतनलालजी राठी, २६ श्रद्धानन्द मार्ग इन्दौर

१७—भक्तवर श्रीहेमांगपाद वराटबाबू ७ जी मेघदूत १२ रोलैण्ड रोड कलकत्ता २०

१८—श्रीमती सन्तोषीजी वागडोडिया विड़ला ग्राम नागदा (म० प्र०)

१९—श्रीकुन्दनलालजी सूद नई आबादी गीतानगर होसियारपुर

२०—श्रीछिंगामल सत्यदेव गुप्ता हाथरस (उ० प्र०)

२१—श्रीहनुमानप्रसादजी अग्रवाल वरगढ़ (सम्बलपुर)

२२—श्रीनन्हेरामजी गुप्ता राजौरी गार्डन नई दिल्ली

२३—श्रीअम्बालाल तेजकरणजी राठी परवतसर सिटी (राज०)

२४—श्रीछगनलालजी ज्येठाभाई ओझा कामली (सिद्धपुर)

२५—श्रीपुरुषोत्तमजी राधारमणजी छापरवाल अहमदावाद

२६—श्रीताराचन्दजी वोहरा, इचलकरंजी (कोल्हापुर) महाराष्ट्र

२७—श्रीटीकमदास नरवानी ४७६३ ई ब्लॉक १ ब्लैक रोड सींगापुर

२८—श्रीरतनलाल कैलाशचन्द्र शर्मा कैलास ट्रांसपोर्ट कम्पनी दापोड़ी पूना

२९—श्रीसर्वेश्वर साल्ट कम्पनी पनवेल (महाराष्ट्र)

३०—म० श्रीप्रेमदासजी थोत्र (बालोत्तरा) राजस्थान

३१—श्रीसूरजमल किशनजी राठी पीपरिया (होसंगावाद)

३२—श्रीभीषमचन्दजी जोशी सुजानगढ़ (राजस्थान)

३३—श्रीरघुनाथराय मंगलचन्द पेडीवाल करणपुर (श्रीगंगानगर)

३४—श्रीसुरेशकुमारजी केला केलाहाऊस नासिक

३५—श्रीमती जमुनावाई सिंघानिया C/o राधाकृष्ण गाडोदिया कलकत्ता

३६—स्वामी श्रीश्यामदासजी शास्त्री वाराणसी

३७—श्रीमती ललिता गुप्ता ८० पोयर्स गार्डन मद्रास ८६

३८—श्रीकिशनलालजी मित्तल १७/७४ नासीराबाद रोड अजमेर

३९—श्रीतेजनारायणजी मानधनिया अन्धेरी ईष्ट वोम्बे बम्बई

४०—श्रीनारायणदासजी बेरीवाले ७४/२३ धनकुट्टी कानपुर

४१—श्रीगणेशप्रसादजी आचार्य ३/१७८ विराट नगर नेपाल

४२—वाबू श्रीराम खुसीरामजी एडवोकेट जेतूमंडी फरीदकोट (पंजाव)

४३—श्रीद्वारकाप्रसादजी राधाकृष्ण राइस मील वलांगिर

४४—गीता समिति बड़ा रावला पुराना इन्दौर ४

४५—श्रीरामेश्वरजी डागा ३६ ए मोरछा ईस्ट डोन कलकत्ता १९

४६—श्रीमती ललितादेवी C/o श्रीचिरंजीलालजी चाननमलजी वरवाली मटडी फरीदकोट (पंजाव)

भक्तिमती सुन्दरकुंवरी का जन्म विक्रम सम्वत् १७९१ में कार्तिक शुक्ला ९ पुनीत पर्व अक्षय-नवमी को हुआ था,[1] आपकी जननी का नाम था व्रजकुंवरी जो महारानी श्रीबांकावतीजी कहलाती थीं। वह लवाण के कछवाहा राजा अणदरामजी उम्मेदरामोत की पुत्री थी। किशनगढ़ नरेश महाराजा राजसिंहजी की पहली महारानी चतुरकुंवरी (कामां के कछवाहा महाराजा उम्मेदसिंहजी कीर्तिसिंहोत की सुता) का पाणिग्रहण विवाह संस्कार वि० सं० १७५० में हुआ था उनकी कुक्षि से सुखसिंह, फतेसिंह, सावन्तसिंह (नागरीदास) और बहादुरसिंह ये ४ पुत्र और एक चान्दकुमरी नाम की सुता का जन्म होने के अनन्तर वि० सं १७७५ आश्विन शुक्ला १०मी को श्रीवृन्दावनधाम में उन्हें व्रजरज प्राप्ति हो जाने पर अपने प्रिय तीसरे राजकुमार सावन्तसिंहजी के अनुरोध से, राजसिंहजी ने व्रजकुमरी का पाणिग्रहण किया था। यद्यपि महाराजा राजसिंहजी ने यह घोषित कर दिया था कि अब मैं ४४-४५ वर्ष की अवस्था में दूसरा विवाह नहीं करूँगा, इस सम्बन्ध में कोई भी राजा महाराजा मुझसे अनुरोध करने का कष्ट न करें। जो भी नरेश अपनी राजकुमारी देने की चर्चा करता वह महाराज राजसिंहजी की दृढ़ निश्चयरूपी घोषणा सुनकर हताश हो लौट जाता। १८-१९ वर्ष की किशोर अवस्थावाले पुत्र सावन्तसिंह ने—"हम माता के बिना नहीं रह सकते" ऐसा हठ कर लिया, महाराजा राजसिंहजी की विमाता शेखावतीजी ने भी विशेष अनुरोध किया, तब उन्हें विवश हो दूसरा व्याह स्वीकार करना पड़ा।

यह पाणिग्रहण-संस्कार वृन्दावन में वि० सं० १७७६ वैशाख शुक्ला ११ को सम्पन्न हुआ था। लवाण के राजकुल और उनके सम्बन्धी सभी वृन्दावन में आकर चीरघाट पर ठहर गये थे।[2] स्वयं श्रीव्रजकुंवरीजी ने स्वरचित श्रीमद्भागवत के पद्यानुवाद बारहवें स्कन्ध के अन्त में अपना परिचय अपने दीक्षा और शिक्षा प्रदान करनेवाले गुरुदेव का भी परिचय दे दिया है। अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

---

१. किशसगढ़ राज्य की तवारीख के एक चोपनियां नं० १५ (नोट बुक) में इनकी जन्म तिथि पौष बदी १ भी लिखा है।

२. कूर्म वंश लउवानि पति नृप श्रीआनँदराम। वखत कुंवरि चउआन निज ग्रेह धर्म धर वाम ॥
जास गर्भ तैं हूँ भई बिचधौं पुरीऽस्थान। नाम भयो व्रजकुंवरि मो सबहि न कहि वतरान ॥
महाराजा श्रीरूपसिंघ रूपनगर अवनीश। तिन सुत श्री महाराज हुव मानसिंह कुलदीप ॥
तिन सुत सौं सनमंध मो किय पितु मातु विचारि। चीरघाट पै मो भयो पांनग्रहन निरधारि ॥

(सलेमाबाद) के सिंहासनारूढ़ श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी से उन्हें दीक्षा (मन्त्रोपदेश) और भागवत के हिन्दी पद्यानुवाद करने की प्रेरणा प्राप्त हुई थी और व्रजनाथजी भट्ट से उन्होंने भागवत का अध्ययन किया था।

परम भागवत रूप जे, प्रभु अवतारि कृपाल।
श्रीवृन्दावन नाम जिन, आदि महन्त विशाल।।
जिन मेरे शिर हाथ धरि, करी कृपा करिदास।
महा मुक्ति दाता दियो, मन्त्र सुसहित हुलास।।
तिन कै कृपा प्रताप सौं, कहन भागवत चाहि।
प्रकट भई मेरे हृदै, दृढ़ ह्वै अधिक उमाहि।।
विद्यागुर व्रजनाथ भट, कह्यौ भागवत भेव।
तिह गुरु गम सौं मैं कह्यौ, पुस्तक देवनि देव।।

श्रीसुन्दरकुंवरी ने भी स्वरचित सभी ग्रन्थों में अपने गुरुदेव श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी की वन्दना की है। राजकीय तवारीख में लिखा है "सम्वत् १७९५ चैत्रशुदी १३ को बाई सुन्दरकुंवरीजी को पुरोहित मयाचन्दजी के पास पढ़ने को बिठाई, पाँच रुपये दिये। चैत्रसुदी १४ को सलेमाबाद के 'श्रीजी' स्वामीजी श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी से नामस्मरण करवाये।"

स्वयं श्रीसुन्दरकुंवरीजी ने भी स्वरचित मित्रशिक्षा ग्रन्थ के इक्कीसवें विश्राम में श्रीवृन्दावन-देवाचार्यजी की महिमा का वर्णन इस प्रकार से किया है :—

श्रीप्रभुजू निज दासिता, छाप जबै मुहि दीन।
तब वय वर्ष चतुर्थ में हौं जु हुती मति हीन।।
श्रीप्रभुजी के चरण लगि, जब मैं करी सलाम।
कोउ कही करि दण्डवत, तदियन करौं प्रणाम।।
कछु समुझौन विवेक विध, सो अबोध मुहि जान।
हौं बैठी जित प्रभु झुके, करन कृपा वतरांन।।

इत्यादि बीसों दोहा (छन्दों) में वर्णन किया है। इस ग्रन्थ की रचना उन्होंने अपनी ७१ वर्ष की अवस्था वि० सं० १८६२ में माघ शुक्ला ५ गुरुवार को पूर्ण की थी, जैसा कि अन्तिम सन्दर्भ में उन्होंने स्पष्ट किया है :—

गोपि रहस्य मन हरन यह, भेव सु मति सम पाय।
सुमिरन करि वरनन किय जु भव भय संश विलाय।।
सम्वत यह नव दूनसै, वासठिवौं उपरन्त।
साके सत्रह सैरु पुनि, सत्ताईस गनन्त।।

माह मास सुदि पंचमी, शुभ मुहूर्त गुरुवार।
सम्पूरन हुव ग्रन्थ कृत मित्र न शिक्षा सार ॥

यह मित्र शिक्षा ग्रन्थ इनकी रचनाओं में विशाल है, तीन हज़ार के लगभग दोहा छन्द सवैया कवित्त आदि विवध छन्दों का यह ग्रन्थ है। प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार इसमें श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायाचार्यों की प्रकट और रहस्य परम्परा नामावली और उनके संक्षिप्त चरित्र तथा महत्व का इसमें सरस वर्णन है। स्वधर्माध्व बोध, ऐतिह्यतत्वराद्धान्त आदि संस्कृत ग्रन्थों का आधार लेकर इसकी रचना की गई है। रचना पूर्ण होने पर उन्होंने यह (मित्रशिक्षा) ग्रन्थ तत्कालीन श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधिपति श्रीसर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज को अवलोकन कराया और ग्रन्थ में किसी प्रकार की कोई सिद्धान्तविरुद्ध बात आई हो तो उसे सुधारने की कृपा की जाय ? ऐसी प्रार्थना करने पर उन्होंने अवलोकन करके निम्नांकित एक श्लोक द्वारा इसकी प्रामाणिकता की सम्पुष्टी की :—

सुन्दर्या यत्कृतं राद्धं तद्राद्धं मम सम्मतम्।
श्रीमद्धंसादिकाचार्य स्वरूप कथनात्मकम् ॥

इसी का भाव निम्नांकित दोहे में स्पष्ट किया गया है :—

जुगलस्वरूपाशक्त जे आचारज विविरूप।
तिन हित वाणी सुन्दरी कीनी प्रकट अनूप ॥

सुन्दरकुंवरीजी रूपनगर में रहती थी, जो आचार्यपीठ श्रीनिम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद से उत्तर की ओर छै मील पर बसा हुआ है। उस समय किशनगढ़ की राजधानी रूपनगर में ही थी। महाराजा रूपसिंह जो राजसिंह के पितामह थे उन्होंने कोट किला आदि का निर्माण कराकर इस नगर की उन्नति की थी। पहले यहाँ छोटी सी बस्ती थी उसे ववेरा कहते थे। किशनगढ़ राज्य की तवारीख में लिखा है कि—यहाँ कई शताब्दियों पूर्व वहवलपुर नाम का एक विशाल नगर था दैवयोग से वह ध्वस्त हो गया था, उसी का अपभ्रंश ववेरा नाम हो गया था। रूपसिंहजी ने उसी का नाम रूपनगर रक्खा था। उनका राज्याभिषेक सम्वत् १७०१ में हुआ। वि० सं० १७१७ में श्रीनारायणदेवाचार्यजी महाराज के रूपनगर स्थित गोपाल द्वारा में विराजमान ठाकुर श्रीगोपालरायजी की सेवा के निमित्त रूपनगर राज्य की ओर से ५००) पाँच सौ रुपये वार्षिक का बन्धान किया गया था, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ सलेमाबाद को सभी राठोड अपना गुरुस्थान मानते आये हैं, महाराज उदयसिंहजी मोटाराजा जोधपुर के पुत्र किशनसिंहजी ने भी सेठोलाव लेकर श्रीपरशुरामदेवजी की आराधना करके ही किशनगढ़ को बसाया था। रूपसिंहजी ने भी उसी मर्यादा का पालन किया। नारायणदेवाचार्य ने भी एक धर्मसंकट में उनकी विशेष सहायता की थी। महाराजा मानसिंहजी की बहिन चारुमतीजी का विवाह वि० सं० १७१६ में गुप्त रूप से डोली भिजवाकर महाराणा जगतसिंह से करवाने में इन्होंने बड़ा सहयोग दिया था। उन दिनों यवन सहनसाहों के आधीन सभी भारतीय नरेश उनके कृपाकटाक्ष भाजन बनने में ही अपना हित समझते थे और किसी न किसी प्रकार अपने धर्म-कर्म को भी सुरक्षित रखना चाहते थे। महाराजा

रूपसिंहजी के पिता भारमलजी किशनगढ़ राज्य के संस्थापक महाराजा किशनसिंहजी के चतुर्थ पुत्र थे। इन चारों में सहसमल, जगमाल और हरिसिंहजी ये तीनों बड़ी रानी के पुत्र थे, और नौ रानियों में छटे नम्बरवाली भटियाणी के पुत्र भारमलजी थे। उनका जन्म सम्वत् १६५७ चैत्र कृष्णा १२ मंगलवार को हुआ था, हरिसिंहजी उनसे ६ वर्ष छोटे थे। महाराजा किशनसिंहजी के स्वर्गवास हो जाने पर सम्वत् १६७२ आश्विन शुक्ला ३ को टीकाई सहसमलजी का राज्याभिषेक हुआ, किन्तु चार वर्ष भी पूर्ण नहीं हो पाये थे अचानक २० वर्ष की अवस्था में ही उनका देहान्त हो जाने से उनके छोटे भ्राता जगमालजी का सम्वत् १६७५ पौष कृष्णा १३ शनिवार को किशनगढ़ में राज्याऽभिषेक हुआ।

भारमल (रूपसिंहजी के पिता) जी की माता रानी भटियानीजी बड़ी समझदार थीं, उनने अपने पतिदेव महाराजा किशनसिंहजी से उनके जीवन काल में ही प्रार्थना करके अपने पुत्र भारमल के लिये बारह ग्रामों के साथ ववेरा जो भविष्य में रूपनगर के नाम से ख्यात हुआ ले लिया था : उन ग्रामों के नाम—१–ववेरा, २–मोरडी, ३–सुरसरा, ४–बनेवडी, ५–गहलपुर, ६–लांबा, ७–सानोल्या, ८–आंकोडया, ९ कोटडी, १०–थल, ११–मांड़चावड खुर्द और १२वां नाम सलेमाबाद का है। किशन-सिंहजी को मिले हुए ग्रामों में भी सलेमाबाद का नामोल्लेख है, वहाँ इसे परगना बतलाया है, सलेमाबाद परगना के तहती, रलावता, सींगला, सिंगारा, कुचील, नरवर, थल और सुरसरा ये सात ग्राम थे।

भारमलजी के वि० सं० १६८५ के भाद्रपद मास में राजकुमर का जन्म हुआ, जिनका नाम रूपसिंह रक्खा गया था। दैवयोग से भारमलजी और उनके बड़े भ्राता जगमालजी जिनका किशनगढ़ राज्य पर अभिषेक हुआ था दोनों का दक्षिण देश में ही देहान्त हो गया। राज्यगद्दी के अधिकारी रूपसिंहजी केवल ९ मास की ही अवस्था होने से भारमलजी के छोटे भ्राता हरिसिंहजी का राज्याभिषेक करा दिया। यद्यपि किशनगढ़ राज्य की संस्थापना १६४३ से १६६४ के मध्य में हो चुकी थी और ववेरा भी किशनगढ़ राज्य के ही अन्तर्गत था तथापि यह स्वाधीन था। यही कारण है कि सुन्दरकुंवरी और उनकी माता व्रजकुंवरी जिन्होंने भागवत और गीता का छन्दोवद्ध हिन्दी अनुवाद किया है। उन्होंने अपने भागवत की पुष्पिकाओं में रूपनगर को ही राजधानी लिखा है। ववेरा का रूपनगर नामान्तरण वि० सं० १७०१ के लगभग हुआ होगा ऐसा अनुमान होता है।

रूपसिंहजी की नावालगी में उनके चाचा महाराजा हरिसिंहजी राज्य काज देखते थे। इतना ही नहीं किशनगढ़ एवं रूपनगर का उन्हें ही राजा मान लिया गया था, वे किशनगढ़ में रहते थे और रूपसिंहजी और उनका परिकर सब ववेरा में रहते थे। चौदह पन्द्रह वर्ष उन्होंने राज्य किया, उनकी वृत्ति धार्मिक थी। बहुत-सी जमीन जायदादों का उन्होंने दान-पुण्य किया था, रूपसिंहजी में भी उनका विशेष स्नेह था। इसी कारण वे समय-समय पर रूपनगर जाकर उनकी सम्हाल करते थे। दैवयोग ऐसा हुआ सं० १७०१ में जब वे रूपनगर से लौटकर किशनगढ़ आ रहे थे मार्ग में ही उन्हें चक्कर और मूर्छा-सी आने लगी और किशनगढ़ पहुँचते ही उनका देहान्त हो गया। उनकी अन्त्येष्टी क्रिया रूपसिंहजी

द्वारा हुई। राज्यगद्दी का समारोह भी सं० १७०१ ज्येष्ठ शु० ५ को रूपनगर (ववेरा) में ही हुआ। इसी समय किशनगढ़ और ववेरा दोनों का एक राज्य हो गया।

रूपनगर में वि० सं० १७०० तक निम्बार्क सम्प्रदाय के अतिरिक्त किसी भी अन्य सम्प्रदाय के महानुभाव सिद्धसन्त आचार्य एवं गोस्वामी आदि के आवागमन और उनसे दीक्षा प्राप्त करने कराने की यहाँ की तवारीख में विशेष प्रकार की चर्चा नहीं मिलती। रूपनगर ही क्या किशनगढ़ में भी महाराजा सहसमल, जगमालजी और हरिसिंहजी तक अन्याऽन्य सम्प्रदायों के प्रवेश का उल्लेख नहीं देखा जाता। वि० सं० १९७० के लगभग जब किशनगढ़ राज्य का इतिहास लिखना प्रारम्भ हुआ तब जयलालजी आदि लेखकों ने राज्य की तवारीख के पुराने चोपनियों की बहुत-सी वास्तविक बातों को छोड़ दिया, इतना ही नहीं कुछ मनगढ़न्त बातों का समावेश भी कर डाला। किन्तु वास्तविकता छिपाई नहीं जा सकती।

श्रीसुन्दरकुंवरी, व्रजकुंवरी, छत्रकुंवरी, मनोरथकुंवरी, महाराजा रूपसिंहजी, राजसिंहजी, महाराज कुमार सावन्तसिंह (नागरीदास) जी आदि की रचनाओं में स्पष्ट उल्लेख मिलते हैं कि हमारे ये ही श्रीसर्वेश्वर राधामाधव भगवान कुलदेव हैं और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (श्रीनिम्बार्कतीर्थ) सलेमाबाद के आचार्य ही हमारे कुलगुरु हैं। उज्ज्वल गोपीचन्दन के तिलकोंवाला श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय ही हमारा सम्प्रदाय है। श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय किसी भी वैष्णव सम्प्रदाय की अवज्ञा एवं विरोध नहीं करता सभी को सम्मान देता है, तदनुसार रूपनगर और किशनगढ़ राज्य द्वारा भी सभी वैष्णव और दादूपंथ रामसनेही जैन भट्टारक आदि पंथों के महानुभावों का भी उचित मान-सम्मान होता आया है, किन्तु इससे यह धारणा दृढ़ नहीं हो सकती कि यह राज्य अमुक पंथ का ही अनुयायी रहा है। जयलालजी ने महाराजा किशनसिंहजी के नाना आसकरणजी को वल्लभकुली बतलाकर किशनसिंहजी को भी वल्लभ-कुली सिद्ध करना चाहा किन्तु उनके बाद उनके पुत्र जगमलजी आदि को किसी सम्प्रदाय में दीक्षित होना नहीं लिखा, उन्हें वैष्णव न लिखकर स्मार्त धर्मानुयायी माना है। रूपसिहजी के सम्बन्ध में उन्होंने जो कल्पना की है वह तो एकदम हास्यास्पद ही है।

महाराजा राजसिंहजी के समय (वि० सं० १७८२) में जब जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य पीठाधीश्वर श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी का रूपनगर में पादार्पण हुआ था उस वरणन को जयलालजी ने दबा दिया, वह यात्रा वस्तुतः महत्वपूर्ण थी, उसका विवरण नागरीदास वाणी अङ्क में देखना चाहिये। इतिहास रजिष्टरों में जयलालजी ने गुसांईजी का नाम दिया है किन्तु वह महाराजा (राजसिंहजी) के समय के नौकरों की सूची में सर्वप्रथम दिया है। महाराजा नागरीदासजी जब वि० सं० १८०९ में व्रजयात्रा करने आये, व्रज के सभी स्थलों की यात्रा की थी। स्वरचित तीर्थानन्द ग्रन्थ में उन सबका वर्णन किया है, किन्तु किसी भी वल्लभकुली गोस्वामी स्वरूप की उसमें चर्चा नहीं की। इतना ही नहीं जतीपुरा गोकुल तथा मथुरा आदि के वल्लभकुली मन्दिरों तक का भी उल्लेख नहीं किया। यदि उस समय तक रूपनगर

राज्य में वल्लभकुल का विशेष प्रवेश होता तो ऐसा नहीं हो सकता था। वल्लभकुली वैष्णवों में साधारण-सा व्यक्ति भी अपने सम्प्रदाय की इतनी उपेक्षा नहीं कर सकता।

नागरीदासजी की रचनाओं को जब वि० सं० १९५५ में जयलालजी के सम्पादकत्व में प्रकाशन करवाया गया तो बहुत स्थलों में परिवर्तन किया गया। जहाँ "वल्लवकुल वन्दौं" पाठ था उसे "वल्लभ-कुल वन्दौं" बनाया गया। कलि वैराग्य वल्लरी में "चार सम्प्रदाय में गुरु करिये" वाक्य को "प्रसिद्ध सम्प्रदाय में गुरु करिये" ऐसा बदला गया। नागरीदासजी की रचनायें वि० सं० १८६२ तक प्रतिलिपि की हुई (हस्तलिखित) किशनगढ़ राज्य के संग्रह में विद्यमान हैं उनमें एक "उत्सवमाला" भी है, हस्तलिखित प्रति में बहुत थोड़े उत्सवों की चर्चा है किन्तु प्रकाशित नागर समुच्चय (सं० १९५५) में बहुत से मनमाने उत्सव और जोड़ दिये। महाप्रभुजी और गुसांईजी के उत्सव तथा बधाई आदि की चर्चा प्राचीन हस्त-लेखों में कहीं भी नहीं हैं उनका मुद्रित नागर समुच्चय में दो-दो बार उल्लेख कर दिया गया है।

सम्प्रदायवाद की भ्रान्ति जयलालजी आदि कट्टरपंथियों ने फैलाई और तटस्थ असाम्प्रदायक लेखक भी ऊनके चक्कर में फँस गये। डा० किशोरीलाल गुप्त सम्भवत: किसी सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं होंगे क्योंकि उनके गले में तुलसी की कण्ठी और लिलाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र दिखाई नहीं दिये। उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित नागर समुच्चय की भूमिका लिखी, किन्तु कुछ भी ऊहापोह न करके जैसी सं० १९५५ में प्रकाशित हुई थी हू वहू वैसी की वैसी नागर समुच्चय प्रकाशित कर दी गई।

यद्यपि उसके प्रकाशन से पूर्व "श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र का श्रीनागरीदास वाणी अङ्क प्रकाशित हो चुका था। उसमें शोधपूर्ण पर्याप्त सामग्री प्रकाशित हुई है, किन्तु गुप्तजी ने उन्हें देखा भी नहीं, नेत्र बन्द करके ऊटपटांग बातें लिख डालीं। उन्होंने लिखा कि राज्य की साम्प्रदायिकता सम्बन्धी खोज के सम्बन्ध में मैंने किशनगढ़ की यात्रा की, राजमहलों में प्रवेश द्वार पर मन्दिर मिला, नाम पूछने पर वहाँ के व्यक्तियों ने बतलाया "यह श्रीनाथजी का मन्दिर है। बस। इसी पर गुप्तजी ने अपना खोज कार्य पूर्ण मान लिया। उन्होंने यह मन्दिर कब बना था प्रतिमा कहाँ से मिली थी इनका श्रीनाथजी नामकरण कब हुआ ?" इत्यादि विषयों को जानने की इच्छा भी नहीं की।

जब वे वृन्दावन आये श्रीसर्वेश्वर कार्यालय में ठहरे, कार्यकर्त्ताओं ने उनसे अनुरोध किया कि अब भी किशनगढ़ चलकर राजकीय संग्रह में रक्खी हुई नागर समुच्चय की प्रति को देख लिया जाय कि उसके अन्तर्गत (हस्तलिखित) उत्सवमाला में गुसांईजी और महाप्रभुजी के उत्सव हैं या नहीं ? किन्तु लाचारी प्रकट करते हुए गुप्तजी ने दबी जवान में कहा—अब तो क्या करें हो गया सो हो गया। द्वितीय संस्करण में देखेंगे। बात समाप्त हो गई। भ्रान्ति की जड़ें और भी गहरी जम गईं।

यद्यपि वैष्णवों के सभी सम्प्रदाय वन्दनीय हैं सम्माननीय हैं। हमारा किसी से भी किसी प्रकार का द्वेष भाव नहीं है। वल्लभकुल के वर्तमान आचार्य, विशिष्ट गोस्वामी स्वरूपों का भी प्राय: सभी सम्प्रदायों के वैष्णवों के प्रति वैसा ही स्नेह भाव है। श्रीप्रथमेशजी महाराज आदि का उद्घोष है कि—हम सभी वैष्णव हैं, हमारा एक ही उर्ध्वपुण्ड्र है, एक ही भगवद्भक्ति लक्ष्य है। जिन क्रियाकलापों में

विभेद प्रतीत होता है उसे कलहोत्पादक न मानकर विविधतारूप वैष्णव समाज का वैभव एवं गौरव ही समझना चाहिये। सभी सम्प्रदायाचार्यों का प्रायः यही दृष्टिकोण है, किन्तु जड़बुद्धि अनुवर्ती जिन्हें अपने सम्प्रदाय का तलस्पर्शी ज्ञान नहीं है वे ही सम्प्रदायों में दुर्भावपूर्ण भेदबुद्धि उत्पन्न कर देते हैं। उसी का परिणाम है आज हम सब वैष्णवों का विघटन, पारस्परिक कलह, आदि।

वास्तव में जिस प्रकार गउ के चारों स्तनों से एक ही प्रकार का मधुर दुग्ध ही प्राप्त होता है उसी प्रकार वैष्णवों के चारों एवं सभी सम्प्रदायों के पूज्य प्रवर्तक प्रचारक महानुभावों द्वारा महान् लोकोपकार होता है। सभी सम्प्रदायों में बतलाये हुए उपासना आदि साधनों द्वारा भगवदनुग्रह की प्राप्ति करना ही एक लक्ष्य माना गया है। वैष्णवमात्र का प्रधान लक्षण है "सर्वं विष्णुमयं जगत्"। सरित् समुद्र पर्वत आदि सब कुछ परमात्मा के ही आश्रित और प्रभु के ही रूप हैं, यही मानकर भक्तजन विनम्रता पूर्वक सबकी वन्दना करते हैं, अपने को अत्यन्त दीन हीन समझकर दूसरों का मान सम्मान करते कराते हैं। यदि आज ऐसी वैष्णवता के भाव हमारे अन्दर जागृत हो जायें तो कहीं भी अत्याचार दुराचार भ्रष्टाचार डकैती लूटमार चोरी हत्यायें बलात्कार जैसी घटनाओं का नामोनिसान भी न रहे। चारों ओर सुख शान्ति की सरिता प्रवाहित हो जाय।

विक्रम की पन्द्रहवीं से अठारहवीं शताब्दी तक अच्छे-अच्छे प्रख्यात वैष्णव भक्तों की देश में अभिव्यक्ति हुई और उनके द्वारा पर्याप्त लोक-कल्याण हुआ। रूपनगर का राजकुल वि० सं० १६८० से ही प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय वैष्णवता का आदर्श रहा है। यहाँ के नरेशों ने मर्यादापूर्वक राज्य काज किया और अपने गुरुस्थान श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (निम्बार्कतीर्थ सलेमाबाद) की प्राणपण से सेवा की। श्रीनिम्बार्कतीर्थ की भूमि में किसी भी प्राणी की हिंसा नहीं की जा सकती थी, भयङ्कर सिंह व्याघ्र पर भी गोली नहीं चलाई जाती थी। यह सर्वत्र प्रसिद्धि है कि उसी तीर्थभूमि में किसी सिंह ने आकर जब पशु और प्राणी-वध करना आरम्भ कर दिया तब सोचा गया कि यह पशु एवं प्राणियों का वध कैसे रोका जाय। आचार्य श्रीवृन्दावनदेवाचार्यजी महाराज ने वि० सं० १७८९ में महाराज कुमार (सावन्त-सिंहजी) को आज्ञा प्रदान की कि आप द्वन्द्वयुद्ध में सिंह को परास्त कर दें। महाराज कुमार उस समय ३३ वर्ष के वयस्क थे, सिंह से द्वन्द्वयुद्ध किया। कविजनों ने इस सम्बन्ध में बड़ी लम्बी चौड़ी कवितायें लिखी हैं। उनकी यह सेवा ही श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के सम्बन्ध का स्पष्टीकरण कर देती है।

इसी प्रकार की अनेक सेवायें हैं रूपनगर के नरेशों ने की और आचार्यपीठ के आचार्यों का भी राज्य और राजकुल के प्रति ऐसा ही महान् अक्षुण्ण सौहार्द रहा।

इस राज्य में आरम्भ से ही श्रीसुदर्शन भगवान् की आराधना प्रमुख रही है, वह शालिगराम प्रतिमा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ (सलेमाबाद) से ही प्राप्त हुई थी। वि० सं० १७८५ भादवा वदी ३ गुरुवार को कृष्णगढ़ राज्य की तवारीख में लिखा है—ठाकुर द्वारे श्रीसुदर्शनजी रै कावत उछाह पवित्रा एकादशी (खर्च ७।।) रु० सुदर्शनजी की जन्म कुण्डली १०४ तिण मध्ये १०)। इस समय गोवर्धननाथ श्रीनाथ-

कल्याणराय आदि का नामोल्लेख नहीं मिलता। इससे रूपसिंहजी को गोकुल से प्रतिमा मिलनेवाली कल्पना का भी मूलोच्छेद हो जाता है। सुन्दरकुंवरी, व्रजकुंवरी बांकावती, नागरीदासजी, छत्रकुंवरी आदि की रचनायें और रूपनगर किशनगढ़ राज्य की तवारीख (इत्तलाक बहियों) से यह प्रमाणित होता है।

यह चित्र वि० सं० १९५५ में मुद्रित "नागर समुच्चय" में स्वयं श्रीजयलालजी ने प्रकाशित करवाया था।

महाराजा श्रीसावन्तसिंहजी इसी सम्प्रदाय के शिष्य थे इसी आशय को राजकीय खजाने में रक्खा हुआ उनकी विरक्तावस्था का यह चित्र ही प्रमाणित कर रहा है।

इस सम्बन्ध में विशद इतिवृत्त लिखा जा सकता है। जो सज्जन अधिक देखना चाहें वे श्रीसर्वेश्वर कार्यालय से प्रकाशित श्रीनागरीदास वाणी अङ्क देखें। यहाँ हम इस सर्वभूत हितैषिणी मङ्गल-कामना—

सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥

पूर्वक सम्पादकीय की पूर्ति करते हैं।

※ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ※

।। श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ।।

श्रीसुन्दरकुंवरीजी की वाणी
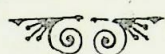
(नेहनिधि)

।। दोहा ।।

रसिक कुँवर बृजराज को मोहन मूरत मैंन।
बृज जीवन बृज प्राण धन मन्त्र मोहनी ऐन ।।
कुँवरि लड़ैती भान की पिय लोचन आधार।
नवल किशोरी नागरी अलवेली सुकुंवार ।।
जिनके गहर सनेह रंग रँग्यो चित्त चिकनाय।
श्री वृन्दावन मम प्रभू नमो भक्ति ऋषिराय ।।
पाय कृपा इनकी चहत कहन नेहनिधि बात।
जिहिं रस लोभी साँवरो बृज तजि आनहिं जात ।।
मोहन दृग गुन चैंदुवा चतुर लालची लीन।
राधारूप सुधा लगै तब क्यों छुटै प्रवीन ।।
इन दृग गति ढोरी लई याही परी सुभाव।
प्यारी छबि निधि लहर में मीन लीन कै चाव ।।
पिय मन सुंदी मैंन के भयो मुसद्दी ऐन।
प्रिया रूप पुर में फिरैं भरैं खजाना नैन ।।
जसुमति गृह गोकुल बधू जात लगन नित पाय।
वे मग सुख चाढ़ही अटा गुड़ी उड़ावन चाय ।।
परै गुड़ी गुन में गुडी ऋण न झकोरी खाय।
मग भुव इन दृग गति गडी देखैं गुडी बलाय ।।
इक दिन वह अरुझी गुडी प्रिया उतंग अवास।
सोगनि कुंवरि छिपाय गृह गई सास के पास ।।
एक हेरन को गुडी आए जसुमति ऐन।
गुडी पेस जिन पेस कौं है न पेस कस नैन ।।
हेरत कागर की गुडी कागर आई बात।
नहिं आवन पाई तहां घूँघट गढ घिघिरात ।।
कितै गई मेरी गुडी कहत छबीले बैन।
भेदू घूंघट कोटलै घेरे परै जु नैन ।।
हिरि फिरि दृग गति पुनहिं पुनि घूँघट लगि रहि जाय।
मदन कंज दल मंत्र मनु खोजी दये चलाय ।।
रिस मिस लसही रचनयों आतुरता सरसाय।
कहत मात सों मो गुडी देत न काहि हिराय ।।
श्री जसु प्रथम अजानि कै कहि तकि कितै हिराहि।
जान देहु ह्वै अवरलै क्रीडहु मन उमगाहि ।।
कहत रसिक लैहौं वही देहू नाहिन जान।
न्यारे लक्षियन सबन तें गहिये चोर पिछान ।।
यह सुनि बृजरानीजु तब लहि बोली मुसक्याय।
ऐसे आपुन निपुण तौ लै आवहु किन जाय ।।

।। कुँवर बचन ।।

नाम ठाम जानौं न हौं अरुझी जहां अवास।
यहां हीं हैं कहु चोर की सब तै न्यारी बास ।।

।। श्रीबृजरानीजू बचन श्रीप्रिया प्रति ।।

बैठी तुम देखी गुडी कहूँ परत किंहुँ लेत।
लाडिल सुत बृज भूप को चोरी सबको देत ।।

।। कवि बचन ।।

लाज दबी अति सासु के कहत न कछु मुख आन।
प्रिय कबहु न देखी गुड़ी चकी धरत कर कान ।।

।। श्रीप्रिया छवि वर्णन यथा कवित्त ।।

मोतिन की बेलिसी मुरानी सकुचान भरी,
आनन फिरानी कर कानन धरत है।
चकित चितौन ह्वै अजान मुसक्यान दाबै,
फाबै भाव भरी भौहैं चित जो भरत हैं।।
मैंन धनु बाण सजे मुक्तन लता पै चंद,
घूँघट के कोट मानों मृगया करत हैं।
सारँग सुजान श्याम धाय घट घूमै अंग,
महर उमंग मन मोहनी परत है।।

लोने दग कौने पलकान कानन छुवत,
लगि झीनै पट देखि पिय दग गति पंग है।
पौन के परस होत हल चल घूँघट ज्यों,
त्यों ही त्यों विवस छकि साँवरे को अंग है।।
आन कान लागि मन जान कहै प्राण प्यारी,
कैसे ऐ कहा तै लरो अचरज ढंग है।
मुख कंद हूल झूल झूल झूलन झुलानेउ,
सबहि न जाने ऐतौ हुनर फिरंग है।।

।। सवैया ।।

मनमोहन के दग की गति तौ,
मन संग लै घूघट कोट गई।
लखि सास लखात किशोरी लजात,
सु भौहैं कछू इतरान ठई।।
इतरान ही की ललचान इतै,
लगि छूटन नैनन आन पई।
रहै कान का लाज ही रीझ गही,
इनहूँ तै वहै रिझवार भई।।

।। दोहा ।।

गई यामिनी याम इक जसुमति जान प्रवीन।
सुन्दर श्याम सुजान को सीख सैन को दीन।।
कियो गवन उन भवन को ये बैठी ढिग सास।
मन घूँघट कै गढ़ रुक्यो तन लै चले अवास।।
हर्षित महा ब्रजेसुरी मान दगन फल लाह।
पुनि बहुरचौ इनको कह्यो बेटी ग्रेह सिधाहु।।
सदन अवनि राजत जहाँ बृजरानी सुखदाय।।
ताही शीश अवास कै रही जौन्ह सरसाय।।
सीष सास तैं पाय कै चंदाननि पिय प्राण।
तहाँ चन्द्रका चहन मिस चली चढ़ी इतरान।।
उज्जल महल उतंग पै एका अद्भुत क्राँत।
अमल छपा बिच सहज तहँ शोभित बिमल बिछांत।।
हीरा जगमग जगमगत लसत सिम्यांनै वास।
मोतिन झालर झूमही मुक्त जाल चंदवास।।
जसुमति गृह की चन्द्रिका लषन चन्द्रिका चाय।
शशि सनमुख इक बास ढिग तहँ बैठी इतराय।।
हुती सहचरी संग सब चतुर चित्त की पाय।
मन मंजरिजू स्याम सों कही बात यह आय।।
सोच लग्यो इततौ अबै कौन उपाय उपाहि।
जाहि मनावन आप सों तहँ जसुमति मग माहि।।

।। दोहा-अरिल्ल ।।

द्वै नीरज दल नीर भरि मोहन चातुर राय।
कह्यो सखी वहि हाथ दै धरि पांयन उन जाय।।
धरि पांयन उन जाय कहहु ऐ सर्न चहत है।
कृपा दृष्टि कै सीच सुधारी दुखित दहत है।।
दे सर्निन कों सर्न कुँवरि वृषभान राय की।
जेरी जावक पायजेब छबि चाप पांय की।।
ते पंकज दल जल भरे अली चली लै पान।
आई जहँ राजत हुती कुँवरि भरी इतरान।।

कुँवरि भरी इतरान निरख तिय सनमुख ठाढ़ी।
छबि लखि भई मति पंग चित्र मनौ मुसवर काढ़ी॥
सोधि सयान आन चित चातुर तिय चित चायन।
जल जुत दुहु दल जलज धरे ढिंग लांवन पांयन॥
कुँवरि चतुर लखि पायकै आनन रही फिराय।
सरक तिरैछी नाय दृग लीनी भौंह चढ़ाय॥
लीनी भौंह चढ़ाय दृगंचल गति कछु फेरी।
तिय बोली री बान यही तौ घायक तेरी॥
समझ ठान इतरान यही बांधत इतरावन।
दोष देत है बहुरि आयु ही करि करि घावन॥
पिय मन बांधत सहज छबि बहुरि क्रूर इतरान।
छूटत नहिं दृग लालची पुनि यों फेरत आन॥
पुनि यों फेरत आन अनोखी कहा कहत है।
सुधा दिष्ट कै सीच समुझ ऐ दुखित द्हत है॥
सरनागति दै सर्न कुँवरि तू भूप भान की।
वाह बसावहु पायजेब जावक सुजान की॥
चेरी नेरी रहन बिन ऐ बूड़ी जल माँहि।
तऊ दहत है देखइत तौ मुख सुधा बसाँहि॥
तौ मुख सुधा बसाहि सुधाधर सकि क्यौं कहिये।
कछु तुव आनन छपा छटा कों उपमा चहिये॥
देहु इतै दृग नेक उतै कहा हेरत प्यारी।
इती अनीत न साधि आपही टोना गारी॥
बोली तिरछौंही कुंवरि समुझ परत नहि मोहि।
पियरे चावन देइ हों कौन बुलाई तोहि॥

॥ सखी बच्चन ॥

कौन बुलाई तोहि इहां तू बैठी रूठी।
कसि कसि भौंहैं मुरत लिये पिय कौं मन मूठी॥
अरी जरि गई री सठ गयहि कौन सिखानो।
मीन हीन जल रीत पीय आतुर अकुलानो॥
उठि चल चन्दाननि कुँवरि कहा करत इतरान।
तेरे हाथ बिकान की परी दृगन उन बान॥
परी दृगन उन बान कहा कीजै बस नाहीं।
वेऊ करत बिचार कहत जादू तो माहीं॥
अरी अमाननि कहां हाथ इन बातन आवत।
प्यारो प्रीतम प्रान ताहि अकुलान लगावत॥
कह्यो रुषौही मुरि कुँवरि काहे सीस पचाय।
नन्दरायजू की अबै आन जो न उठि जाय॥
आन जौन्ह उठि जाय कहत तू मुहि चन्दाननि।
ऐहै चातुर आप बहुरि छकि है लखि माननि॥
लखि माननि चख चाव मान ही चाहन परि है।
जन्त्र मन्त्र तो भरे सुतो उन द्रग गति हरि है॥

॥ कवि बचन ॥

चली कुँवर बर और कों यों कहि तिय मुसिक्याय।
आई जहँ पल पांवड़े राखे चतुर बिछाय॥
राखे चतुर बिछाय पांवड़े दृग मग महियाँ।
तबहीं आहट श्रवन परी कछु मारग तहियाँ॥
आतुर चातुर चख चकोर चंचल अकुलाने।
चंदाननि आगम उमंग आसा उर राने॥
धीरज गयो पलाय के हिय अरि बरि अकुलाय।
रह न सके तहँ आप ही आये मग मुख धाय॥
आये मग मुख धाय तहाँ देखी तिय आवत।
रहे अवनि चख चाय नाय मुख चित्त भ्रमावत॥
निकट आय तिय कह्यो बात कछु लगी न मेरी।
उक्ति जुक्ति करि थकी न मानति माननि तेरी॥
एक बेर तौ चलि लखहु चतुर माननी सोभ।
बहुरि मनावहुगे समझ मान चहन लगि लोभ॥
मान चहन लगि लोभ मनावन दृग नहि चहिये।
रूप उदधि की छबि तरंग ये चख कख लहि है॥
झुक झझकन इतरान तान भौंहनमु अनोखी।
मोतें परत न कही देखि चलि रसिया जौखी॥
तबै बेष मोहन चतुर साँवरि सहचरि धारि।
अलिन झुंड बिच मिल चले करि चगेरि धरि हार॥

करि चमेरि धरि हार साँवरी सहचरि आई।
आवत लखि इत कुँवरि मोर आनन मुसिक्याई ॥
पुनि चुराय दृग फेर रही सुख कुँवरि रिसौंही।
भामिनि नवल प्रबीन आन ठाढ़ी नियरौंही ॥

सुमनन जर निज करन कर नजर हौंन नियराय।
धरी चमेरी हार की आनन सन्मुख आय ॥
आनन सन्मुख आय नवेली नागरि बैठी।
कछु दृग गति इतरान ठान इन भौंह अमेठी ॥
इत धनु भौंहन तनत बान दृग खचे अन्यारे।
नवल नारि रिझवार हिये लगि फुटे दुसारे ॥

गई मनावन सुधि सबै रही दृगन गति पंग।
इत लहरें इतरान लखि इत लहरै चढ़ि रंग ॥
इत लहरै चढ़ि रंग नवल तिय लोयन सोभी।
परे मकर चख ललचि प्रिया छबि निधि बिच लोभी॥
इत इतरौहें मुरत दृगंचल छ्वै छ्वै कानन।
इत घूमत तन नवल नारि उर पूरित घावन ॥

चहन चतुर इतरान यह चोप चढ़ी रिझवार।
नार जनौं नाजर भयो तब लै निज कर हार ॥
तब लै निज कर हार चतुर पहिरावन लावन।
इत झिझकौंहै झमक दृगंचल झुकि इतरावत ॥
लगी चर्व इतरान चहत तिय करत धिठौंही।
सुमन माल पहराय सँवारत ह्वै नियरौंही ॥

सतरौंही बैठी रसिक इतरौंही तिरछौंहि।
इत इतराजी दृग भरै इत राजी दृग हौंहि ॥
इत राजी दृग हौंहि रंक ज्यों लहि निध प्यारी।
त्रखत चात्रगन मिली स्वात कर जीव जिवारी ॥

नागरि नवल प्रवीन बहुरि नियराय कुँवरि सों।
अधर चुनैती रेख लगी कहि पोंछत कर सों ॥
रेख चुनैती अधर सों पोंछत तिय नियराय।
दृग सनमुख दृग जोर हँसि सैनन हा हा खाय ॥
सैनन हा हा खाय चतुर आतुर अकुलानी।
कुँवरि सकुचि सतराय मोरि आनन मुसिक्यानी ॥
कह्यो कुँवरि ललिताहि कौन यह कित तें आई।
पूँछहु किनको काज निसा आधी नियराई ॥

पूँछत श्रीललिताजु तिहि को हौ जू नव नार।
डारन आई मोहनी बँधी मोहनी जार ॥
बँधी मोहनी जार फंद तिहिं बेबस गति की।
कुँवरि हमारी निकट आय आसंगै अति की ॥
को हौ इतरत रहौ अदब सों अपुन करीने।
नातो महरहि कहहि पिछानन नवल प्रबीने ॥

॥ नवला बचन ॥

नेक कान दै सुनहु जू कहि हौं भेव जताय।
मोकों चातुर जान कै इन पिय लई बुलाय ॥
इन पिय लई बुलाय कही करिये मो कारज।
इत मनाय लै आहु प्रिया रूठी दृग वारज ॥
इन प्रबीनता लखी जु इन मो जिय की पाई।
कब की भूखी हुती भली हा हा सुखदाई ॥

हौं नवला बोलत नहीं मुहि आवत अति लाज।
मोहिं पठाई कंत इन इनहि बुलावन काज ॥
इनहि बुलावन काज कह्यो मुहि जान सयानी।
तब मैं इन पै पता ल्याय ह्वै लई निसानी ॥
इन बंसी अरु स्याम बर नेरौ ह्वै हौं ल्याई।
तिहिं बदलै दुहुँ मो उरोज उन पै धरि आई ॥

चौंकि हँसी यह सुनि कुँवरि लखि जु अनोखी बात।
पुनि ललिता दिस मुरि कह्यो देखहु पता बतात ॥
देखहु पता बतात कह्यो हँसि, प्रान पियारी।
बात लगी तब जान रलन आसंग बिचारी ॥
ह्वै आसंगा इत सुमरें धरि बाँह नवेली।
बोली चलिये गेह यहाँ कह करत अकेली ॥
बेग बुलावत हैं उतै चंदाननि सुकुँवारि।
मेरी सौंह उठ छाँड़ि हठ काहे करत अबारि ॥

काहे करत अबारि कंत तन अति तलवेली।
तेरी सौं चलि उतै संग मैं रहौं सहेली ॥

॥ कवि बचन ॥

सौंह सुनत मुसिक्याय भई ठाढ़ी चन्दानन।
दुहुँ दिस लोयन जुरन घुरन छबि छहरत आनन ॥
स्याम सहेली अरु कुँवरि धरि-धरि कर मुसिक्यात।
चली महल तिय नवल हिय मदन निसान बजात
मदन निसान बजात हिये दृग बढ़ै बधाई।
कहि ललिताजू नवल नारि सुभ सौंनन आई ॥
फले सौंनजू किधौं कोऊ कुलदेव उपास्यो।
तिहिं मन बंछित किये हिये तें सब दुख नास्यो ॥
यह सुनि ललिताजू कहत नवल सांवरी नारि।
प्रिया बदन चितवत तहाँ कहत भई रिझवारि ॥
कहत भई रिझवार हौं जु रीझी तुम पावन।
मो मन की सब लही रही तुम तें न बचांवन ॥
जब उततें हौं चली इतै तुम कुँवरि मनावन।
मीनकेत कें जात देन बोली मिलि आवन ॥

॥ कवि बचन ॥

सुनि कै नवला चित चहे पूर्न भये अहिलाद।
सिमट संग की सब सखी देत मुबारकबाद ॥
देत मुबारकबाद चतुर सब सखी हँसौही।
कुँवरि सकुचि झुंझराय दृगन टारत सतरौंही ॥
हँसत हँसावत सखिन संग दुहुँ चले सदन कों।
महा रहिस रगमगे रसिक रति मदन कदन कों ॥
सिढ़ी अटारी के दुहू उतरत सखिगन माँहि।
चले पैंड़ छै दृग मिले छकि देखत रहि जाँहि ॥
छकि देखत रहि जाँहि दुहू पैरी द्वै द्वै पर।
बहुर सयानप सोधि चलत सकुचत जसु मतिडर ॥
यहि सुभाव दुहु चतुर उतर निज गृह दिस आये।
तहाँ मयंकि जु छपा पाँवड़े अगम बिछाये ॥

राका अमल अवास कै आगम लखि रिझवार।
आई चंदाननि लिये नवल सांवरी नार ॥
नवल सांवरी नारि पलट निज बेष नवीनो।
अरुन लपेटा सज्यो सेत नीमा तन भीनो ॥
प्यारी सारी सेत सरस झीनी जु सनी तन।
सुमनन भूषन सोभ जौन्ह अति जेव परी बन ॥
कोमल कुसम प्रजंक पै दुहुँ बैठे रसखान।
चंदाननि चातुर प्रिया प्रीतम रसिक सुजान ॥
प्रीतम रसिक सुजान चाहि मुख छबिनिध प्यारी।
रूप रसासव पान छके पल दृगन बिसारी ॥
रजनी चली बिहाय सुगल चतुरन सरसौंहें।
रहीं नेक कछु अलप प्रिया ह्वै छबि अरसौंहें ॥
ढोरत दृग मोरत नहीं आरस भरि सुकुवार।
नींद भरीं पिय लखि प्रिया त्रन तोरत थुथकार ॥
त्रन तोरत थुथकार देख इकटक छक छावत।
कहत न कछु मुख आन चतुर लै मुकर दिखावत ॥
प्यारी गहि तिह मुकर लट पिय सन्मुख सुकरहीं।
प्रीतम पुन मुख जोर लखन छक नाहि सभरहीं ॥
नवल रँगीले चतुर दुहुँ अरझे रंग बिहार।
देखत लालच परस पै पौढ़त नहिं रिझवार ॥
पौढ़त नहिं रिझवार जात सब रैन बिहानी।
रसिक चतुर दृग रीझ असर को अकथ कहानी ॥
जुरै घुरै द्रग ढुरै मुरै अरसौहें जागै।
सरसौहें रस रहसि प्रेम सुख चसक अथागै ॥

॥ दोहा छूटक ॥

जुगल नेह नव सुगल पुनि निभृत समय निकेत।
नवल नेह को टहल तहँ काहू जान न देत ॥
कहि जु सकै कवि मति कहाँ दम्पति नेह बिहार।
सन्त बिबेकी रसिकजन लीजै यह रससार ॥
नित नव नेहिन नेहनिध रसिलीने जिंहि मीन।
तिह आश्रय आश्रित रहौ सुन्दर कुँवर अधीन ॥

हरि गुरु वैष्णव कृपा तें हृदय भावनासार।
निज मति सम वर्नन कियो सुन्दर कुँवरि उचार ॥
सत्रह अरु नवदून सै संवत समय सुसिद्ध।
भादव मास सुशुल्क में छापि कियो परसिद्ध ॥
भादव मास सुकृष्ण पक्ष त्रियोदसी रबिवार।
रूप नगर मधि प्रगट किय वृन्दा विपुन बिहार ॥
जुगल नेह को नेहनिध परमानन्द निवास।
तिह मन मीन सुलीन कों दम्पति मिलै प्रकास ॥

॥ इति श्री नेह निधि सुन्दर कुँवर कृत सम्पूर्ण ॥
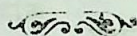
वृन्दावन गोपि-महात्म

॥ दोहा ॥

नाम गुप्त धन वेद को विष्णु ध्यान को भेद।
वंदत जिह पद रज रहौं मम मस्तग बिछेद ॥
श्रीराधा राधारँवन वृन्दा विपुन बिहार।
अगमनिगम कहि गाथ यह महा अलौकिक सार ॥
श्रीवृन्दावन मम प्रभू बंदौं जिन पद रैन।
इन प्रभाव चाहत कहन वृन्दावन जस बैन ॥
श्रीगुरु कृपा प्रताप जब ह्वै उदोत हिय मान।
तिमर नसै दरसै करन वृन्दा विपुन बखान ॥
यह श्रीवृन्दावन प्रगट परमानन्द निवास।
प्रलय समयहू होत नँहि सब त्रलोक ज्यों नास ॥
जहाँ निरन्तर सर्वदा नव नव नित्त बिहार।
करत रहत श्रीराधिका संजुत कृष्ण कुमार ॥
अन्तवन्त ब्रह्मादि हैं ज्यों वृन्दावन नाहि।
वृन्दावन अद्भुत महा कापै बरन्यौ जाहि ॥
नन्दसुवन वृषभानुजा हंस जुगल गति संग।
विहरति वृन्दा विपुन नित लीला अमित अभंग ॥
सबै पुरानन प्रथम यह या पहेल नँहि और।
तातें कहियत नाम यहि आदि पुरान सुतौर ॥
नैमषार्ण सुभ छेत्र में यही पुरान उमाहि।
नारदजू सउनकनसों कह्यो भले अवगाहि ॥

बिचरत बिचरत लोक सब नारदजू इक बार।
नइमषार्ण में सउनकन दरसन इछ्या धार ॥
बीना कर आवत भये मत्त ध्यान गुन गान।
लखि सब रिषि आदर करन उठि ठाढ़े भये जान ॥
बहु आदर जुत नम्र ह्वै पूजे रिषिवर पाय।
सब मुनिगन बोले कि पूर्न कृपा दरसाय ॥
भाग्य हमारे हैं बड़े तुम दरसन दिय आज।
हृदय हुतौ तम सो नस्यो पूर्न भये सब काज ॥
जन्म हमारो धन्य भौ आज कृपा रिषिराय।
एते दिन तप करन को भाग्य जोगि फल पाय ॥
तुम दरसन ज्ञानीन को दुर्लभ बस्त अगाध।
सो पायो बड़ भाग्य हम संसय भये जु बाध ॥
यह माया है विष्णु की अति अथाह बलवंत।
तामे सबही जक्त है मोहित महा अनंत ॥
सो माया त्रसकार ह्वै ऐसो कहौ उपाय।
नारदजू हमपै करौ पूरन कृपा प्रभाय ॥
जाही माया सूँ बँधे मोहित किते अनन्त।
गृह तजि२ वन में बसँहि तऊ न छूटत तंत ॥
जोगीश्वर यासों ठगे फिरि फिरि पावत देह।
हरि की माया प्रबल है लह्यो जात नँहि छेह ॥

केते अज्ञानी मनुष साधत जोग अभ्यास।
केउ दयारु दान पै रहत धार विश्वास॥
किते जज्ञ ततपर किते साधत कारज कर्म।
विध निषेध केऊ करत गहि प्रबुधिता मर्म॥
ऐसे जे जगमांहि हैं भाग्यहीन जन आंहि।
जे अपने सुभ श्रेयकों कारज समझत नांहि॥
ऐसे जे मँद भाग्य जन मूरख जगमहि कोय।
तिनहि मनोहर मूर्त को सुमरन कैसे होय॥
किह उपायते तरहिंगे मो कहिये रिषिराय।
नारदजू यह कर कृपा दीजै संस मिटाय॥

॥ श्रीनारद उवाच ॥

हर माया के रूप हैं अति दुर्गेय अथांहि।
ब्रह्म सुबादीहू लहत भेव पार तिहि नांहि॥
पूरन याको जानबे है सामर्थ न कोय।
हे रिषिवर उत्तम यहै सुनो भेव चित गोय॥
हरि की रची जु मोहनी माया रूप अनेक।
जिहि ईसुर प्रभु को कहत आवत कहा विवेक॥
श्रीहरि के अवतार हैं जक्तहि तारन काज।
सुछिम ब्रह्म सों भक्त रति कहा बढ़त सुख साज॥
प्रभु कों सुमरन गुन कहन अद्‌भुत कथा चरित्र।
पूरन पापी जे महा तिनहूँ करन पवित्र॥
जिनकी बात अथाग जे भजत हरिहि बड़भाग।
कौन कहन सामर्थ सों वहै भक्त सुखथाग॥
प्रभु पद प्रापति मे किते अंतर उपजत आन।
कोटि जन्म सुकृतिन ह्वै पूरन भक्त प्रमान॥
आनर सुर सेव अरु बन्धु समागम नित्त।
धन अभिलाषा विविध पुनि दृढ़ अभिमानी चित्त॥
सेव आन सुर के किये जे समझत सुख हौन।
लहत सुसागर पार भौ स्वान पूछि गहि कौन॥
सो नर पापी अधम जो करै आन सुरसेव।
माया मोहित जीवते परिहै नर्क सभेव॥

दुष्टा अधम अनर्थनी तजिकै निज पति नार।
चित दै कुकृत आचरै करै सु सेवा जार॥
तासों निंदै लोक सब होय जन्म धिक्कार।
परै अंधतम नर्क पुनि भुक्तै कष्ट अपार॥
आन देवते हैं सबै मन्त्री कर्मा काज।
अपने ही सुभश्रेय को कर नहिं सकत इलाज॥
करत आन सुर क्रोध अति अलप बनै अपराध।
सिवा तैंन सुख पावही सेवक सेवा साध॥
सिव की सेवा करि असुर नास वृकासुर पाय।
बाणासुर के बाहु बहु काटे कृष्ण रिसाय॥
सन्तोषत सुरराज कौं विश्वरूप मृत पाय।
आन देव आराध तें ह्वै विरोध दुखदाय॥
है श्री कृश्न सुभाव की रीति यही निर्धार।
जो विपरीतक प्रीति करि कैसहि भजै मुरारि॥
जिनसों करै विरोध कै अथ आराधन जुक्त।
देनहार हैं जे प्रभू दोऊ भांतन मुक्त॥
जिन आराधे गोपिका अरु मुनिगन हनुमान।
साधे पुनि भीषम नृपति जांबवान जुत ज्ञान॥
बकी अघासुर बक अधम धेनुक अरु सिसपाल।
पौंद्रक आदि असाधि के उद्धारे गोपाल॥
कृष्ण कुँवर वृजराज सुत आवत ही हिय मांहि।
उद्धारत या बात मै कछु संदेह सु नांहि॥
ऐसे प्रभु कौं विसरि जे भ्रमत प्रकृति बिच चाहि।
ते मूरख मँद भाग्यजन मानुष जन्म गमाहि॥
मल स्थान तापै मनुष मोहित क्रीड़त सर्व।
उपज बिन्दु ते जीव ये धरत श्रेष्ठ चित गर्व।
तृष्ना रूपी नदी जग बह्यो जात जड़ होय।
धनकै त्रषत दुखी महा समझत नहि विध कोय॥
सुख नहि रैन न दिन कबहु सोचत जन्म विहाय।
बहुतक द्रव्य जु पाइये ऐसो करौ उपाय॥

द्रव्य उपावन में कबहु प्रान बीच ही जाहि।
तौऊ ताकी सुध नहीं इक तृष्ना के मांहि ।।
प्रानी निज हित अहित कौं नाहिन जानत सोध।
अहिलोकरु परलोक के सुख दुख कौं नहि बोध ।।
खोवत तृष्ना मगन सब जनम मूढ़ ह्वै अंध।
ऐ पर समझत नहि गई आयुष वृथा प्रबंध ।।
दया सत्य सुभ धर्म की हिये न कबहू गोभ।
मित्रन हू सों मित्रता नाहिन बिन धन लोभ ।।
सुभ न असुभ मानत कछु मान और अपमान।
धन के हेत अधर्म की सेवा करै निदान ।।
ता करिकै ता द्रव्य सों उपजत किते अनर्थ।
नासवान वह अथिर धन साधन चाहत अर्थ ।।
वह धन स्त्री सुतन दै सुखी होत है चित्त।
भोजनकी अभिलाष फिरि विविध चाहि वहि वित्त ।।
उनही त्रियसुत अर्थ धन अपनो मानत मूढ़।
कबहुँ न कछु किहु साधकौं देत दुष्ट करि गूढ़ ।।
हरिजन कै मग दैन धन कबहुँ न होत उमाहि।
अहि लोकरु परलोक जो अषय द्रव्य ह्वै जाहि ।।
ग्रह मैं द्रव्य न होय तब उन कुटंब के काज।
ऋणहू करि तिन प्रश्न कौ करत अनेक इलाज ।।
जे आसक्त कुटंब मैं प्रभु पद आश्रय हीन।
कहाँ ज्ञान अरु सुख तिन्हैं मुनिगन सुनहु प्रवीन ।।
अरु गृह में धन होय निज सुभ मग दियो न जाय।
पापी अपने अर्थ हू नाहिन खाय लगाय ।।
अरु ऐसो अभिमान नित लये रहत चित ठांहि।
मोते अधिक जु कौन है या पृथ्वी के मांहि ।।
देसांतरहू जाय कै करत नृपन की सेव।
चित विचार ऐसो रहै यों कछु साधौं भेव ।।
करौं कार्ज ऐसौ कछू जातै बहु धन लेहु।
द्रव्य लैन में जो कबहु प्रान जाहि तौ देहु ।।
जग जन सब धनवान की सेवा करत लुभाय।
स्वामि दलिद्री कौं तजत सेवक धर्म लुभाय ।।
जब जाकै कोऊ नहीं तब ताकै श्रीकृष्ण।
दीनबन्धु सों तजि मनुष रचत वृथा जगतृष्ण ।।
गृह स्त्रिय सुत बन्धु सब दुख के दाता नित्त।
जबलौं निज सामर्थ तन तबलौं अपने मित्त ।।
प्रानी करै विचार यह ऐसो करौ उपाय।
तासों रहै निरोग तन अरु सामर्थ न जाय ।।
भरे रहत या देह में अहमित अरु अभिमान।
चित सुकाम आसक्त नित महा मगन अज्ञान ।।
ता करिकै अहिलोक हू साधि सकत नहि मूढ़।
अरु परलोक सुजान की सुधन धरत चित गूढ़ ।।
पाँच वस्तु प्रानीन कौं विधन रूप है नित्त।
आनदेव सेवनरु त्रिय धन संचन वृत चित्त ।।
पुनि कुटुम्ब की प्रीत अरु पंचम यह अभिमान।
इन बस ह्वै श्रीकृष्ण की भक्ति न करत अज्ञान ।।
भक्तिवान जन जे सबै हरि पद पहुँचे जाय।
भए पारखत ह्वै सबै भक्तहि कैं जु प्रभाय ।।
भाग्यवान हैं जे कबहुँ छिनहू तजैं न भक्ति।
जान मित्र श्रीकृष्ण जे झूँठ लखत सब जक्त ।।
जो पद प्रापत भक्तिसों होत अलौकिक आन।
सुपै कपट कर्मोन सुख कहांतै होय निदान ।।

।। सउनक ऋषि उवाच ।।

अहो नार्द जू श्रेष्ठ तुम पारखदन के मद्धि।
श्रीहरि के हौ पर्म प्रिय भक्त सु जक्त प्रसिद्धि ।।
गोपि रहसि लीला अमित लखनहार संकेत।
सो श्रीकृष्णहि छांड़ क्यों फिरत अलौकी हेत ।।

।। नारद उवाच ।।

हे ऋषि यातें फिरत हौं बिचरत बिच सब जक्त।
विषय कूप संसार में प्रानी है आसक्त ।।

काल सर्प ग्रह रूप के प्रानी डसे अज्ञान।
तिनकी दया विचारिकै उद्धारन हित जान।।
मनुषन बन्धन मोह है जग में पंच प्रकार।
ताहि निवारन को यही है उपाय निर्धार।।
एक सरन श्रीकृष्ण की परमानन्द उपाय।
जन्म-जन्म संसय सकल ता कर जाय बिलाय।।
गर्भवास बन्धन लहत जक्त जीव जा भांत।
सो ऋषिवर सुनिये सचित बरनौं गति बिख्यात।।
सुक्त स्त्रौन संजोग ह्वै गर्भस्थित दिन जास।
एक दिवस मैरूप इव त्रयदिन कलिल सुभास।।
सप्त दिवस में होत है यह बुदबुदा प्रमान।
एक पच्छ में कठिन ह्वै मांसन सीस निदान।।
त्रतिय मास में हाथ पद अरु चतुर्थवै मास।
उदर अंगुरी होत पुनि कछु-कछु रूपहु भास।।
धात मास अरु रक्त ह्वै मास पंच वै मांहि।
अस्त उदर पुनि नासिका षष्ठमास प्रगटांहि।।
मास सप्त में नेत्र मुख ह्वै नख रोम संजूप।
औज और सब देह कौं अष्टम हीनै रूप।।
नवम मास में होत यह सबही लछिन सजुक्त।
निज सुभ असुभरु ह्वै जनम पूरब सुमरन उक्त।।
तब यह करै बिचार चित केती देखी मात।
केतेही देखे पिता बंधव जन अरु भ्रात।।
मनुष पषी अनअन्य जे उतपत विविध प्रकार।
तेतै बिच सरबत्र में दुखही लहै अपार।।
मल अरु मूत्र स्थान बिच जरतै लपटचो देह।
महाकष्ट गर्भहि सहत अबभौ ज्ञान अछेह।।
तबै बिचारत हैं किए कौन-कौन में पाप।
परिपरि संकट गर्भसो सहत यहै दुख ताप।।
जौब कढौ या गर्भतै तौ हरि भजौ सदाहि।
जातैं लहौ न कष्ट यह फिर संकट दुख आहि।।
महादुखन तैं पुनि कढ्यो बाहर यह हरि इछिच।
बहुर वही मायामई भई बुद्धि परतछिच।।
हलन चलन बोलनन की कछू सक्त तिहि नांहि।
गुंग पंग केते दिनन पुनि सामर्थहु पांहि।।
बाणी भईरु चलन की सक्त सु पाई पूर।
पै अब वे प्रभु हृदयसों सघन करत यह सूर।।
आदि मध्य अवसान जे तिहूँ अवस्था मांहि।
हरि सरबत्र बिराजही मूरख जानत नांहि।।
श्रीहरि बिन या देह की छिन नहि स्थित रहंत।
ज्यों न सक्त कछु रहत हैं वस्त्र दग्ध कै तंत।।
जिनही प्रभु कै स्थित बिन मृतग कहावत देह।
जिनही हरिसों प्रीत नहि रचि बिच जक्त सनेह।।
जक्त मोह फँसि फिरिर सु परत नर्क निर्धार।
तातें है या मनुषकों हरि सेवन उपचार।।
प्रानी को यह चाहिये तजै बिषै सुख सेव।
करै भक्ति श्रीकृष्ण की परम प्रीति कै भेव।
जैसी विध करि यह भजै तैसे ही भगवान।
याकी करन सहाय को ततपर रहत निदान।।
जैसे सेवत कलपद्रुम होत मनोरथ पूर।
देत अलौकिक त्यों प्रभू बंछित आनन्द मूर।।
हृदय बिषै जे सर्वदा श्रीहरि कृपानिधान।
कारज जो उनसों बनै सो कर सकै न आन।।
बन्धु मित्र जे जगत के साधि सकत नहिं अर्थ।
ते सब कारज करन कै श्रीहरि हैं सामर्थ।।
जे सुमेर कों त्रण करै त्रण को करै सुमेर।
अगम करत सब सुगम जिन प्रभु कै नांहि नबेर।।
कोट रचत ब्रह्मांड औ पालत करत सँहार।
ऐसे प्रभु कों गहत जे आश्रय दृढ़ चित धार।।
जिनको सुर्गादिकन के तुक्षि भोग सुख लाग।
गनना गनै न सुरनवे जिन प्रभु सों अनुराग।।

।। इति श्री आदि पुराणे नारद सउनक सम्वादे प्रथमोध्यायः ।।१।।

॥ दोहा ॥

जिन मनुषन कै प्रीति की कृष्ण बिषै नितलाग।
तिनके लछिचन कहत हौं सो सुनिये बड़भाग॥
चाहत जे सुभ श्रेय निज तिनकी है यह रीत।
ईछत नहिं कछु कामना इक श्रीहरि सों प्रीत॥
ऐसे जे हरि भक्ति जिन सुर्ग बांछना नाहिं।
अष्टसिद्ध बिध लोक लौं पृथ्वी राजन चाहि॥
इन वस्तुन जे जानही अनितकाल आधीन।
पै मुक्तिहु चाहत नहीं वे हरि भक्त प्रवीन॥
अरु श्रीहरि धारन करी हृदय रमा जो नित्त।
तिह जुत सुर गनहू नहीं ऐसे प्रिय प्रभु चित्त॥
या संसारी लोक में स्वामी हैं जे कोय।
जिन रछ्या सेवक करत तब तिन रछ्या होय॥
श्रीहरि स्वामी करत हैं सेवक रछ्या नित्त।
सब विध से सामर्थ प्रभु भक्त जनन के मित्त॥

॥ सउनक उवाच ॥

पूछत रिषगन अब कहौ नारद जू यह बात।
कैसे वे हरि भक्त उन क्रिया कौन बिख्यात॥
कैसे लछिन भक्त के कौन स्वभाव प्रमान।
करै भजन किहु भांत सों प्रश्न करं भगवान॥

॥ नारद उवाच ॥

नारद जू कहत कि सुनहु कहौं भक्त गुन बर्न।
ह्वै अनन्य श्रीकृष्ण को दृढ़ चित धारै सर्न॥
साध सेव में नम्रता भाव सांत दृढ़ चित्त।
कहै सुनै श्रीहरि कथा करै गान गुन नित्त॥
नित सुमरन लाग्यो रहै श्रीहरि को चित मांहि।
ऐसे जन जो भक्त हैं जिन गुन गने न जांहि॥
स्त्रिय ग्रह सुत प्रान वित प्रियजन प्रिय ये बस्त।
बिसर सकल भ्रम गहि रहैं श्रीहरि सरन समस्त॥
ताको हरि छांड़ै नहीं क्योंहू काहू काल।
प्रभुहू की लागी रहै तासों प्रीत बिसाल॥
जैसे निसदिन जनन की हरि सों प्रीति बढ़ंत।
त्यों-त्यों हरि की प्रीति निज जन सों होत अनंत॥
निसदिन हरि सों प्रीति जिन जे हरि के प्रिय भक्त।
ते प्रभु बिन जानत नहीं और कछू बिच जक्त॥
हरि भक्तन की रीति यह सो सुनिये ऋषिराय।
गृह कारज हू करत पै सब प्रभु अर्थ लगाय॥
हरि समंध बिन देह निज स्त्रिय सुतबित ग्रेह।
इनहू की कछु चाह नहि रचि श्रीकृष्ण सनेह॥
जिनकों नित श्रीकृष्ण प्रिय मित्र प्रान आधार।
उन गुन कीर्तन करहि नित मगन वान ऊचार॥
श्रवन करै गावै उमँग बरनै बान बनाय।
मन छिन-छिन श्रीकृष्ण ही बीच रहै मड़राय॥
फिरत पगन सों छेत्र सुभ हाथन करही सेव।
प्रभु सरूप निरखै दृगन परम प्रीति कै भेव।
श्रवनन तें प्रभु गुन सुनै रसना ते जस गाय।
पहुप प्रसादी सूँघ ही नासा सों सुख पाय॥
प्रीत करैं वैश्नवन सों मन प्रभु सुमरन मद्धि।
हरि प्रसाद भोजन करै हित दास्युत प्रबुद्धि॥
हरि उत्तीरन तुलसी दल चन्दन सीस चढ़ाय।
प्रीत भाव सों लेय यह भक्तन कृपा कहाय॥
अबै भक्ति लछिन सुनहुँ हे रिषिवर बड़भाग।
जोग सास्त्र सुभ ठौर जिम प्रभु चरित्र चित पाग॥
कोऊ जिन अपमान करि बुरै कहै दुर्बाद।
तौ तिह उत्तर दै कछू नाहिन करै बिबाद॥
ए सबको हित ही करै करुना जुक्त सुचित्त।
सर्वहि को चाहत भलो दीन सहायक नित्त॥
छिमावान बोलन अलप लोकन करै पवित्र।
निसदिन बितवै भजन में सुमिरन प्रभू चरित्र॥
ऐसे निर्मल चित्त के जे महन्त जग मांहि।
पाय धार जे तीरथन करत पवित्र सबांहि॥
गनों पुरुष पुरुषारथ है यही बड़ो जग मांहि।

श्रीहरि को सेवन करै प्रेम प्रीत सरसाहि ।।
जोग सांध तप दान जग इत्यादि फल एह।
जैसो कृत तैसो सबै लघु दीरघ फल लेह ।।
सो सुर्गादिक पाय फिर परत जक्त में आंन।
तातें श्रीहरि भक्त बिन सबही वृथा बिधान ।।
वाणी वह जो कीजिये जासों हरि गुन गान।
मन वह ही जासों धरै श्रीहरि मूरति ध्यान ।।
नेत्र जु हैं जिनसों करै दरशन प्रभु को चाहि।
श्रवन जानिये जो सुनै श्रीहरि कथा उमाहि ।।
हाथ जानिये जो रहै हरि सेवा आधीन।
मस्तक जो करि दण्डवत रहै प्रभू पद लीन ।।
मनुष जन्म फल है यहै जो श्रीहरि सों प्रीत।
बिन स्नेह श्रीकृष्ण सों सो तन वृथा बितीत ।।
हरि पद मस्तक नवत नहि ताको योंही भार।
कथा सुनत नहि श्रवनन सों भीत छिद्र अनुसार ।।
जिन आंषन जु स्नेह जुत लखहि न प्रभू निहार।
मोर चँदउवा जानिये तेई द्दग निर्धार ।।
हरि मन्दिर चलि जाहि नहि जे पद जानहु वृच्छ।
प्रभु सेवा बिन हाथ ते जानहु काष्ट प्रतच्छ ।।
मानुष जन्म यह है वृथा बिन श्रीहरि के भक्त।
निरफल होत बितीत सब आयुर्बल बिच जक्त ।।

।। इति श्री आदि पुराणे नारद सउनक
सम्वादे द्वितीय अध्याय: ।।२।।

।। सउनक ऋषि उवाच ।।

।। दोहा ।।

नारद जू पूरन कृपा करि यह भेव बताहु।
नन्द पुत्र श्रीकृष्ण की प्रिय भुवकों न जताहु ।।
पर्वत प्रिय अरु प्रिय नदी प्रिय बन प्रिय जो गाम।
हमहि भेद यह कहहु अब बरन नाम अरु ठाम ।।
नारद जू ऐसे वचन सुनि मुख रिषवर वृन्द।
करत भए सउनकन की अस्तुत लहि आनन्द ।।
धन्य धन्य तुम श्रेष्ठमत हे रिषवर बड़ भाग्य।
जिनके हिय श्रीकृष्ण की पूरन भक्त अथाग्य ।।
तुम ऐसी पूछत यहै ताको कहा संदेह।
कृपापात्र श्रीकृष्ण के हौ प्रिय भक्त अछेह ।।
पूछत करि सन्देह तुम परम अलौकिक भेद।
सो कहि हों तुम प्रीत हित महा गूढ़ मत वेद ।।
मथुरा मण्डल भूम वह जोजन बीस प्रमान।
चक्र सुदर्शन विष्णु को जहां नित्त बसवान ।।
ज्यों वैकुण्ठ सथान त्यों मथुरा मण्डल जान।
तामहि बृज वृन्दाविपुन तिह समता न प्रमान ।।
जोगी सुर अरु जज्ञ तप जे करता जग माहि।
वृन्दावन की भूम यह तिनको प्रापत नांहि ।।
बृज भुव कालिन्द्री नदी है अतित्त प्रिय चित्त।
तहां विहरत श्रीकृष्ण जू परम प्रेम सों नित्त ।।
निजजन वल्लभ परम हित इककर पर दिन सात।
जिन धार्‌यो गिरिराज सो गोवर्धन बिख्यात ।।
वृन्दावन अत्यन्त प्रिय नित्त प्रेम उफनात।
तहा ते इकपल सुप्न हू कृष्ण जू अनत न जात ।।
नन्दीसुर बरसान ए गोप सथल के ग्राम।
तहां नन्द वृषभान नृप विलसत सुख अभिराम ।।
अष्ट सिद्ध नव निद्ध नित सेवत हैं वहि ठाहि।
बासी जे वाठौर के मुक्तहु चाहत नाहि ।।
बृजजन की सब कामना बांछत इक श्रीकृष्ण।
जिनके हित आधीन नित रहत नन्द सुत कृष्ण ।।
उन प्रभु सों कोउ कामना चाहत सोई देत।
देत मुक्त मुनि जनन कौं निज अनगणिता हेत ।।
चहत कामना ते सबै ठगे जात निर्धार।
निहकामिन कौं देत है दरसन कृपा मुरार ।।
साधन तपस्या दान वृत जोग जज्ञ अनपार।
इन कष्टन ते बात जो लहत नहीं निर्धार ।।

सो वृन्दावन सेवतै रहत अलौकिक सुख्य।
तिह महिमा कछु अगम है कही जात नहि मुख्य ॥
बृजजन सों अनरिणि कबहु होय सकहि नहि कृष्न।
जिन स्नेह आधीन ही रहत सर्वदा प्रश्न ॥
जिन श्रीवृन्दावन विषै द्वादस बन सोभंत।
इक मधुवन अरु तालवन पुनि वन कुमदल संत ॥
कलवन पंचम षिदरवन बिल्व सुवन ए षस्ट।
बहुर लोहवन जानिये भांडीर सु अष्ट ॥
नवम भाद्रवन कामवन इक दसमौ वन भद्र।
द्वादस मौ वृन्दाविपिन जहां गोवर्धन अद्र ॥

॥ सउनक उवाच ॥

तुम वृन्दावन श्रेष्ठता कही सु कैसे हेत।
क्यों ऐसी प्रथु भूम यह वेद कहत जिह नेत ॥
किह हित नित बिहार है यहठा कहिये भेव।
नारद जु हित दीन कै तुम दयाल हौ देव ॥

॥ नारद उवाच ॥

सुनहु गुप्त यह बात है कही किहुँ सौ नांहि।
महा एक आश्चर्य में देख्यौ ही इहि ठांहि ॥
एक समय में हौं गयो स्वेत दीप निज इछ्य।
नारायण जिह ठांम है अनुरध रूप प्रतिछ्य ॥
जिन मो आदर किय अधिक कहे बचन यहि रीत।
नारद त्वै उर भक्त करि तुमसो मो अति प्रीत ॥
लोक-लोक तुम फिरत हौ प्राणिन हित उद्धार।
मनुष लोक की है जु कछु कहहु दसा उच्चार ॥
कछु चरित्र अद्‌भुत जहाँ तुम जो देख्यो होय।
सब बिस्तर हमसों कहौ बात नारद जू सोय ॥
जगदीश्वर यहि रीति सों जब मुहि पूछी बात।
तब में प्रभु पद बंद कै बिनवत भयो बिख्यात ॥
मनुष लोक में है प्रभू कहूँ स्थिरता नांहि।
एक बात यह है भली तुम लीला गुन गांहि ॥
एक बात अद्‌भुत अबहि मैं आयौ हौं देख।
भरत खण्ड में एक है सरवर बड़ो बिसेख ॥
है गम्भीर अथाह जल आश्चर्यहिं तिह मद्धि।
दस मुनि परम समाधि लगि धारै ध्यान प्रसद्धि ॥
मुख तै कछु बोलैं न वै द्दगहू खोलत नांहि।
उनहि देखि आयो सु मो मन है संभ्रम मांहि ॥
सो वै मुनि यहि रीत सों कहा करत हैं ध्यान।
कहहु प्रभू अज्ञान के हौ ज्ञाता भगवान ॥

॥ श्रीअनुरुद्ध उवाच ॥

है अद्‌भुत यह नारद जू कहिबे की नांहि बात।
पै तुम अति हरिभक्त हौ तासों भेव बतात ॥
कृष्ण कुँवर राधारवन वृन्दावन के नाथ।
ध्यान मगन तिन मुनिन मन मूर्त्त मनोहर साथ ॥
एक बेर इनकों प्रथम ध्यान धरन अनुसार।
दरसन दीनौं हौं प्रभू रूप चतुर्भुज धार ॥
कह्यो प्रश्न ह्वै कै प्रभू मुनि माँगहु वरदान।
कहत भये ए मुनि सबै वर है यही प्रमान ॥
प्रभु बतावहु रूप निज कैसो है निर्धार।
कौन लोक प्रिय भूमि को किहठां बसहु मुरार ॥
कौन रावरो है प्रभु परमानन्द निवास।
सुनन जोग्य हम होंहि तौ कहिये भेव प्रकाश ॥

॥ श्रीभगवानुवाच ॥

मेरो वह निज रूप है जो श्रीराधा जुक्त।
प्रिय अत्यन्त वृन्दाविपुन जहँ बिहरत अनुरक्त ॥
भरतखण्ड भुवलोक में मथुरा मण्डल औन।
गोवर्धन गिरराज जहां नन्दगांव है भौन ॥
सरिता जमुना तट पुलिन मुहि अति बल्लभ नित्त।
ये अतित प्रिय ठौर मो सुनिगन मानहु चित्त ॥
किये कोटि विध कोट तप कोटिन किये उपाय।
श्रीवृन्दावन कों लहत आराधन सुखदाय ॥

जब प्रभु पूरन ह्वै कृपा सुकृत कोटि फलांहि।
तब श्रीवृन्दावन विषै तन त्यागनता पांहि ॥
एती कहिकै मुनिन सों हरि हुव अन्तरधान।
तब मुनि करि एकाग्र चित बहुर तपस्या ठान ॥
सावधान ह्वै ध्यान श्रीकृष्ण कुँवरि कों धार।
लीन होय किय उग्र तप धर-धर तन अनपार ॥
फेर-फेर धरि देह पुनि फेर-फेर तप कीन।
कोटिक बीते जन्म यों वृन्दावन रस लीन ॥
तब कलपांतर त्याग तन पुनि नबीन लहि देह।
श्रीवृन्दावन प्राप्त हुव छुटि तप कष्ट अछेह ॥
यह इन प्रेमाभक्ति सों गति मति लगी समाध।
अब ये मुनिगन पाय है सुख अत्यन्त अगाध ॥
श्रीअनिरुध प्रभु मुख जबै में यह सुयो वृत्यंत।
तब मुहि वृन्दा विपिन की बढ़ि अभिलाष अत्यन्त ॥
सुमरन धृन्दा विपुन कों में निज हृदय सपेष।
श्रीअनिरुध पद दण्डवत करतो भयो विशेष ॥
फिर में यों बिनवत भयो जो प्रभु आज्ञा पाहु।
तौ श्रीवृन्दावन विषै दरसन कों अब जाहु ॥
तब श्रीअनिरुध प्रभु कहो क्यों तुम होत अधीर।
नारद करहु स्नान श्री मानसरोवर तीर ॥
तुमकों दरसन दैहिगे कृष्ण कृपा सरसाय।
पूर्न मनोरथ रावरौ सब करि हैं सुखदाय ॥
आज्ञा या विध पाय मैं पुनि करि प्रभुहि प्रनाम।
आवत भौं मथुरा विषै मानसरोवर ठाम ॥
अति उमंग मो चित विषै मत्त करत गुन गान।
बीन बजावत आन में लख्यो सरोवर मान ॥
जिहठां बड़े वृक्ष बहु गुलम लता अनपार।
पवन त्रिविध अति मन हरन पंछी विविध प्रकार ॥
फिरत हंस चकवादि तहां करत कलोल उमंग।
सर कँवलन छबि सोभियत भ्रमत सु पुंजन भृंग ॥

जल पूरित सोभित महा सुन्दर सरवर मान।
कीनों जाय स्नान मैं तहाँ कृष्ण कै ध्यान ॥
तिह स्नान के करत ही हुव मो कन्या रूप।
सो में लखि चकित रह्यो अद्भुत भयो अनूप ॥
संभ्रम भरि सर तीर हो ठाढ़ी कन्या रूप।
तब ही इक आवत लखी साम्हु तिया अनूप ॥
सो नियरोही आन कै पूछन लागी मोहि।
अहे सखी तू कौन है कहा सोच चित तोहि ॥
कितते आई क्यों यहाँ बैठी कछु हिय हार।
चकित चित्त देखत कहा है तुहि कौन विचार ॥

॥ कन्या उवाच ॥

तब कन्या बोलत भई चकित चित्त तजि मौन।
सजनी मुहि जानत न में कित ते आई कौन ॥
मैं नहिं जानत नाम मम कहा जानौ कित ठाम।
मात पिता मेरे कवन कहाँ बसन को गाम ॥
अरु बैठी यहि ठाम सो यह कौ देस कहाय।
यहाँ बसत है कौन जन सखि तू कौन बताय ॥
तो दरसन तै मो हृदय लहत सखी आनंद।
यह का भेव जताय सो तू हरि मो भ्रम दंद ॥
हे सखि कैसी भूमि यह को सुख है यहि ठाम।
तू कितते आई रु तुव कौन नाम ओ ठाम ॥
जो यहि ठांही रहत तू तौ सब भेव बताय।
मेरे मन भय भ्रम महा सो यह सखी भनाय ॥
कन्या सों तब वह सखी लागी कहन प्रकासि।
है सखि वृन्दाविपुन यह परमानन्द निवासि ॥
या भुव ईसु बिराजही कृष्ण कुँवर घनस्याम।
लखि तिन छबि माधुर्जता मूछित ह्वै ही काम ॥
मोर मुकुट धारन किये पीत बसन बनमाल।
मधुर बजाबत मुरलिका नन्द सुवन गोपाल ॥
तिनकै श्रीसर्वेश्वरी प्रिया सु राधा नाम।
एक प्राण द्वै देह ये पिय प्यारी अभिराम ॥

कोटिन ससि उपमा कहैं नहिं मुख छबि कै जूप।
मन हरनी सुकुवार अति नखसिख अद्भुत रूप ।।
परम प्रिया श्रीराधिका गुननिध महा प्रबीन।
जिनकै रस बस रहत हैं कृष्णकुँवर आधीन ।।
जिन श्रीराधा संग नित निसदिन बिहरत स्याम।
ये ही ईसुर ईसुरी या वृन्दावन ठाम ।।
अष्ट सखी परचारिका जिन श्रीस्वामिन संग।
अवर वृन्द बहु सखिन के सेवत प्रिया उमंग ।।
परम अलौकिक ससि मुखी कोटिन गोपी वृन्द।
मधनायक तिन सबन में श्रीराधा नँदनन्द ।।
कुंज-कुंज सज्या कुसम विवधन सौंज विहार।
निसदिन केलि किलोल में विलसत सब सुख सार ।।
तहाँ जाय नहि सकत सुर जोगी पहुँचत नाहि।
दानी सिद्ध तपेसुरी तिनकी कहा गनाहि ।।
तहाँ सुता वृषभान की क्रीड़त सखिगन संग।
तिह छवि सम्पति देख कै ह्वै ही रति मति पंग ।।
नीलाम्बर गवरंगनी भूषन सोभ अपार।
जिन श्रीराधा संग नित विहरत कृष्णकुमार ।।
कन्या सुनकै बात यह बोली धार हुलास।
हे सजनी तुम लै चलो मुहि उनही के पास ।।
जौ लै चलहु न आप तें तौ आज्ञा लै आहु।
कृष्ण कुँवर जू सों अबै मो विनती पहुँचाहु ।।

।। नारद उवाच सउनक प्रति ।।

कन्या के ये वचन सुनि सखी गई वहि कुंज।
जहाँ विराजत हैं कुँवर कृष्ण सकल सुखपुंज ।।
आय सखी श्रीकृष्ण सों बिनवत भई प्रवीन।
हे बृजराज कुँवार हैं कन्या एक नवीन ।।
मान सरोवर तीर पै बैठी है सुकुँवार।
अंग-अंग माधुर्जता अद्भुत रूप अपार ।।
कहा जानिये कौन वह आई इहि बन ठाम।
नहिं कोऊ त्रिय लोक में ऐसी सुन्दर भाम ।।
हौं लखि आई वाहि इत है तिय देखन जोगि।
तुम जानत ही होहुगे वाकों सबै प्रयोगि ।।
यह सुनि कृष्णकुमार तब करि चित चोंप प्रवीन।
बढ़वत भये उमंग अति देखन तिया नवीन ।।
श्रीराधाजू सखिन जुत गोपी सकल समाज।
कहत भई चलि हैं हमहु देखन कन्या काज ।।
तब श्रीकृष्ण कुँवार इन कहत भये मुसिक्याय।
अति चंचल ही होत हैं स्त्रिय जात सुभाय ।।
कउतग देखन चलन चित सो नहिं रुक्यो रहंत।
पट भूषन हू सुधन ह्वै चाव चढ़न के तंत ।।
अप अपने भूषन बसन सुमिरन करो सँभार।
देखन कन्या कों चलो आछै सजि सिंगार ।।
रूप तिहारो देख ज्यों वह त्रिय चकित होय।
ऐसे सुनि श्रीकृष्ण के वचन सबन चित गोय ।।
सुमरन भूषन बसन करि सबन कियो सिंगार।
रास रीति ठाढ़ी भई सबै मंडलाकार ।।
सब तिय मंडल मधिलसत भानसुता श्रीकृष्ण।
मत्त भ्रमर चहुँ दिस भ्रमत दम्पति दरसन तृष्ण ।।

।। सउनक उवाच ।।

हे नारद जू गोपिका बहुत कृष्ण यक रूप।
कैसे विहरत सबन सों कहिये भेव अनूप ।।
यह क्रीड़ा कैसे समय भई हुती सुखसार।
आश्चर्य हमकों यहै कहहु कथा विस्तार ।।
परमानन्द सरूप यह महा अलौकिक बात।
हम अति श्रद्धा जुक्त हैं बरनहु कर विख्यात ।।

।। इति श्री आदि पुराणे नारद सउनक सम्वादे नारद कन्याति रूपनं तृतीय अध्यायः ।।३।।

।। नारद उवाच ।।

।। दोहा ।।

एक समय में हौं गयो सत्यलोक निज इच्छ।
तहाँ सभा में वेद श्रुत मूरतवान प्रतिच्छ ।।

ब्रह्मा जू सों मैं तहाँ पूछत भयो सन्देह ॥
कहत भये तब मोहि विध पूरन कथा अछेह ॥
सोई अब मैं कहत हौं सुनहु भले चितलाय ।
सब जग संघर प्रलय करि सोए प्रभु जलसाय ॥
प्रगटत भौ जिन नाभि तें एक कँवलता वार ।
तिह पंकज में विधि भयो प्रभु इच्छा अनुसार ॥
चहूँ ओर देखत भयो प्रगटत विध चकचाय ।
होय गये मुख चार तिह चहुँ दिस लखन प्रभाय ॥
अति भय तब विध कों भयो मैं कहँतै भौ कौन ।
किहठा हौं करिहौं कहा सोचत साधै मौन ॥
ऐसे सोचत विध कियो पंकज नाल प्रवेस ।
बिते एक सत बरष तिह हेरत नाल असेस ॥
तहां विष्णु भगवान प्रभु भँवर रूप धरि आय ।
ह्वै अजान पूछत भये को तू नाम बताय ॥
विध बोले तुम ही कहौ जो जानत हौ नाम ।
यह सुनिकै भृङ्गादिपति कहत भये गुन धाम ॥
हे ब्रह्मा तुम सुनहु अब सावधान ह्वै बात ।
जो तुम पूछत भेव सो कहिहौं करि बिख्यात ॥
सगुन अलौकिक बिश्न कौ रूप नित्त है जान ।
उन बिहार अनभंग वे सबकौ कारन मान ॥
उनही कै है नाभि तें यहै कँवल सब सिष्ट ।
वेई जो इच्छा धरत सोई करत प्रतिष्ट ॥

॥ ब्रह्मा उवाच ॥

नित लीला श्रीविष्णु की कैसे हैं किंहि ओक ।
वैकुण्ठ किस तिलोक किधों नागलोक सुरलोक ॥
मृत्यलोक गोलोक पुनि औरहु जिहठा होय ।
कहहु भृङ्ग लीला सबै गुपत प्रगट जो कोय ॥

॥ भृङ्ग उवाच ॥

एक हुतौ सुकरूप मुनि जिंहि यह पूँछी बात ।
सोई पँछत तुम यहै भेव महा अज्ञात ॥
सो रहस्य कहिहौं अबै ब्रह्मा सुनहु सचित्त ।
जाको भेव न लहत कोउ जो लीला है नित्त ॥
सत्त्वादिक गुन है न जहँ ससि सूरजहू नाँहि ।
जहां जरा अरु सोक नहिं नहिं मत्सर जिंहि ठाँहि ॥
जिन पुर में मुनि है जिते धारै पंछी रूप ।
बिश्न चरित गावन सुनत ह्वै इक चित्त अनूप ॥
तहां एक सुक भ्रमर सों पूँछत भयो विचार ।
तब ताकों वहि भृङ्ग जो कह्यो सु कहिहौं सार ॥

॥ भृङ्ग प्रति शुक उवाच ॥

विष्णु रूप लीला कहाँ है क्रीड़ा को नित्त ।
भूम नदी नग गाम है कौन प्रभुहि प्रिय चित्त ॥

॥ भृङ्ग उवाच ॥

परम अलौकिक गूढ़ मत पूँछत सुक तुम भेद ।
सो कहिहों कछु बरनि जिंह नेति नेति कहि वेद ॥
अगिनत स्त्रिय गनन कै संग कुँवर श्रीकृष्ण ।
नृत्य गान बाजित्र जुत क्रीड़त रहत सप्रष्ण ॥
कृष्ण बसत अनुराग बस कबहूँ अनत न जाहि ।
तातै वहि भुवकों कबहुँ तजत बिवेकी नाहि ॥
वा भुवकों जानत सु मैं अनुरध सनत कुँवार ।
विध शिव नारद ये लहत भेव अलौकिक सार ॥
और कोऊ जानत नहीं भेद रहस रस मूल ।
जहाँ बसत श्रीकृष्ण प्रभु जिन ईश्वरजत भूल ॥
श्रीवृन्दावन भूम है रमण स्थल एकंत ।
नव किशोर मूरत जहाँ नित्त कृष्ण बिहरंत ॥
द्वादस बन तिनकै विषै वृन्दावन सोभ्यंत ।
सो यह बन श्रीकृष्ण कौं है वल्लभ अत्यंत ॥
जिंहठां गोपी गोप अरु जे थिर चर बसवान ।
सर्व रूप ह्वै आप ही बिहरत स्याम सुजान ॥
सम श्रीवृन्दा विपुन कै नहिन आन वन कोय ।
त्योंही वृज गोपीन कै जूप न ह्वै त्रिय कोय ॥

निज मूरत अस्त्रीन सों नित बिहरत श्रीकृष्ण।
महापुरुष जिनकौ कही अब यह सुनहु सप्रष्ण ॥
तीन कोट है वल्लभा कृष्ण कुँवर कै संग।
तिन समाज में बिलसही नित प्रति सहित उमंग ॥
किती निर्तकारिकनि पुनि केउ बाजित्र बजात।
जे प्रबीन अति गान में ते तानन उपजात ॥
महा प्रबीन युत ते किती बीरी देत बनाय।
विविध प्रकार सिंगार केउ पिय कै रचित लुभाय ॥
इत्यादिक बातन विषै गोपांगना प्रबीन।
अति रिझाय श्रीकृष्ण कौ रहत सेव में लीन ॥
श्रीकृष्णहु जिनकै विषै रसबस क्रीड़त नित्त।
जिनमें जुथेसुरीन के सुनहु नाम दै चित्त ॥

॥ श्रीजुथेसुरीन के नाम ॥

बिंधुलदा ॥ बिधुमती ॥ सुनन्दा। रंगा राग ॥
कार्मकी ॥ कंदा ॥ स्वरागनी ॥ नन्दनी ॥
बिरागा। नाद नन्दनी ॥ धना ॥ सभागा ॥
नेत्र सुभाग्यः सुभगा ॥ भामा। मोद मना ॥
सतस्विनी ॥ धनेश्वरि। रत्यप्रिया ॥ हरहरा ॥
मनोहरि ॥ भाव प्रमोदनि ॥ मुक्ता धना ॥
मनोहरा ॥ मालती ॥ सु सुमना ॥ माध्वी ॥
मलया ॥ श्रिया मनोगा। मंदालसा ॥
रंग रस भोगा ॥ मनोजभिष्टा ॥ मनो सावला ॥
चित्रा ॥ वेत्रवती ॥ रु ॥ चंचला ॥
भावनभेदभिदा ॥ अरु ॥ चपला। काम प्रमोदनि ॥
कांताकला ॥ कलोतमा ॥ बिद्रुता ॥ सुनन्दा ॥
कलाभिगा ॥ रुमनो भव कंदा ॥ कलावती ॥
नादनी ॥ धनिष्टा। मन्मच्छा ॥ वनलता ॥ रु ॥
जिष्टा ॥ मनो मथोद ॥ मंजुका ॥ हंसी।
नयनोत्सवा ॥ चन्द्रस्या ॥ बंसी ॥ भद्र अनंगा ॥
चन्द्रमण्डला ॥ कनकांगी ॥ कन्दर्पा ॥ सरला ॥
चकी कुरंगा ॥ मनो रसाहा ॥ मनोनिता ॥

गोमती ॥ सु भाहा ॥ हंस जुगमना ॥ धना मंजुरी।
चलि भाषणि ॥ रु ॥ बलिष्टा ॥ घुरी ॥ बरांगदा ॥
बिसदासय ॥ कृष्णा। चखी विशाल बिसाखा ॥
प्रश्ना ॥ कृष्णावती ॥ भवा ॥ भव भेदा।
प्रेमवती ॥ नागरिका वेदा ॥ नव वासा ॥ रु ॥
नवांगा ॥ सांता। प्रेम कारनी साध्वी ॥ कांता ॥
काम प्रदायन ॥ मुदतानैना भेद भवा आनंदा ऐना ॥
रमा ॥ प्रमोदा और ॥ अमिदा ॥ भद्ररेख का ॥
पुनि ॥ मधु सिदा ॥ लता ॥ वशिष्टा ॥ मान ॥
माधवी ॥ मधुमुखि ॥ मुदिता ॥ प्रेम साधवी ॥
मन्द गामनी ॥ एमनि ॥ रँमता ॥ रतिनेष्टा ॥
रुविवोष्टी ॥ समिता ॥ कृष्णो ॥ दरि ॥ अरुबेला ॥
रामा ॥ वारांगनि ॥ वरवेदा ॥ श्यामा ॥
बेलय भाषिश्ना ॥ रुविद नोदनि।
बलोनिता बल्लवी ॥ सुमोदनि ॥ परा ॥ बालका ॥
और पावनी ॥ परोदसा ॥ भद्रांगि ॥ भावनी ॥
देवतललनां ॥ अरु ॥ दयदेवी ॥ अनन्तभद्रा ॥
हरिप्रिया सेवी ॥ भद्रभांवनी ॥
और विलासनि धात्री ॥ धर्मपिठा ॥ सुखरासनि ॥
माध्वी गुजरी ॥ श्रिया ॥ अंगदा ॥ रसा ॥
मंदगा ॥ अरु ॥ अनंगदा ॥ परमा ॥ सुरमा ॥
पारा ॥ पाता ॥ समकर्ना ॥ परवती ॥ रुवाता ॥
रतिजांमनी ॥ समोष्टी ॥ कांमिन ॥ प्राणा ॥
मदना ॥ अरु ॥ सोदामिन ॥ मन भावन ॥
ससिकला ॥ पंजका ॥ चन्द्रावति ॥ श्रांजनी ॥
कंजका ॥ मनोहरा ॥ मणिमुक्ता ॥
भगता भद्रावली ॥ सु ॥ चम्पावती ॥ बीरवती ॥
अरु चम्पककली ॥ प्रेमा ॥ माननि रसवतीफली ॥
मन्दालिता ॥ खँडिता ॥ मित्रा ॥ पाटोलिका ॥
सुखण्डा ॥ चित्रा ॥ बिरुथनी ॥ उज्वला ॥
तिलोमा ॥ वृजबल्लवी ॥ सुगन्धा ॥ सोमा ॥

भोगप्रदा ॥ वैकुण्ठ मंजरी ॥ रसा ॥ बज्रगन्धा ॥
॥ रु ॥ कुंजरी ॥ भद्राहरणी ॥ भद्रसुरेखा ॥
चन्द्रामुखी ॥ प्रबीन ॥ अलेखा ॥

॥ इति श्री आदि पुराणे ब्रह्मा प्रतिकंजनालल
मध्ये नारायण भवर रूप सम्वाद भृङ्ग
शुक मुनी दृष्टांत साख चतुर्थ अध्याय ॥३॥

॥ चौपाई ॥

मंजू ॥ मेधा ॥ और ॥ चरित्रा ॥ चन्द्रसुतिलका ॥
मोदनि ॥ मित्रा ॥ समुन्दरा ॥ अरु चित्रादेवी ॥
कंदराछिका ॥ हरासुसेवी ॥ सोरभ सेनी ॥ अरु ॥
रसालिका ॥ सुंमधा ॥ तन मध्यमा ॥ बालिका ॥
कवरी ॥ नाग वर्नका ॥ प्रदागुणचूड़ा ॥ परकांमा ॥
हृदा ॥ मंजुकेसी ॥ कन्दर्प सुन्दरी ॥ मंजूवक्ता ॥
गुण छबि भरी ॥ हृदलेखा ॥ सुछिगन्धा ॥
नागरि ॥ अतिवलिता ॥ पटुघाषण ॥ आगर ॥
मनोजवा ॥ सुसंगता ॥ हारा ॥ परंमता ॥ रु ॥
प्रमीला ॥ बारा ॥ परात्मका ॥ कलिता ॥
कलिगामिन ॥ परोतकर्षा ॥ चंचल ॥ भांमिन ॥
लाववरा ॥ सुभारहा ॥ वरमा ॥ नेत्रा ॥ चारु ॥
सुअरु ॥ तिलोतमा ॥ चलोन्मेषा ॥ बिमल ॥
चाँदनी ॥ प्रियेसखी ॥ रजई ॥ स्व ॥ जमांनी ॥
परप्रांणा ॥ परिखा ॥ कलि केसी ॥ कलिभावा ॥
यतदा ॥ शुभ वेसी ॥ कलांजरी ॥ परप्रीताभीरा ॥
चलिभाषणि ॥ चपला ॥ मतिधीरा ॥
चलिक्रीड़ा ॥ चलोतमा ॥ यामनि ॥ पान सुपात्रा ॥
अरु परपावनि ॥ चतुरा नैन ॥ चन्द्रनी ॥ पर्षा ॥
परप्रीता ॥ रु ॥ पटोद्या ॥ हृर्षा ॥ कार्ज पटी ॥
परकामा ॥ भिलुका ॥ ज्वलता ॥ योखा पतिवा ॥
तिलुका ॥ प्रदायनंदा ॥ सयाजसधना ॥ जलजाक्षी ॥
जयप्रदा ॥ सुरमना ॥ भावावाल ॥ जामला कामा ॥
यमता ॥ मंजुपाण ॥ वनभामा ॥ मंजुपदा ॥
वरदीप्त ॥ बसाकर ॥ विशुद्ध बुधा ॥ बिधु बदन ॥
प्रेमसर ॥ मनोरमा ॥ अरु ॥ रंग संगता ॥
कंज नाभिनी ॥ रथा ॥ बनसता ॥ भावल वला ॥
॥ रु ॥ भव प्रणोदनी ॥ बरांगना ॥ औ बनामोदनी ॥
बनोत्सवा ॥ बनबंधु बिसेषा ॥ बनभामा ॥ बनमंजु ॥
सुवेषा ॥ बनानुजा ॥ वनभू ॥ बनसोजा ॥
पोखमंजु ॥ बृजनला ॥ मनोजा ॥ बृजांगना ॥
बृजबधु बृजेसा ॥ बृजोत्सवा ॥ बृजकेलि ॥
सुवेसा ॥ परम बृजेस प्रिया ॥ बृजवाला ॥
घोख सु वृन्दा ॥ सुभा रसाला ॥ घोसेसुरि ॥
॥ जु ॥ बिलासनि ॥ कामिनी ॥ घोषलता ॥
नित्या ॥ छबि दामिनी ॥ घोखानन्दी ॥
आनँदकन्दा ॥ नन्द बिनोदनि ॥ भान सु वृन्दा ॥
चन्द्राबिन्द ॥ किशोरी ॥ मोहनि ॥ वृन्दाकाम ॥
कलापटु ॥ जोहनि ॥ नयकांता नयांनगा ॥
नेता नीतवाकि ॥अनियोदर वेता ॥ नयन सुकान्ता ॥
और अनेया ॥ अनयोदरा ॥ अनोदरि ॥ प्रेया ॥
सर्व युथ पुरा ॥ यनोदनी ॥ बिसखा बिश्वांगुणा ॥
मोदनी ॥ शुभा गुनवती ॥ येते नाम ॥
कहे गनाय मुख्य अभिराम ॥
हैं इन आदि और जूथेसुरि ॥
उमा रमा नाहिन जिन समसर ॥
श्रीराधा सहचरि प्रबीन अति ॥
महा मनोहरि अनुरागनि वति श्रीराधा
सों जिन अनुराग । छिन छिन बाढ़त रहत
अथाग ॥

॥ दोहा ॥

सर्वोपरि राधा सखी अष्ट रूप इक प्रान ।
जिन लच्छिन गुन रूप जुत सोहौं कहत बखान ॥

श्रीराधा ही रूप ये संगनि एक समान ।
कछु लघु तातै ह्वै सखी रहही महा सुजान ।।

।। चौपाई ।।

पिता बिसोक शारदा माता ।
जिन तनया ललिता बड़ ज्ञाता ।।
अति सुन्दर पंडितता पूर ।
बसन भांत जिन पछ्छ मयूर ।।
ललित अरुनता गउरत रंजन ।
गोरोचन मनु ससिपै मंजन ।।
श्री ललिता दम्पति मन भावन ।
अति प्रबीनता मोल बनावन ।।
पावन जनकरु मात दच्छिना ।
सुता बिसाखा सुभग लच्छिना ।।
लखि जिन तन छबि दामिन लाजत ।
तारा मण्डल बसन बिराजत ।।
साम दाम भेदन में चातुर ।
जुगल प्रेम रस लोभित आतुर ।।
श्री राधा कै बसन बनावत ।
नित प्रबीन नव रुचि उपजावत ।।
राम पिता रु वाटिका माता ।
या चम्पकतनलता विख्याता ।।
चम्पक भूषन चम्पक बरनी ।
नीलाम्बर धारै मन हरनी ।।
दूती ह्वै दुहुँ बिच अनुसरिही ।
विंजन विविध रुचिर विस्तरिही ।।
षटरस विंजन जुग मन भावन ।
सो रुचि रुचि रतिसों जु जिमावन ।।
मात चर्चिका चातुर पिता ।
सुता सुचित्रा देवी सुमिता ।।
अंग मनोहर कुंकुम उपमति ।
केस सुधारन में प्रवीन अति ।।

मुकुर काच कै रंग बसन जिन ।
जोतिस को अभ्यास महा इन ।।
त्रिकालज्ञ सब शास्त्र परायन ।
सब सुभ विद्या पूर सुभायन ।।
सीच सुगन्ध सलिल ये चातुर ।
दम्पति तृषा हरन हित आतुर ।।
पुक्कार पिता सुमेधा माता ।
सुता तुंग विद्या बिख्याता ।।
सहजहि कुंकुम अंग सुगन्धित ।
बसन सेत बिच बूटे चित्रित ।।
अंग अंग सुन्दर जित सोभा ।
गवरंगी नाजुक छवि गोभा ।।
विद्या शास्त्र सकल पारंगति ।
भाव भेद संगीत रचन अति ।।
राखत नित कर बीन प्रवीन ।
श्री राधा हित नित चित लीन ।।
दम्पति विषैं संधि मति चातुर ।
रैन विलास बढ़ावन आतुर ।।
दम्पति चित की रति मति जाननि ।
नव नव न्यत प्रबीन्यत ठाननि ।।
बेला जननी पिता सु सागर ।
सुता इन्दुलेखा गुन आगर ।।
वरन जास पियरोही सोभै ।
जुगल प्रीत छिलही बढ़ि गोभै ।।
झरी कंज पर जनु हरतार ।
मनो हरन माधुर्ज अपार ।।
सुन्दर अंग अंग छबि अद्‌भुत ।
कुसम अनार रंग पट धारत ।।
बातें करन प्रबीन्यतु भायक ।
काम शास्त्र वक्ता सुखदायक ।।

बसीकरन के मन्त्र जाननी।
महा चतुर सौभाग्य माननी॥
कुंकम मलय आदि लेपन अति।
विविध भाँति चित्रित तन दम्पति॥
भेव दूतिका मैं अति नागर।
गृह भंडार भार सब इन कर॥
रंग सार इन पिता सुजानहु।
करुणा माता नाम प्रमानहु॥
सुता रंगदेवी सुकुँवार।
वरण कंज केसरा प्रकार॥
अद्भुत गवर रंग अति सोहन।
आभा मनहु अलौकिक जोहन॥
नखसिख सुन्दरजित अद्भुत छबि।
जाय कुसुम के रंग बसन फबि॥
मृग मद कुंकुम मलय कपूर।
अति सौगन्ध सलिल मधि चूर॥
बानक चित्र विचित्र बनावत।
धूप पास दैके ससु कावत।
जुगल बिनोद हेत रुचि आंवहि।
तैसेही सिंगार करांवहि॥
समय २ दम्पति दुलरावै।
लिखि २ चित्र सु प्रिया रिझावै॥
देव बन्धु पित्त मात सु देवी।
यमुना सुता परम सुख सेवी॥
मुख भगनी कहि बोली राधा।
तातै सखी भई सुख साधा॥
परम प्रबीन महा सुकुवार।
अंग अंग माधुर्ज अपार॥
नीलिंदीवर वरन मनोहर।
पीत बसन उपमा नहिं सर भर॥

उबट प्रिया तन स्नान करावै।
विविध टहल मन बंछित पावै॥
पाला राखन कौ अधिकार।
कैसे वरनौ भाग्य अपार॥
सखी अष्ट ये राधा संगनि।
अति प्रवीन गुन रूप बिछचिछिन॥
सेवन प्रिया प्रीत सों करही।
नित बिहार कुंजन अनुसरही॥
॥ इति श्री आदि पुराणे जुथेसुरीन के नाम वर्णनों पंचमोध्यायः ॥५॥
॥ शुक उवाच भ्रमर प्रति ॥
॥ चौपाई ॥
अहो भृङ्ग तुम महा सुजान।
श्री राधा कुल कहौ बखान॥
कौन बंस में प्रगटी राधा।
हरन कृष्ण हिय की सब बाधा॥
तिन के मात पिता अरु भ्रात।
कौन नाम है कहौ बिख्यात॥
मेरे भाग्य दीर्घता भासी।
तुम ताते यह बात प्रकासी॥
॥ भृङ्ग उवाच ॥
हे सुक धन्य धन्य तेरी मति।
श्रीराधा गुन सुनन श्रेष्ठ रति॥
गाम नाम आरष्टो ठाम।
भयो अरिष्ट खेण नृप नाम॥
सर्वोपर बड़ गोप कहावत।
ताकी महिमा वेद न पावत॥
सबै सम्पदा पूरन ऐसी।
कबहूँ लखी कुबेर न तैसी॥
बिलसत सुख संमृध मन भाये।
गोपराज गोपाल कहाये॥

तिनकैं महाभान सुत जानहु।
जिनकै भये सु भान प्रभा नहु॥
नीप भान जू जिन कै भये।
जूप भान तिनकैं प्रगटये॥
भये दयाधि भान जू जिनकैं।
धर्म धीर भानजु सुत इनकैं॥
इनकैं मही भान जस सागर॥
जिनके नौ सुत भये भाग्य वर।
जिनमें श्रीवृषभान महीप॥
जिन बंदत सुर नर सतदीप॥
हंस बंस जिन सोधनि धन्या।
इनके चार पुत्र द्वै कन्या॥
सुन सुक अब इन नाम बखानत।
धन्य भाल कृत मेरे मानत॥
वृन्द बन्धु मन सोख्य बिचच्छन।
त्रतियस्तोक कृष्ण शुभ लच्छन॥
अरु चतुर्थ श्रीदामा भये।
चहुँ श्रीकृष्ण सख्यता ठये॥
कन्या राधा और गोमती।
महा सुन्दरी शुभ गुनवती॥
महा अलौकिक राधा कन्या।
परम पावनी है धनि धन्या॥
बंछित जाकी कृपा विष्णु नित।
धारत ध्यान लाय अति हित चित॥
नेति नेति जिह वेद बतावत।
विध शिव भेद पार नहिं पावत॥
जिह पद बंदत सेवत कृस्न।
अति आधीन रहत करि प्रश्न॥

॥ शुक उवाच ॥

अहो भृङ्ग श्रीराधा बंस।
बड़े भाग्य हम सुन्यो प्रशंस॥
कृष्ण कुँवर को बंस कहौ अब।
जाके सुनत पलावत अघ सब॥

॥ भृङ्ग उवाच ॥

हे शुक तुम पूँछत हौ बिस्तर।
महा अलौकिक बात मनोहर॥
वृन्दा विपुन बिहारी कृस्न।
बृज वासिन कै हित बस प्रश्न॥
नित्त विराजमान सर्वेश्वर।
पूरन ब्रह्म अनाद विश्व वर॥
जन्म कर्म जाकै कछु नाहीं।
कुल न क्रिया अरु सदा अचाहीं॥
तऊ मनोहर धार सरूप।
क्रीड़ा करत अनेक अनूप॥
इनहीं के हैं रूप अनेक।
ये साक्षात कृष्ण हैं एक॥
पूर्न प्रभू बृज विपुन बिहारै।
अंस कला अवतार सु सारै॥
आपहि पिता रु आपहि माता।
आप कुटुम्ब आप ही भ्राता॥
सगरे कुल के आप करैया।
आप ही में सब लोक धरैया॥
ये पर प्रेम प्रीत बस साचै।
भक्त नचावत त्यों त्यों नांचै॥
जिनके जन्म कर्म की कथा।
हे शुक बरनत हौं मत जथा॥
भेद अलौकिक गुप्त यहै है।
नेति नेति जिह वेद कहै है॥

अब सुन कृष्ण बंस अभिराम।
इक आभीर भान नृप नाम॥
गोधन पालक वृत ये गहैं।
गोपराज तातें सब कहैं॥
बसत महा वन जुत परवार।
विलसत सुख सम्पद अनपार॥
पुत्र चन्द्र सुरभी भौ जिनके।
महा बाहु सुत प्रगट्यो तिनके॥
कंज भान इनके सुत जानहु।
बीर भान जिन पुत्र प्रमानहु॥
धर्मबीर जिनके सुत भये।
इनकै धर्म—श्रवा प्रगटये॥
प्रगटे काननेंदु सुत तिनकै।
दसमें चित्रसेन सुत जिनकै॥
काननेंदु सोइ देव मीढ़ कहि।
चित्रसेन पर जन्य नाम लहि॥
जिनकै नौ सुत भये प्रशंस।
महा भाग्य मानहु ससि बंस॥
जिनमें श्री महराजा नंद।
जिन तिय श्री जसुदा सुखकंद॥
तिनकै कुंवर भये श्रीकृष्ण।
वृजजन तन मन मोचन तृष्ण॥
नित बिहार वृन्दावन जिनको।
मोहन नाम कहत सब इनको॥
गोधन वृन्दारन्य चरावै।
रुचिर केलि नित नव उपजावै॥
सखा संग लै वन वन डोलैं।
महा मनोहर करन कलोलैं॥
वृज की गोप सुता सुकुँवार।
विहरत तिन संग विविध बिहार॥

तीन कोटि गोपी मन भायक।
सब स्वामिनि राधा मधि नायक॥
जिन श्रीराधा रस बस लीन।
मोहन रहत नित्त आधीन॥
राधाकृष्ण आतम सद्रूप।
नहि त्रिलोक उपमा जिन जूप॥
जिन संग तीन कोटि ये गोपी।
शोभित जुगल प्रेमरस ओपी॥
तिन मधि बिहरत पिय घनश्याम।
महा मगन वृन्दावन धाम॥
त्रय प्रकार लीला श्रीकृष्ण।
करत रहत नित प्रति अति प्रष्ण॥

॥ शुक उवाच॥

हे अलि श्रीराधा संग गोपी।
तिनकी सुनी बात रस ओपी॥
अब श्रीकृष्ण संग के सखा।
बरनहु जे रस बस हित पखा॥

॥ भृङ्ग उवाच॥

एक कोटि मोहन के सखा।
तिन में इक सौ मुख सुख लखा॥
तिनके नाम गिनाये नीके।
आदि पुराण मद्धि कै टीकै॥
बल्लभ महा कृष्ण कौं ते सब।
पुलकत अंगन भेटत मिलि जब॥
गोपी गोप गाय सब थिरचर।
वृज के दिव्य रूप आपहि हरि॥

॥ भृङ्ग रूपी नारायण उवाच विधि प्रति॥

हे विधि जो सन्देह कियो तुम।
सो अलि शुक सम्वाद कह्यो हम॥
महा गुप्त सो गुप्त अपार।
सकल तत्व सारन को सार॥

यहै अलौकिक भेव बात है।
सो मैं तोसों किय बिख्यात है।।
भाग्य मान यहि हिय में राखहु।
याको पात्र हेर कहुँ भाषहु।।

।। ब्रह्मा उवाच ।।

हे अलि चित अंतर जिन गहौ।
भ्रमर रूप तुम को हौ कहौ।।

।। भृङ्ग प्रभु उवाच ।।

हे बिरंचि मेरो यह रूप।
कौन लहत तें लह्यो अनूप।।
ताकी यह प्रापतिता पाई।।
सो निज भाग्य मान सरसाई।।

।। विधि उवाच नारद प्रति ।।

हे नारद ऐसे अलि कहिकै।
गुप्त भये मेरो मन गहिकै।।
तब मैं उनको करि पर नाम।
आयो कंज कर्नका ठाम।।
ध्यान कर्‌यो मैं बैठि कंज वहि।
पुनि रचना जग रची प्रगट तहि।।

।। नारद उवाच सउनक प्रति ।।

हे ऋषि मोसों विध व्याख्यानी।
सो मैं तुमसों यहै जतानी।।
तुम यह सुनी बात रस रूपा।
मोहि बढ़्‌यो आनन्द अनूपा।।
ऐसी अद्‌भुत भुव वृन्दावन।
हरन हार जो नन्द कुँवर मन।।
जाकी कथा सुनै अरु कहै।
ता पर कृष्ण कृपा अति रहै।।
यह श्रीवृन्दा विपुन अपारे।
जहाँ कृष्ण ईस्वर्ज तहारे।।

यह गाथा जो सुनै सुनावै।
जापर जुगल कृपा सरसावै।।

।। इति श्री आदि पुराणे नारद सउनक सम्वादे श्रीराधाकृष्ण जन्म कर्म कथन षष्टमोध्याय: ।।६।।

।। सउनक प्रति नारद उवाच ।।

।। चौपाई ।।

हे ऋषि तुम पूछी यह बात।
सो मैं वरनी करि बिख्यात।।
अब वह मानसरोवर तीर।
भयो हुतो मो लिया शरीर।।
सो कन्या वह बैठी जहाँ।।
कृष्ण कुँवर आवत भये तहाँ।
संग लिये वृषभान कुंवार।।
सकल समाज सोभ अनपार।
रसिक शिरोमनि अधिक चाव सों।।
रंग भरे रग मगे भाव सों।।
रस रंजित गंजित रति मैन।
प्रेम छके शोभा के ऐन।।
मत्त दुरद गति तिहँ ठां आये।
नव कन्या कौं लखत भुलाये।।
बार भई अति रूप निहारत।
छके थके से पल नहिं टारत।।
नव कन्या गोपी गन देख।
रीझि प्रश्न चित भई अलेख।।
इत कन्या गति परत न कही।
छकी थकी जकि चकित रही।।
सुधि न रही याकों निज तन की।
औरहि दशा भई कछु मन की।।
मदन मनोहर नन्द कुमार।
नव किशोर वय अति सुकुवार।।

गोपी गोप जिते वृजवासी।
इन लखि विवस आन सुधि नासी॥
रति कांता गोपी सु अपार।
विहरत जिन संग विविध बिहार॥
केउ अद्भुत सुर पिय संग गावत।
हाव भाव रस रंग लुभावत॥
प्रेम विवस केउ करत अलिंगन।
केउ भुज गहि लड़िकत निज रंगन॥
लखत केउ करि बंक चितौन।
तिनमें कोटि कटाछिन हौन॥
विविध केलि कौतुक उपजावत।
हासि विलासन रीझ रिझावत॥
जिन लखि थिरचर चरथिर होंही।
मूछित ह्वै रति पति ढिग सोंही॥
संग गोपिका मँडलाकार।
मधि श्रीराधा नन्द कुँवार॥
यह शोभा सों आवत भये।
कन्या हिय के सब दुख गये॥
कन्या अपने चित्त विचारिय।
मेरे कौन पुण्य फल भारिय॥
तातें यह सुख प्रापति भयो।
संशय दुख सब हिय को गयो॥
सोचत यौं कन्या तिह बार।
हिय की लहि वृजराज कुँवार॥
सखी एक इहि निकट पठाई।
ताकर कछु इक बात कहाई॥
बहुरि आप बोले मुसिकाय।
मदन मनोहर चातुर राय॥
जू तुम कौन कहाँ तै आई।
कहा नाम बड़ भाग्य कहाई॥

अति माधुर्जित मूरति नीकी।
भल आई तुम भावन जीकी॥

॥ कन्या उवाच ॥

कहा कहों तुम जानत नीकै।
हौं आई काजै तुमही कै॥
मदन मनोहर मूरति देखन।
पूरन किये अभिलाष अलेखन॥
ऐसे सुनि कन्या के बैन।
सुन्दर श्याम कँवल दल नैन॥
सब गोपी गन पाछै छोर।
नियरै आये नन्दकिशोर॥
रंग भरे रस रंजित नैनां।
देखन मनहु मदन सर पैना॥
ऐसी चितवन लखि मुसिकाय।
बोलत भई बैन सुखदाय॥
जू तुम काहि चकित ह्वै रही।
अचिरज कछु देख्यो है कही॥
ऐसे सुनि ये मधुरे बैन।
लोचन मदन बान लखि सैन॥
मुख नवाय लज्जित निहुरानी।
चित्र लिखी सी गति सरसानी॥
एक बेर लखि यह गति गही।
फिर देखन हू सुधि नहि रही॥
ता छिन बढ़चो महा सुख जैसो।
कहा कहौं कहि परत न तैसो॥
सो वह अन्य वचन सुख छायो।
तामें कछु मन कौं सुधि लायो॥
बोली वहै कन्यका तबै।
हे प्रभु कृपा करहु यों अबै॥
प्रेमा भक्ति रावरी लहौं।
पद पंकज सेवन कौं रहौं॥

अहो प्रान वल्लभ मन रंजन।
नन्द किशोर मदन मद गंजन।।
तुम कों छाड़ि कबहु इक छिनहू।
रहौं न अब न्यारी विधि किनहू।।
जे इन पद पंकज तें न्यारे।
तिनकों कोटि कोटि धिक्कारे।।
नाथ कृपा निधि हौ मेरी गति।
अब यह एक महा मेरे रति।।
क्रीड़ा वृन्दा विपिन बिहारन।
चाहत हौं मैं अबै निहारन।।
एते दिवस तुमहि बिन देखे।
मेरे गये वृथा बिन लेखे।।
ऐसे सुनि कन्या के बैन।
बोले कृष्ण कँवल दल नैन।।
तुम आई जु मनोरथ धार।
सो पूरन ह्वै है निरधार।।
यों कहि प्रभु भये अन्तरध्यान।
ह्वै यह विकल लगी बिललान।।
करत रुदन अति विह्वल भई।
गिरी धरनि तन की सुधि गई।।
राखी हुती सखी इक यापै।
देख न परत दशा यह तापै।।
तब बोली ह्वै समझ सयानी।
हे सखि विकल काहि बिललानी।।
तेरी दशा भई यह ऐसी।
देखी परत नाँहि नैं तैसी।।
धीर धार कछु सुधि दै जियकों।
हौं तुहि वेग मिलै हौं पियकों।।
वे करि कृपा दरस तुहि देहैं।
तो तन मन की वृथा नसै हैं।।

उनसों प्रेम करत कोउ जैसे।
वे तासों आसक्त सु तैसे।।
अपरंपार गुनन वे नायक।
अन्तर को जानन सुखदायक।।
मति ह्वै विकल सु वेग मिलैहूँ।
अब उनकी आज्ञा लै ऐहूँ।।

।। सउनक उवाच ।।

हे नारद जू जब नँदनन्द।
अंतरधान भये वृजचन्द।।
तब या कन्या कैं ढिग रखी।
सो वह कौन नाम की सखी।।

।। नारद उवाच ।।

नाम नन्दनी सखी सु नागर।
दूती कर्म निपुनता आगर।।
कृष्णहि नित आनन्द बढ़ावत।
महा निपुन मन की गति पावत।।
हे सउनक यह दूती कर्म।
ताके बुद्धि निपुनता मर्म।।
नीकौ वेष बनाय रहै।
तन मन को दुख सुख सब सहै।।
अति सुभाव कोमल सरसावै।
कपट वेष हियकौ न जतावै।।
प्रश्न बदन हर्षित हिय राषै।
तिय पै नायक के गुन भाषै।।
ज्यों लोभी को द्रवि कोउ देत।
ता करि ताकी मति हरि लेत।।
त्यों बातन सों तिय ललचाय।
गति मति ताकी ठगत भुराय।।
प्रीति रीति अति ही सरसावै।
वचन सिद्धता निज दरसावै।।

भेद दूतिका ये बिख्यात।
राधा कृष्ण सु हृदय सुहात॥
सत्ताईस भेद हैं और।
तिन में मुख्य सु कहत सु तौर॥
अर्थ निवेदन अरु प्रोछाहिन।
गुणन प्रशंसा प्रीति बढ़ावन॥
जित की प्रीति बात जित ही की।
कहै बनाय भावती जीकी॥
कला बरन ऐश्वर्य बतावै।
छबि सिंगार कहै हित छावै॥
दुख सुख सहत सलाह दुरावै।
बोलन मिष्ट महा सरसावै॥
सुख भीनी रस बातैं करहीं।
सब विधि समझ हिये निज धरहीं॥
जो चाहै सो बात बनावै।
तिन में कहू नहीं पकरावै॥
देस समय लख बात उचारै।
समय पिछान भेद बिस्तारै॥
जो निज कपट कछू ढिग आवै।
ताहि फेर तौ अर्थ लगावै॥
दूती इत्यादिक गुन लीन।
नाम नन्दनी सखी प्रबीन॥
प्रेम भरी मुहि कहिवे लागी।
हे सखि क्यों येतै दुख पागी॥
इती प्रीति जो हिय में तेरे।
तौ वे प्राननाथ हैं नेरे॥
चलि मो गैल दिखाऊँ प्यारौ।
संग भानुजा नन्द दुलारौ॥
श्री वृषभानु सुता है राधा।
सर्व सखी जिन सेवा साधा॥

श्रीराधा कै प्रेम अधीन।
कृष्ण कुँवर मन नित प्रति लीन॥
सो सब शुभ गुन की राधा।
पार नहीं जिन भेव अगाधा॥
ऐसी श्री वृषभान दुलारी।
गुन निधि रूप रासि सुखकारी॥
नन्द जशोदा गृह की जोत।
भान बंस की करन उदोत॥
भोरी कुँवरि लड़ैती नागरि।
कृष्ण कुँवर को भाग्य उजागर॥
नवल किशोरी महा मानिनी।
कृष्ण प्रान सर्वज्ञ स्वामिनी॥
गोकुल चन्दन नन्द नँदन की।
रति गति मति बसि कारि कमन की॥
थिर चर जीव लोक त्रय जेते।
जाकी रचना राचे तेते॥
सो श्रीराधा हाथ बिकानों।
नित आधीन रहै रस सानौं॥
चरन कँवल जिन कँवला सेवै।
सो राधा पद जावक देवै॥
जाकौ नाम रटत शिव साधा।
ताकौ लगी रहत रट राधा॥
शिव बिध जास समरधहि साधहि।
सो राधा हि नित्त आराधहि॥
जाकी कृपा मनावत नर सुर।
सो श्रीराधा कृपा चहत उर॥
शिव बिरंचि सनकादि शेष सब।
भाग्य गनत जिह दरस लहत जब॥
सो श्रीराधा के दरशन हित।
लोभी महा लालसा लगि नित॥

जन त्रिलोक जिह पद रज बंदत।
सो राधा चरनन परि मनवत॥
जिन श्रीकृष्ण चन्द्र के भय बसि।
शिव विधि लोकपाल सूरज शसि॥
सब निज निज अधिकार सु करहो।
सो राधा आधीन बिचरही॥
अधिक कहा कहि सखी प्रकासों।
कृष्ण अधीन रहत राधा सों॥
सो चलि तोहि दिखाऊँ राधा।
हरन हार हिय की सब बाधा॥
कृष्ण कुँवर की प्रान वल्लभा।
मैं दिखाय हौं तोहि स्वल्लभा॥
कंचन भूमि तहाँ मणि मंडित।
कल्प वृक्ष अनपार अखंडित॥
शोभा अद्भुत जहाँ अलौकिक।
विधिहू कहि न सकत मति जकि थकि॥
जहाँ राधिका संग कृष्ण हैं।
प्रेम रसा—सव मत्त प्रश्न हैं॥
विवश प्रेम रस रंग लुभाने।
बिलसत मगन बिनोद सुहाने॥
सजनी चलि मो संग दिखाऊँ।
प्यारो प्रीतम प्रान मिलाऊँ॥
पै उत जाय होहु निज आतुर।
जो कछु बेर लगै सुनि चातुर॥
कहुँ तुहि राखि वहाँ मैं जैहूँ।
आज्ञा पाय सु तोहि मिलै हूँ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति॥

सखी नन्दनी यों बतराय।
चली संग यह सखी लगाय॥
आई नियरी कुंज सु जहाँ।
श्रीराधा मोहन हैं तहाँ॥
समय इकंत पास नहिं कोऊ।
प्रेम छके बतरावत दोऊ॥
तहाँ कुंज तिहिं ओट सु पाखी।
यह कन्या नियरी तब राखी॥
आई तहाँ नन्दनी सहचरि।
नवल निकुंज पुंज रस गहवरि॥
खरी कुंज यहि द्वारहि आन।
किती बेर लौं समय पिछान॥
समय हेर पुनि भीतर गई।
नव कन्या आगम सुधि दई॥

॥ सखी नन्दिनी उवाच॥

आपुन इतै पधारे जबै।
कन्या मोपै राखी तबै॥
ताहि यहाँ हौं नियरै ल्याई।
जैसी विधि आज्ञा ही पाई॥
अबै रावरी आज्ञा पाऊँ।
तौ वा कन्या को लै आऊँ॥
बोले कृष्ण कुँवर मुसिक्याय।
सखी यहाँ अब वाको ल्याय॥
ऐसे कहत भये यहि और।
प्रीतम नागर नन्दकिशोर॥
श्रीराधा वृषभानु दुलारी।
कछु अंतर इक कुंज पधारी॥
सुन्दर श्याम कँवल दल नैन।
कहत भये ऐसे तब बैन॥
सखी वाहि तुम कुंज दिखावो।
जहाँ राधा है तहाँ लैं जावो॥
आज्ञा पाय नन्दनी सखी।
चली जहाँ वह कन्या रखी॥
आय इतै लै कन्या संग।
चली राधिका कुंज उमंग॥

चहूँ ओर सब कुंज दिखावत।
चली राधिका कुंजहिं आनत ॥
मणिमय भूमि रही छबि बाढ़ी।
मणि थंभान लता लगि चाढ़ी ॥
मणिमय कुसम पत्र छबि पुंज।
लपट लपट बनि लता सु कुंज ॥
विविध अलौकिक सुमन मनोहर।
तिंह पराग सउगन्ध सनीधर ॥
ठाम ठाम जल भरे सु सोहत।
लघु दीरघ तरु लता बिमोहत ॥
पुंजन कुंजन भ्रमर गुँजारत।
तरन तनोजा तीर बिहारत ॥
तरुन तरुन कोकिल गन कुहकत।
शुक पिक बानि सुनत मन हर्षत ॥
निर्तत मत्त मोर मुद भरै।
त्रिविध पवन चहुँ ओर न छहरै ॥
सखी नन्दनी कन्या जहाँ।
संग लिये आवत भई तहाँ ॥
जिहिं यहि कुंज राधिका स्वामिन।
ब्राजत कोटि कोटि छबि दामिन ॥
सनी सुगन्ध अवनि कोमिल अति।
तहाँ प्रिया मानिन छबि ब्राजित ॥
जहाँ श्रीभान कुँवरि के आगे।
नचत अछुर गन्ध्रभ रचि रागे ॥
मानवती सोहत श्रीराधा।
सखी भई लखि चकित अगाधा ॥
बोली तबै नन्दनी ऐसे।
प्रान पियारी ब्राजत कैसे ॥
कन्या खड़ी जोरि कर सनमुख।
बोलत भई पाय अद्‌भुत सुख ॥

॥ कन्या उवाच॥

धन्य धन्य श्री स्वामिनि राधा।
हरनी कृष्ण हृदय की बाधा।
सर्वेश्वरि वृषभानु दुलारी।
कृष्णचन्द्र कै प्रान अधारी ॥
शुभ गुन रूप रावरे मोहन।
बाँधे गये भये बस मोहन ॥
ब्रह्मादिक जिंह खोजत तप करि।
सो साछ्यात तिहारे बस हरि ॥
जिंहि लग सुर मुनि पहुँचत नाहीं।
लघु जीवन की कहा चलाहीं ॥
सो आधीन तिहारे कृष्ण।
तुम मुख लखै रहत है प्रश्न ॥
सुजस कहाँ मैं कहों तिहारे।
वेदहु नैत्य २ कहि हारे ॥
कोटिक जिभ्या लहौं जु कबहूँ।
स्वतित कहाँ लग कहों सु तबहूँ ॥
सर्वेसुर श्रीकृष्ण कुँवार।
जासु वल्लभा प्रान अधार ॥
बस नित रहत तिहारे कृष्ण।
होहु स्वामिनी मो पर प्रश्न ॥
कृपा रावरी अब यह कीजै।
दरशन कृष्णचन्द्र को दीजै ॥
ऐसे सुनि कन्या के बैन।
बोली श्रीराधा सुख दैन ॥
कन्या दिस करि कृपा चिताय।
कह्यो नन्दनी सों मुसिक्याय ॥
वे जहाँ होंहि तहाँ लै जाहु।
काहे कों अब बेर लगाहु ॥
आज्ञा पाय नन्दनी यहां।
कन्या संग लै गवनी तहाँ ॥

बैठे कृष्णचन्द्र जिहिं कुंज।
आनि दिखाये सब सुख पुंज॥
नव किशोर घनश्याम मनोहर।
भूषन अंग अंग शोभा भर॥
पीताम्बर बनमाल रसाल।
महा शोभ सिंगार बिशाल॥
बैठे देखि अकेले तहाँ।
कह्यो नन्दनी राधे कहाँ॥
जिन बिन इक क्षण कलप बितैहै।
सो श्रीराधा आज कितैहै॥
सुनि कै कृष्ण कँवल दल नैन।
बोले बहु नायकता बैन॥
गति लौकिक ह्वै जान अजान।
क्रीड़ा यही कछुक सरसान॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

हौं नहिं जानत कितहि सिधारी।
क्यों है दूर कहाँ चित धारी॥
है स्त्रिय स्वभावहि ऐसो।
तामें कछु थिरता नहिं तैसो॥
छिन में प्रश्न छिनहि कछु और।
लहि न परत तिय गति के तौर॥
हम तौ उनहि प्रश्न हिं करैं।
वे न जानिये कहां चित धरैं॥
मुहि कछु समझ परत है नाहिं।
वे बेप्रश्न होय क्यों जाहिं॥
रूठी है क्यों हमसों अबै।
सखी जाय सुधि ल्यावहु सबै॥
पूंछहु क्यों बैठी उत जाय।
बिछुर रहन जिय काहि सुहाय॥
मिष्ट बात करि सखी मनाओ।
मन वहराय यहां अब ल्याओ॥

कहि यों स्त्रिय कै पति प्रान।
पति सेवा के करौं बिधान॥
उनहि प्रसन्न करिकै इत आवहु।
स्त्रिल धर्म रीति सरसावहु॥
हे सखि बातन विध सरसाहि।
प्रश्न करहु वृषभान सुताहि॥
मेरी प्रान वल्लभा प्यारी।
वेग मिलावहु क्यों है न्यारी॥
सखी प्रसन्न को वे हैं जबै।
मेरी बात भली है तबै॥
प्रसन्न करै रूठी तियकों पति।
यही धर्म है नायक कों नित॥
निज स्त्रिय पति प्रसन्न न करै।
सो दुहुँ लोकहि बन्धन परै॥
पति की भली न दीसहि जातै।
जो वेप्रश्न रहै तिय तातै॥
धर्म धारनी जो निज घरनी।
महा सुशीला ह्वै सुख करनी॥
तिह वे प्रसन्न सु छोभित राखै।
आपुन पुनि पर स्त्रिय अभिलाषै॥
सो त्रिलोक में कहियत पापी।
बन्धन लहै आप मत थापी॥
जो सति धर्म धारनी तिया।
ताहि प्रसन्न राखै जो पिया॥
इह लोकरु परलोक सु जाकौ।
महा लाभ सुख प्रापति ताकौ॥
जासों उनहि प्रसन्न आवहु।
तासों मेरी भली बनावहु॥
प्यारी के चित प्रेम बढ़ावहु।
[illegible] पतिव्रत नीत दृढ़ावहु॥

जा विध प्रिया प्रसन्नता पाऔ।
ताही भांति मनाय सु ल्याऔ ।।
परम प्रबीन सुशीला सुन्दरि।
प्रान वल्लभा प्रिया मनोहरि ।।
बिन दरसै मो दृग अकुलाय।
सखी ल्याहु अब प्रिया मनाय ।।
कौन बात लहि जिय में प्यारी।
कुंज ओंट गहि मान सिधारी ।।
उन कछू कही न हम कछू लही।
ऐसे काहि मान गहि रही ।।
सखी जाहु अब वेग मनावहु।
बुद्धि निपुनता अति सरसावहु ।।
साम दाम भेदन सों आतुर।
प्रिया रिझाय मनाबहु चातुर ।।
यहाँ आई हौं उनहि प्रसन्न करि ।।
बहु बिनोद बातन सों मन रि।
तबै नन्दनी आनंद भरिकै।
कह्यो आय हौं आज्ञा करिकै ।।

।। इति श्री आदि पुराणे नारद कन्या स्वरूप श्रीनित्य विहार श्रीवृन्दावन साक्षात् दर्शन सप्तमोध्यायः ।।७।।

।। नारद उवाच सउनक प्रति ।।

।। दोहा ।।

बातें रहस बिनोद की, जे उर प्रिया सुहाय।
अद्भुत प्रेम पहेलिका, दई याहि समझाय ।।
पानन को बीरो रची, भीरी अति सौगंध।
रंग भरी हाथन करी, करन नेह की संध ।।
सुन्दर सुमन सुरंग लै, मालगुही छबि भीर।
मन मतंग खेंचन जकर मनु किय मदन जँजीर ।।
सुमन माल बीरी धरी तरु पल्लवन बनाय।
करन नन्दनी के दई कही देह यह जाय ।।

तब कन्या लै संग यह चली सु राधा कुंज।
जहाँ माननी पीय मन लै बैठी सुख पुंज ।।
सखी नन्दनी आय यहाँ सन्मुख खड़ी करजोर।
कहत भई अति विनय सों ऐसे वचन निहोर ।।

।। नन्दनी उवाच ।।

पिय लोचन त्रय मोचनी प्यारी प्रान अधार।
यहाँ अकेली कुंज में बैठी कहाँ विचार ।।
बिछुर रहन तुम दुहुँन को मोपै सह्यो न जाय।
उतै अकेले पिय इतै प्रिया अकेली पाय ।।
ऐसो को अपराध जू अब मो व्याकुल प्रान।
हा हा प्यारी मोहि कहि काहि गह्यो है मान ।।
गोप रूप धारे रहत वे तो—हित बन मांहि।
तेरे संग बिहार है तुव बिन उन जक नांहि ।।
नन्द महर को लाड़लो बृज को सर्वस प्रान।
अरी अकेले कुँज में बैठे दीन समान ।।
मलिन बदन अरु मलिन मन दृगनि अवनि दिस जोर।
यहि गति सों मो कर कही तुमकों विनय निहोर ।।
मान राख मो मान लै मौन मान अब छांड़।
अरी अमान निवान यह मेरे सुख की आड़ ।।
पिय के हिय के भेव की जान बूझ कै बात।
काहे कों ऐसी करत प्यारे को तरसात ।।
मान गहत जो माननी जिह पिय हिय रसलीन।
तेरे पिय प्यारौ अरी महा रहत आधीन ।।
तेरे लक्षण रूप पै जेती शुभ गुन भीर।
तेती काहू और पै देखी सुनी न बीर ।।
कहा बात तापै करत तू ये तो यह मान।
वृथा रूठवो है अरी नीको लगै न जान ।।
माननि ह्वै चुप गहि रही कहा बात किह काज।
जूठै रूठत घर बसी आवत हू है लाज ।।
हा हा मेरी बात सुनि बोलहु रुख दै मोहि।
सुमन माल बीरी अरी प्यारे पठई तोहि ।।

अद्‌भुत बनमाला पहर यहै छांड़ि हठि ऐड़।
बीरी खाय रचाय ऐ अधर रूप सर मैड़।

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

प्रिया सखी की बात सुनि कहत भई इतराय।
मुख मोरै ढोरै द्दगन भौंहन रही तनाय॥
ता छिन की वह मान छबि सो कछु कही न जात।
रहत ध्यान मेरे हृदय लग्यो वही दिन रात॥
हे सउनक बड़ भाग्य अब सुनहु बात सुख दैन।
श्रीराधे बोलत भई गहै प्रान रिस बैन॥

॥ श्रीराधे उवाच ॥

तुमसी मन हरनी जहां हमसों कैसो काज।
बहरानी बातन करत आवत हू है लाज॥
को जानै अब है कितै इती बेर ही माहि।
तेरी येरी बात में एकहु मानौ नाहि॥
मोपै सखी बनात तू बातें इती निहोर।
सांचे तौ आये न क्यों कहा करत उत और॥
येरी तेरी बातहू अब न सुनहुंगी एक।
मैं जानी चातुर्य की बातै रचत अनेक॥
जानत हौं चितचोर कौ अटक्यो चित किहुँ ठौर।
मो चित लै अरु देत है अपनो मनठां और॥
यहां काहे कों आय हैं पै आवहि तौ ल्याहु।
जो उन चित की होय वृत इत आवन कै चाहु॥
अब यह कन्या संग लै सखी जाहु उन पास।
मैं ये बात कही सु तुम कहियो उनहि प्रकास॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

सखी नन्दनी संग लै नव कन्या तिह बार।
आज्ञा लहि आवत भई जिहठां नन्दकुँवार॥
आय यहां घनश्याम पै बोली समय विचार।
प्रिया मान छांडत नहीं बहुत रही पचिहार॥
प्यारी परचांवन पची रचि रचि भेव अनेक।
पै माननि वह रावरी बान कहत है एक॥
बहुत कही मैं तब कह्यो प्यारी मोहि रिसाय।
जानत हौं पठई सु तुहि बातन विविध पढ़ाय॥

॥ सोरठा ॥

हम सों बात बनात, मन उरझानौ और सों।
मैं जानी सब घात, काहे को ठगई करत॥
यह जु एक ही बात, प्रिया कही जो चित गही।
भरी रिसन इतरात, प्यारी मान न छांड़ ही॥
कोऊ कछु है कौन, प्यारी को तुम ही गुनह।
सो वह नागर चीन्ह, होय रही है माननी॥
और ठौर जो प्रीत, करिहौं जू तजि राधिका।
तौ कछु नाहिन नीत, तुम ही गुन हीन्यतमहा॥
तुम निज दोष निवार, कहत किनहि मेरो गुनह।
तातै यहि जु बिचार, मो मन संभ्रम में परचो॥
ढीठ ढिठोही छांड़ि, सांच वाच कहिये अबै।
कौन भेव की आड़, कर राखी उरझेर की॥
कछू तौ तुम ही मांहि, गुनह प्रिया जू को सही।
बिन गलान तौ नाहि, गहै मान नागरि कुँवरि॥
जो प्यारी मन मांहि, है गलान कछू बात की।
सो समझै बिन नाहि, मुहि विचार कछू फुरत है॥
ह्वै मन मांहि गलान, ताकौ और उपाय नहि।
हिय की कहौं बखान, सो उपाय मोतै बनहि॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

ऐसे सुनि कै कृष्ण, सखी वचन मन भावते।
बोले ह्वै कै प्रश्न, हिय के सांचे रस वचन॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

सखि तू देख विचार, उन बिन मेरे और को।
जीवन प्रान अधार, पिय पतनी वृषभानुजा॥

मेरे हृदय निवास, नित्त निरन्तर राधिका।
राधा दरशन आस, हौं यह वन सेवत रहौं॥
हे सखि कछू समझी न, आन बात यहि भेव की।
प्रिया मान क्यों कीन, को अवगुन मो चित धरयो॥
नव कन्या यहि ठाम, सो तुम ही आनी यहां।
यह तौ है निहकाम, यामै नहि अपराध कछू।
यह उनतै इत और, तू ही सँग ल्याई अबै।
तू ही जाय निहोर, मन परचाय मनाय उन॥
तू ही कह अब जाय, मेरी दिल तें बात यह।
चंदानन दरसाय, चख चकोर ये तरफरैं॥
तुम बिन प्यारी प्रान, मेरे कोऊ और नहिं।
तुम बिन प्यारी प्रान, प्रान छिनहु ये रहत नहिं॥
तुमसी प्यारी प्रान, को सुन्दर जिन आगरी।
तुमसी प्यारी प्रान, को शुभ गुन निध नागरी॥
तीन लोक के मांहि, कोऊ नहिं तोसी त्रिया।
तीन लोक के मांहि, मेरे नहि तुम बिन प्रिया॥
मीन नीर आधीन, मणि आधीन सु सर्प ज्यों।
त्योंहीं हों आधीन, तेरे रस बस वल्लभा॥
कपट उक्त के बैन, मेरे तुमसों नहि प्रिया।
तुम प्यारी सुख दैन, मो प्रानन तें वल्लभा॥
मेरो नित्त बिहार, तुम बिन कबहु न ह्वै प्रिया।
प्यारी प्रान अधार, तुमहि मान क्यों चाहिये॥
सखी कहहु यों जाय, विनय उक्त सों बीनती।
मैं ज्यों कही जताय, त्यों इन आदिक और कहुँ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति॥

॥ दोहा अरील॥

आज्ञा लहि घनश्याम की चली सखी वहि कुंज।
जहां बिराजत माननी श्रीराधा सुखपुंज॥
श्रीराधा सुख पुंज कुंज तिह आई सहचरि।
वह कन्या को संग लिये प्रेमासव मद भरि॥
कहत भई कर जोर निहोरन बात सयाननि।
तजहु मान अबमान मान मो राखहु माननि॥

॥ दोहा॥

प्रिय के प्रान समान हौ सीखी कहां सुभाय।
चख चकोर आतुर चतुर चन्दानन दरसाय॥
चन्दानन दरसाय अरी हा हा है तोसो।
वृथा मान यह छाड़ि कही पिय की सुनि मोसों॥
सूधै दिष्ट निहार प्रिया सुनि प्रेम पहेली।
जल बिन झखअहि मजि जुहीन इन गति उनपेली॥
कहत श्याम मेरे नहीं तुम बिन कोऊ आन।
प्रानहु तै प्यारी प्रिया काहि करत हौ मान॥
काहि करयो है मान चलहु पिय संग बिहारौ।
राधा राधा मन्त्र नाम वे रटत तिहारौ॥
नायक नन्द कुँवार सकल शुभ गुन के सागर।
तिनसों मान निवार बहुत बिनवत सुनि नागर॥
उतै अकेले कुंज में बैठे नन्द किशोर।
तेरे हित सज्या रचत विविध कुसम दल जोर॥
विविध कुसम दल जोर तलप निज हाथ बनावत।
कर कर तेरो ध्यान कठिन सों छिनन बिहावत॥
जाकै सब आधीन सु तौ आधीनौ तेरै।
जिह मुख लखि वृज जियत वहै तो-मुख रुख हेरै॥
श्री वृजराज कुँवार वे सब वृज प्रान अधार।
सो कहा जानत घरबसी तेरे चितहि बिचार॥
तेरे चितहि विचार कहा कछु मानत नाहीं।
वे रस बस आधीन दीन ज्यों रहत सदाहीं॥
यह अमान है मान ताहि तजि प्रान पियारी।
उठि चल मिल पिय संग दुचित ह्वै रहे बिहारी॥
लखि सनेह तुम दुहुँनि को मेरो जीवन होहि।
जन्म सुफल मानहु तवै बिहरत देखहु तोहि॥
बिहरत देखौ तोहि तवै मो नैन सिरावै।
तुम दुहु बिछूरत छिनहि प्रान मेरे अकुलावै॥

तौ सनेह के प्रेम रसासव छक्यो पियारौ ।
बिरह बिकल ह्वै रहे नेक चल दशा निहारौ ॥
सब शुभ गुन निध हौ प्रिया पारंगता प्रबीन ।
नखसिख तें माधुर्जता अद्भुत भरी नबीन ॥
अद्भुत भरी नबीन रूप गुन चातुरताई ।
नहि तोसी त्रयलोक किहूँ प्यारी सुखदाई ॥
तोहि बुलावत अति अधीर पिय आतुर मोहन ।
बैठे हैं वहि कुंज लग्यो चित तेरे गोहन ॥
ऐसी पिय की प्रीत है तूही देख विचार ।
ठान मान योंही वृथा काहे करत अबार ॥
काहे करत अवार वेग उठि चलि चन्दानन ।
अद्भुत शोभावन्त देख कैसो वृन्दावन ॥
वल्लभ प्रान समान पीय आतुर हित तेरो ।
तू जु रही हठि बैठि कहा कहौ वसना मेरो ॥

॥ नारद वचन सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

सखी नन्दनी की प्रिया सुनि मन हरनी बात ।
बिसरी मान भुरान में बोली मुरि मुसिक्यात ॥

॥ श्रीराधे उवाच ॥

बोली मुरि मुसिक्यात नन्दनी मैं हूँ जानत ।
मेरे बिन किहुँ ठौर प्रीत वे नाहिन ठानत ॥
अब मैं छाड़चो मान पै न वहाँ जैहो अब ही ।
आपहि तें उठि चलत सखी मुहि हँसि हैं सब ही ॥
उनही कों ल्यावहु यहाँ तब मिल चलि हैं संग ।
वहाँ जाय ऐसे कहौं रहै हमारो बंग ॥
रहै हमारो बंग उनहि बातन गहि आनहुँ ।
बैठे वहाँ अनेक कहै सो एक न मानहुँ ॥
जब उठि आवहि आप तबहि मैं मान बिसारों ।
वे कहा धारत चित्त सु तौ हौहूँ न हठ हारौं ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

सुनिकै ऐसे नन्दनी श्रीराधे मुख बैन ।
आज्ञा लहि पुनि उठि चली जहाँ श्याम सुख दैन ॥
जहाँ श्याम सुख दैन तहाँ यह आय प्रबीनी ।
लिये कन्यका संग समुख ठाढ़ी हित भीनी ॥
आतुर चातुर श्याम रहे लखि यहि मुख औरै ।
चन्दानन चाहन सु चाह भीने दृग जोरै ॥

॥ नन्दनी उवाच ॥

॥ दोहा ॥

प्यारी परचाई बहुत रचि पचि अपनै जान ।
पै अरबीली माननी नाहिन छाड़त मान ॥
नाहिन छाड़त मान माननी वहै तिहारी ।
चलहु आप उन पास तबै हठ तजि है प्यारी ॥
देखहु वन या समय बनी शोभा कै गोभा ।
छबि सम्पति यहि विपुन लषत बाढ़त चित लोभा ॥
पशु पंछी गनहू सबै हर्षित करत कलोल ।
देखहु ऐसे समय कछु मोहि फुरत नहिं बोल ॥
मोहि फुरत नहिं बोल बिरह तुम दुहुँ बिछुरन तैं ।
निश्चय जै है छूटि प्रान मेरे या तन तैं ॥
वेग चलहु ब्रजराज कुँवर वर प्रिया सनावन ।
मोपै दुहुँन वियोग जात नहि सह्यो अभावन ॥
जो कछु लगि है बेर अब चलन तिहारे मांहि ।
तौ वे उत मानत तजहि इत मो प्रान छुटांहि ॥
इत मो प्रान छुटांहि कहाँ लगि धीर धरैहौं ।
राधा जीवन मूर ताहि नौछाहर ह्वै हौं ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

ऐसे सुनि श्रीकृष्ण नन्दनी बचन मनोहर ।
कहत भये मुसिक्याय बचन अति प्रीति उक्त पर ॥

॥ श्रीकृष्ण बचन ॥

॥ दोहा ॥

अहे नन्दनी धन्य तू कहिये कहा सराहि ।
तोसों मेरी प्रीत नित रहि है बढ़त अथाहि ॥
रहिहैं बढ़त अथाहि प्रीति सखि तोसों मेरी ।
श्रीराधा कै हेत महा रति देखी तेरी ॥
श्रीराधा के संग रमण में देखन आतुर ।
महा गोपि निधि भेव लह्यो तैं मेरो चातुर ॥
यह कन्या संगहि लिये बहुर प्रिया पै जाय ।
कहहु मान छांड़हु अबै परत तिहारै पाय ॥
परत तिहारै पाय आय अब दरसन दीजै ।
यहै शोभ यहि समय बिलोकहु कृपा सु कीजै ॥
प्यारी मान अत्यन्त करत या समय भंग रस ।
तातै अब हठ छांड़ि प्रान वल्लभा मिलहु हँस ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे सुनि श्रीकृष्ण के सखी नन्दनी बैन ।
कहत भई उत्तर उलटि सुनहु मनोहर मैन ॥
सुनहु मनोहर मैन कही तुम आज्ञा करिहौ ।
प्रिया मानि है नाहिं बहुरि तब इत अनुसरिहौ ॥
तातैं चलिये आप वेग जो चहत मनावन ।
पीछैंहू तो जाय मनावहुगे परि पावन ॥
कहा अकेले कुंज में बैठे करत अवार ।
मेरे प्रानन पालिये करिये संग बिहार ॥
प्यारी संग बिहार करन बिन लागत फीके ।
मदन मनोहर श्याम अकेले लगत न नीके ॥
समझि आप ही चलहु संग मेरे ह्वै अब ही ।
प्रिया बिसारि है मान लखहिगी तुम मुख तब ही ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे सुनिकै नन्दनी मुख बातै श्रीकृष्ण ।
प्रिया मनावन उठि चले सखी संग ह्वै प्रश्न ॥
सखी संग ह्वै चले कहत सोचत मग माहीं ।
कहा जानिये प्रिया वेग मन है किधौं नाहीं ॥
अंतर आतुर चख चकोर चातुर अकुलाने ।
चन्दानन दरशन उमंग आशा उर राने ॥
निकट पन्थ मानत बिकट कहत विरह बहराय ।
अरी कुंज मग अवनि यह कितिक बढ़ी सरसाय ॥
कितिक बढ़ो सरसाय अवनि कब दरसहि प्यारी ।
बिसर पन्थ वहि कहूँ आन मग चले कहारी ॥
प्रीत उक्त के बैन नन्दनी सों बतरावत ।
आतुर पिय वृजराज कुँवर प्यारी पै आवत ॥
लता टार निकसे निकट सनमुख राधा कुंज ।
चार दिष्ठ दोऊ भये प्यारी पिय रस पुंज ॥
प्यारी पिय रस पुंज चार दृग ह्वै मुसिक्यानै ।
प्रिया समुख नियराय आन वैठे सुख सानै ॥
बातै प्रीत प्रतीत बढ़ावन की उच्चारी ।
लगे परन पुनि पाय तबै मुसिक्यानी प्यारी ॥
प्यारी हँसि बोलत भई तजिकै मान प्रबोन ।
तब मिलि त्रिविध बिनोद दुहुँ करत भये रसलीन ॥
करत भये रस लीन कुंज क्रीड़ा मन हरनी ।
सो देखे ही बनी अबै कछु परत न बरनी ॥
सो बिहार लखि जुगल प्रेम लीला कौ कन्या ।
होत भई अति चकित भाग मानत धन धन्या ॥
बढ़ि आनन्द समुद्र जल लोचन भरे निवान ।
भयो प्रफुल्लित मुख कँवल बोल सकत नहि बान ॥
बोल सकत नहि बान प्रेम की कलिन कलित मत ।
निभृत निकुंज विनोद मगन तन मन बिसरी गति ॥

किती बेर लौं दशा यहै याकी सरसानी।
थकित खरी मनु चित्र लिखी पुतरी दरसानी॥
बहुत बेर पीछे बहुर प्रगटी कछु सुधि आन।
तब वह कन्या जोर कर बोली गदगद बान॥

॥ कन्या उवाच ॥

बोली गदगद बान अहो श्रीकृष्ण कुँवर वर।
धनि है ये श्रीप्रिया लहे जिन तुम पति नागर॥
धन्य धन्य तुम लही प्रिया वृषभान दुलारी।
धन्य सखीगन लखत जुगल क्रीड़ा सुखकारी॥
धन्य भाग्य मम भालकृत सुनिये प्रानन नाथ।
अब जीवन मो होयगो कृपा रावरी साथ॥
कृपा रावरी साथ अबै ऐसी कछु कीजै।
दरशन नित्त बिनोद यहै सुख सम्पति दीजै॥
हे श्रीकृष्ण कुँवार अलौकिक या सुख कै हित।
लगि समाध तप करत मुनीगन महा धार वृत॥
मो कँहि यह दरशन भयो अनुरुध कृपा प्रभाय।
सो जानत कोटिन जनम सुकरत प्रगटे आय॥
सुकरत प्रगटे आय कृपा यह भई तिहारी।
अब मुहि याही रूप यहाँ राखहु गिरधारी॥
सुन्दर श्याम सुजान नन्द नन्दन राधा वर।
करुना सिंधु कृपाल सुनहु हौं कहत जोर कर॥
मुहि भटकत योंही किते बहुतै बीते काल।
अब मम भाग्य उदोत गति कहत न बनत विशाल॥
कहत न बनत विशाल भाग्य गति यह लभ पायो।
मो लघु पात्रहि कृपानाथ निध पुंज मिलायो॥
यह तुम लीला नित्त मोहि प्रापत कहा दरसन।
कोटि कलप सुख सुर्ग नाहि जो सुख यह इक छन॥
पाय अलौकिक कलप वृछ तुम कों हे श्रीकृष्ण।
वर माग्यौ हौं चहत हौं देहु मोहि ह्वै प्रश्न॥
देहु मोहि ह्वै प्रश्न यहै वर कृष्ण कुँवर वर।
लखत रहौं यह नित्त विपुन लीला सुख सागर॥
नव नव नित्त बिहार रावरे महा मनोहरि।
नित प्रति दरशन प्राप्त सो हिय करहु कृपा करि॥

॥ इति श्री आदि पुराणे नारद कन्या रूप
समय श्री नित्य लीला रहस्पद
रसन प्राप्त नाम अष्टमोध्यायः ॥८॥

॥ कन्या उवाच श्रीकृष्ण प्रति ॥

॥ चौपाई ॥

हे श्रीकृष्ण कुँवर राधा वर।
मो विनती यह सुनहु कृपा कर॥
लीला रहस दरस मैं कीनो।
लखन रास अब चित्त अधीनो॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच कन्या प्रति ॥

यहाँ कृष्ण गंगा है तहां।
सखी स्नान करहु अब जहां॥
पुरुष रूप ह्वै है अब तेरो।
तब बिनोद वृज लखि हौ मेरो॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

आज्ञा लहि कन्या ह्वै प्रश्न।
आवत भई सु गंगा कृष्ण॥
कियो स्नान आचमन लयो।
तत छिन पुरुष रूप ह्वै गयो॥
जब यह पुरुष रूप निज देख्यो।
आश्चर्य निज हृदय सपेख्यो॥
मैं निज नारद रूप निहार।
लहत भयो मन वंछित सार॥
संध्या समय जान मन मांहि।
वन तें चलि आयो वृज ठांहि॥
तहां आन देख्यो रस बरसत।
सो आनन्द महा मन करषत॥
जित तित तै मिल झुंडन गोपी।
धावत प्रेम नेम रस ओपी॥

महा कुलाहल उत्सव घर घर।
सब के मुख प्रफुलित आनँद भर ॥
गो धन लै वन तै मन मोहन।
आवत लिये सखा गन गोहन ॥
श्रीबलदेव संग श्रीकृष्ण।
धारैं गोप रूप अति प्रश्न ॥
करत कलोल सखागन संग।
आवत गृह सब भरे उमंग ॥
केउ गावत केउ वैन बजावत।
केउ कलोल कउतक उपजावत ॥
क्रिदुन करत सु गो धन वृन्द।
आगै कर लीनो वृजचन्द ॥
यहि शोभा वन तै गृह आवत।
अध प्रफुलित कर कँवल फिरावत ॥
इत वृज तै कढ़ि गोपी निसरी।
प्रेम भरी तन मन सुधि बिसरी ॥
लखि वृजचन्द चकोरी सबै।
झुंडन खरी विवस गति फबै ॥
पुनि सनमुख श्रीजसुमति धाई।
कोटि सखीगन संग सुहाई ॥
महा मनोहर झुंडन ललिता।
चली उमड़ मनु सांवन सलिता ॥
सब मिल मंगल गीत सु गावत।
प्रफुलित बदन महा छबि पावत ॥
पौरी पै आये लखि इनकों।
जसुमति हरष विदारयो त्रन कों ॥
वारि आरती लौन उतारयो।
जल घट वारि चहूँ दिश ढारयो ॥
मुख पै गौ रज लखि लपटानी।
अंचर लै पोंछी वृजरानी ॥

पुनि आई निज भवन जसोमति।
पुत्र बदन लखि मुदित भई अति ॥
श्रीबलदेव कुँवर वर कृष्ण।
आये नन्द खरक ह्वै प्रश्न ॥
तहाँ वृजेश भवन हौं हूँ तित।
जात भयो अति ध्यान लीन चित ॥
मोकों आवत लखि तिहि ठाम।
उठि ठाढ़े भये सुन्दर स्याम ॥
कहत भये मोसों मधु बानी।
महा मनोहर नमृत सानी ॥
हे नारद मुनिवर तुम आवन।
कहिये कब को किय व्रज पावन ॥
दीरघ तप व्रत कछू हमारो।
तातै दरशन लह्यो तुम्हारो ॥
आज जन्म हम सफल भयो है।
आप कृपा कर दरस दयो है ॥
धन्य गृह स्तन के गृह जहाँ।
आप पांव धारत हौ तहाँ ॥
ते गृह अवनी तीर्थ रूप है।
महिमा तिनकी अति अनूप है ॥
वा गृहस्थ के पितर देव तब।
रहत महा सन्तुष्ट प्रश्न सब ॥
जिहिं अवनी वैष्णव पग धरै।
तिहिं महिमा कापै कहि परै ॥
वैष्णव चरन धोय जल डारत।
सब तीरथ सो वेद उचारत ॥
जा गृह वैष्णव पग नहि धरें।
पद धोवन जल हू नहि परें ॥
सो मसान के सम गृह जानहु।
वेद वचन यह निश्चय मानहु ॥

जहाँ नहि हरिहर सुमरण गुण गान।
कीर्त्तन आदि न भजन विधान॥
भगवत भक्त मूर नहि जहाँ।
वैष्णव पग न धरत हैं तहाँ॥
ते गृह स्यारन कैसे खडहा।
नर तहाँ जन्म भरत ज्यों गदहा॥
जे गृह धन्य जहाँ बिच जक्त।
पग धारत हौ हरि प्रिय भक्त॥
हे नारद जू आप पधारे।
आज उदय बड़ भाग्य हमारे॥
निर्फल नाँहि रावरो आवन।
वृज अरु वृजवासी भये पावन॥
नन्द राय जू मेरे पिता।
जननि वृजेसुरि जसुदा विता॥
लहे पवित्र विशेष आज अब।
तुम आये धन धन्य भये सब॥
अबैं कृपा कर आज्ञा कीजै।
कछु संभ्रम जो भाव हरी जै॥
हम कृतार्थ जो कृपा तुम्हारे।
भयो एक सन्देह हमारे॥
को प्रकार तुम आवन भयो।
हमहि आय अति आनँद दयो॥
तुमसों मेरे हे अति प्रीति।
मैं कहिहौं मेरी गति रीति॥
गुप्त बात मो प्रान समान।
कहिहौं मैं हूँ तुमहि बखान॥
गो चारन सों मो अनुराग।
गति मति महा प्रेम की लाग॥
वृन्दावन देख्यो ही चहौं।
भँवर भयो थिरचर को रहौं॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

ऐसे सुनि श्रीकृष्ण के कोटि सुधा सम बैन।
होत भयो आनन्द अति सो कछु कहत बनै न॥
तब मैं गदगद ह्वै गिरा कहत भयो कर जोर।
तुम अजन्म सो जन्म यह नागर नन्दकिशोर॥
मेरे मन कों हरत हैं यहै रावरी बात।
रसना कोटिक करि गनत तुम गुन गने न जात॥
जोती व्यापक सर्व के तुम सर्वेश्वर नाथ।
नशत पाप सब जन्म के सुनत रावरी गाथ।
हे वृजराज कुँवार श्रीकृष्णचन्द्र गोपाल।
अद्भुत अमृत रूप है लीला यहै रसाल॥
मोहि त्रषा अति ही बढ़ी या अमृत के पास।
सो अब प्याय नसाइये त्रिविध ताप के त्रास॥
नन्द महर जू कौ सदन अरु वृन्दावन माँहि।
गोवर्द्धन गिरिराज पै पुनि कालिंद्री ठांहि॥
तुम बिहार वय बाल बिच अरु ह्वै नवलकिशोर।
जे जे लीला हैं करी जेती निसि औ भोर॥
ते सब मोहि सुनाइये नीकै करि व्याख्यान।
है यह ब्रजलीला ललित मो प्रानन को प्रान॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

नारद जू मेरो यहै ब्रज बिहार है नित्त।
ताकी सुनिये बात अब मोद मान हित चित्त॥
यह ब्रज नित्त अखंड है सदा सहित आनन्द।
या भुव के वासी जिते सब निवृत्त दुख द्वन्द॥
या वृज भुव के हैं जिते थिरचर जे बसवान।
ते हैं नितरु एक रस निश्चय लहौ प्रमान॥
ये गो गोपी गोप नित यह मो नित्त बिहार।
जग के दुष्टी कुचित नर नाहिन सकत निहार॥
अभिमानी विषई कुचित धर्महीन मत नीच।
क्रोधी लोभी बहुर अति पाखण्डी जग बीच॥

भेष धरें दंभी किते कहत कि हम से कौन।
ऐसे कलि के नरन कों कित यह दरशन हौन ॥
विप्र वेद मग हीन हैं सुद्रन सम आचार।
चंचल कुमति विचार बिन भोगी बड़े लवार ॥
निद्या वैष्णव जनन की करि है दोष विचार।
ऐसे कलिजुग के विषे ह्वै है द्विज निर्धार ॥
और वरन की को गनै वहै जात कलि माँहि।
तिन में केऊ भक्तजन मो वैष्णव प्रगटाँहि ॥
तिन कों मैं उद्धार हौं महा घोर कलि माँहि।
उनके हित ततपर रहौं संगहि लग्यो सदाहि ॥
जन्म जन्म को पुण्य फल उदय होत जब आय।
तब मनुष्य के हृदय में प्रेम भक्ति प्रगटाय ॥
प्रेम भक्ति मेरी बढ़ै तब वृज सों अनुराग।
अरु वृज अनुरागी भये ह्वै राधा पद लागि ॥
श्रीराधा चरनन शरन ह्वै अति प्रीति लगाय।
तब ताकी शुभ श्रेयता कछु बरनो नहिं जाय ॥
राधा सों अनुराग ह्वै पूरन अति चित माँहि।
याते परे जु श्रेय हित करनी कारज माँहि ॥
जिनकी श्रीराधा विषै है अति प्रीत निदान।
ते मोकों प्रिय लगत हैं मेरे प्रान समान ॥

॥ नारद उवाच सउनक प्रति ॥

॥ दोहा ॥

हे सउनक रिषिवर सुनहु महा भाग्य मम भाल।
सुनि बातें श्रीकृष्ण मुख हौं चित भयो निहाल ॥
अनुरुध कृपा प्रताप यह मोहि भयो आनंद।
जन्म जन्म संताप कों नसै सकल दुख दंद ॥
या श्रीवृन्दा विपुन को महा अलौकिक भेद।
अद्‌भुत अगम अनन्त गति नेति नेति कहि वेद ॥

सुर गन पावत भेव नहि सो दरशन मैं कीन।
ताही के मधि रैन दिन रहत चित्त मो लीन ॥

॥ इति श्री आदि पुराणे श्रीकृष्ण नारद सम्वादे
वृजलीला वर्णनो नाम नवमोध्याय: ॥९॥

॥ कवि वचन ॥

॥ दोहा ॥

यह श्री आदि पुराण की वृजलीला रस रीत।
नारद जू सउनकादि सों कही हुती करि प्रीत ॥
सो राधा राधा रवन वृन्दा विपुन विहार।
अप्राकृत बानी कछुक भाषा किय सुखकार ॥
परम अलौकिक भेव यह सुन्दर कुँवरि विचार।
बरनन करि इन इनहि को जाचत हिये विहार ॥

॥ कवित्त ॥

गुन निध रूप रासि लाड़िली प्रबीन,
भोरी मन है अधीनों नित जाके गिरधर को।
राखे हैं नचाय जानै सुर नर जीव सबै,
ततपर नचत सो बिकानो राधा कर को ॥
सो पै गूढ़ भेव श्याम स्वामिन सरन लही,
वृन्दावन देव कै प्रताप छाय वर को।
वे ही जो वजानि हैं ज्यों पूरन निवाहि,
हैं जु भारी भरोसो मोहि कीरति कुँवरि को ॥

॥ दोहा ॥

अद्‌भुत आदि पुरान मधि है यह कथा अपार।
निज मति सम सुन्दरि कुँवरि बरनन किय सुखसार ॥
सुनै गुनै अरु जो पढ़ै ते करि कृपा अपार।
सन्त विवेकी रसिक कवि लीजै याहि सुधार ॥
संवत् शुभ नव दून सै तेईशा के साल।
साके सोरह सै अवर अठ्यासिये रसाल ॥
त्रयोदशी वैशाख सुदि शुभ नक्षत्र गुरुवार।
कम नगर मधि ग्रन्थ यह कीनो सुन्दर सार ॥

राजसिंह महराराज सुत सिंह बहादुर बीर।
बिक्रम बलबिड देत अति दाता सुघट जधीर॥
भक्त परायन रसिकमणि रूप नगर के राज।
निज भगिनी सुन्दर कुँवरि लावन शुभ मग काज॥

यहि प्रबोध शिक्षा दई पूरन कृपा निवाहि।
महा गुप्त धन वेद को सो दृढाहि चित चाहि॥
तातै श्रीवृन्दा विपुन नित नव जुगल बिहार।
मन रुचि सुन्दर कुँवरि यह भाषा किय सुखकार॥

॥ इति श्री आदि पुराणे मधि श्रीवृन्दावन गोपी रहसि महिमा संक्षेप करि कथनं नवमोध्याय: सम्पूर्णम् श्रीरस्तु आरोग्य मस्तु॥
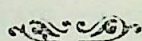
संकेत सुगल

॥ सवैया॥

श्रीवृषभानु सुता मन मोहन,
जीवन प्रान अधार पियारी।
चंद्रमुखी सुनि हारन आतुर,
चातुर नित्त चकोर बिहारी॥

जा पद पंकज के अलि लोचन,
श्याम के लोभित शोभित भारी।
सरन हौं हूँ जिन चरनन के,
प्रिया नेह नवेल सदा मतवारी॥

सुन्दर श्याम मनोहर मूरत,
श्रीवृजराज कुँवार बिहारी।
मोर पखा सिर गुंज हरा,
बनमाल गरे कर बंसिका धारी॥

भूषन अंग के संग सुशोभित,
लोभित होत लखै वृजनारी।
राधिका वल्लभ मो दृग ग्रेह,
बसौ नव नेह रहौ मतवारी॥

॥ कवित्त॥

धाम अभिराम ग्राम नाम सुपलेमाबाद,
कलि भव सागर में नवका तरन को।
गादी श्रीपरशराम देवजू सथापि जहाँ,
लोक दया हेरी त्रय ताप के हरन को॥

वृन्दावनदेव निजदासिताकी छाप मेरे भाल,
तहाँ दीनी हरि आश्रय करन को।
महा दीन हीन मति कीनी हौं सनाथ नाथ,
कोटि कोटि डंडवत तिन कै चरन को॥

भक्त रिषिराज प्रभु जगत उधार काज,
प्रगट बिराज तारे बूड़त नरन कों।
वृन्दावनदेव सोई छाप निजदासिता की,
दीनी मेरे भाल श्रीकृपाल भै हरन को॥

जन्म त्रास टारी अपनाय की निहाल भारी,
कीनी पात्र राधा राधा वर की शरन को।
दुर्लभ अगाधि गाथ सुर्लभ दई है नाथ,
कोटि कोटि दंडवत तिनके चरन को॥

॥ दोहा ॥

सब हरि भक्तन चरन बंदौ भाग्य प्रभाय।
मेरे भूषन भाल सो रहो अभय फलदाय॥
इनके कृपा प्रभाव तैं फुरै हृदै मो आन।
श्रीराधा राधारबन रहसि ध्यान वा खान॥
हरि गुरु भक्ति सु भक्तजन ये मो देव मनाय।
महा गुप्त धन वेद को रहसि कहूं कछु गाय॥
कविता रचन प्रबन्ध ह्वै तहाँ कबिन मर्जाद।
कारन सुर ये काव्य मति दाता ज्ञाता आद॥
सिध बुध दायक गज बदन एक रदन गवरंग।
गनपति बन्दौ देहु मुहि कविता उक्त अभंग॥
प्रश्न बदन सुन्दर गवर चवभुज पंकज नैन।
हंस बाहनी सरसुती बन्दौ सुमति सु दैन॥
राधा नंद कुँवार को रहसि बिहारज नित्त।
ताकी बात सु कहत हौं कछुक ध्यान धरि चित्त॥
कहन चहत सकुचत बहुर हौंजु दीन मति हीन।
पै यहि आसय आस जिय श्रीगुरु आश्रय लीन॥
तातै बन्दौ ध्यान धरि श्रीवृन्दावन धूर।
जो दुर्लभ प्रापति सुरन सो मो जीवन मूर॥
श्रीवृषभान कुमार कै चरनन सपरसवंत।
तातै वृजरज की यहै महिमा अगम अनंत॥
श्रीशुक वचन सु भागवत जो है साख प्रकास।
वृन्दावन भुव श्याम को अति वल्लभ सुखरास॥
वृज वृन्दावन श्याम को महा पियारी भूम।
तिंहिठां नवल बिहार नित परम प्रेम की धूम॥

॥ दोहा अरिल ॥

नन्दी सुर बरसान बिच रमण स्थल संकेत।
जाकी महिमा अगम सो निगम कहत जिह नेत॥
निगम कहत जिंहि नेत तहाँ की कहुं कछु बातैं।
जुगल रहसि सुख रंग हरन मन ह्वै ही जातैं॥
भान भूप बरसान नन्द नन्दी सुर राजै।
राज श्री सुख दुहुँनि देखि इन्द्रादिक लाजै॥
श्रीराधा वृषभानुजा कृष्णचन्द्र नँद नन्द।
ब्रज के जीवन प्रान धन सब सर्वस आनन्द॥
सब सर्वस आनंद सकल इन ही को देखै।
नन्द यशोमति भान कीर्त जिन बात अलेखै॥
नागर नवल किशोर चोर चित दुहूँ परसपर।
मदन मनोहर मूर्त पूर्त प्रेमासव मद भर॥
छकै छकावै द्दगन मन नित्त लगन बिन छेह।
देह प्रगट इन दरस ही भये नेह के गेह॥
भये नेह के गेह रहै दोऊ मतिवारे।
मिल द्रग छकि थकि जात एक टक पलि न बिसारे॥
रूप उदध कै छवि तरंग द्दग मीन सुप्यारे।
मगन कलोलत चतुर कहौ क्यों ह्वै ही न्यारे॥
विवश दशा बढ़ि प्रेम मद ह्वै तनमय सुधि जाहि।
पिय प्यारी प्यारी पिया होत रूप तिहि ठांहि॥
होत रूप तिहि ठांहि आन सुध काहि सभारन।
विवश दशा सुध भूल सूल जीतन की हारन॥
योंही निवहत रहै दुहु सुध कबहु संभारे।
तब रस रीत बिनोद विविध ब्रज विपुन बिहारे॥
श्रीजसुमति जू निज वधू नित टेरत यहि वान।
सगरे वृज की चंद्रका मेरी जीवन प्रान॥
मेरी जीवन प्रान कहन जसुमति की बानी।
बरसानै सुनि बात मुदित ह्वै कीरत रानी॥
गुन निध रूप अगाधि राधिका नवल किशोरी।
सुन्दर श्याम सुजान नन्द नन्दन की जोरी॥
जिन श्रीराधा संग मुखि सखी कोटि त्रिय आन।
सबहिन में मुख्येश्वरी है ललितादि सुजान॥
है ललितादि सुजान सखी ये अष्ट मनोहर।
रति रम्भा उरबसी जिनहि उपमा नंहि सरभर॥

श्रीराधा वृषभान कुँवर चूड़ामणि जिनकै।
कंचनकूं गचि तुलन त्योंज उपमा ससि तिनकै ।।
पिय बृजराज कुँवार कै प्यारी जीवन प्रान।
जिन मुख प्रेमासव छकी बात सुनत ललचान ।।
बात सुनत ललचान श्याम कों निज इन मुख की।
लगी लालसा रहत विविध बातन या मुख की ।।
एक समय निश अमल जौन्ह संकेत सुसोहैं।
जमुना परि झिलमिली पुलिन जगमगि मन मोहैं ।।
विविध कुसम फुलवाद इत महा शोभ सरसाय।
त्रिविध समीर सुहावनो लहि सुगंध वनराय ।।
लहि सुगंध वनराय मत्त अलि पुंजन गुंजन।
विविध बिहारन सौंज शोभियत कुंजन कुंजन ।।
एक सथल बिच पुलिन सुमन की रचन रच्यो है।
कली कटहरे कंज मोतिया जाल खच्यो है ।।
तहां सुगंधित कुसम रुचि रची बिछांत सुजान।
पलिका शोभित बीच तिंहि अद्भुत शोभासान ।।
अद्भुत शोभासान कँवल दल तलप बिछाई।
झूमक बंधन डोर मोतिया सुमन सुहाई ।।
लरझर झालरि चहूँ ओर लगि जाय जुही की।
दल गुलाब परजंक उसीसा छवि बढ़ि नीकी ।।
पान दान चंगेरि जुत सेत सुमन रचनान।
जौन्ह जेव पावत भई यहि शोभा छवि सान ।।
यहि शोभा छवि सान सेज पै जुगल विराजै।
समय शोभ सिंगार निरख मनमथ रति लाजै ।।
भूषन सुमनन बहुर परसपर दुहु पहरावत।
छवि शोभा सरसान हेर जकि तकि रहि जावत ।।
झीनी सेत सु सनि रही सारी प्यारी अंग।
कचुकि लहिंगा अति बन्यो भीनो सीलू रंग ।।
भीनौ सीलू रंग लरी मुक्ता लगि तिनकै।
बीच रुपहरि तार [illegible] अद्भुत जिनकैं ।।

कोटि कोटि लावन्नि रूप छवि लावन छहरै।
लहिंगा चुन वटि कछुक पवन लगि बिथुरित लहरै ।।
अति नाजुक सुन्दर गवर प्रिया अंग सुकुँवार।
पटी लटी गूही अवर छुटे पीठ पर बार ।।
छुटे पीठ पर बार बड़े सटकारे भारे।
बिथुरी लट लख श्याम श्याम छकि गति मति हारे ।।
पिय मन मदन मतंग करन बस जुलफ जँजीरै।
मुख मयंक पर झूल रही शोभा की भीरै ।।
पिय नीमा मानौ अतर मिही सेत फुलिकार।
भीनौ सांवर तन सुमन शोभा सागर जार ।।
शोभा सागर जार करचो बस मीन प्रिया मन।
छुटे बंध ग्रीवान ग्रंथ गाढ़े दिय फन्दन ।।
कँवल पत्र कै चित्र लपेटा सुन्दर सोहै।
झुक्यो बाम दिस भाल मोतिया सुमन सजो है ।।
भूषन सुम्मन के सजे सुन्दर किये सिंगार।
पिय प्यारी बिच जौन्ह कै बिलसत रंग बिहार ।।
बिलसत रंग बिहार गांन कौ रहसि रचाही।
प्रिया तमूरा गहै बैन पिय कर छवि छाहीं ।।
तान तान पर लेत चौप चढ़ि मन मतवारे।
जुरे घुरे रहि जांहि मिलत लोयन अँनियारे ।।
रूप रसासव छकन पुनि चढ्यो रसासव राग।
बढ्यो रंग झूमन झुकन रसकै चसकै लाग ।।
रसकै चसकै लाग दुहुँ रिझवार रिझानै।
विवश दशा छक छाय मत्त तातै उररानै ।।
पिय सुध बिसरे आन फिरी मन मैन दुहाई।
भरी निसंकिति अंक तहाँ प्यारी सतराई ।।
लजी खिजी झिझकी झुकी बैठी ऐंठी भौंह।
दीठ सखिन सों जोर कै दई पीठ दै सौंह ।।
दई पीठ दै सौंह आपुनी अति झुझलानी।
कह्यो जाहु उठि बान यहै नहि मोहि सुहानी ।।

बैठी दीनैं पीठ निरख छकि पिय हँसि बोले ।
डारि सोहनी जार बिनहि दामन क्यों मोले ।।
रीस करी बकसीस यह पीठ सु पुनि अति कीन ।
पायन गति कित परहि इत बांधि दीठ इन लीन ।।
बांधि दीठ इन लीन जोर बर जादू गारन ।
करत बिवस ही निहद जही तन नेक निहारन ।।
बदन फेर कहि प्रिया रुखों ही बैन न ठानै ।
नगर बगर घर घरन कहै जा गुन सों जानै ।।
मुसिक्यावत गावत उठे पिय प्यारी के सौंह ।
गज गरूर चूरत चरन चले आपुनी गौंह ।।
चले आपुनी गौंह निकट ही ओट लतन कै ।
प्रिया प्रेम मदमत्त छकन बस बिवस अतन कै ।।
सखी द्वैक मिल संग भई तिन मरजी पाई ।
सहचरि भेष सिंगार करावन जिन चतुराई ।।
बैठे जाय इकंत में सजन भेष तन नार ।
बानक बसन सु जौन्ह कै जैसो प्रिया सिंगार ।।
जैसो प्रिया सिंगार सज्यो पिय मदन मनोहर ।
इत पलकांतर बिरह पीव कै प्यारी अरबर ।।
अति प्रेमा सब बिवस छकन बढ़ि छवि सरसानी ।
दशा दुरावत सकुचि सखिन सों ह्वै अरसानी ।।
पौढ़ी कुसुम प्रजंक पर ससि सनमुख सतराय ।
भाव भरे पिय प्रेम कै अधि मुद्रित दृग नाय ।।
अधि मुद्रित दृग नाय रही प्रेमासव छाकी ।
तन की सुध न सँभार भरी मन मूर्त पिया की ।।
कोउ सखि चांपत चरन कोऊ बिजना लै ढारै ।
कोउ चरचा चतुराय करत कोउ गान उचारै ।।
तब ही नागरि सांवरी आय खरी पिछवार ।
चरनन चांपत सहचरी दिय सैनन निरवार ।
दिय सैनन निरवार आप बैठी तिहि ठौरै ।
सनमुख अति नियराय चांप ही हौरै हौरै ।।

सखी निकट ते कछुक टरी सब ही जित तित को ।
श्याम सखी रहि गई टहल प्यारी कै इत को ।।
झांकत गहवर लतन में मिल सहचरि पिछवार ।
चित्र लिखी सी ह्वै रही लखि शोभा रिझवार ।।
लखि शोभा रिझवार प्रिया की श्याम अली जू ।
समय इकंत निहार सुफल मन मौज फली जू ।।
बे सँभार अति बिवस प्रिया प्रेमासव माती ।
चांपत सजनी श्याम चरन लावत दृग छाती ।।
चंचल चित चातुर अली आतुर हित बतरान ।
छुवावत प्यारी अधर सों लै बीरी निज पान ।।
लै बीरी निज पान छुवाई प्रिया अधर सों ।
चमक कुँवरि झुंझराय तमकि गहि लीनी कर सों ।।
कछु निहार नहिं लखी निकट सहचरि इक जानी ।
बोली तिहि सतराय कौन तू नई सयानी ।।
जोरि करन बोली सखी हौंज सोहनी नाम ।
मोहिं पठाई महरि जू कछूक कुँवर पै काम ।।
कछूक कुँवर पै काम चली हौं मग में आवत ।
वे मारग में मोहिं मिले इततें कहुँ जावत ।।
मैं पूछी अस समय कहौ कित चले छबीले ।
बदन मलीन उदास धरत पग अंगन ढीले ।।
तब उन मोहिं जताय कै कही सौंह की बात ।
मैं नहिं मानी अरु कह्यो कर छछन्द तुम जात ।।
कर छछन्द तुम जात जान नहि देहौं कित कों ।
प्यारी जोवन पास गहे लै जैहौं इत कों ।।
गह लाई हौं फेंट निकट यहि कुंजहि राखे ।
सौंह अटक उत रहे इतै आवन अभिलाखे ।।
तब प्यारी जोवन प्रिया अँगराई मुसिक्याय ।
कर गहि सहचरि को कहत निज चित की बतराय ।।
निज चित की बतराय बात कह हो मुसिक्यानी ।
कहा करौं री निपट ढीठ है कुँवर अमानी ।।

बरजे मानत नाहि करत अपनी मन मानी।
दइया उनहि न शंक परत मोसों घट पानी॥
मुहि हू तनक न कल परै बिन देखे पिय प्रान।
हा हा कहि उन सौ तजो अति लँगराई बान॥
अति लँगराई बान कहा ऐसी क्यों लीनी।
सांच कहौं मैं अली सौंह ताही तें दीनी॥
मुहि हू अब जक नाहि लखै बिन अजक लगी है।
मोहन मूरत मैन अरी गति मति सुठगी है॥
गुन आगर नागर निपुन सब ब्रज रहे कहाय।
मोहि खिजावन की करै वे रस बस उर लाय॥
वे रस बह उर लाय करत येती लँगराई।
मेरे मन कहाँ नाँहि प्रीत उनसों सरसाई॥
ऐसे कैसे करत लाज दइया नहि आवत।
मोहि खिजाई गई तान मेरी लै गावत॥
सजनी मन की कहत हौं सांची तोहि सुनाय।
एका लखि छाका चढ़ै यहै समय सुखदाय॥
यहै समय सुखदाय तुही लखि सखी मनोहर।
नीके बैठे गान करत हैं यहाँ रंग भर॥
कहा जानौ उन तबहि कछू जिय कैसी आनी।
भरी निसंकत अंक मोहि कीनी मन मानी॥
इनही गुन इनकै सखी दृग भर लख्यो न जाय।
देखन छबि शोभा सु नित मेरो जिय ललचाय॥
मेरो जिय ललचाय कबहु देखन नहि पावत।
नेक सकुच तजि अबहि समुख हेरत ही गावत॥
तब ही मोहि लजाय दई पिय आप लोभ कै।
तातें मुहि बढ़ि रीस बैन में कहे छोभ कै॥
मेरी गति जानत न वे कैसे रहत सँभार।
बड़े अनोखे आप ही भये रहत रिझवार॥
भये रहत रिझवार आपने स्वारथ लोभी।
जानत नहिं गत आन कहा बीतत हिय गोभी॥

समता प्रेम सु तहाँ वृथा बीतन सगताई।
सो न लहत इक निजहि लोभ अति गति सुचलाई॥
सब व्रज तिय इकटक लखें नैनन को फल लेत।
मोही लाज दबाय कै नेक लखन नहि देत॥
नेक लखन नहि देत कछू मेरो ही लहनो।
अरी महरि पै जाय कोऊ किन देहु उरहनो॥
कैसो जायो पूत धूत तुम कहा सिखायो।
औरन को दिन झार करत अपनो मन भायो॥
नवल सखी सुनि बात यह कहत भई सुसिक्याय।
अजू उराहन देहुं यह अबहिं महरि पै जाय॥
अबहिं महरि पै जाय कहोंगी बातें बाकी।
नीके मुहि कहि देहु और हू नेक पताकी॥
एक कहूँ मैं बात प्रिया सुनियो मो जिय की।
गाय सुनावहु मोहि बजावहु बंशी पिय की॥
मोहिं मिले मग मांहि तब मैं लिय कर तै छीन।
बैन बैन करते रहे हौं आई इत लीन॥
हौं आई इत लीन लेहु प्यारी ब बजावहु।
अमल चन्द्रका चाहि चतुर इत रंग रचावहु॥
उत वे सुनि ललचाहि बहुर सूधे ह्वै आवहि।
अब तें यहि सुख लोभ तुमहि कबहूँ न खिजावहि॥
कहत भई प्यारी तबै कैसे याहि बजाहु।
यह वाकी जूठी रहै नहि मो अधर छुवाहु॥
नहि मो अधर छुवाहु जूठ वाके गुन ऐसे।
खाये ओठ सुभाव होत जैसे के तैसे॥
वहि लछिचन मो होंहि अरी मुहि लांछिन लागै।
पुनि यह बातें पढ़ी कहा जानौ कहा बागै॥
बाके गुन मैं सब लखे अबहि भयो चित आन।
तब तौ मोहि खिजाय कैं कहूँ गये मिसठान॥
कहुँ गये मिसठान अरी तू आई इत को।
मेरे मन को चोरि कहा जानौ है कित को॥

नीकी कीनी अली लिये बंशी तू आई।
यह तो देहौं नांहि धरौंगी कहुँ छिपाई॥
या बिन कबहुँ रहत नांहि याको बड़ो सुहाग।
व्रज के घर खोये सबै इन दूती मुह लाग॥
इन दूती मुँह लाग करी सो मैं गुन जानत।
यामें टोना भरचो ऐंच सबके मन मानत॥
सखी कहत तू मोहि सु यामें कैसे गाऊँ।
यहै जनम बिगरैल याहि नांहि मुखहि लगाऊँ॥
विवस भई घूमै परी वधू बड़े कुलवान।
यह मारत है सबन को तानन में विष बान॥
तानन में विष वान अरी याके अति चालै।
वझझे गोपन कुँवरि भई यासों वे हालै॥
मोहूँ को कछु कियो अबहि लै नेक बजावत।
हौं जकि थकि रहि गई एक टक मुखहि चितावत॥
जब में लखो निहारि कै जौन्ह बीच वहि शोभ।
तब मेरे नैनन लग्यो देखन ही को लोभ॥
देखन ही को लोभ लग्यो री सूरत मोहन।
वहै छछंदी गयो लिये मेरी मन गोहन॥
सजनी कैसे कहौं मोहि आवत जिय लाजै।
हो हूं ह्वै गइ विवस अरी लखि २ छबि आजै॥
तू आई मग मांहि री देखि वहै सिंगार।
बैन बजावत हे सु छबि लखि किंहि रहत संभार॥
लखि किंहि रहत सँभार दोष व्रज तियन कहा है।
वहि जु लपेटें पेच परचो मन कौन लहा है॥
कँवल कर्न का कर्न सुमन छौगन की लरझर।
जकर जुलफ जंजीर कुलफ दग करत जोरवर॥
मदन पंचसर धरत है जग विजई सो जान।
ताहू को इन जेर किय याके दग द्वै बान॥
याके दग द्वै बान भौंह धनु शोभा गंजत।
वदन मन्द मुसिक्यान मान में बासहि भंजत॥

नखसिख जादू रूप महरि सुत कैसो जायो।
किहुँकर किहुँ गति मति न अरी व्रज सबहि बितायो॥
सहज माधुरी मोहनी तापर बन्यो बनाव।
मदन विचारो कित रह्यो यहि जग जीतन दाव॥
यहि जग जीतन दाव परत कहि कहा कहारी।
लाज काज नांहि रह्यो अदा है अडल सहारी॥
अरी भरी यहि मांहि किती चतुराय ठगन की।
मोहि करी बस रही कहा किहुँ आन पगन की॥
नवल सखी बोलत भई सुनि प्यारी बतरान।
तुमहि दोष वे देत है प्रिया तिहारी आन॥
प्रिया तिहारी आन कहत मुहि उन ठग लीनो।
प्यारी जीवन मूर कहा जानौ कह कीनो॥
भरी मोहनी मन्त्र भले नख तें सिख प्यारी।
हौं बिकाय गी हाथ अरी गति मति सब हारी॥
उन बिन मुहि कल परत नांहि ज्यों मीनहि बिन नीर।
छिन छिन देखे जियत हौं सो प्यारी बेपीर॥
सो प्यारी बेपीर नेक जिय की नहि जानै।
झिझक झिझक वे मिहर फेर दग भौंहन तानै॥
रूप रसासव प्याय अरी मुहि छाक चढ़ायो।
तानन बानन वेधि विवस करि धीर भुलायो॥
अमल जौन्ह नीको समय रह्यो रंग सरसाय।
तन सुख मन सुख नैन सुख मदन वान बरसाय॥
मदन वान बरषाय भयो मैं घायल जब ही।
विवस रह्यो सुध भूल सौंह दिय अपनी तब ही॥
सखिन बीच अपमान कियो री मुहि उठाय दिय।
तातै अब वन भ्रमत फिरत कबहूं न लगत जिय॥
उन मोसों ऐसी करी कासों कहौं सुनाय।
सजनी तैही दीजियो नेक उरहनो जाय॥
नेक उरहनो जाय सखी दै मोहि बुलावन।
जीवन प्रान मिलाय परत हौं तेरे पावन॥

भौंहें धनु उन तान वान दृग लाय अन्यारे।
मन मृग मेरो विवश करयो दै घाव सुमारे॥
चन्द्र सुधा धर को कहै बदन सुधा धर चाहि।
वशा पियूषहि पोष मो उन मयूष दरसाय॥
उन मयूष दरसाय जिवावहु जीवन प्यारी।
रूप धजा फहरान चन्द्रका तै भतिहारी॥
झीने अम्बर मांहि अंग पै लट छुट सोही।
छबि सागर यहि जार मीन अँखियां उरझोंही॥
जो प्यारी मानें नहीं मेरी बीती बात॥
तौ कहियो देखहु मुकुर तो पिय हाहा खात॥
तो पिय हाहा खात सांच उन हेरि पिछानहु।
लखि प्रतीत पतियाहु झूंठ तौ बहुरि न मानहु॥
कहत भई प्यारी सु अरी सुन सखी सयानी।
तो सों बात बनाय अबै कित है तै जानी॥
कहत भई सांवर सखी प्यारी तेरी आन।
तोहि छाड़ कित जांहि वे तू है जीवन प्रान॥
तू है जीवन प्रान उनहि तोबिन जक नाहीं।
तेरे बिछुरत ह्वै अधीर पल में तलफाहीं॥
छबि तेरी यह यहै समय कैसो लख लीजै।
हा हा मुकुर निहार दोष तब उनको दीजै॥
रूप गुनन आगर सबै जेती व्रज की नार।
ते रस वस आसक्त हैं वासों तन मन हार॥
वासों तन मन हार रही वह तोसों हारयो।
महा मोहनी मन्त्र कछू तैं वापै डारयो॥
तेरे हाथ बिकाय आन की वहि सुध नाहीं।
तउ तू बड़ी कठोर निरस कर ही रस माहीं॥
तेरो मन लीने रहें वे हाथन में नित्त।
कबहूँ कबहूँ राखिये त्यों उनहूँ को चित्त॥
त्यों उनहूँ को चित्त रहै वेऊ नहि तरसै।
जानत हू है अरी कछु बिहरन रस सरसै॥

आपुन ज्यों उन चहत प्रेम मन मूँदै रहनौ।
सुतौ बिहारी रसिक नाम कंत सु किन लहनौ॥
तो पै पिय दोहा पढ़ै तें इक ना पढ़ि लीन।
अनभिद भली कठोर है देखी निपट प्रबीन॥
देखी निपट प्रबीन कहा कहिये अब तोसों।
चित बित लेकै चोर बहुर ऐसी किय मोसों॥
चमकि प्रिया बोली सु अरी तोसों कह कीनो।
सखी कहत भई अजू कहन उनको कहि दीनो॥
प्यारी बोली चोर की पूछहु जित तित जाहु।
नीके साधे सधि रहे नित राखत अवगाहु॥
नित राखत अवगाह अरी जामें जो जानै।
बीते वर ते हौहि नितहि सो गुन बतरानै॥
अरी घरबसी कहत कहा मोकों मन मानी।
बाबा की सों बहुत बचत हौं क्यों इतरानी॥
कहत भई हँसि कै सखी हौं इतरानी नांहि।
अजू कहाई बात है मुहि जु कही मग मांहि॥
मोहि जु कही मग मांहि सौंह दै तुमहि कहन कों।
अजू दई है आन आपुनी मुकर चहन कों॥
हाहा लखिये मुकर नेक यामें कहा जाही।
पुनि अपने ग्रह काज जाहु सौंह जु उतराही॥
आपस में समझौ बहुर तुम जु तुम्हारी बात।
हौं काहे को खोय हौं बिना काज ही रात॥
बिना काज ही रात जात कहि इत उत हेरी।
धरयो हुतो आईन तहां ही ठौर सु नेरी॥
झमकि चली उठि अली चपल पायन गति चातुर।
कोटि कोटि रति मदन पदन तर चूरत आतुर॥
ल्याय मुकर नागरि सखी ठाढ़ी सन्मुख धार।
कहत भई उठि कै हहा प्यारी नेक निहार॥
प्यारी नेक निहार कहौ उन ज्वाब दैन को।
मिस करि [illegible] कहौ झूठ ही मूँदि नैन को॥

पिय दानी निज सौंह न्याव तुम सुखहि निबेरो।
रिस मिस तजि मो काज राखि ये मानु सु मेरो॥
सुनि प्यारी मुसिक्याय कै उठी जु आरस मोरि।
सन्मुख सखी लखि छबि थकी लै डारचो त्रन तोरि॥
लै डारचो त्रन तोरि भई चित हलचलि मति की।
भेष भरम खुल जान सँभारी निठ सुधि गति की॥
इक करि गहि इक और प्रिय आइना निहारो।
एक भुजा लड़काय नवल सहचरि गरिधारो॥
पलका पाटी तर हरी बैठि सखी मुसिक्याहि।
इक कर थांभै मुकर इक प्रिया पीठ पर बांहि॥
प्रिया पीठ पर बांहि दिये झेलै प्यारी कों।
खिस्यो सीस तें बसन सँभारत नहि सारी कों॥
मुकर बीच लखि प्रिया बदन निज रीझ लुभानी।
सखी अंस पर झूम झुकी नहि छाक रुकानी॥
इतै सखी ह्वै ही विवस यहै प्रिया छबि हेर।
कठिन परचो राखन यहै कपट भेष उरझेर॥
कपट भेष उरझेर थकित गति ह्वै अरबर ही।
तन ठहरावत नीठ विवस मन धीर न धरही॥
सोचत चित्त सँभार जुक्त बोलन की ठानी।
मदन भीर कों चीर उक्त बातन वन रानी॥
कहत भई सांवरि सखी प्यारी कों मुसिक्यात।
मुकर हेर चुप ह्वै रही क्यों न कहहु अब बात॥
क्यों न कहहु अब बात पीव आतुर तेरी सौं।
तेरे ही मुख न्याव सांच कहियो मेरी सौं॥
कोऊ किहूँ की सोह जो न मानै अघ लागै।
उनसों कहहु न कहहु २ मेरे तौ आगै॥
कहत भई प्यारी मुसिक उनसों कहि मति वात।
हौं पिय वे तिय किन भई मेरे जिय यह आत॥
मेरे जिय यह आत तबै हौं लाज न करती।
ह्वै निशंक मुख जोर मुकर लखि रीझ बिहरती॥

मेरो पूछत रूप सखी तुहि कहा कहौ री।
सुन्दरता मो सही पैन उन घाटि लही री॥
मेरो रूप निहार कै ज्यों वह मोहित होहि।
त्यों मैं मोही जात हौं अरी तिहारी सोहि॥
अरी तिहारी सोह रीझ मन वे सुख लैही।
हौं लखि हू नहिं सकत लाज दाबै मुसि दैही॥
मेरो जिय ललचात रहै दृग भर देखन नित।
वे निशंक मुहि चाहि रहत हौं जिय में अकुलित॥
विधि कौं गारी आन मन कबहुक अति अकुलाय।
मोकों पिय पिय कों प्रिया क्यों नहि कीनी हाय॥
क्यों नहि कीनी हाय दई विधना बिज मारै।
मेरे जिय की जियहि रहत कहि सकत न बारै॥
सखी कहत भई अजू सुनो यह बात किती है।
करहु पीव को भेष भजहि गी लाज जिती है॥
लाज प्रिया के रूप है पिय के भेष न लाज।
आज समय हू यह भलो औसर नीको काज॥
औसर नीको काज लाज निरवार निहारन।
कीजै प्रीतम भेष साजि सिंगार अपारन॥
तुम बैठो पिय होय तबै हौं उत पै जाऊँ।
उत पिय को बहराय प्रिया सिंगार कराऊँ॥
इत तुम बैन बजाय पुनि लीजहु टेर बुलाय।
वे आवें झूमत झुकत लाज बसै उन जाय॥
लाज बसै उन जाय तुम जु तब होत निसंकनि।
पलटा अब ही लेहु उनहि गाढ़े भरि अंकनि॥
कहत भई तब प्रिया बसन उन कैसे आनौ।
पै जु लपेटा सीस बाधि वैसो नहि जानौ॥
कहत भई तब हो सखो बांधि जु आवत मोहि।
पेचन पेचन लसहि जिहि अति शोभा छबि सोहि॥
अति शोभा छबि सोहि लपेटा बाँधहु नीको।
जैसो पिय कै सीस महा मोहन तुम जीको॥

कहत भई तब प्रिया अरी अस बसन मँगावहु।
यहिठाँ कोऊ निकट सखी ह्वै ताहि बुलावहु॥
मन मंजरि जू निकट ही हुती तहां किहु ठाम।
नवल सखी जू मधुर सुर टेर लई लै नाम॥
टेर लई लै नाम तबै वै आई नियरी।
प्यारी बोली बसन आन पहरै जस पियरी॥
यह आज्ञा लहि निकट हुती वृन्दा तहँ धाई।
ता दस पिय के बसन प्रिया तन सम असलाई॥
करवावन लागी तहां नवल सखी सिंगार।
विवस दशा ह्वै छबि छकी प्यारी सोभ निहार॥
प्यारी सोभ निहार विवसता नीठ सँभारत।
धन्य घरी सुखमान अपनपौ सर्व सँवारत॥
मन मंजरि जू तहाँ समुख लै सुकर दिखावैं।
नवल सखी जु मुदित लपेटा सीस बँधावै॥
नवल सखी मन बँध गयो पेच कुपेचन आय।
जकी थकी लागी टकी चित्र लिखी छबि पाय॥
चित्र लिखी छबि पाय कठिन भौ ठहरन पायन।
सोध सयानप चित्त तबै चातुर यहु चायन॥
भूषन सुमनन मुक्ति मणिन अद्भुत पहरावत।
मनहु धुजा सिंगार चंद्रका दिय फहरावत॥
प्रिया पीय सिंगार सजि मुकर निहारि निहारि।
तनमय ह्वै मोहन मई बोली वचन उचारि॥
बोली वचन उचारि कहा है प्रान पियारी।
मेरी जीवन आनि सखी वृषभान दुलारी॥
बहुर आप ही चमकि सोधि वचनहि पछि आने।
अरी उतै यो श्याम कहत ह्वै अति अकुलाने॥
नवल सखी मुसिक्याय तब समुख बैठि नियराय।
कहत भई प्यारी सुनौ तुमसों कहूँ जताय॥
तुमसों कहूं जताय दशा उनकी जु निहारी।
विरह विवस गति विकल ठगे से चित्त बिहारी॥

अब तुम पिय सिंगार सज्यो है बैन बजावहु।
उनहि प्रिया को भेष करन की टेर जतावहु॥
प्यारी जीवन आइये कहि वंशी महि गाय।
बिछुरे कब के विकल हैं हा हा लेहु बुलाय॥
हा हा लेहु बुलाय कहा एती निठुराई।
वंशी जूठी कहत याहि में जमुनन्हवाई॥
जमुना उत्तम सुनी सु अब यह शुद्ध भई है।
तातै मैं हूँ अपुन बसन में लाय लई है॥
नवल सखी करतै प्रिया लैकै बैन प्रबीन।
भई बजावत अधर धरि जब त्रभंग तन कीन॥
जब त्रभंग तन कीन मधुर सुर गान उचारचो।
तानन तान बितान मोहनी जार पसारचो॥
यहै अंग की मुरन भुरन दृग ग्रीव करन की।
पल्लव नचन सु लचन भृकुटि हिय भाव भरन की॥
नवल सखी को छेहरा कढ़न बनी है आन।
छकी थकी घूमै झुकी रुकै न हिय उररान॥
रुकै न हिय उररान प्रेम सागर की लहरें।
तहाँ धूर की मैड़ कपट पग अब क्यों ठहरें॥
विवस भई गति भूल फूल अम्बुज दृग सोहैं।
कहि न परत कछु बनी आन पलकन छक जोहैं॥
ललक मदन छिल बदन पै तन मन रही मसूस।
पै यह तौ कछु यों भई ज्यों दीपक फानूस॥
ज्यों दीपक फानूस बीच ढांप्यो ही दरसै।
लही सही करि—लही पिनहु तब गहिकर करसै॥
कहत भई निज हृदय लाय प्यारी कर छबि सों।
कबहु मानि हौं नांहि कही तुम पिय की अबसों॥
मग में तै तुम पै इतै पठई मोंहि बसीठ।
तब मैं निज जिय यह लही है जु छछंदी दीठ॥
है जु छछंदी ढीठ मोहि बहकाहि जाहिगे।
तब मैं वंशी लई छीन अब इतहि पाहिगे॥

मैं जु बैंन जब लई तबै उनहूँ कर अदलै।
देखहु लये उरोज छीन इन बैरन बदलै॥
सोही बैरन मुहि लगी तुम ही कै मन पाय।
मोही पै अब किय अदल करि २ घाय घुमाय॥
करि २ घाय घुमाय मोहि कीनो निज बस को।
अति गति आवत कहन नाहि आवत जिय ससि की॥
यामें चित दै तुम जु लाग मुहि अबहि बिसारी।
मैं पछतानी यहै आनि बैरन बिजमारी॥
कहत भई प्यारी चितै मन मंजरि जू और।
उरज बैन बदले सुने सखी बिचछ्यन जोर॥
सखी बिचछ्यन जोर बड़ो याकी चतुराई।
देखहु याके बचन रचन कबितै सरसाई॥
नागरि सांवरि नवल तबै मुसिक्याय रसाला।
प्यारी पिया सरूप गरै ड्रारी बर माला॥
पुनि लजाय मुसिक्याय कै रही निहोर निहार।
मन मंजरि लखि इत शिथल सुध दिय पिय सिंगार॥
सुध दिय पिय सिंगार लई गहि बाय प्रजंकहि।
प्यारी पिय पिय प्रिया दई गरबांहि निसंकहि॥
सुन्दर श्याम सुजान तम्बूरा लीनो प्यारी।
चन्दानन पिय चतुर बैन लै अधरन धारी॥
ख्याल परस पै प्रेम छक करत रंग रचि गान।
हासि बिलास हुलास कै अद्भुत रहसि रचान॥
अद्भुत रहसि रचान होत उलटी चरचाई।
कबहूँ असल सुभाव इतै ह्वै ही सतराई॥
तब वंशी मैं टेर बुलाई सखी सुहाई।
सबही सुघर समाज हँसत मुसिक्यावत आई॥
नवल नेह जिहि नाम सो लघु जु किंकिरिन मांहि।
प्रिया कृपा करि टेर ही कहि मतिवारी वाहि॥
कहि मतवारी वाहि बैन मैं टेर बुलाई।
नवरंग भीनी रात बढ़ै गावत ही आई॥

निज पिछवारे खरी रहन कों वहि दग दीने।
प्रेम पहेली कहन तहाँ आज्ञा आधीने॥
सबही सखी समाज मिल धारै प्रेम प्रमाद।
हँसि हँसि दम्पति कों भई देत मुबारक वाद॥
देत मुबारक वाद रहस की बिहस बढ़ा ही।
नवरंग भीनी रात साज बाजन लै गाही॥
केउ बैठी केउ खरी ठाम निज २ लह नीकै।
करत चरच चातुर्ज रुचित जिय प्यारी पीकै॥
कोऊ कहत जु हेरिये प्रिया दगन भय संक।
कोऊ कहत जु पिय सुघर भरिये प्यारी अंक॥
भरिये प्यारी अंक कही जब सखी हँसो ही।
बोली मधुरे प्रिया अजु तरसत ही होहीं॥
पिय सतरानै जात मोहि आतुरता चाढी।
नैक कोऊ किन कहौ सौंह दै हा हा गाढी॥
मो दिस दग आवत नहीं तुमहि लखत मुसिक्यात।
ए दइया कैसी बनी कहा कहन की बात॥
कहा कहन की बात बैन बैरन मुहि लागी।
साजत गरबी सौति यहै अधरा बस पागी॥
पिय के मुह लगि अदल चलावत अति गति हेरो।
तान तान कै बान करत घायल मन मेरो॥
हौं पिय सों बोलों न अब अति ही बढ़ी रिसान।
वेग बसीठी कीजियो जौ छिन ठहरै मान॥
जौ छिन ठहरै मान तबै ही जो न सैन है।
तौ यह मेरो मान मान करि मोसों जैहै॥
ऐसे कहि गहि मौन रही माननि ह्वै प्यारी।
कहत गान करि सखी चतुर रस रीत प्रचारी॥
प्यारी प्रान समान कौ आतुर पीय मनात।
हँसि कर गहत सुहग मिलै मुसिक्यावत सतिरात॥
मुसिक्यावत सतिरात हेरि पिय प्यारी बोली।
अज मनावत कहा यहै कछु करत ठठोली॥

सब ही सखी समाज हेरि गुन प्यारी पीके।
कहत भई मुसिक्याय अहा नीके जू नीके ॥
रही जामनी जाम इक दुहुन बढी अरसान।
उद्भव अंग अनंग कै करत प्रिया अंगरान ॥
करत प्रिया अंगरान हेर जब ही मुसिक्यानी।
नवल नेह पिछवार पियहि छांनी बतरानी ॥
मुरि वहि दिस मुसिक्याय नवल वर नागर पियजू।
कहन अखिर रहि अधर लसै सतरानै जियजू ॥
पिय प्यारी २ पिया हेर परसपर सोभ।
प्रेम मत्त छकि थकि रहे देखन यहि छबि लोभ ॥
देखन यहि छबि लोभ दुहूँ पौढ़त न रसीले।
रूप बाग दग पाग मौज बिलसत गरबीले ॥
उतते इतते जुरत कबहु जब रंग भिजो हैं।
उतै रिझौ हैं होत तबै इत होत खिजौ हैं ॥
नैनन नैनन सुगल की चरचा चतुरन माँहि।
वैनन बरनै बनत नहिं देखे ही बनि आंहि ॥
देखे ही बनि आंहि दुहूँ दिस लोयन फहरै।
जुरै घुरै दुरि मुरै अहुटि इक टक ह्वै ठहरै ॥
अति प्रेमासव सिंध लीन मन मीन कलोलै।
भई भुरहरी बेर हेर छकि दग हित डोलै ॥
यहै समय सुख चाहिकै किहूँ जसुमति पै जाय।
कही बिहार बिनोद की बात मोद दरसाय ॥
बात मोद दरसाय सुनत यह जसुमति रानी।
आई देखन काज ओट तरु लतन सुछानी ॥
पुत्र वधू सुख हेर मगन मन सुध न सँभारै।
भूखन रतन अमोल अंग के वारे झारैं ॥
कछुक बेरि लखि तैजु पुनि भान प्रकाशित जान।
बहुरि विराजी महल निज छाने छाने आन ॥
छाने छाने आन गई लखि यहाँ महरजू।
दीनी किहूँ सुनाय दुहुनि यह बात कहरजु ॥

प्रेमासव के छक्कन थक्कन बिच सुनी भनकसी।
जसुमति आवन अखिर बात श्रुत परी तनकसी ॥
हरवरि चौंकि सँभार चकि अरि बरि उठे लजात।
कहत भई कोऊ सखी अब काहे सतरात ॥
अब काहे सतरात पधारी वे तो गृह जू।
करिये जमुन बिहार समय शोभा लखि यह जू ॥
यह सुनि पुनि दुहूँ हेरि भान अनुदिय निकसत।
कुमदि कुंद कालिंद्रिकूल अम्बुज गन विकसत ॥
लीनै सखी समाज सँग प्रेमासव छक पूर।
चले जमुन दिस मत्त दुहुँ गज गति-चूर गरूर ॥
गज गति चूर गरूर चले जमुना तट आये।
नित कृत करि जु स्नान काज जल विहरन धाये ॥
कँवलपत्र भरि सलिल परसपर छिरकत छबिसौं।
बसन अंग लगि सने बढ़ी शोभा अब तबसौं ॥
नीर उरज लौं वैठिकै क्रीडित करत सनान।
विवस अंग उछरंग बढ़ि रहसि रसासव पान ॥
रहसि रसासव पान मत्त मतिवारे गति मति।
नवल बिनोद विलास हासि कउतक बढ़ि रति पति ॥
रसा-भास गति दरस सरस रस पूरन छायो।
अरुझे तन मन नैन विजय धनु मैं न चढ़ायो ॥
ग्रीषम ऋतु को तेज रवि दग असुहातौ लागि।
जल बिहार करि पुनि चले नवल कुँज बड़भागि ॥
नवल कुँज बड़भागि कुसम तरु लता सकूलित।
सज्या सुमन सुगन्धमई रचना अति शोभित ॥
तहाँ आय रस मसे वसन पलटे सुख सानै।
पट गुलाब दल रंग अंग निज २ हिंस जानै ॥
खटरस बिंजन विविध तब जसुमति दए पठाय।
जेंवत अति रुचि परसपै रहसि बिनोद बढ़ाय ॥
रहसि बिनोद बढ़ाय कौर दै अधरन परसै।
रसन स्वाद विसराय स्वाद सुख दग मिलि सरसै ॥

जेंवत अधिक अबेर हेर सखियन सँभरानै।
गई छुधा सब उदर की जु दग नाँहि अघानै।।
सलिल सुगन्धि सु मेलि कै अचवन सखिन कराय।
बीरी भरि मुख बास जुत पानदान लै आय।।
पानदान लै आय दुहूँनि बीरी अरु—गाई।
कँवल पत्र सउगन्ध सानि रुचि तलप बनाई।।
मणिमय कंचन कलिल आरती लगि मुक्तालर।
दीप सजोवत जगी झमाझम जोत जवाहर।।
करत आरती सब सखी भई आरती रूप।
यह शोभा यहि समय की देखै बनत अनूप।।
देखै बनत अनूप जुगल यौं दीठ लगन भय।
वृजरानी करवात आरती न्यत्त प्रेममय।।
कर जु आरती हेरि समय सब ही बहुराई।
परदा दीनै छोरि दुहूँ पौढ़े सुखदाई।।
अरसाने निस के जगे सरसाने अति मैन।
रीझ रिझाने मिल कियो रहस लुभाने सैन।।
रहसि लुभाने सैन जबैं दोऊ मिलि कीनै।
परदा बाहर बैठि तबै ललितादि प्रबीनै।।
मन्द मन्द बाजित्र मनोहर सरस बजावै।
तानन तान बितान राग सारंग रचावै।।
योंही बिलसत रहत नित विविध बिनोद बिहार।
नवल नेह कै यह रहौ अन उतरन मतवार।।
श्रीगुरु कृपा प्रभावते फुरी कछुक हिय आन।
ताते सुन्दर कुँवरि किय निज मति सम बाखान।।
हरिजन जेई नर सरस पढि यह लेहु सुधार।
दीन हीन मति जानि मुहि करिहौ कृपा अपार।।
सम्वत यहि नव दून सत अरु तीसा की साल।
सोरहसै पच्याणवै माघ मास शुभ काल।।
श्याम पछ्य तिथि अष्टमी बासर मंगलवार।
पुस्तक कीनौ कृष्ण गढ़ पूरन कृपा मुरार।।

।। इति श्री आदि पुराणे सुन्दर कुँवरि कृत संकेत सुगल सम्पूर्णम् ।।
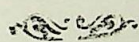
रसपुंज

।। दोहा ।।

वृजे जीवन जीवन प्रिया श्रीवृषभान कुँवार।
बन्दौं जिनको चरन रज जाचौं कृपा अपार।।

।। कवित्त ।।

भानुकुल भूषण लड़ैती वृषभान जू की,
कृष्णचन्द्र भाग्य रूप प्रगटी है राधा जू।
वेद हू न भेद लहै विष्णु जाप नाम रहै,
गूढ़ मति राखे शिव सुकृत कै साधा जू।।
जा पद परस वृज धूर की प्रभाव भूर,
चाहत दरस सुर परस अगाधा जू।
जाचै कृपा किंकिर नवल नेह मतवारो,
सुन्दर कुँवर पद बन्दि हर्न बाधा जू।।

॥ दोहा ॥

नन्द जशोमति पुण्य फल हेरहु सुवन निहार।
विष्णु रूप नख क्रांति जिह सो वृज नित्त बिहार॥

॥ कवित्त ॥

नारायण जल साई विष्णु बयकुठ राई,
जिनसों त्रलोक रचना जो ये अपार है।
सर्व अवतार बसुदेव सुत कृष्ण आदि,
अस नन्द नन्दन के जानौ निरधार है॥
वृन्दावन बासी वृज प्रेम को प्रकासी,
राधारवन बिलासी अवतारी नित सार है।
वंशी धारी गिरधारी मोर के पखवा धारी,
मोर पख धारी ताहि बन्दौं बार बार है॥

॥ दोहा ॥

पद्धति सनत्कुमार कै निंबावत भगवन्त।
श्रीवृन्दावन देवजू मम प्रभु भये महन्त॥

॥ कवित्त ॥

भक्ति मुक्ति ठाम श्रीपरशराम देवजू की,
गादी है सलेमाबाद तहाँ पाप कांप ही।
कोटि कोटि जन्म २ सुकृत उदय तातें पावें,
महा भागी जन सेवन सजापही॥
जहाँ कलिकाल के अँधियारे के तिमर हर,
वृन्दावन देवजू प्रगट प्रभू आप ही।
दीन के दयाल मोसी पतित निहाल कीनी,
लीनी अपनाय बन्दौं यहि छाप ही॥

॥ दोहा ॥

बन्दौं हरि प्रिय भक्तजन जिनके हरि प्रिय प्रान।
कृपा करहु मो पतित पै महा दीन मुहि जान॥

॥ कवित्त ॥

चाहौं नहिं प्रश्न कियो इन्द्रसुर राज जो है,
विधि हू न चाहौं प्रश्न को विचारी है।
चाहौं नहिं प्रश्न कियो रिधि सिधि लक्ष्मी हू,
मुक्ति हू न चाहौं जो सकल सुखकारी है॥
चाहूं नहिं प्रश्न कियो आदि बयकुण्ठ नाथ,
तीन लोक माँझ अति जाकी गति भारी है।
श्रीगुरु कृपा सों कहों जन्म जन्म मोपै सदा,
भक्तजन प्रश्न रहौ यही चाह धारी है॥

॥ दोहा ॥

हरि गुरु भक्ति सु भक्तिजन ये ही मो कुलदेव।
इन पद रज बन्दन करौं इन ही की करिसेव॥

॥ कवित्त ॥

ये ही कुलदेव मेरे ये ही शुभ सेव मेरे,
ये ही गुन भेव मेरे इन ही को गाय हौं।
ये ही मति गति मेरे ये ही मात पित मेरे,
ये ही बन्धु सुत मेरे इन ही को धाय हौं॥
ये ही पष्षधारी मेरे ये ही हितकारी मेरे,
ये ही रिधि सारी मेरे इन ही को चाय हौं॥
श्रीगुरु कृपा तें पाय अमृत अभय भेव,
ताहि तजि आन भजि काहे विष खाय हौं।

॥ दोहा ॥

इन ही कृपा मनाय कै बिनवत हौं करजोर।
हिय प्रवेश मो रसन कथ करहु प्रगट चितचोर॥

॥ कवित्त ॥

परम प्रेम पूर रसिकन की जो जीव मूर,
राधा राधारवन बिहार नित संग को।
हिय मो निवास कर रसनि प्रकाश होहु,
दम्पति बिनोद रस रहस उमंग को॥
विपुन बिलास के उपास मत मतवारे बोरे,
यहि रंग तिन्है बोरे दूने रंग को।
बरनौं हौं बान ऐसी भक्तजन रीझै तैसी,
यह ही उपाव मेरे सर्व हित वंग को॥

॥ दोहा ॥

गनपति सुरपति आदि तें कबिता उक्त उपाज।
पुस्तक रचत मनाइये प्रथम सिद्ध कृत काज॥

॥ छन्द भुजंगी ॥

प्रचंडं भुसुंडं च रच्यं सिदूरं।
वपुं दीर्घ लम्बोदरं सिद्ध पूरं॥
महा बुद्धि गौरी तनै श्रीगनेसं।
चहूँ उक्त जोई सुदीजे विसेसं॥
अहे वाक बानी महा शक्ति साधा।
अती रूप रासी हरै जक्त बाधा॥
तु हे सरसुती बाहनीहंश नित्तं।
सवं बुद्धि दाता त्रिलोकी अमित्तं॥
मुहिं प्रश्न ह्वै कै विधा जुक्त दीजे।
बिहारं वृजं नित्य व्याख्यान कीजे॥
कहौं प्रेम गाथा घनश्याम राधा।
कहै नेति नेती सुवेदं अगाधा॥

॥ दोहा ॥

जाको नित्य बिहार वृज श्रीराधा के संग।
सो कछु बरनि सुनाय हौं भेद अगाध अभंग॥

॥ कवित्त ॥

कोऊ कहै कैसे निल विपुन बिहारी कृष्ण,
मथुरा पधारे वृज विरह दशा भई।
श्रीशुक बखानी भागवत में परीछत सों,
औरहू पुराननि सुनी है सो तौ ना नई॥
ताके बीचि मन है सँदेह न भनत,
क्यों हूँ काहे जिय लागै या विचार दृढ़ता गई।
येऊ बात ऐसी सो असत्य नहिं जानिबे को,
याही भ्रम भेव मत सचल करै दई॥

॥ दोहा ॥

ताकौं वरनौं भेव सब सुनहु रसिक सुख पाय।
सकल पुरातन प्रथम सो आदि पुरान बताय॥

॥ कवित्त ॥

श्रीशुक बखान्यों भागवत मधि प्रीछत सों,
तामें यह गूढ़ भेव राख्यो न जतायो है।
अन अन मतधार श्रोता हैं अपार जहाँ,
वर्नन रहसि राधा सूर सों छिपायो है॥
सकँध पुरान सूत सौनक सन्देह हरचो,
भक्ति रसामृत भेव शिव प्रगटायो है।
विधि सों प्रकास्यो अलि रूप हरि कंज नाल,
अनिरुध श्वेत दीप नारद सों गायो है॥

॥ दोहा ॥

श्रीहरि निज मुख बदत है वृज मो नित्य बिहार।
ब्रज तजि अनत न जात पल राधा बस निर्धार॥

॥ कवित्त ॥

श्रीहरि वचन यह मिथ्या जोब ह्वै है,
तौब वेद आदि श्रीमुख के बैन झूंठे ही सही।
प्रभु की अनन्त गति लीला है अनेक रत,
नट जग जीव ताकी बात न परै लही॥
जाकी एक माया जाल रचना अनेक ख्याल,
ताकी इछि बार तासों कैसे कै परै कही।
शिव शुक शेष सनकादि वेद विधि आदि,
नेति २ भाषै त्रयकाल पार है नहीं॥

॥ दोहा ॥

जाको हित जित गूढ़ मत ब्रज बिहार प्रिय नित्त।
श्रीगुरु कृपा प्रभाव सों कहौं भावना चित्त॥

॥ कवित्त ॥

जाहि सुन रीझै व्रज प्रेम मद मतवारे,
प्रान धन सर्वस सो भेव यह जान है।
आन जे निषेदी केऊ सुनि कै निषेद करैं,
मन की कहैंगे यह रचना बँधान है॥

तापै हौं कहत शिव पारवती जू सों कही,
भक्त रसा अमृत पुरान जो प्रमान है।
हरि गुन गान कथा कोऊ कहै ध्यान,
पथ सत्य करि मान जन मुख प्रगटान है ॥

॥ दोहा ॥

महा दीन हौं हीन मति चाहत ऐसी बात।
जैसे बौना चन्द कों पकरन उसस बढ़ात ॥

॥ कवित्त ॥

माया मद पात्र यह लोहे को हृदय मेरो,
तामें अति अद्भुत बसान सुधा सार कों।
श्रीगुरु प्रताप छाप पारस कृपा को पाय,
लायक भई हौ येती पहुँच विचार कों ॥
पड़ी उड़ि धावै चढ़ै सक्त सम ऊँचे गति लीन,
ज्यों कहावै नभ अगम अपार कों।
त्योंहीं चित्त चाहि हौं अथाह भेव गाय कहौं,
रहसि रसीले राधा नन्द के कुँवार कों ॥

॥ दोहा ॥

रंगभूमि वृन्दा विपिन रूप रसिक रिझवार।
घायन घट मुख आह रट सकत न धार करार ॥

॥ कवित्त ॥

घायल है चूर कैधौं कारे कै लहर पर,
मद मतवारे आन देखे नाहि ऐसे है।
जहाँ पिय प्यारी ऐसे साथ के समाज ऐसे,
पुर के बसैया ऐसे कहौं जैसे है ॥
हारै जीत मानै फूल मोद मन मानै सब,
याही में सयान जानै अजब अनैसे है।
बन बसवान बयकुण्ठ न नजर आनै,
प्रेम सह दानै है गरूर छाजै वैसे है ॥

॥ दोहा ॥

जहाँ प्रिया पिय प्रेमबस रसे रसिक रिझवार।
जिनकै अति चित चढ़ि रही आन ललन मनवार ॥

वय किशोर षोडश बरस चन्द्रबंश है चन्द।
नन्द महर सुत लाड़लो सब ब्रज को आनन्द ॥
पांच सात पीढ़ीन सों नृपता रीत उठाय।
गोपालन व्रत धारिये रहही ग्वार कहाय ॥
योंही रवि बंशी नृपति श्रीवृषभानुहि रीति।
दुहुँ घरन इन आदि तें चलि आई अति प्रीति ॥
श्रीराधा वृषभानु कै कुँवर लड़ैती प्रान।
मदन मनोहर मन हरन सुन्दर महा सुजान ॥
नन्दीसुर नँदराय ओ बरषानै वृषभान।
राजश्री वैभव महा ताको नाहि प्रमान ॥
गोप रीत साधन तदपि मिलि सब गोप कुमार।
लै लै गोधन प्रात नित विकसत ढोर अपार ॥
मधि नायक तिन सबन में नन्दकुँवर गोपाल।
कौतुक केलि कलोल करि हँसत हँसावत ग्वाल ॥
गावत बैन बजात मिल उमगत बन को जात।
विपुन बिनोद सुबिलस कै सांझ समै गृह आत ॥
इत नित प्रति ही मिल कढ़ै गोप सुता गन संग।
पूजन श्रीगिरिराज औ औरहु काजन वंग ॥
इन मधि नायक लाड़ली श्रीवृषभानु कुँवारि।
जिहि देखन की लालसा रहत नन्द सुत धारि ॥
मिलि चातुर चंचल चलै मजिन मथुनियां माथ।
चपलासी बन सघन बिच आवत छुट २ साथ ॥
राधा चउदह बरस वय सब इक दाई संग।
खेलत हँसत कलोल सों आवत भरी उमंग ॥
एक दिवस की बात हौं बरनौं याही रीत।
नित नव विपुन बिहार है दम्पति प्रेम प्रतीत ॥
एक समय लाड़लि निसहि रही हुती ढिग मात।
बहुरचो गोरस भेट लै चली सास पै प्रात ॥
इत दाऊ बिन कुँवर वर आये गोधन संग।
तातें कौतुक हासि करि रच्यो प्रेम अति रंग ॥

गोप कुँवरि गन दूर सों आवत लखि नँदलाल ।
ठाढ़े मारग रोकि कै संग लिये सब ग्वाल ॥
हरी भूमि शोभा भरी गहवर गली सुगैल ।
मानहु मदन बरात से ठाढ़े श्याम अडैल ॥
गोप लली सब इहि गली चली २ जब आय ।
तब कर लकुटी आड़ दै मोहन कह्यो सुनाय ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

विपिन हमारे कौन तुम कहाँ काज कित जात ।
देहु दान बन राहकर बहुरि न पूछें बात ॥

॥ श्रीललिता वचन ॥

तुम को हो टरिजाहु किन तुम्हरो का वन माँहि ।
वन वृषभान महीप के नन्द बसाये वाँहि ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

लंक लचक पग डगमगै तन थहरत सुकुँवार ।
तातें हम कों देहु यह शीश गगरिया भार ॥

॥ श्रीविशाखा वचन ॥

हमरे ये गृह काज हैं नित इत आवत जात ।
तुमहि भार को भार का क्यों मुख पानी आत ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

बरसाने कों स्वाद दधि अति ही ताकी चाह ।
नीके नीके देहु कैं लूटि लेहिंगे राह ॥

॥ श्रीरंगदेवी वचन ॥

लूटत चोरत फिरत हौ ये ही गुन है पूर ।
नन्द गेह कछु मिलत हू या पर भरे गरूर ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

गौरव हमरो जग विदित श्रीवृजराज कुमार ।
देहु भलै कै सीस तें मथुनी लेहुँ उतार ॥

॥ श्रीतुंगविद्या वचन ॥

कहाँ करै ब्रजराज सुत बड़े कढ़े गुन पूर ।
पै श्रीभानु कुँवार है रहौ अदब सों दूर ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

हम या वन के बासिया तुम या वन नित आहु ।
आवन जावन चहत तौ हमहि दान दै जाहु ॥

॥ श्रीचम्पकलता वचन ॥

दान लेत द्वै जात के कै द्विज कै डाकोत ।
आहा तुम ब्रजराज सुत जान परत हो तोत ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

ग्वारनि गारिन देत हौ अति ही भरी गुमान ।
जान देहिंगे दान लै नन्दराय की आन ॥

॥ श्रीचित्रलेखा वचन ॥

फैंट बँध वर साल पै वह निज सुधि न चिताय ।
दधि भंजन गृह भंज तें बँधे चनगटे खाय ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

बातें टारत हौ कहा दिये बनैगो दान ।
तुमसी सूम न होत है बसनहार बरसान ॥

॥ श्रीइन्दुलेखा वचन ॥

नन्दराय के कँवर हौ सब गुन पूर विचार ।
ये लच्छन दातार के चोर और बटपार ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

हमसे माँगत दान हठ तुम्हरो लख्यो सयान ।
दान मान सो देत है हेर सुठाम सुजान ॥

॥ श्रीसुदेवी वचन ॥

हाँ जू दान जु देत है हेर सुठाम सुजान ।
पै नाहिन देते सुने कारे चोरहिं दान ॥

॥ श्रीकृष्ण वचन ॥

ग्वारि गवारिनि तुम सबै समुझत नहिं कछु मूर ।
चौदह विद्या हम मही सोरह कला सपूर ॥

॥ श्रीराधे वचन ॥

'चौदह विद्या तुम मही सोरह कला बसाय ।
तौ गुन प्रगट दिखाय कछु लीजे दान रिझाय ॥

॥ कवि वचन ॥

यह सुनि नटनागर नचे लिये सखागन संग।
गावत बैन बजात कर कउतक रहसि उमंग॥
भाव भेद बँधान गति तानन गान प्रकास।
अति अद्भुत सुख रहसि रस वृन्दा विपिन विलास॥
देखत श्रीराधे सहित गोप सुता रिझवार।
निर्तत नट ह्वै सांवरो नागर नन्द कुँवार॥

॥ कवित्त ॥

गति सों मटकि चलै छबि सों लटकि,
चाल उर बनमाल है लहकारी जू।
कर की फिरनि कटि ग्रीव की मुरनि,
दृग उझकि ढुरन भौंहें भाव भरी भारी जू॥
निर्तत सुलफ नट नागर रसिक छल,
लखि रिझवारी सब जाति वारी वारी जू।
चित्र की लिखी सी राधे विवस छकी सी रही,
आँखन की पांखें बांधी या खिन बिहारी जू॥

श्याम रूप सागर में नैन वार पार थके,
नचत तरंग अंग अंग रगमगी है।
गाजन गहर धुनि बाजन मधुर बैन,
नागनि अलक जुग सोधै सगवगी है॥
भँवरि त्रभंग ताई पानप लुनाई तामें,
मोती मणि जालन की जोति जगमगी है।
काम पौन प्रबल धुकाव लूपी पाज तातें,
आज राधे लाज की जिहाज डगमगी है॥

गागरि गिरी है केऊ सीस उघरी है केऊ,
सुधि बिसरी है ते लगी है द्रुम डार कै।
डगमग ह्वै कै भुज धारी गर द्वैकै काहू,
बैठि गई कोऊ शीश मटकी उतारि कै॥
मैन सर पागी कोऊ घूमन है लागी कोऊ,
मोती मणि भूषन उतारैं डारै वारि कै।

ऐसी गति हेर इन्हें ग्वार कहैं टेर टेर,
मदन दुहाई जीति मदन मुरारि कै॥
मन रिझवार ये तो घायल सुमार बिन,
सुभट करारे ज्यों सँभार को सँभारि कैं।
ललिता कहत अरे सुनहु गँवार ग्वार,
करत उभार ऐसे काहे गाल मारि कै॥
आछे जयवार देखे मदन मुरारि जू को,
रहो रे लवार गिरिवान मुँह डारि कै।
नाचन नचाय लीने कैसे मन मानै,
कीने जीत है हमारी वृषभानु की कुँवारि कै॥

॥ श्रीललिता वचन ॥

॥ दोहा ॥

आवहु श्याम सुजान जू बगसीसत अब दान।
सब दधि भंजन देत हैं रीझ सुता वृषभान॥

॥ कवि वचन ॥

निज २ सीसनि मथुनिया श्यामहि दई उतारि।
नाचन लागे ग्वाल मिलि कहि जय भान कुँवारि॥
सब ग्वारन कर मंडली बिच बैठे गोपाल।
दधि भोजन अति रुचि करत कौतुक रचत रसाल॥
श्रीललितादि सहेलियाँ कह्यो श्याम चित चोर।
अद्भुत कौतुक आज इक है संकेतहि और॥
श्रीराधा करगहि चली ललिता जू संकेत।
सखी संग की संग चली कौतुक चाहन हेत॥
ये आई संकेत बन नव निकुंज सुकुँवार।
जहाँ रही बनि सौंज सब बिहरन रुचिर अपार॥
वे दधि भोजन करि उतै कह्यो सखिन चकिचाय।
तुम्हरो गइयां चरत इत मो गोधन न लखाय॥
निज गोधन रखवार तुम सब रहियो यहि ठौर।
गाय गई मो निकसि कहुँ देखौं हौं किहुँ ओर॥

यों कहि चातुर चपल गति चले विपिन संकेत।
आये आतुर मिलन को प्रिया प्रान निधि हेत॥
झमक मिले द्दग दुहुँन के खिली बदन मुसकान।
गज गरूर चूरत चरन आये निकट सुजान॥
सज्जा सुन्दर कमलदल दुहूँ बिराज परबीन।
साज ललित ललितादि लिय गान रहस रस कीन॥
प्रिया प्रेम वस विवश मन बैन बजावत पीय।
मिलि मृदंग मुह चंग सुर तार तँमूरा जीय॥
गान करत प्यारी पिया ललितादिक मिलि संग।
छीन लई बंशी सु कर श्रीराधे रस बंग॥
तब नट नागर चतुर वर उद्धव भाव प्रकास।
अंग २ द्दग भौंह कर प्रगट सु रचन विलास॥
छके छकावत द्दगन मन प्रेम सुधा रस पूर।
रहसि रंग उछरंग बढ़ि मजलस मदमत चूर॥
प्रिया गान की तान पै प्रीतम रीझ बिकाय।
बीरी बार आरोगि ही भुज भर हृदय लगाय॥
भाव भेद पिय के निरखि प्रिया रीझ रिझवार।
भूषन मन मोतीन के डारत बार उतार॥
यह दम्पति गति प्रेमवस लखि २ सखी समाज।
सुख अथाह द्दग लाह लहि मगन चित्त छकि छाज॥
ऐसे रहस बिनोद सों आय दुपहरी बार।
श्रीजसुमति पठई तहाँ छाक सुविविध प्रकार॥
ते बिंजन दम्पति तबै अति रुचि भोजन कीन।
उदर अघानें मिलि दुहुँ द्दगन जु तृप्तन लीन॥
शेष सखीगन मिलि लह्यो भोजन तदपि अत्यन्त।
सो सखान उतको पठै दयो श्यामघन मित्त॥
इत दम्पति जल अचय पुनि लिय बीरी सुख वास।
ललितादिक किय आरती दिष्टि लगन कै त्रास॥
नव निकुंज निभृत समै पौढ़े दुहूँ इकन्त।
सखी रमन बन बीथुरी हेरि समय को तन्त॥

कुंज ओट निचरी किती राम करत सारंग।
मन्द २ बाजंत्र धुनि सुनि मन विवस अनंग॥
नवल नेह को टहल तहां रहन निकुंजहि खवार।
पनही दम्पति चरन की राखति लिये सम्हार॥
ऐसे दिवस बितीत ह्वै जब कछु रह्यो जु शेष।
तब दोऊ गरबांह दै फिरत शोभ बन देख॥
कहूँ सुमन गिंदुकन कर करत बिनोद सुखेल।
भूषन पुहुप बनाय कै रचत अंग रुचि मेल॥
दोऊ मिलि गावत रहसि बोलत प्रेम पहेलि।
विविध बिनोद बिलासही सरस लुभाने केलि॥
कहुँ तरुलता उमंगते प्रिया कुसुम चहि लैन।
डार झुकाबत झूमि ही तउ कर पहुँचत हैन॥
तब निज कंध चढ़ाय कै पिय तुरवावत फूल।
कहुँ करि पिचकन खेल ही जाय सलिल के कूल॥
कहूँ कवलदल तल्प पैं दम्पति बैठि प्रसंग।
रुचि सिंगार सँवार हीं दुहूं परसपर अंग॥
प्यारी की बैनी गुथै पिय लै कुसुम रसाल।
पिय कै प्रिया बनावही सुमनन छोगा माल॥
प्यारी पद जावक भरै पिय कुसुमन कै रंग।
पिय कै कवल पराग के चित्र प्रिया रचि अंग॥
कहूँ मालती लतन में झूलत प्यारी प्रान।
मन्द २ झकझोर तब प्रीतम देत सुजान॥
कहुँ अलि पुंज निहार कै प्रिया चमकि थहराय।
तब निज अंगनि ओट दै लेत हृदय पिय लाय॥
कहुँ इकंत चलि जात कहुँ मिलत सखिन सों आनि।
कहुँ प्यारी करतार दै भजत गहत प्रिय प्रान॥
कहुँ श्रमकन प्यारी बदन हेर रसिक चितचोर।
तब पिय पवन ढुरात लै निज पीताम्बर छोर॥
कहुँ गावत पिय संग लै वंशी प्रिया बजांहि।
पिय वंशी मांगत कहूँ दैत कहत नट नांहि॥

वंशी आतुर पीय लखि प्यारी घरनि छिपाय।
तब बसीठ ललितादि है दैही हा हा खाय।
कबहुँ माननी है प्रिया तब प्रीतम अकुलाय ॥
चरनन मुकुट छुवाय कै लेत रिझाय मनाय ॥
कहूं ढिठौंही करत पिय प्रिया खिजौं ही होंहि।
तबहि हँसौंही करत है रसिक रिझौंही गोंह ॥
यहि विधि विपिन बिहार ते संझ्या समय सुहेर।
ग्वार गाय उत घेर सब इतहि सुनाई टेर ॥
सखी संग तब लै प्रिया चलन चपल गृह चांहि।
कँवल फिरावत हँसत मिल ललिता गरधर बांहि ॥
अरबराय येऊ मिले आय सखागन पास।
कहत भये सब ग्वार तब श्यामहि लखि करि हास ॥
भैया जू आये भले निज गैयन को हेर।
किते दूर ऐसे गये ह्वै गई सांझ सबेर ॥
कोउ कह गैया हेर को भैया धाये जात।
मग जीवनि निधि मिलि गई तब क्यों आवत पात ॥
कोउ कह भैया ये गये करन मदन सुर ताप।
ताके चित्र विचित्र तन लै आये जू छाप ॥
कोउ कह इत बन दूर को है वरदाई पौन।
ताते ये भैया गये श्याम हरित दुति हौन ॥
कहत श्याम तुम सब कहौ जो निज २ चितमांहि।
हम बन घाम निहारि कै सोय रहे द्रुम छांहि ॥
हँसत २ पुनि परस पँ गावत बैन बजात।
कौतुक केल किलोल सों गोधन लै गृह आत ॥
आगे गोधन वृन्द लै संग पिछौं है ग्वाल।
गज गरूर चूरत चरन आवत मदन गुपाल ॥
गौरज रंजत बदन मनु पंकज सनी पराग।
भौंहैं बिन गुन धनु चढ़ी मदन बान दग लाग ॥
ललित लपेटे चंद्रिका अति शोभा सरसात।
मदन जीत वानै मनौ रूप धुजा फहरात ॥

गर बनमाल सचाल गति कोटि मदन छबि अंग।
कँवल फिरावत हरत मनु हूँनर करत फिरंग ॥
इत ललितादिक संग लिय कुँवरि अँगहि मग पाय।
गोधन पहल सचाल ह्वै रंग महल निज आय ॥
अद्‌भुत महल उतंग पै छाजै जालिन जाल।
झांकत सखी समाज लै आवत मदन गुपाल ॥
वे आवत लखि दूरितें ब्रज तिय सनमुख धाय।
सदन सीस निज २ कितो लखत प्रान से पाय ॥
केउ लै लै सिर गगरियां पनघट निकसी गैल।
तिनको लखि २ श्याम घन रचत छेलता फैल ॥
जबलौं राधे महल कै सनमुख आये नांहि।
तबलौं ब्रजगोपीन सों रचत नेह चतुरांहि ॥
पनघट निकसे आय तब गैयन दिय विमकाय।
जित तित बिथुरी गाय सब घेरन पार भजाय ॥
ये पनघट पै एकले ठाढ़े नन्द कुमार।
इनको लखि त्रियगन भई बिवस प्रेम मतवार ॥
केउ घूमै केउ छकि परी केउ पट उघरी सीस।
केउ अंचर बिसरी सुतिन अंग लंक छबि दीस ॥
केउ चितवत ह्वै चित्र सी केउ दग मिलि मुसकात।
केउ अध बोरी गगरिया गहि रहि गई चितात ॥
केउ जल लै गृह को चली सास त्रास संग मान।
तिन कंकन रेतहि धरचो हेरन मिस फिर आन ॥
केउ चन्दानन चंचल। हँसत कलोल बढ़ाय।
केउ गागरि सिर धरत नहिं इँडुरी नीर बुड़ाय ॥
इत छबि सों द्रुम डारि गहि ठाढ़े हँसत गुपाल।
कछु क्रीड़ा इनहू चही लखि पनघट के हाल ॥
किहुं की चोरी इँडुरिया किहूँ सवांरत हार।
कँवल कपोल छुवाय किहुँ किहुँ घूंघट दै टार ॥
किहूँ सँभारत अंचरा गागरि किहूँ उचात।
[illegible] गैल किहुं रोक हो टोकहि किहुँ मुसकात ॥

गारी दै किहुं रहसि सों बिहस करत किहुँ सैन।
किहुँ सों भुज भटभेर दै किहुं नैननि में नैन॥
किहुँ उरोज डारत कुसम किहुं उर अतर लगात।
किहुँ तोरी कंचुक तनी किहुँ छीटन चमकात॥
किहुँ कुच किहुँ नीबी परस किहुँ पद सों पद चाप।
यों पनघट तिय उर हरी मदन ज्वाल की ताप॥
चमकी गैयन घेर कै लै आये सब ग्वार।
तब मिलि गृह दिशि कों चले मोहन नन्द कुमार॥
आये गाँव गलीन जब चढ़ी अटा तिय वृन्द।
केउ खिरकी थिरकी खरी सास ननद डर फन्द॥
चहुँ दिशि तें बरषत भये पहुप न छौंगा माल।
कहुँ मुँदरी पाती कहूँ परत प्रेम के जाल॥
ठठिक २ चालत चतुर चंचल चितवन चाह।
मदन बिलास हुलास बढ़ि लेत देत छबि लाह॥
नीरै निकसे आय जब रंगमहल पिछवार।
बदन मरीचैं द्दग परी मदन दरीचें जार॥
अरे खरे चितवत रहे सरी यहाँ मन आस।
गाय गई सब खरक लौं ठाढ़े दुहत अकास॥
गायन कै गैल छली छैल ताके फेल भरे,
कर अरबिन्द कटि दूली ब्रजवाल की।
आवें मग ऐन परे खिरकी उतंग नैन,
कहत मरीचै चन्द चन्द्रिका निहाल को॥
लोभी निधि सूर पाय अटके जहीं के तहीं,
धैन कढि धाई दूरि सुधि न सँभाल की।
सुन्दर कुँवरि वृषभान जु की हेरि अबै,
फेरि चालैं गति मति जुगल गुपाल की॥

॥ दोहा॥

निज २ गोधन ग्वार लै लिय निज २ गृह गैल।
ये खिरकी सेवत खरे मानहु मत्त अरैल॥
यह गति ललिता लखि इतै बोली टेर सुनात।
पांय लगन को लाड़िली श्रीजसुमति पै जात॥
खेल आज रचिहै वहाँ अमल चन्द्रिका माँहि।
गो दूहन कर वेग उत आवहु जो मन माँहि॥
श्रीराधे ललितादि लै चली जसोमति पास।
मोहन गो गौहन चले नन्दभवन गहि आस॥
मोहन आवत जानिकै जसुमति सामुहि पौर।
मंगल विधि लै आरती चली चपल गति दौर॥
झुंडनि सखी समाज संग गावत गीत उमंग।
तिनमें श्रीराधे चली लै ललितादिक संग॥
सामुह श्रीजसु आय कै वार आरती नीर।
गोरज झांकी वदन तें लै निज अंचर चीर॥
गो दोहन मोहन करन चले खरक की ओर।
जसुमति संग सखीन लै आई इतै बहोर॥
गो दोहन को दोहनी अनगन सखिगन हाथ।
जसुमति पठई खरक कों चली सु धरि २ माथ॥
ते सब राधे लै चली लिय ललिता गन संग।
गो दोहन कौतुक तहा देखन भरी उमंग॥
दूहत गौ अनगोप केउ खरक सु दिश २ आन।
एक गाय न्यारे दुहैं मोहन नवल सुजान॥
तहाँ ललितादिक आय सब ठाढ़ी देखन दूर।
दोहनि मोहन कर रही दूहन परचो सुपूर॥
दोहन ढरकी धर परी बछरा गाय चुषाय।
गई श्रवत पुनि धैन पय देखे ताहि बलाय॥
गो दोहन करि ग्वार सब दोहनि भरी अपार।
श्रीजसुमति पै लै चली सखी सु सीसन धार॥
तब ललितादिक हू चली मिलि अंतहपुर ओर।
ये गवने ब्रजराज पै नागर नवल किशोर॥
श्रीबलदाऊ आज नहिं गये हुते बन संग।
तातै हूदै लगाय इन मिले प्रेम उछरंग॥
मुख लखि बिहस बढ़ाय कै उर लाये ब्रजराज।
मिलत भये अति प्रेम गति सब उठि गोप समाज॥

कछु रहिकै अरसान बस आये जसुमति पास।
लै बलाय उर लायकै जननी लह्यो हुलास ।।
पुत्र वधू दोऊन को श्रीजसुमति इक संग।
भोजन रुचित जिमावहीं फूल समातन अंग ।।
जसुमति निज कर कोर जब देत दोहुन हित सानि।
तब अचि रुचि जेंवत दुहुँ महा मोद मन ठानि ।।
कबहु दुहुन कर परस पै कौर दिवावत चाहि।
तब लजाय हठि करि रहै बातन तो तब ढाहि ।।
कबहू दे निज सौंह इन श्रीजसु बिहसि बढ़ात।
कौर परसपर दुहुनि कर हठिकै दुहुनि दिवात ।।
अनगन ठनिगन श्यामघन कर कबहू डहकात।
कबहू जसुमति खिजनते कौर अधर परसात ।।
श्रीजसु दिष्ट बचायकै श्याम बढ़ावन हास।
कौर प्रिया दिश ओट धरि करही वचन विलास ।।
कहत काजै बहु लखौ भोजन किहु लिय चोर।
हेर अपुन चहुँ ओर पुनि दिखवत प्यारी ओर ।।
तब जसुमति हँसिकै कहत तैही धरयो अकोर।
गुन निधि मेरी राधिका तू चोरन को चोर ।।
दुहुँ न अघाने जान पुनि सखिन अचौन कराय।
दिय बीरी मुख वास जुत जसुमति मगन सिहाय ।।
अरसानै अंगरात तन मोहन नींद जताय।
तब श्रीजसुमति जू कह्यो पौढ़हु लालन जाय ।।
तब उठि गवने महल निज ये बैठे ढिंग सास।
मन घूंघटकै घट रुक्यो तन लै चले अवास ।।
श्रीजसु सो ललिता कह्यो रहसि बढ़ावन दाव।
निर्मल नीकी चन्द्रिका हम खेलन कै चाव ।।
श्रीजसु राधे सों कह्यो मेरी जीवन प्रान।
खेलहु गृह आंगन यहाँ उमंग रचो मन मान ।।
तब सब सखी समाज लै श्रीराधे सुख रास।
चख मूँदनि खेलन लगी कौतुक हास विलास ।।

एक सखी दाई भई चख मूँदन कै चाय।
और सबै भाजत छिपत एक गहत जिन धाय ।।
दाई इक के चखन जब मूँदत छिप ही ओर।
दृग छुट धावत तब सबै चहुँ दिशि निकसत दौर ।।
सबमें जिहि छुय लेत वह दृग मुँदाय जो जात।
गहि आनत ताको तहां वाके दृग मुँदवात ।।
जो चहुँ दिशि ते भजत सब दाई कौं गहि लेत।
इकली धावनहार को कोउ न छुवाई देत ।।
तब वाही सिरदाव वह नैनन फेर मुँदात।
सात बेर सो होत तब हारी तिहिं ठहरात ।।
तिहिं खोरी गाडर करै कै वह गोठ सुदेत।
तब छोटे वाकौ सबै खेल हास रस हेत ।।
यह कौतुक इन करत लखि मोहन श्याम सुजान।
सखीं भेष बनिकै तहाँ मिले सबन में आन ।।
गही गई राधे जबै चख मूँदन कै दाव।
बैठी दाई ठौर तब श्याम सखी छल चाव ।।

।। सवैया ।।

चख मूँदनी खेलत ही जु प्रिया,
तहाँ ओट ह्वै आये प्रिया रस भीनैं।
दाई उठाय कै दाव लै बैठि,
सखी को सरूप मनोहर लीनैं ।।
नेह नहीं बेई आँखें गही,
अधरामृत लै मन बांछित कीनैं।
प्यारी रिसानी डरी थहरानी,
चकी अकुलानी चितै हँसि दीनैं ।।

।। दोहा ।।

चख मुदाय कै छूटि चली राधे सखियन ओर।
दौर गही किहुँ आन कौ परचो सीस तिहिं डोर ।।
जब पहिले दाई हुती ताकौं तहँ बैठार।
आय मिली सांवर सखी झुंडन बीच खिलार ।।

दौरत गरबांही दिये कुँवर लड़ैती संग।
न्यारी न्यारी ये दुहुँ फिरत अनोखे बंग॥
सहु दौरै दाई गहैं ये ठाढ़ी रह जांहि।
सबन छिपत लखि छिपत जब फिरिआवन सुधि नांहि।
कहुँ वैठी ठाढ़ी कहुँ जहाँ तहाँ रहि जात।
मतवारी सी गति दुहूँ कही परत नहिं बात॥
किहुँ जानी जानी न किहुं गयो ख्याल बिखराय।
ललिता राधे सो तबै कहत भई तहाँ जाय॥
चलहु सास ते सीख लै अति निश गई बिताय।
सैन महल सांवर सखी चली उमगि सुख पाय॥
श्रीराधे तब सास के आई चापन पाय।
श्रीजसुमति जू लखि इन्है हृदय लगाय सिहाय॥
सीख दई जसुमति तबै आई सैन निवास।
पलटि भेष यहाँ कँवरि वर मग देखत लगि आस॥
इनहि पधारत जानिकै सनमुख आये श्याम।
गरबाहीं दै लै चले पूरे मन के काम॥
वैठे जाय प्रजंक पै प्रेम रसासव पूर।
अन उतरन मतवार के मतवारे चक चूर॥
अकथ कहानी गति लिये किये रवाने नैन।
नींद बहाने मिलि कियो रहसि लुभाने सैन॥
परदा डारे महल के मन के दये निवार।
ललितादिक बाहर तहां वैठी समय विचार॥
चरचा चतुरन चाव की तहाँ कहानी कीन।
नवल नेह को कहन की सबहिन आज्ञा दीन॥
कहन कहानी यह लगी सुनत सबै ललितादि।
दम्पति पौढ़े हँसत मिल पूरे प्रेम प्रमादि॥

॥ कहानी वर्णन॥

॥ चौपाई॥

एक भूप जाकै इक रानी।
जिनकै कुँवरि सु निपट अमानी॥
जबलौं व्याह कुवरि भौ नाहीं।
बाल वयस क्रीड़ा सरसाहीं॥
तब ही ते जु सुभावन बस के।
दधि माखन की चोरी चख के॥
नगर बगर घर घर को धावै।
मातहि नित औरम्भे आवै॥
लाड गहेलो अति ही कीनो।
खीज करत नहि चित्त मलीनो॥
बुध बल अतुल पराक्रम भारो।
मात पिता के प्रान अधारो॥
देखें जियत नगर जन जाके।
वय किशोर पुनि भई जु ताके॥
नगर छैलता फैल बिहारै।
तरुन तिया लखि पति ब्रत हारै॥
महा मनोहर मूरत जाके।
मोहन विवस त्रिया सब ताके॥
मदन मन्त्र सी वैन बजावै।
मन मोहन निज विरद कहावै॥
त्रियन सबै मन मोहित करै।
आपुन बस किहु के नहिं परै।
व्याह्यौ कुवरि जु राजकुवारो।
तिहि जानत निज प्रान अधारो॥
निज बस और तियन मन कीने।
आप प्रिया बस प्रेम अधीने॥
सुन्दर सुघर सु लच्छिन प्रिया।
तीन लोक नहिं ऐसी त्रिया॥
तदपि कुवर लच्छिन नहिं जांही।
घर घर घेर करै सब ताहीं॥
जहाँ तहाँ तरुनी तिय जोवै।
जिहि कुल लाज कानि सब खोवै॥

देखि तिया तिहि छकि छकि घूमै।
मदन हईके उलटि ही भूमै॥
लखि तिय होत विवस मतवारी।
दरस परस को तरस अपारी॥
केउ कुल देवी देव मनावै।
कुवर मिलन के दाव बनावै॥
घाट बाट कहु होत मिलाप।
तब सब मिटै हृदय की ताप॥
प्रीति रीति रच कुवर अरैल।
तिन सों करत छैलता फैल॥
कुँवर घरन प्यारी सुनि बात।
करि गरूर चित बिहसि सिहात॥
कहत सु मेरे ऐसो कंत।
तिहि रस बस ह्वै सब तरसंत॥
कुवर नगर लँगराई करें।
प्यारी प्रिया कोय नहि धरें॥
इनके एक प्रान द्वै देह।
प्रीत प्रतीत हि परम सनेह॥
ताते कुँवर फिरत ह्वै छैल।
पटा छूट ज्यों मत्त अरैल॥
गलियारे गैलन तिय रोकै।
तिन सों रचै रहसि रस टोकै॥
दाब पेच कर केहुँ घर जावै।
किहुं को कहूँ से हेठ बतावै॥
किहूँ मनावै किहूँ बुलावै।
किहुं को नैनन नेह लुभावै॥
पनघट रहसनि धूम मचावै।
सहसन बात कहत नहि आवै॥
किहुं की तहाँ इँडुरिया चोरै।
किहुं की भरी गगरिया ढोरै॥
गरई गागर किहूँ उठावै।
दृग मिलाय कछु सैन जतावै॥
किहुं उर हार सँवारत जाय।
किहुं निज कर अंचर सँवराय॥
किहुं कंचुकि की तोरै तनी।
किहूं सँवारै अलकनि घनी॥
भये कुँवर दृग मदन मुसद्दी।
करन रूप गढ़ अदल सु हद्दी॥
ठगत फिरत तिय मननि भुराही।
आप पेच किहूं के नहि आही॥
छली छछंदी रिंद रसीलो।
रूप गुननि उनमद अरिबीलो॥
बड़ड़े कुलहू की सब तिया।
यासों बिहूले बिसरी पिया॥
सब पुरतिय कुँवरहि पति मानै।
अपने पतिन गनत नहिं आनै॥
जिनहि ठगन यह कुँवर छछंदी।
डारत फिरत प्रीत की फंदी॥
बनि कै विप्र द्वार किहूं जावै।
गति त्रिकाल की बात बतावै॥
तहँ तियगन मिलि किती भुरानी।
पूछत आय बात निज छानी॥
कहत सुनहु हौ विप्र सयाने।
हम तुम को ज्ञाता अति जानै॥
तुम त्रिकाल अन्तर गति लहौ।
ताते हम पूछत हैं कहौ॥
तुम्हरे वचन प्रमानु जु ह्वै हैं।
तो तुम मांगो सोइ हम देहैं॥
छली कुँवर सों प्रीति हमारी।
लगी रहति ज्यों प्रेम प्रकारी॥

त्यों वाहू की कछु है हम सों।
यहै बात पूछत हैं तुम सों ॥
कहत विप्र तब सोचि विचार।
तुम सों वाकी प्रीति अपार ॥
कहूँ दाब वह वाको लहै।
तो येकंत मिलन निति चहै ॥
यह सुनि द्विज के पायन पर पर।
गुरुजन डर भाजी निज घर घर ॥
ऐसे कुँवरि छछंद सुठानै।
ठगत फिरत जैसे मन मानै ॥
इक दिन निज घरनी की सखी।
लखत चरित्र कुँवर इन लखी ॥
बात बनावै नहि बनि आवै।
तब तिंहि हाहा करत लिलावैं ॥
ऐसे गुन को कुँवर अमानै।
बातैं ताकी बिना प्रमानै ॥
नवल नेह मतवारी बालें।
जानहु चतुर चपल चित घातें ॥
हम जानी यह सबहि न जानी।
नगर बगर घर घरनि कहानी ॥

॥ दोहा ॥

पौढ़े पिय प्यारी सुनत परी झगरई मांच।
पीय कहत झूठी यहै प्रिया कहत है सांच ॥
नवल नेह को टेर तब प्यारी पास बुलाय।
कहत भई री तोहि यह भली कहानी आय ॥
पिय खिसात मुसकात कहि यह है बड़ी लवार।
नवल नेह कर जोरि तब कहत प्रिया पखि धार ॥
मुहि लवार कैसे लही काहे आप खिसात।
नगर बगर घर घर सुनौ यही कहानी बात ॥

प्रिया हँसत अति प्रश्न चित लखि फिरि२ पिय ओर।
ये मीजत दृग नीद मिस ज्यों सतरानौ चोर ॥
नवल नेह कौं तब प्रिया सुमन माल निज दीन।
लहि इनाम यह रीझ की बाहर कढ़ी प्रबीन ॥
श्रीललिता जू जब दई बीरी याहि बुलाय।
कृपा दृष्टि सब हेर हँसि चरचा हास बढ़ाय ॥
श्रीमन मंजरि जू कही प्रश्न बदन मुसकाय।
कैसी यह कैसी कही रचन कहानी लाय ॥

॥ कवि वचन ॥

एक दिवस को बात यह हृदय मानसी लाय।
कविता करिकै कछु कही मति गति शक्त सुभाय ॥
हरि गुरु भक्त सु भक्तजन पूर्न कृपा सुखरासि।
हिय निवासि करि रसनि किय सुंदरकुँवरि प्रकासि ॥
नव नव नित्त बिहार ब्रज दम्पति प्रेम प्रसंग।
रसिकन प्रान अधार हैं रहै बारता बंग ॥
श्रोता सुनि सब रीझि हैं करि कै कृपा अपार।
काव्य दोष घटि बढ़ि कछू लीज्यौ सु कवि सुधार ॥
यह पुस्तक की वारता वेद गूढ़ मति गाय।
प्रगट भयो खीचीं घरा राघवगढ़ सुखदाय ॥
जो जानै यह बात कौ अपनौ मत तत सार।
सो सुनि गुनि है यह कथा तिंहि सुखवार न पार ॥
जिन मन राच्यौ या महो तिन यम डर दिय डार।
सर्वोपर यह बात है सब सारन को सार ॥
परम अलौकिक रसमई यह आनन्द निवास।
नित चित यहाँ बसाइये दम्पति मिलै प्रकास ॥
रूप नगर नृपराज सिंह जिनकी सुता हौं जान।
सुंदर कुँवरि सुनाम मम किय यह ग्रन्थ बखान ॥

सम्वत शुभ नव दून सै चौतीसा की साल। सोला सै निन्याणवे साके समय रसाल ॥ फागुन मास सुकृष्ण पष पंचमी सु शशिबार। संपूरन कृत ग्रन्थ यह भयो अलौकिक सार॥

॥ इति श्री रसपुंज ग्रन्थ सम्पूर्णम् ॥
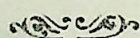
प्रेम संपुट

॥ चौपाई ॥

श्रीवृषभान कुँवारि प्रिया ब्रजराज कुँवर वर।
एक प्रान द्वै देह नित्त नव नेह परसपर॥
रसिक विलासी प्रेम पूर चित छूर छकोनै।
जिन पद कँवलन मधुप रहौ दृग मम मड़रानै॥
अति प्रबीन हित लीन अष्ट सहचरि जिन सोहै।
तीन कोट जथेसुरी सु सेवा तत जो है॥
जिन चरननधरि ध्यान ध्याय मन क्रम वच जाचौ।
नित नव जुगल बिनोद विपुन विलसन रँग राचौ॥
महा दीन आधीन जानि किंकरि अपनावै।
तो इन कृपा प्रभाय प्रिया अनुग्रह सरसावै॥
श्रीमन मंजरि सखी तहाँ स्वामिनि है मेरी।
तिन दास्युत कै छाप सरन मुहि यहिठां केरी॥
तातै इनही कृपा वांछि पद पंकज ध्याऊँ।
इनही कै अनुग्रह प्रभाव इनही मत गाऊँ॥
हरि गुरु भक्ति सुभक्त जनन चरनन रज बन्दौं।
ये ही मो कुल देव मनाऊँ लहि आनन्दौं॥
जुगल ललित लीला अपार वृज विपुन मनोहर।
कहि नारद सउनकन प्रेम संपुट बखान कर॥
ताकै संज्ञा कछुक शक्ति निज सम हौं वरनौं।
मोहित चित कौ भाव प्रान वल्लभ मन हरनौं॥
गवरि सुवन सरसुति जु कृपा करि देहु उक्त वर।
कविता रचन प्रबन्ध शक्त दत दैन विघ्न हर॥
कथा एक निस विपुन विनोद सु कछुक बखानौं।
मन क्रम वच कै भाव ध्यान धर आश्रय ठानौं॥
राधा राधारवन प्रेम उर नित नव जिन है।
तन मन लोचन प्रान समर्पित यहि रस तिन है॥
रसिक अनन्य सु सुनहु कथा प्रानन तै वल्लभ।
दुर्लभ भे बसु रहसि लहौ बड़भागनि सुल्लभ॥
नन्दीसुर बरसान बीच इक विपुन अलौकिक।
प्रेम सरोवर ठाम ताहि लखि अमर रहत चकि॥
मणिमय अद्भुत भूमि मृदुल मंजुल सरसानहि।
प्रति बिंब सु तिहि विपुन मनहु उपमे उपमानहि॥
गुल्म लता तरु कुँज पुँज पन्नन पत्रावलि।
अरुन पीत सित नीलमणिन फल फूल झलामलि॥
तरन तनौजा तटि सु महा मणि मंडित पैरी।
तापर सरस सरन सलिल पसरन छबि फैरी॥

फटिक मणिन कै चूर धूर मृदु पुलिन मनोहर ।
जल थल कंजक मोद गन्ध मद मधुप गुंजवर ।।
त्रिविध समीर पराग परस धूँधरि छबि छाई ।
नित बसन्त मन मदन फाग क्रीड़ा दरसाई ।।
तहाँ अलौकिक मणिन लाल बँगला इक सोहै ।
मनहु विपुन अनुराग जुगल पै उलहि बिमोहै ।।
प्रफुलित तिंहि चहुँ ओर विविध गुलजार सुमन भरि ।
बिच बिच सलिल सुठाम केलि जल जन्तु रहे करि ।।
जित तित द्रुमन उतंगवान पंछीगन नच नव ।
मनहु मोहिनी मन्त्र मदन चटसार कढ़त रव ।।
निर्त्तत मत्त मयूर मनहु टेरत घनश्यामै ।
उद्भव प्रेमानन्द तहाँ उद्दीपन ठामै ।।
मन बंछित तरु देव तहाँ सुख संपद बरसै ।
कुंजनि कुंजनि विविध भोग सामग्री सरसै ।।
देवी वृन्दा अगम सबै चिंतत फल दायक ।
जड़ जंगम बलवान जहाँ आनन्दहि छायक ।।
राधा नन्द कुमार रसिक मणि मधुप इहाँ के ।
प्रेमासव छक जिन बिनोद नित नवल तहाँ के ।।
एक समय जिन सखिन संग क्रीड़त श्रीराधा ।
बरसानै तै जात हुती जसुमति हित साधा ।।
उततै सामुहि मिले रसिक मन मोहन आवत ।
श्रीबलि अरु सब सखा संग अति ही छबि पावत ।।
इन आवन कै बाट जान मग रोकि सु ठाढ़े ।
रची परसपर केलि टरत नहि चहुल सु बाढ़े ।।
बलिदाऊ कै सकुच प्रिया उत जान न पाई ।
जान रसिकवर छल प्रवीन अहुठी बहुराई ।।
महा मनोहर विपुन निकट यह जानि सु इन ही ।
आई सखियन संग तहाँ मानि न ह्वै चित ही ।।
किहु पाई हाई न किहू प्यारी कै जिय की ।
केलि किलोल न रची सबनि लीला तहँ पिय की ।।

सुमन छरी करि बैंन कोऊ गो धन कौ टेरत ।
इक कदम्ब ह्वै तिंहि सु कंध चढ़ि अंचर फेरत ।।
केती ह्वै ब्रजबाल तहाँ दधि बेचन आवत ।
इततै कोऊ सखा श्याम बन रोकन धावत ।।
प्रत उत्तर बतरान तहाँ वैसे ही रच ही ।
दधि दै ही तब ग्वाल संग मोहन नच ज्यों ही ।।
पुनि जेंवत मिल छाक मण्डली ग्वालन करिकै ।
चखन चखावन केल वृन्द त्यों ही भुज भरिकै ।।
पुनि संझचा आगम सु विपिन लखि कुसमन फूलन ।
तहाँ मधुर मकरन्द मत्त मधुपन की झूलन ।।
आन केलि तहाँ रमण लगी पुनि विपुन मनोहर ।
गावत हँसत हँसात फिरत रगमगी उमँग भर ।।
तोरत सुमन सुरंग विविध भूषन तन साजै ।
श्रीराधा हित तुल्य रचित मिल सुवर समाजै ।।
मणि क्रांतति दल जल मृदुल सउगन्ध सनाए ।
विविध कुसुम तिंहि जोरि हासिये बान बनाए ।।
जहाँ बिराजी आन कुँवरि राधा छबि रासी ।
अरुन बंगला अरुन क्रांत तहाँ सांझ प्रकासी ।।
बिल बिछुरत मग जान मनहु लगि संगहि आयो ।
रसिक कन्त अनुराग सुपै छायो दरसायो ।।
मन न लगत कहु प्रिया छोभ चित तें इत बैठी ।
कर पर धरै कपोल नाय दृग भौंह अमैठी ।।
श्रीमन मंजरि सखी तहां ढिग भवर निवारै ।
चहुँ दिस विपुन बिनोद अबरि सब सखी बिहारै ।।
उततें गोधन घेर चले गृह मोहन गावत ।
इत निकसे नियराय निकट बंशी ध्वनि आवत ।।
नवल नेह तहाँ ध्याय सामुहै श्याम धराए ।
लखि तिंहि रसिक सुजान प्रिया माननि चित लाए ।।
तब इन गोधन सखा किये बलदाऊ संग ।
विपुन बिलोकत शोभ कढे आपुन निज वंगै ।।

निकस गए उत दूर ग्वार गोधन लै जब ही।
वृन्दा देवालय सु आन मनमोहन तब ही ॥
रचि अद्भुत त्रय भेष अंग छबि छटा नवेली।
चूरत मदमत गज गरूर पद गति अलबेली ॥
नवल नेह अगवार लिये नव गोप दुलारी।
भीनत तम संझया सबेर आई जहाँ प्यारी ॥
मुख घूँघट झीने दुकूल चंचल दृग झमकैं।
बिजई मानहु मदन केत है फहरन रमकैं ॥
छबि छलकै छलकाय आय प्यारी पद परसै।
इत अजान उत जान प्रेम रस रीत न सरसै ॥
कछु अन्तर गहि अदब अदब पन बैठी दावै।
लखि माननि तन छटा छकी गति रही न तावै ॥
श्रीमन मंजरि नवल नेह निज सँग लै डगरी।
कही रहसि यह आन जहीं ललितादिक सगरी ॥
नउतम अद्भुत जुगल केलि कै प्रेम छकानी।
आय निकट तरु लता ओट सब लखत लुभानी ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

तहाँ बोली श्रीप्रिया गोपिका नवसत मानी।
कितर्तें आवन कदन कहौ बढ़िभागि बखानी ॥
प्रथम मिलन जो आज लाज पै काज कहा है।
कछु सोचत सी चकित लसत नहि भेव लहा है ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

बोली नवला करन जोर भर स्वास उदासी।
कहा कहौं हे प्रिया दुखज अरु आवत हासी ॥
हौं श्रीभान कुंवारि तुमहि करि हम दुख नसिहै।
अति गति बनी अनीत कहौ ब्रज कैसे बसिहै ॥
नयो अमानौ निडर नन्द को करत अन्याई।
बड़ड़े गोपन कुंवरि छली कुलकान छुटाई ॥
बाट परी है नगर बगर घर घर ह्वै घेरा।
देहरितैं कोउ कढ़ि न सकत अति गनि है पैरा ॥
जोबन गन धन रूप चढ़यो मद बदत न काहू।
लाड़ बावरो महरि कियो भय गनत न ताहू ॥
एक तिहारो भाव लिये चित धरत सकाई।
तातै अति अकुलाय प्रिया हौं तुम पै आई ॥
साधहु बाधहु कछुप अबै चाहौ सो करिये।
सब वृज है तकिवान अटल कंतहि गृह जरिये ॥
ऐसी चलन अनीत कहूँ नहिं सुनी तिहारी।
आवत है मुख गारि संक पै करत तिहारी ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

हँसि हँसि सुनि सुनि बात तबै प्यारी पुनि बोली।
अरी कछू मिस आय यहाँ मो करत ठठोली ॥
नवल भेद कै नवल न्याव नवला तू ल्याई।
बाट परी गुन भरी तै जु क्यों आवन पाई ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

बोली तिय का कहौं अजौहूँ जात लजाई।
प्रथम मिलन है भये द्वैक दिन गौनै आई ॥
यहै गवा की रीत लखित चित चकित भई हौं।
कुल बुध वन जु कलंक लगत यहि सौच हइ हौं ॥
तुम जु कहत हौ प्रिया यहाँ तू कैसे आई।
कहा कहौं गति दई दई करि निबहन पाई ॥
हम जु तिहारी प्रजा ठठोली तुम सों कैसी।
बिनती बिन ये बनत बनी जो कठिन जनैसी ॥
अब ही आवत घेर मोंहि अंचर गहि लीनों।
परसि परसपै अंग भीर मुख चुम्बन कीनों ॥
हठि हारी नहिं छूटी २ इत आवन कहिकै।
कहा करै नृप सुवन अनीत न रहिहै सहिकै ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

कहत भई प्यारी सु अब, अरी क्यों बात बनावत।
दरस परस बहिकाज सबै कुलदेव मनावत ॥

बड़ी सील वृत धारि अनौखी लाज न आवै।
अवगुन आन बखान निजहि निज-मुख प्रगटावै ॥
वह तो रसिक सुजान छैल वृजराज दुलारो।
तुम कुल बधु यसु काहि विकल ह्वै पतिब्रत हारो ॥
नई विपुन तिय तुही इती का रसनि लड़ावत।
अति चित छाज चढ़ी बढ़ी कछू मोहि न भावत ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

बोली नवला प्रिया तुम जु क्यों होत रुखों ही।
जो मो कहियत लगत चित्त तौ लीजै सोंही ॥
तुम जु कहत वा लिये सबै कुलदेव मना है।
जू वृजेश सुत एक नगर जन कौन न चाहै ॥
पुनि पतिब्रत दृढ़ धरहु कही पै सोऊ हेरो।
भरे मोहिनी मन्त्र वाहि बसि नहिं किहुँ केरो ॥
चलत अपुन मदमतै औटपी औगुन गारो।
कहरी जहरी नजर परै कुल तियन बिसारो ॥
राजा कै सुत होत तबै नगरी जन हरषै।
निज रछ्या हित मान लषत प्रेमानन्द बरषै ॥
यह वृजेस कै कुँबर कुबुद्धी चोर अन्याई।
वृजपति अबिचल रहो यहि जु सब आस पुजाई ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

यह सुनि बोली प्रिया सतर ह्वै मन झुझलानी।
कैसे बकत गँवार पचावत सीस अमानी ॥
लखी उरहनै हार ताहि बकवादनि ऐसी।
मेरी संक न गहत कहत मुख छुटी न कैसी ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

बोली नवला अजू कहत हौं लखियत जैसी।
हटकत काहि न कंत कसक जो लागत ऐसी ॥
कारो कुटिल कठोर निलज परतिय रस लोभी।
ऐसे गुन पै प्रिया पछि कर होत जु लोभी ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

बोली प्यारी अरी करत तू निंद्या उनकी।
कैसे छोभ न होंहि छिमा अति ही मैं सुनकी ॥
मेरो प्रान अधार तोहि यों कहत सुनत हौं।
पै तोसों का कहौं बावरी तोहि गुनत हौं ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

मुहि तुम बौरी लहत तुम्हें हौं भोरी जानत।
दृढ़ जु तिहारे प्रेम नेम वह तो छल ठानत ॥
मुख मीठी करि बात तुमहि कपटी जु भुरावै।
घर घर को मिजमान आप औरहिपै धावै ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

एरी तेरी बात हौंज चित कैसे आनौ।
मेरे उनके एक प्रान द्वै देह प्रमानौ ॥
बोरी अजहु न लही बात उनकी अरु मेरी।
मो रस बस आसक्ति ताहि समता किहि केरी ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

प्रिया भुरानी तुम प्रतीत वा ठग की मानत।
मैं जु कहत तुम श्रेय काज सो चित नहिं आनत ॥
हौं लखि आई अबहि गैल पनघट की घेरी।
सो पै बात न कहै बनत हा तुम कित नेरी ॥
तातै दृढ़ कर मान कंत को संक मनावहु।
तुमरै रस बस लीन न तो यह ही दरसावहु ॥
अरु जो राखत छेह छादि कर निज गरवाई।
तौ काहे पै अति गरूर तैं बाद बढ़ाई ॥

॥ प्रिया वचन ॥

री गरबाई बाद कहा कौ करहि जु तोसों।
उनकै मेरे चहत रार हित की है मोसों ॥
मो मन वह कर लिये रहत हौं वहि चित राषौं।
एक प्रान द्वै देह रचे विध कहा सु भाषौं ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

ऐहौ प्यारी कहत बात ना समझत गाँसी।
एक प्रान द्वै देह सुनत मुहि आवत हाँसी॥
निज मुख निजहि उभार करत झूठे नहिं लाजत।
वह औरन कै रंग रच्यो तुम योंही गाजत॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

री तुहि नवला जान अबहि गौने की आई।
झूँठी कहत बनाय चहत तोतें जु बड़ाई॥
तू प्रबीनता भरी हम जु नहिं समुझत गांसी।
अनमिल करत उभार हौंजु तुहि आवत हांसी॥
आन रंग पिय रच्यो हौन निज बसि कहि लाजत।
एक प्रान द्वै देह हीन मति भाषत गाजत॥
ऐसी तू मुहि कहत मूढ़ का मैं नहिं पाऊँ।
अबहि परछ्या दैहु चहें सो प्रगट दिखाऊँ॥

॥ नवल तिय वचन ॥

नवला बोली प्रिया बात हौं तब ही मानौ।
मैं जु कहौ त्यों एक प्रान द्वै तन दरसानौ॥
तुमरे मन की लहै अबहि पिय मुहि दरसावै।
तुम जु चिंतवन करत चित्त कै तत छिन आवै॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

री तू मन ते इतौ कहा सन्देह जु मेरौ।
अब ही लेहु बुलाय आय मुहि मारहि तेरौ॥
तै उनसों अब कही सु पै तौ मुखहि कहाऊँ।
मुकरत हौंहुं न दैंहु तबै यह कौल जताऊँ॥

॥ कवि वचन ॥

ऐसे कहि श्रीभान कुँवरि उठि तहाँ तमक सों।
बगलातें कढ़ि आय नीरनद जहां रमक सों॥
लखि लखि छबि नव रसिक नारि मुसिक्यात छकानी।
प्रेमरसा सब पूर दशा अद्‌भुत अँग सानी॥
प्रिया सलिल कै कूल आनकर चरन पखारे।
लै आचौन सु मोन साधि बगलै पद धारै॥
नउतम कदलासन विचित्र नव नारि बतायो।
ध्यान प्रिया ब्राजत प्रबीन चातुर्ज रचायो॥
तहिं प्यारी सुकुमार बिराजी आन छबीली।
ससि सनमुख करजोर करत विनती अनबोली॥
पिय मोहन उर ध्यान गति प्रेममई है।
मुर्त्त वहै रमि रौम रौम छकि विवस भई है॥
भाव भीर उर उझलि घुरन दृग घूम घुमारे।
भौंहन सोहन छटा छुटन अनुभव मतवारे॥
अधर मधुर मुसिक्यान आन गति अंगहि झलकै।
आतुर अद्‌भुत पीय मिलन आवाहन ललकै॥
रूप चन्द्रका धरे मनहु छबि चन्दहि तोलै।
नवला भरि दृग तुला लेत तिहिं लाह अमोलै॥
जोरें जुग कर प्रिया चन्द सों बन्दन करही।
विनय बैन बतरान नवल नागरि मन हरही॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

अहो चन्द जग बन्दनीय हो सुर सब मन के।
पोषिक बदन प्रकास सुधातें थिरचर तन के॥
देवी सक्त अपार सर्व नभ मण्डल गामी।
किरन परसि भुवलोकि विदित व्यापक बहुनामी॥
हौं बिनवत हौं कृपा दृष्टि मो तन असि कीजै।
अहौ चन्द वृजचन्द मनहु यों चेटक दीजै॥
पलकांतर नहिं सहै अबहि चलि मोपें आवै।
लाय चटपटी एक प्रान द्वै देह कहावै॥

॥ कवि वचन ॥

नैन मूँदि पिय ध्यान लीन बिनवत सु प्रिया जू।
प्रेमरसा—सब पूर छकी इत नवल तिया जू॥
सुधि चिताय मुसिक्याय छली निज छलहि सँभारचो।
झटि पटि निकट सु लता ओट तिय भेष उतारचो॥
धार मुकट बनमाल ललित धोती पीताम्बर।
आप प्रिया ढिग बैठि बजाई बैन मधुर स्वर॥

चमक नेत्र दियषौल प्रिया मन मुदित सिहानी।
रसिक छछन्दी छैल हृदय भुज भरि लपटानी।।
मुर लजाय मुसक्याय प्रिया नव लाहि चितावै।
लखि चहुँदिश बोली जु वहै कित दृष्टि न आवै।।

।। श्रीकृष्ण वचन ।।

बोले रसिक सुजान अजू वह कोकिहि हेरत।
आतुर मोहि बुलाय चकित अब ताकों टेरत।।

।। श्रीप्रिया वचन ।।

इक महरेटी कोउ आज आई मो पासै।
तुम गुन आरस पाय उरहिना दये प्रकासै।।
हौं वहि अति अहुराय रही वह तौ चित छोभी।
मोहि कह्यो तुमकौं भुरात है पर त्रिय लोभी।।
मैं जु कही हम एक प्रान द्वै देह जु जानौ।
वह बोली दरसाहु कछू अबही तो मानौ।।
तुम जु चितवन करो यहाँ तत छिनही आवै।
दूरहि तैं मन की जु लहै परचा परचावै।।
यहै बचन मुहि लागि मैं जु ससिदेव मनाये।
नैंक बिनय तिंहि करत तुम सु तत छिन ही आये।।
अब दरसाऊँ वाहि गई उठि कहाँ नवेली।
हेरन तिंहि कित जाउँ सघन बन डरों अकेली।।

।। श्रीकृष्ण वचन ।।

अहौ प्रान आधार बल्लभा जीवन प्यारी।
यही कृपा नित करहु होहु जिन इक पल न्यारी।।
नहिं तुम बिन मेरैं त्रिलोक कोउ प्रिया मनोहर।
नहिं तुम बिन मेरैं त्रिलोक कोउ त्रिया जु समसर।।
नहिं तुम बिन मोकौं त्रिलोक मैं कोऊ बसीकर।
नहिं तुम बिन मोकौं त्रिलोक मैं कोऊ प्रेमाभर।।
नहिं तुम बिन तुम सी त्रिलोक सुभ गुन निध नागर।
नहिं तुम बिन तुम सी त्रिलोक सुंदर जित सागर।।
नहिं तुम बिन तुम सी त्रिलोक मैं मौ सुख दायक।
नहिं तुम बिन कोऊ त्रिलोक मैं मो हिय लायक।।
नहिं तुम बिन कोऊ त्रिलोक मुहि चर्चन गावन।
नहिं तुम बिन कोऊ त्रिलोक मुहि बांधि नचावन।।
नहिं तुम बिन कोऊ त्रिलोक आधीनहु जानौ।
नहिं तुम बिन किहुकै त्रिलोक हौं हाथ बिकानौ।।
नहिं तुम बिन किहुकै त्रिलोक हौं आज्ञाकारी।
नहिं तुम बिन किहुपै त्रिलोक मैं गति मति हारी।।
कपट उक्त कै बैन प्रिया तुम सो मो नाहीं।
एक प्रान द्वै देह अपुन बिध बेधहि गाहीं।।
प्रेम प्रमोद बिलास बिपुन बिवधहि तुम संगै।
बिहरत नित्त अनंत केलि आसक्ति अभंगै।।

।। श्रीप्रिया वचन ।।

हौं ही जानत यहै वहै पै तिया बतावहु।
ल्यावहु वाकों एक प्रान द्वै तन दरसावहु।।
मेरे वाके चौष परी है गई सु कित कों।
अबहि यहाँ ही बिपुन लखत द्वै है इत उत कों।।

।। श्रीकृष्ण वचन ।।

हे प्यारी हौं जाहु इतै नवला कों हेरन।
पै ऐसी ठगनी न कहैं करिये भ्रम फेरन।।
महा छछंदनि नारि निकट आवन नहिं दीजै।
तिय पिय चित बिछराहि जिनहि विश्वास न कीजै।।

।। कवि वचन ।।

ऐसे कहि पिय छली चले हेरन बनवारी।
मुरि-२ लखि मुसक्यात जात गति मति तित हारी।।
आय लता द्रुम ओट वही तिय भेष लयो धरि।
लै कुमकमन की माल हाथ आये थारी परि।।
प्रिया देखि पिय संग नाहिं नवला जु अकेली।
बोली री वे कित रहे आई तू हेली।।

।। नवला तिय वचन ।।

कहा प्रिया कछु चँमक परी ज्यों सोवत जागी।
कपटी हित क्यों करत खेद काहे हठ पागी।।

को जानै कित वहै देतु सांई जु बधाई।
ससि उपास कै तुम बुलात का करत हंसाई।।
तुम जु कहत वे कितै रहे सो तुम कब देखे।
एक प्रान द्वै तन जताल क्यों धरत हवेषे।।

।। श्रीप्रिया वचन ।।

री वे आए यहां तबै तू कितै गई ही।
हेर रही हौं बाटि तैजु लजि ओट भई ही।।
किती बेरि लौं तकी तोहिं पुन चही बुलावत।
हौं गहबर वन डरत जान गवने मन भावन।।
कहा जानों वे किते कढ़े तू कितते आई।
अरी झूठ हौ नांहिं कहत मुहि राम दुहाई।।
ढूंढत निकसे तोहि इतै हूरे कटि जैहैं।
तू उन टेरि बुलाइ लेहु नियरे ही ह्वै हैं।।

।। नवल तिय वचन ।।

प्यारी मोहिं भुरात कहा हौ आप भुरानी।
राम दुहाई करत बात अचरज सी जानी।।
ल्याऊँ अबै बुलाय जाय किहिं और बतावहु।
जौ न लहौं तो कहौं कहा कैसी दरसावहु।।
ससि सन मुख द्रग मूद रहत कहु सोइ गई हौं।
तब स्वप्नै मैं लखे तिही भ्रममई भई हौं।।
हौं हू अब हठ यही लागि ढूंढन कौं जैहौं।
हेरि फिरौ सब विपुन यहां ह्वै तौ लै अैहों।।

।। कवि वचन ।।

यों कहि नवल सुजान तमक सों उठी नवेली।
गज गरूर गति चूर करत आतुर अलबेली।।
कारे कपटी कहत नाम यह चली जू टेरति।
चंचल चितवन चाहि चहूँ दिशि मुरि मुरि हेरत।।
निकट लता चिन ओट जाति ललिता दिवि लोकी।
सबन लई मिलि घेरि आनि नव नागरि रोकी।।

।। सखी वचन ।।

करत विविध चातर्ज तर्क सों सब मिलि बातै।
कहत हमारि कुवारि छली हम लही जु घातै।।
कोऊ कहत जु चलै महर पै लै यहि भेषै।
कोऊ कहत जु कहौ नन्द सौं सुत कृत देखै।।
कोऊ कहत जु लिये चलो प्यारीहि दिखावै।
कोऊ कहत जु अबहि ये छल कौं फल पावै।।

।। कवि वचन ।।

करि हाहा तिन छूटे तहाँ तिय भेष उतारचो।
अद्भुत सज्यो सिंगार मुकुट पीताम्बर धारचो।।
पुनि मग फेरें लता टार प्यारी पै आऐ।
मणिमय सुन्दर सुमन रचे भूषन कर ल्याऐ।।
बोली प्यारी भली मोहिं झूंठी दरसाई।
गए बुलावन ताहि सुतो नवला इत आई।।
तब वासों मैं कही अरी वे आए मोपै।
उनमानी नहिं करी सौंह तब भ्रम किय सोपै।।
वाहे तुम्हे बुलान काज पुनि पठई इतको।
तुव अब आए इतै कहा जानो वह कितको।।
हेरि तिहारी करत हारि ग्रह जात रहैगी।
हँसि है वृज तिय मोहिं जहाँ घर घरहि कहैगी।।

।। श्रीकृष्ण वचन ।।

अहो प्रिया का धरत चित्त वह तौ है ठगनी।
जानत है बृज सबै वाहि वहि बात अथगनी।।
मुख लागहु जिन जान देहु है नीको टाला।
जासों जान पिछान नांहि तासों कहँ चाला।।
तुमसों बोलत छुटी बानि आ संगै लागी।
अपुने चितहि फटात ओट पी हठ हो पागी।।
कहा पिछानत नांहि छछंदनि बात नवेली।
छिप छिप तुम पै आत भुराता सुजन अकेली।।
हौं तुम आज्ञा कार कहौं फिर जाहु बुलावन।
वह छल कोर तिरनि है छछंद सों वाको आवन।।

यहै चन्द्रिका खिली विपुन छवि बनत निहारै।
चलहु लखहिं चहुँ ओर सोभ नवरंग बिहारै॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

हौं हू जानत सही महा छलकारिक वाको।
पैं अपनों संगम विहार दरसाऊँ ताको॥
तुम न जाहु अब तबै मोहिं क्यों लहै अकेली।
सखियन पठवो बिपुन हेर हठ लेहि नवेली॥

॥ कवि वचन ॥

प्यारी पिय को बैनु आपु लै मधुर बजाई।
तामहि आतुर टेरि चतुर सब सखी बुलाई॥
लता कुंज जित तितलैं जु सब सहचरि धाई।
मनु घन ते ससि कढ़त सहस बीनहि दरसाई॥
प्यारो पिय ढिंग आय खरी चहुँ ओर छबीली।
लखि-२ मुसकत रसिक प्रिया मुख छबि अरबीली॥
श्रीललितादिक और हेरि बोली जु पियारी।
सखी द्रगन सब सहस लखत क्रीड़ा सुखकारी॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

अरी जाहु कोउ दसक चहूंदिश बिपुन जु हेरो।
नवला तिय कित गई ताहि दूरिहुलौ टेरो॥
इनहिं बुलावन गई हुती तब ते नहिं आई।
ऐ आऐ इत वहै हेर हारे उठि जाई॥

॥ श्रीललिता वचन ॥

ललिता जू हँसि कहत प्रिया जिन होहु अधीरी।
हम जु लखी वहि नवल नार छल छाई नीरी॥
वह न जाहु कहु अब गहाय कर सों कर दैहों।
पै तुमकों इक वेर नवल भूषण पहरैहों॥
देखहु अभरन पारिजात अद्भुत के कुसमनि।
तिहिं सिङ्गार शोभा अपार नहिं परत कहत बनि॥
तासों लखि छकि चकित छकित वहिं गति मति हारे।
तन मन प्रेमावेस ह्वै जु छलि छलनि बिसारे॥

॥ कवि वचन ॥

ललिता जू की बात सुनत मन प्रिया जु धारी।
तहाँ रसिक बर चतुर रीझ पहरात बिहारी॥
रहसि बिहसि पिय उमग प्रेम छकि गति मन वारी।
लजन पिजन झिझकन जु इते तव उतै हहारी॥
जुरन घुरन द्रग कुरन मुरन तिहिं उर रन रंगे।
ललकन पलकन झलक चित्त विवसत आनंगे॥
इत भोरी सुकुवार प्रिया पिय रसिक छछंदो।
रूप गुणन उनमद प्रबीन दुहुं प्रति गति फंदी॥
रचित सुमन सिंगार परस्पर दुहू लुभाने।
लखत छकत सहिचरि प्रबीन सब द्रग फल माने॥
दर्पण आन दिखाय युगुल सामिल मन मंजिर।
जोरे बदन विलोक मदन कै द्वैसर पंजर॥
छकि थकि घूमन झूम झुकन जुरि घुरि छबि बाढ़ी।
प्रेम रसासव पूर गता गति अद्भुत चाढ़ी॥
लखि-२ सखी समाज बिवस छकि हठरिन पायन।
केउ बैठी केउ खरी सोध मन मुदित सयानन॥
करत विविध चातुर्ज जर्क बातै मन रंजन।
केउ गावत रच्चि लीन राग रागनि मति गंजनि॥
सुनत गान धुनि रसिक चतुर रिझवारि सँभरि तब।
हँसि बोली श्रीप्रिया वहै नव नारि कहाँ अब॥

॥ ललिता वचन ॥

कहत भई ललिता जु प्रिया कह जै लीजिये।
हौं बताइ हौं वाहि नेक मो वचन धीजिये॥
वह न यहाँ ते जाहि कहूँ जिन होहु जु आतुर।
मइया जू बिञ्जन पठाय दिये जेंवहु चातुर॥

॥ कवि वचन ॥

समुझि रसिकबर श्याम तबै ललिताजू जीको।
कहत भये हँसि प्रिया और इन कही जु नीको॥
आज्ञा दिय श्री प्रिया विविध बैनन सुनि गाऐ।
अन अन स्वाद अपार रचित बन फल सरसाए॥

पात्र सु पंकज पत्र कदलि दल रचन धरे जू।
सामग्री मेवादि परुस तिंहि सिद्ध करे जू॥
सीतल सलिल सुगन्ध मेल भरि मणिमय झारी।
धरी निकट तहां आन जहां जेंवत पिय प्यारी॥
जेंवत दंपति रचि विनोद रहसनि अति चातुर।
सखी हँसावत हँसत छकी प्रेमा-सब आतुर॥
जेंवत बेर अबेर हरे पुनि जानि अघाने।
सहचरि रंग रचाय प्रबीनिन ते समराने॥
कर पखार जल अचय लई मुख बास जु बीरी।
शेष सखीगन पाय आरती किय छबि भीरी॥
आय बिराजत सैन सेज बोली तहँ प्यारी।
ससी श्रवै लै आहु वहै कित है नव नारी॥

॥ श्रीललिता वचन ॥

प्रिया बतैहौं वही नेक रहु किंहि हठ लागी।
हमहिं बुलाई क्यों न जबे वहि बातन पागी॥
को पिछान है कहौं अबे उर बसी तिहारी।
लिख के चित्र दिखाहु रावरी वह लगवारी॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

सब तुम क्रीडत बिपुन होहिं इत रही अकेली।
प्रसरत तम संझा सुबेर आई जु नबेली॥
मोते हठी अपार बहिसु मुहि चोख परी है।
काहे को बिन फाग फाग करि गारि धरी है॥
करि मो बचन प्रमाण झूठि कै वाहि लजाओ।
मेरी सों अबही बताहु बिन मोहि खिजाओ॥
हौं न रहौं वहि किये बिना सरमोहीं सब में।
छल छुटाय हरवाय नचाऊ हर्षों तब मैं॥

॥ कवि वचन ॥

हँसी तबै ललिता जु सौंह सुनि प्यारी मुख की।
रसिक छछंदी लडी मोज बनि है अति सुख की॥
द्दग दुराय मुसुक्याय छली सतरान जताने।
आनि गई ललिता जु कारन कह प्रिया सहाने॥

मिहदी सुमनन रंग रची दरसाय अनोठी।
कहत लखो अनुराग नजर कों लीने मूठी॥
प्यारी लखि चकि रसनि दसनि दै अंगुरी अधरन।
मुरि मुसिकाय लजाय वहै बतरान स सुमरन॥
जकी थकी गति पंग द्दगंचल अवनी हेरे।
ठगी जाति इत सकुच सिथिल को न्यावन बेरे॥
रहे रसिक कर जोर चोर चित चाहि चुराने।
प्रेम रसासब हहै दुहुनि मन ही मन जाने॥
इतै रीझतै खीज भजत तिहि रीझ रिझानै।
चाह सचाह सुलाह यही द्रग रसनि थकानै॥
सबै ज्वाब के स्वाल करत मन प्रेम हथाई।
सामिल सुगल अथाह चाह चातुर्ज रचाई॥
छकन थकन लखि छकन थकिन सबहिन सरसानी।
कहत बिसाखाजू सँभारि केलिन रुचि ठानी॥

॥ श्रीबिसाखा वचन ॥

यहि तो बानक यही नवल दूलह दुलहनि कौं।
हथ लेवै रचि रंग रंग लाजहि उलहनि कौं॥
यही केलि सुख आन लेहि यहि बिपुन मनोहर।
सोभा सरस समूह कुंज छबि बिमल तोन भर॥

॥ कवि वचन ॥

सुनिकै रहसि रसाल रचन क्रीड़ा सुखदाई।
सब बोली जू भली भली जनु जीकी पाई॥
ह्वै बिभाग सब सखी भई दोऊ पखवारी।
कर नख रख पै बिध बिवाह रस रीत प्रचारी॥
श्रीब्रजेस दिस की जु भई ते एक ओर कौं।
चली लै जु पधराय रसिकवर नव किसोर कौं॥
जिती भई श्री भान ओर ते लै सँग प्यारी।
आईं प्रेमानन्द मगन इक दिस कौं सारी॥
निर्त्त गान बाजित्र दुहुनि दिस ध्वनि सरसाई।
इत की मन उत बनी रंग की धूम मचाई॥

मायदेव मन करि सथापि पूजन फल बिध की। झमक झपट तिहिं संग लीन गति मति जु सुघर की॥
मधुप महा मुनि गुंज बेद धुन गान सु सिध की॥ तिहिं छिन सुख लखि सखिन प्रेम छक परत न बरनी।
भूषन कुसमन सजै लतान्यत हारनि मानौ। नव बिलास नव नेह दसा दंपति मन हरनी॥
बिमलन छित्र बितान कलप द्रुम महा सुजानौ॥ सार लूम कै झूम झमक चितवन अकुलानी।
लघु दीरघ तरु पूल फलित मनु सजे बराती। हेरन दुलहनि ललिच ललिक उझकन उर रानी॥
पंछी बिव धनवान तहां है बृत धर थाती॥ नव दूलह नव नेह रसिक नव रहसि बिलासी।
सउरभ तेल चढ़ाय सुमन सिंगार बनायो। द्रग चकोर नित नवल प्रिया सुखचंद उपासी॥
दुहु दिस व्याह बिधान रहसि कै रंग रचायो॥ इत उसार मुख तै दुकूल छिप नजर न मेलत।
कँवला मालनि मुदित सेहरा अद्भुत ल्याई। सखिया कखिया हाथ दिये छबि भारहि झेलत॥
पारजात कै फूल रचनि करि फूल निनाई॥ नैनन नैनन बनी बिहद गति बनी बना की।
चंद्र चंद्रका चिरागान सब बिपुन प्रकासा। नजर मेल कथ अकथ कहन सक्तिन रसना की॥
जुगनुन की चल चमक छुटन तेइ अग्न तमासा॥ तोरन छ्वावन रीत साधि दंपति पधराये।
बाँधि सेहरा सीस रसिकबर ब्याहन आवत। बृन्दा देवालय सुभाय तहां दुहुँ बैठाये॥
खखी किकी जानेति किती जागर ह्वै गावत॥ रबि ससि बंसहि पष्य भई प्रोहित केउ सखियां।
छाये देव बिमान गगन बाजित्र बजावै। विविध वृतेसुर किती जथाकृत कर मुख लखियां॥
रचत गान गंधर्ब अछुरि निर्तत छबि पावै॥ देव साखि दै तहाँ जुगल गठ जोरा कीनौं।
महा रंग सों उमँग जाल नियरी जब आई। तन मन सो सब हारि पलै पिय बँध्यो प्रबीनौ॥
अंग सुवासु सआन बँधावनि दई बधाई॥ कर जोरा के करन हरन मन सबकै कीनै।
साम्हेरे कों उमँग सखी गन इत ते निकसी। नील कँवल अरु अरुन कँवल बानक रँग भीनै॥
कलस बधावत मड़ा प्रेम रस रीतनि बिकसी॥ आतुर चातुर पिय निहार कर छकि सिथलानै।
अद्भुत नवल निकुंज अलोकिक रचना मंडित। हथ लेवा के देत बिवस हथ लागि बिकानै॥
महाभाग्य लहि मदन करत तिह सेव अखंडित॥ बाँधि सेहरा प्रिया सीस पूजा सुर कीनी।
सामग्री तहाँ विविध भोग वृन्दा रचि राषी। बारि आरती मणिन सुगल छबि छकी प्रबीनी॥
जानी वासा जान तहाँ लिय सुख अभिलाषी॥ झीनै घूँघट सुमन सेहरा झुकन लजोहीं।
इतै कलपद्रुम कुंज द्वार तोरन छबि छायो। लखित रसिकबर थकित विवस घूमन छकसोहीं॥
आतुर चातुर तहां रसिकबर दूलह आयो॥ धरि-धरि त्रिय तन तहां अमरगन जे बड़भागी।
नजर मेल कौं इतै सखी सब प्रिया जु लाई। कथुक छुठल मुकरत फिरत हिल मिल अनुरागी॥
करत तंत्र टौना अपार अति प्रेम लुभाई॥ चहुं जुग मित्रिय रूप वेह चौरी जु रचाई।
सास आरती करत प्रभातै छबि अति दरसै। पारिजात फल फूल विवध रचना सरसाई॥
दंपति नजरन मिलन तहाँ झीनौ रँग बरसै॥ प्रेमावेसित गहि सखीन तहां दंपति आनै।
कस तुरान करि प्रिया सुमन माला लिय बर की। तिहि छिन की सोभा निहारि द्रग थाह न पानै॥

वर वरनी बैठारि तहां चौरी मधि जोरै।
सखियां अखियां भई भरे कैसी चकि चोरै ॥
बेदी रचि तब लाल मणिन पावक जग जोती।
विधवत दिय आहूत अंजुलिन भरि-भरि मोती ॥
आबाहन ह्वै मदन मंत्र पठिवान मोहनी।
प्रेमानंद उछाह सबन उर बिहस सोहनी ॥
निर्त्त गान बाजित्र मनोहर मदन जगावत।
मढ़ही जानी विवध रहस चरचा सरसावत ॥
परम प्रवीन्यत तर्क गार दै हँसहिं हँसावै।
कउतक केल कलोल निपुन नव-नव उपजावै ॥
वर बरनी फेरा लिवान ठाढ़े जब कीनै।
दुलहनि कर अगवार पिछौंहै रसिक प्रवीनै ॥
प्रेमावेसित लाज भार छवि प्रिया झगमगी।
निरख सिथल रिझवार विवसता अंग रगमगी ॥
लावल पावन संग द्रगंचल लगे न छूटै।
सम्हरानै पुन परत जहाँ चलि तहां सु जूटै ॥
छकन थकन लखि पीठ दीठ है कठिन सँभारन।
नीठ-नीठ पग पैड चलत अति गति रिझवारन ॥
बचन बंध करि कंत प्रिया पिछवारै आनी।
कहत सखीगन लखिहु बना ठौना बरसानी ॥
बना बनी फेरा फिराय बहुरचौं बैठारे।
दुलहनि आनन बाम अंग पुनि कोल उचारे ॥
जो जो सखियन कही सही सो दूलह कीनी।
बढची रंग तिहवंग रहसि अति रचन नवीनी ॥
करि प्रतीत बतरान बाम अँग दुलहनि आनी।
यह रस रीतन हेर प्रेम छकि सबै सिहानी ॥
विध विधान सब साधि आरती दीपग बारै।
तिहिं छिन सोभा हेरि सखीगन गति मति हारै ॥
छबि निधि घूँघट जार परे द्रग मीन प्रिया के।
ललिच सुधा सब लीन छके कढ़ि नव पुनि ता के ॥
रवि कुल प्रोहित सखी बहुरि इक अगुही ह्वै कै।
सुख कहि श्रीवृषभान और जल अंजुलि लै कै ॥
कन्यादान सु कियो दियो वह सलिल बना कर।
रसिक सुघर निज भाग्य लाह लहि धरचो सीस पर ॥
पुनि रवि शशि बंसी सु वृजेश्वर बनी प्रवीनै।
दंपति गोत्राचार उमग उच्चारन कीनै ॥
चंद्रबंस प्रथमहि प्रशंस दूलह को बरनै।
प्रेमानन्द अथाह सबन सुनि सुनि मन हरनै ॥

॥ श्रीनन्दनन्दन साखोच्चार वर्णन ॥

॥ छन्द भुजंगी ॥

सुनो चन्द्र बंसं महा रम्य बासी।
भए भूप आभीर भानं प्रकासी ॥
जिहि रिद्धं सिद्धं समृद्धं अपारं।
धनेसं सुरेसं तहाँ गर्व गारं ॥
बढ़ी कीर्ति त्रैलोक भाषै अखंडं।
विभै भोग मुक्ता महा भाग्य मंडं ॥
कछू ईबि ऐसी सु नृपता दुराए।
गऊ पालकै गोप राजं कहाए ॥
भयो चन्द्र सु भीजिहें पुत्र जानो।
महा बाहु जाकै महा भाग्य मानो ॥
तिन्है कै भये कंज भानं अनूपं।
जिन्हं बीर भानं तनै दिब्य रूपं ॥
लहौ धर्म बीरं सधीरं सुजासै।
श्रत्रा धर्म प्रागट्टि पाये जु तासै ॥
इन्हं ते भया देव मीढं सुवेसं।
तिन्हं ते प्रजन्यं सुभेवं विशेसं ॥
जिन्हं कै भये श्रीमहाराज नंदं।
महा भाग्यकारी त्रिलोकी जु वंदं ॥
महाराज नंदं जसोदा जु रानी।
जसं रात जन्मी सुवेदं बखानी ॥
निगमं अगमं जिन्हं गाथ गाहं।
ग्रहं जानि भै जूप वैकुण्ठ नाहं ॥

इनं कै तनैये जु कृष्णं कुवारं।
लजैं कोटि कंदर्प जाँहि निहारं॥
बनां कृष्ण राधा बनी रूप रासी।
चिरंजी सदा बिप्र वृन्दा बिलासी॥
दगं रूप उछै रहौं प्रेम राजै।
अनंगं उमंगं नितं छक्क छाजै॥

॥ दोहा ॥

दूलह दिस ते यह कह्यो गोत्रा चार बखान।
अब दुलहनि ओरन्नि कहत भाव बंस बर भान॥

॥ श्रीवृषभाननन्दिनी साखोच्चार बरनन॥

॥ दोहा ॥

सुनहु सबै अब कहत हौं दुलहनि साखोच्चार।
बंस भान मणि भान कों जिन जस कथ अनपार॥

॥ छन्द ललित त्रिभंगी॥

अनपार उदारं जिन परवारं,
गभरी जस भारं रबि बंसी।
नृप अरिष्टखैनं सुभ गुन ऐनं,
बिच भुवगैनं परसंसी॥
रजधानी जाकैं सुर लखि छाकैं,
कहत जु ताकैं किहिसक्का।
श्रिय नगर निवासी सेव प्रकासी,
सब सुख राशी अनुरक्का॥

॥ दोहा ॥

अनुरक्का भुक्का सबै सुख संपति नव नित्त।
नृपता तजि गोपेस हुव गोपालन लै वृत्त॥

॥ छन्द ॥

वृत गोधन ठानै कुलहि थपानै,
प्रेम बढ़ानै यहि रीतं।
जिनके महाभानं भये सुजानं,
जक्त बखानं शुभ नीतं॥

तिनते जु सुभानं सुत प्रगटानं,
धर्म निधानं भाग्यबरं।
इन पुत्र प्रतीपं भानु जुनीपं,
हुव कुल दीपं कीर्त्तभरं॥

॥ दोहा ॥

भर कीरत धरि उद्धरिय जूप भान सुत तास।
भान दयाधि जु तनय जिन लोक तिहूँ जस जास॥

॥ छन्द ॥

जासं गुन भीरं क्रांति तिहीरं,
धर्म सुधीरं भान भये।
जिनके महिभानं सुर्न निवानं,
सुजस बितानं जक्त छये॥
तिन पुत्रि फलानं बिना प्रमानं,
श्रीवृषभानं पुत्र जयं।
विध बेद बखानं भेव न जानं,
नाम सुखानं ले तनयं॥

॥ दोहा ॥

नय नय वंदत चरन रज तीन लोक जिहि नाम।
ऐसे श्री वृषभान कै रानी कीरति भाम॥

॥ छन्द ॥

भामाअभिरामं सुभ गुन धामं,
कीरत नामं कुष्ष जई।
जिनके श्रीराधा सुता अगाधा,
फल कृत साधा प्रगट भई॥
गुन रूप निधानं महा सुजानं,
भाग्य बखानं कृष्ण बरं।
यह जोरि अभंगं रहौ प्रसंगं,
प्रेम उमंगं रंग भरं॥

॥ दोहा ॥

भरि प्रेमावेसित रहौं यह बिवहार विहार।
बर बरनी सामिल सखी दुलरावन परवार॥

॥ कवि वचन ॥

दंपति गोत्राचार करि दै आसिष अनपार।
हथलेबा जु छुटान बिध करत भान दिसवार॥
श्री कीरत वृषभान कै दिसते मणि आभर्न।
दै दूलह कों सखिन तहँ छुटवाये दुहुँ कर्न॥
बलि हित मांगत असुनि बर श्रीदामा की चाहि।
अश्व कहत ये देन कों चरचा हासि बढ़ाहि॥
जानी वासै दुहुँन पुनि पधरावत तहँ संग।
बहुराई प्यारी बहुरि समठानी हित वंग॥
प्रथम आन दुलहनि बहुरि दूलह लै बहुराय।
माय सथापन ढिग दुहुँनि बैठारे सुख छाय॥
सखियां मधुमखियां तहां लेत सुधा सब लाह।
कंकन डोर छुटान कों पुन उलही चित चाह॥
गहि प्यारी कर श्याम पै कंकन डोर छुटात।
कहत गांठ छोरहु भरे चातुरता इतरात॥
हरी चुरी कर गउर कै मणि मोतिन भर भीर।
मिहँदी कुसुम अनार रँग लखि छकि पीय अधीर॥
कर चूनरि जानहु नहै रह्यो है जु लगि पाग।
टूक-टूक पिय मन रसिक उलह्यो भरि अनुराग॥
कंज पान मकरन्द छबि लोभी अलि दृग लाग।
लंपट संपुट ह्वै छके अति गति बनो अथाग॥

॥ श्रीचम्पकलता वचन ॥

चंपक लता जु कहत तहँ सुनहु छछंदी छैल।
सहलन यह वह ज्यों हँसत धर लीनो कल सैल॥

॥ कवि वचन ॥

ऐसे कहि कहि तर्क सों महा रंग कै रोर।
प्यारी कर डोरा छुटय धरचो जु दूलह मोर॥
पिय कर कों डोरा बहुर प्यारी पै छुटवाय।
चपल तन्त्र कर लै तहां धरचो प्रिया कै पाय॥
बिधवत कर जूवा रचे खेलत रसिक सुजान।
झमक रमक कर गहत [illegible] पुनि लखि छबि [illegible]

कर जूटै जूटै जु तन मन झूंठे रिझवार।
जिहि झूंठन में दृग जुटै तिहि गति वार न पार॥
यहि गति ते सम्हराय पिय सखी खिलावनि वारि।
प्यारी जीती दांव सब रसिक रहे मति हारि॥
रहसि उमंग कर रंग सों सब व्यवहार बिधान।
पलकाचार सु करन पुनि माढे तरु दुहुँ आन॥
कुसमन रच्यो प्रजंक तिह जोरै जुगल बिराज।
कोकि मदन रति कदन छबि छकिई सखी समाज॥
दंपति रहसि बिनोद कै गति मति प्रेमावेस।
बर्त्तमान आसक्तिता विलसत रंग बिशेस॥
नित नव नेही दुहुँनि नित नव रचि रंग बिहार।
नित नव तनमयता रसिक नित नव गति मतिवार॥
प्रेमावेसित ब्याह बिध नव दूलहता भाव।
तन मन रंजित ह्वै रसिक विलसत तन उत चाव॥
त्यों ही नव दुलहनि दसा रसावेस सकुँवार।
वर्त्तमान अंग अंग छबि उलहि रही अँगसार॥
छबि दुकूल झीने भरे घूंघट लाज न मन्त्र।
अरुझन सुरझै रसिक दृग परे चर्क छूजन्त्र॥
झमक झुकन पै रुकन घुकि आतुर चतुर चितौन।
चलि ललचन-२ ललिच ललचनि लचै सु कौन॥
श्रीकीरत श्रीभान कै दिस की विप्रनि आन।
बरपद द्वै प्रकृम करिय संकिलपि दायजवान॥
सब विधान करिकै बनी चारनि हास रचाय।
अति चातुर्जन ते करत चरचा जुगल रिझाय॥
केउ पष्षि दिस ते सखी गावत गारि प्रवीन।
तातें दंपति रीझही लखि चातुर्ज नवीन॥
जाचिग गुनी वृतेसुरी लहि दत जीवन मूर।
जस विवाह जय-जय कहे मन वांछित ह्वै पूर॥
बर बरनी कीने बिदा खोल मोर गठजोर।
जानी बास निर्बस तहाँ चले चतुर चितचोर॥
[illegible] तनजे सुरगन सबै अरु नभ छये जु आन।

अप अपने लोकन गये महाभाग्य फल मान ।।
नवल कुंज अद्‌भुत महा रही छपा छबि छाय ।
दूलह दुलहनि रंग सों सखिन सहित तहँ आय ।।
बैठे कुसम प्रजंक पै अंक प्रिया लै पीय ।
रंक महानिध पाय ज्यों लखि-लखि लावत हीय ।।
झीने घूँघट लाज छबि लखि-लखि छकि रिझवार ।
यही लोभ लोभी चतुर बिसरैं आन सँभार ।।

।। चित्रादेवी वचन ।।

कहि चित्रादेवी जु वे कित हैं छली छछन्द ।
अबहीं घूँघट अनखुले परे सु अनखुल फन्द ।।

।। कवित्त ।।

छैल हौं छछंदी ये जू सुनहु सुजान मणि,
अति मद पानी गति काहे रससानी है ।
झूमन दकुल द्रग झूम झूम घूम घूम,
धूम झूम धूम हीर हान दरसानी है ।।
घूँघट कै घेरै सुध सोधन मिलत हेरैं,
कैसी बनि है जू ना चितौन परसानी है ।
मुख ते निवारौ पट बदन निहारौ नीके,
सम्हरि सम्हारौ बना टौना बरसानी है ।।

।। श्रीदूलह वचन ।।

।। दोहा ।।

बरसाने केरे सरस टौनन चेरे कीन ।
तन मन द्रग गति लाह ये लोभी घूँघट लीन ।।

।। कवि वचन ।।

मुसिक रसिक बर उमँग तहां घूँघट खोलन चाहि ।
झकन लाज पै झूम द्रग कर तें पट छुटि जाहि ।।

।। श्रीतुंगविद्या वचन ।।

।। कवित्त ।।

रूप गुन आपुने अपार मद छाये छैल,
तोलत चतुर चालि छबि पर छाई है ।
अति ही भुरानी बृज नागरी लुभाय सबै,
कीनी मन मानी बसि लाज बिसराई है ।।
कित छल छन्द वे परे जू फन्द रिद महा,
घूँघट खुलै न यहां छकि सिथलाई है ।
गति मति हारी आहा जात न सँभारी सो,
पै रसिक बिहारी रसिकाई छबि पाई है ।।

।। दोहा ।।

मुख दिखरोही देन सम तुमपै कहा बिशेष ।
तन मन सर्बस कीजिये बहुत निहोरन पेस ।।

।। श्रीदूलह वचन ।।

मुख दिखरौंही देन तौ सोच रह्यो हिय हार ।
तन मन सर्बस यह भयो हथ लेवै नव छार ।।

।। श्रीइन्दुलेखा वचन ।।

।। कवित्त ।।

घूँघट खुलत कछू सहल न जानिये जू,
ठानिये उपाव रहौ नाहि न लजाय कै ।
चेरे ह्वै चतुर गहौ नेरे सखी टहल तबै,
लहि हौ परस अंग तरस नसाय कै ।
हा हा करि कोटिन सखिन पास मांगि लेहु,
छाप है बिरानी सोपै देहै ऐसे ताय कै ।
होकै सब संग कर जोरि कै उमंग बना,
बिनवौं प्रिया जू पद मुकुट छुवाय कै ।।

।। दोहा ।।

आसंगति गति मति रलै फलै मनोरथ पूर ।
तब निवार घूँघट लहौ दरस परस निध सूर ।।

।। श्रीदूलह वचन ।।

जिन यह करहु अबेर अब टौंनन दियो बिकाय ।
हा हा कोटि अनेक है दीजै चरन लगाय ।।

।। कवि वचन ।।

सुनि-सुनि बातें सखिन की प्रेमावेस सँभार ।
घूँघट निरवारत दिये गरबांही रिझवार ।।

लाजन विद्या मोहिनी इतै दृगंचल लीन।
उत चातुर लोभी रसिक लखत चिबुक कर दीन ॥
घूँघट आड़ निवार कै चिहुट चाड़ चित चोर।
लूटत लाह अथाग गति अन उतरन मद तोर ॥
लाज भरन ललचन भरन झनक ढरन अँखियान।
तिहि लुभान लुभये चखन लखि अति सखी सयान ॥

॥ श्रीरंगदेवी वचन ॥

॥ कवित्त ॥

परम सुजान आन रहसि बढ़ान रंग,
रंगदेवी पानहि अतर दियो बर कै।
कहत गुलाब ताब दबि ह्वै अरग जार,
महकि सनोज मद छाके या अरस कै ॥
दूलह प्रबीन हौं नवीन नेह भीने भीनौं,
चीन्हौं प्रेम संपुटै जू लंपटै सुघरि कै।
चेरे हौं न चाहि रहे काहे सिथराय श्याम,
सह लहि लाहि लीजै टहलै सँभर कै ॥

॥ दोहा ॥

अन्तर टार सुतन्त्र ह्वै अतर लगावहु अंग।
भीनत तन मन ज्यों चढ़ै आसव असर अभंग ॥

॥ कवि वचन ॥

रसिक मुसिक लीनौं अतर भीनन चाहि ज़ु चाय।
टहल पहल चहु ले सुमुरि ध्यान लीन छक छाय ॥
पुनि सँभारि सुध करन जब ल्यावत प्यारी अंग।
तहां भौंह इत भंग ते इतै रसिक गति पंग ॥

॥ श्रीजमुना वचन ॥

॥ कवित्त ॥

लोचन लगौं है जू पगौं है प्रिया माधुरी पैं,
झूमैं छक छाये घेर राखी है दबाय कै।
अति ही भलीन ऐसी चढ़न करीनै रति,
छाजै चित छाजै लोभ लागे उरराय कै ॥

दृष्टि लगि सिथल संभार सुकुवार ह्वै,
जो बिव संगताई तन नैको दरसाय कै।
सहि न सकै है ना सकै है पै न कैहै इतो,
पैहै जल मुहै प्यारी चरन धुवाय कै ॥

॥ श्रीदूलह वचन ॥

॥ दोहा ॥

रसिक मुसिक बोले अजू नीकी कही बिचार।
बनत पहल ही कीजिये उस वासहि उपचार ॥

॥ कवि वचन ॥

परस्यौ सहचरि गनन अति बना बनी अनुराग।
महा प्रेम छकि हर खड़ी लखि निज कुवरि सुहाग ॥
नवल नेह लै लौंन तहाँ आय प्रिया पिछवार।
तन मन जुत नव छोर किय सुपैवेर त्रिय चार ॥
इन कन लै तिय लौन यहि दयो रसिक बर पान।
गहत प्रिया कर पहल इन धरयो सुखहि निध मान ॥

॥ श्रीललिता वचन ॥

हँसि बोली ललिता जु जब अति निस गई बिताय।
अब दंपति जेवहु कछू पुन पौढ़हु सुख पाय ॥

॥ कवि वचन ॥

आज्ञा लहि लाई तहाँ बिंजन बिबिध प्रकार।
मेवादिक पकवान सब षटरस स्वाद अपार ॥
सीतल सलिल सुगंध कै मणि झारी भरि आन।
रुचि जैंवत दंपति छके रहसि रसासब पान ॥
अधर परस कौं तरस पिय देत प्रिया सुख कोर।
इत लर्जन ललचान वत तहाँ रंग की रौर ॥
कबहु जिमावत परस पै तिहि छबि तार न पार।
कबहू इकटक थकित बढ़ि प्रेमासब मतवार ॥
तब सम्हराय जिमावही सहचरि परम प्रवीन।
विलसत रहसि बिनोद तहाँ विवध अछेह नवीन ॥
जेंय अघाने उदर दुहुँ क्षुधा द्रगन अनभंग।
कर पखार जल अँचय पुनि बीरो लई सुरंग ॥

करी आरती सखिन तब तन मन सर्बस लार।
जुगल सुगल छबि लखि छकी अन उतरन मतवार ॥

अन उतरन मतवार छकि रहसनि दुहुँ अरसांहि।
घूम घुरैं द्दग जरि मुरैं लहरन छबि सरसांहि ॥

लगे सर्न सर मदन कै प्रेम रोज छकछाय।
आतुर चातुर रहसिको सखिन समय रुचिपाय ॥

निभ्रत नवल निकुञ्ज करि बैठी बाहर आन।
करत मनोहर रंग सों ढाढनि औलग गान ॥

रहसि लुभाने चतुर दुहुँ पौढे कुंज निवास।
श्रमत सनी तन अरगजी महिक समीर सुवास ॥

सखियन प्रेमावेस गति रचि रचि रहसि पहेलि।
चरचा चतुरन चाव की करत नवल रुचि मेलि ॥

बलिया नूपुर किंकनन झनक मधुर कै संग।
मधुर २ बाजित्र मिल गार बढ़त इत रंग ॥

ढाँढनि सुघर समाजलै गावत महा प्रबीन।
तान वान अखिरान लगि चाल चतुर नबीन ॥

आसन अर्था कारके अनुभव रचि रिझवार।
दुलरावत दंपति सखी छकी प्रेम मतवार ॥

रहसि रंगीले बिलस ही रहसि रंगीलौं मैन।
रहसि रंगीलिन उमग किय रहसि रंगीली रैन ॥

कँवल नेह नित नव सुँगल नवल चहुँल नव रंग।
नवल रसिक नव नव चसिक उद्धव नवल अनँग ॥

बिलस मनोहर रैन कौं रसिक चतुर रिझ वार।
रंग रहे तैं पग रहे अन उतरन मतवार ॥

आगम प्रात सुजानि पुनि सह चरि सबै प्रबीन।
दुहुँन जगाये रंग सौं रुचि चातुर्ज नबीन ॥

जगि लगि बैठै सेज दुहुँ बदन मंद मुसिक्यान।
लगे द्रगन लहरै रसिक पगे प्रान मै प्रान ॥

अरसाने निसके जगे छबि सरसाने मैन।
सम्हराने भूषन बसन सखिन आन सुख लैन ॥

गरबाँही दीनै चले तब दुहुँ बनतं गेह।
चंद मंद कछु भुरहरिय ताछिन छबि अन छेह ॥

चातुर सखी समाज लखि जुगल डग मगी चाल।
प्रेमा सव छक कर मगी वारत मोतिन माल ॥

रंग रसे रंगहि गसे रंग सदन निज आन।
रंग प्रसंगहि रंग सौं नित कृत किये सुजान ॥

पुनि नित नवल बिनोद कै रसे रंग रिझवार।
प्रेम राज छक बिलसही अन उतरन मतवार ॥

नित नव जुगल बिहार जे प्रेम पूर अनछेह।
गोप रहसि अद्‌भुत महा वृन्दाबन निज ग्रेह ॥

नेत नेत भाषत निगम यहै अलौकिक सार।
तिहिं आश्रयता लहि कह्यो ध्यान भावना धार ॥

जो बाँचै श्रवननि सुनै रचै चित्त यहि रंग।
ते मुहि कहियो वहि यही आसा फलोअभंग ॥

हरि गुरु भक्ति सु भक्त जिन कृपा महा सरसाय।
मो लघु पात्रहि हृदय ह्वै यहै ध्यान प्रगटाय ॥

धाम सलेमाबाद जे श्री वृन्दाबन देव।
जिन आश्रयता छापते लह्यो अलौकिक भेव ॥

कीरति जा सुन्दर कुँवरि सुन्दर कुँवर बृजेस।
सुंदर कुँवरिनि पद कमल सुंदर कुँवरि सुपेस ॥

रूप नगर नृप राज सिंह गोबर्द्धन धर दास।
तिहिं तनया सुंदर कुँवरि कुल सत संग प्रकाश ॥

जुगल भावना कर यहै पोथी रची बिचार।
संत बिबेकी रसिक जन लीजै भेव सम्हार ॥

कबिजन कबिता उक्त कौं करहु न हेर बिचार।
लोभी अलि ह्वै कंज यहि लहौ अलोकिक सार ॥

मो लघु सक्तिहि मात्र यह करचौ अलौकिक भेद।
आसव रसिक अनन्य को नेत नेत कहि वेद ॥

छके छकायो छकि रहौं छकन यही सर सार।
तिह छक छाजै चित चरन मुक्ति सुखहु ठुकुराय ॥

श्री राधा राधा रवन वृन्दा बिपुन बिहार।
परम रसासव मुहि चढ़े अन उतरन मतवार ॥

सम्बत अठारह सै जु पै पैंतालीसू जान।
साके सत्रहसै रु दस सिद्धारथ सु प्रमान ॥
लहौ माष बैषाख सुद पूर्नमांसि तिथ जास।
बार मंगलिय भौम भौ पूरन ग्रन्थ प्रकास ॥
यह जु प्रेम संपुट बिषै जिन चित संपुट आहि।
या तें श्रेष्ठ जु सार कछु करनी कारज नांहि ॥
संपुट प्रेम सु बिपुन कै दंपति सकल समाज।
आय प्रेम संपुट हि लहु प्रेम संपुटी राज ॥

॥ इति श्री प्रेम संपुट ग्रन्थ सम्पूर्णम् ॥

सार संग्रह

॥ दोहा ॥

बंदौं श्रीगुर चरन रज परम पदारथ अैन।
जिन दास्युत की छाप है भक्त मुक्त फल दैन ॥
श्रीराधा राधा रबन बिनवौं आश्रय पाय।
जिन गुन रस बस रहत ते बसौ हृदय मम आय ॥
अति बल्लभ निज प्रान सम जानत जिन श्रीकृष्ण।
कृष्ण प्रान आधार तिन ज्यौं चात्रग कै तृष्ण ॥
जिन पद रज कौं ध्याय कै जिनही कृपा मनाहु।
जिन मति गति धारी हृदै जिनही को जस गाहु ॥
नेति नेति भाषत निगम जिहिं प्रभु गाथ पुकार।
सो हरि निज मुख बदत है महिमा भक्त अपार ॥
निज चित श्रीहरि लीन है हरि चित जिन जन लीन।
हरि जल जन मन मीन है जन जल हरि मन मीन।
अैसे जे हरि भक्त जन नवधा जिननि बिलास।
यसुधा दशा प्रवेस तै चित छक छाजै बास ॥
रीति क्रिया स्वभाव जिन दशा रूप दरसाव।
वरनौं निज मत सक्त सम अद्भुत अमित प्रभाव ॥
भक्ति रसामृत सिंधु महि बैष्णव जन गुन मर्म।
बर्नन किय सिव सिवा सौं भेव अलौकिक पर्म ॥

॥ अथ प्रभाव वर्नन ॥

कोटि कोटि ब्रह्मांड जे जिहिं इच्छा गति लीन।
सो श्रीहरि नित रहत है बैष्णव जन आधीन ॥
सेवा सुमरत बैष्णव किये प्रीत सर साय।
महा प्रष्ण व्है लेत हरि आतुर तिहि अपनाय ॥
भक्त जनन के भाब बस प्रष्ण रहत भगवान।
अनिरिण नहि तिनसौंक बहु गति मति हारि निदान ॥
अति पापी अति दुर्मती जे मनुष्य जग माहि।
कृपा बैष्णवन पाय कै मुक्ति पात्र व्है जाहि ॥
अजा मेल मुक्ति जु लही कृपा बैष्णवन पाय।
नारद जू पार्षद भये बैष्णव संग प्रभाय ॥
हरि बिमुखन उद्धार ही बैष्णव जन जग माहि।
वैष्णुन ते जे बिमुख है हरि उद्धारत नाहि ॥
श्रेष्ठ सक्त उत्तम करत जग हित छेत्र अनंत।
ते तीरथज पबित्र ह्वै बैष्णुन पद परसंत ॥
जिहि ग्रह बैष्णव पग धरै पर्म कृपा सर साय।
धन्य धन्य भाषत निगम ताकी महिमा गाय ॥
चरन धोय डालत सुजल बैष्णव जिहिं भव थान।
कोटि तीर्थ सम अवनि वह श्रीहरि कहत बखान ॥
जहां जहां वैष्णव फिरै तहां तहां तिन संग।
शिव कहत जु हौं फिरत पद रज धारत अंग ॥
बैष्णव नाम सुमंत्र नित विष्णु जपत लव लीन।
परम प्रेम पल पुलक कै दरस परस आधीन ॥

नित्त निरंतर रहत हरि वैष्णव जन के साथ ।
तीन लोक के नाथ प्रभु बिके प्रीत कै हाथ ॥
बिरद भक्त वत्सल प्रभुहि हे बलभ अति वित्त ।
तिहि दग पन धारि रहत तत्पर जन हित नित्त ॥
रिख बर दुर्बासारू जन अम्वरीष परतच्छ ।
बिरद भक्त बच्छल सु यों करन भक्त की पच्छ ॥
हरिनकसिप हरि नाच्छ हति रावण आदि अमान ।
बलि सों बल नाहिन चल्यो जाच्यना किय आन ॥
कहत कोऊ बलि बांधि कै प्रभु पाताल हि दीन ।
निजते सत्य दिखाय सो किय जु कामना हीन ॥
बंधन कर्मा कार के करि बंधन किय नाश ।
हारि अपुनपौ पुनि भये द्वार पाल तिहि दाश ॥

॥ अथ रीति वर्णन ॥

ग्रहस्त भक्त के कार्ज ग्रह हरि अर्थ बिच जक्त ।
प्रेमा नंद अनन्य गति इष्ट भाव आसक्त ॥
बृतक रीति साधन कथन जो गुरु भक्ति निबाहि ।
केउ प्रेमी नेमी केऊ केउ मिश्रत इहु माहि ॥
जे वैष्णव जन हैं सबै तिनकी यही जु रीति ।
इच्छत नहि कछु कामना लगन मगन हरि प्रीति ॥
परम प्रेम मदरा छके इष्ट भावना माहि ।
प्रथी सुर्ग रिध सिध जिन्है अनित तुच्छि दर्साहि ॥
जे मुक्तिहु चाहत नहीं करत भक्त अति मग्न ।
प्रत प्रबीन हरि प्रीति मैं परम प्रष्णता लग्न ॥
जैसे त्रिया पतिब्रता डिगै न चित दिस आन ।
त्यों अन्यनिता दृढ़ धरै जन हरि सर्न सुजान ॥
वैष्णव वैष्णव परस पै परम नम्रता भाव ।
हरि जन हरि सम जान कै सेव प्रीत सरसाव ॥
शांत चित्त दृढ भजन रति चरचा हरि गुन गान ।
निस दिन बितवै प्रेम मै यहि सुख गनैन आन ॥
श्री हरिहू आसिक्त नित जिनही के लवलीन ।
प्रीति परस पर दुहु दिसहि पाली बढ़त नवीन ॥

हरि सँबंध बिन नेह निज स्त्रिय सुत अरु वित गेह ।
इनहू की चाह न कछू रचि श्री कृष्ण सनेह ॥
जे जानत प्रिय श्री हरि हि मित्र प्रान आधार ।
प्रभु गुन कीर्तन करहि नित मगन वान उच्चार ॥
श्रवन करै गावै उमग बरनै बात बनाय ।
छिन छिन मन श्री कृष्ण ही बीच रहै मडराय ।
ह्वै दरसन वैष्णवन को अरु जिहिठा प्रभु धाम ।
पुनि सुभ छेत्र सुजाहि चलि जहां भक्ति अभिराम ॥
हरि हरि वैष्णुन परिक्रमा करै पगन सौं चाहि ।
हाथन सों सेवा टहल करही परम उमाहि ॥
शिशनाय प्रभु चरन अरु वैष्णव पद रज माहि ।
चरनामृत लै उमग कै प्रेम प्रीति सरसाहि ॥
हरि हरि भक्तन की कथा श्रवनन सुनै उमाहि ।
रसना तैं बर्णन करै पुलकि अंग सरसाय ॥
निरखै प्रभु स्वरूप को भाव प्रीति दग छाय ।
पहुप प्रसादी सूँघही तन सुबास पुट भाय ॥
हरि उत्तीरन तुलसि दल चन्दन सीस चढ़ाहि ।
प्रभु प्रसाद भोजन करौ हित दास्युत चितछाहि ॥

॥ अथ स्वभाव वर्णन ॥

स्वभाव जु वैष्णवन के श्री हरि के मन हर्न ।
पार न पावत बेद बिध सकै कौन जिन बर्न ॥
प्रभु चरित्र चरचारु ह्वै लीला जुत अनुराग ।
बिस्तीरन ह्वै भक्त को तहां जु चित की लाग ॥
जोग सास्त्रहू बिच जहां प्रभु चरित्र गुनगान ।
तहां वैष्णव रति महा और न काज निदान ॥
करहिजु जिन अपमान कोउ कुमती कहि दुर्बाद ।
तोऊ वेऊ तर मुदै नाहिन करै बिवाद ॥
अरु अत दया बिचारही तिनहू की चितमाँहि ।
कहत कि कैसी इनजु गति प्रभू पिछानत नाँहि ॥
सब को भला बिचारही करुणा जुक्त जु चित्य ।
दीनन पै जु दयाल अति प्रभु सम्बन्ध हित नित्य ॥

छमा सत्य निह कामना शांत चित्त निर्लोभ।
प्रभु सुमरन चरचा बिमल हृदय भक्त नित गोभ॥
परम दीन तें दीनता कलि प्रपंच अति लिप्त।
जग सम दिष्ठसु लखत लहि प्रभुसरबज्ञ हि दिप्त॥
सत्रु मित्र मानत न जे लखि सु बृथा जंजाल।
माया रूप चरित्र जिन भिदै न काहू काल॥
हर्ष शोक दुख सुख विषय तिन से रहत नृवर्त।
जलन भिदै जलज हि लखो त्यों जग बिच अनुसर्त॥

॥ अथ रूप वर्णन॥

तिलक छाप चंदन रचत निज मारग कै चाल।
श्रीहरि भक्त सु जग-मगै प्रगट बिभूषण भाल॥
गर कंठी उर माल जिन तुलसी पुलकत अंग।
श्रीहरि नित्त निवास जहँ बसत सर्वदा संग॥
ललित कृष्ण लीला बिवध परम रसासवसार।
हृदय निरन्तर रमन तें सोहत द्दगन खुमार॥
प्रेमा नंदत प्रष्ण मुष अधर मधुर मुसिक्यान।
कंबु कंठ ते प्रगट ह्वै नाद सु हरि गुन गान॥
रचना अमित त्रलोक की जिहिन हीन जरवंत।
सबैसुर बस करि छके उनमद छबि सरसंत॥
गज गरूर चूरत चरन पग पग धरि बिचरंत।
महा दीन तें दीनता अद्‌भुत गति दरसंत॥
परम अलौकिक छबि छटा अंग अंग उद्योत।
जिन दरसत परसत चरन कंप पाप छय होत॥
जग महि न्यारे जक्त तें भक्त सु ऐसे भाय।
ज्यों समूह नग काच के चिंता मणि दरसाय॥
जग विषयी नर जक्त के ताप सु त्रबिध तचंद।
जिन वैष्णुन दर्सन करत उर सीतल ह्वै तंत॥
अति प्रभाव है रूप को वरनो कहा अथाग।
दरसन लहि सुर नर नवत जिन चरनन बड़ भाग॥

॥ अथ दशा बर्णन॥

किधौं बिवस घट घाय कै कैधो मद मतवार।
किधौं चतुर निध चोर है कैधौ बहे बयार॥
तुच्छि कहत सुखसुर्ग के अनित काल आधीन।
मुक्तिहु चहत न जे चढ़े प्रेम भक्ति छकलीन॥
मन मतवारे बिवस तै घूम घुमारे अंग।
हँसत कबहु रोवत कबहु रसनि द्दगनि गति पंग॥
कहरी जहरी स्याम की लहरै उर सरसान।
कोटि सुधा सीरन सिचत तिहि सुख गनैन आन॥
मन उपजत मन ही रमन कहत बनै नहि बर्न।
मिलत एक से रीझ जब लुटै परसपर चर्न॥
नेह उदध उलहन लहर हृदय छाय तन सोहि।
पुलक सिथिलतिहिं भंगसुर द्दग जल बिवरन सोहि॥
मन भोरे भोरे बचन भोरे लखहु सुभाय।
जो त्रय लोक नचात जिहिं राख्यो हाथ नचाय॥
सूधे तैं सूधे महा लखौ सूध की गाथ।
जिहिं गति बिकट त्रिलोक हैं तिहिं सूधो किय हाथ॥
तन मन करि नम्रत भरे महा दीन तै दीन।
तीन लोक के नाथ हरि कर राखे आधीन॥
चित छाजै छाजै निरज जाजै चढ़े गरूर।
गनत सुरेस न लेस मो राजा राव न सूर॥
मन सूरत ह्वै रलि मिलन आसय आसव छाक।
तिह सरसन दरसन छटा जानत जानत ताक॥

॥ अथ चोर लच्छिन॥

मन की मन ही मुदतता तन तिह गूढ़ हिलोर।
मौन गहे मुसिकत चखन लखि २ ज्यों निधचोर॥

॥ मतवारे लच्छिन॥

घूमत मन घूमत सु तन द्दग उन मील घुमार।
थकित वैन गति सिथिल चढ़ि अन उतरन मतवार॥

॥ घायल लच्छिन॥

कबहु बिरह कबहूँ मिलत तन मयता सरसाहि।
चित चुरत सीवत सकल बिबस कढ़त मुख आहि॥

।। बावरे लच्छिन ।।

कहुंचित कहुं चितबन थकित कछुहित कछुकहि जात।
कित ही मग चालत कितहि मनहु बदे ज्यों बात ।।
हरियारी सानंदता अंकुर पुलकत देह।
नेह मेह दृग छबि छटा हियसु स्याम घननेह ।।
बेद कहत जिन बिमल मन राचे स्याम सुरंग ।
अति पांचे कांचे न जिन लगत लगत परसंग ।।
आस बिलासन गर्थलौं अर्थन कछु किहु चाह ।
भाव चाव चित चहन नित बिलसत बंछित लाह।
डिगत न दृढ़ता चित्त की अति गलि ब्रत सरसाय ।।
स्याम सनेही नाम सँग ढहे परत अकुलाय ।
चिहुट चसक कों तकित हुचि चलत न बस कै कौन ।।
आसक मतवारें बिकल रसिक सांवरे लीन ।
मनकी कहन सु मौनजिन सुरही श्रोता नैन ।।
ऐसे कों ऐसे मिलै प्रत उत्तर ते लैन ।
कृष्ण नाम सुनि भनक तित चौंक चिहुटि चितजाहि।
रोम रोम सानंद ह्वै श्रवनन प्रान बसाहि ।।
जार नामतै रस चसक बिषिया त्रियचित होहि ।
तैसे हरि हरि बैष्नवन इस्क अमल सरसोंहि ।।
हरि हरि बैष्नुन परस पै गति बर्नी क्यों जाहि ।
है आसिक मासूक को परत पिछानै नाहि ।।
कृष्ण नाम मुख लेत ही हिय मूरत उररात।
ज्यों मदरा तन मन रमै दृगन चढ़त दरसात ।।
हरिगुन बर्नत मन उमँग पुलकि अंग छबिछाहि ।
रसकै चसकै मगनता उलहत नाहि अघाहि ।।
दरसत नीरस रस मई लखत दारु जिम ऊख ।
त्यों जग जन निज सम लहै हरिजन भेव पियूख ।।
अजक बिथा ह्वै अमल बिन ज्यों अमली कै अंग ।
त्यों हरि सुमरन ध्यान बिन बैष्नव जन मनभंग ।।
भाव भक्ति रत मेल तें हरि चरचा ह्वै नित्त ।
सत संग सु लुवधै रहै एक प्रान से मित्त ।।

आवेसित किन भाव के बिबिध तर्क बतरान ।
नेह देह ह्वै देह सुध बिसरन तितो सयान ।।
गोष्ठी बैष्णव जनन बिच प्रेमा नंदनप्रष्ण ।
रीझ बिवसता जिनन ज्यों रीझ बिवस श्रीकृष्ण ।।
बिवस गतागति परसपर छके छकावन चाय ।
अचिरज अनभिद आनजे देख छकन छकि जाय ।।
काजर ग्रह ज्यों धसत कोउ कोटिन किये सयान ।
अंजन रंजन होय तन बहुत न तौ लघुमान ।।
बैष्णवजन सतसंग है रैनी स्याम सुरंग ।
कोरे जग जलताय तें ले मन रँगै अभंग ।।
होय काच तें मणि सुमन जिन सतसंग प्रभाहि ।
जहुरी हरि रिझवार तव धरत हृदय जिनचाहि ।।
नेत २ भाषत निगम बैष्णवजन गुन गाथ ।
कितक मात्र हौं कहन पै चाहत भयो सनाथ ।।
तातें अब नवधा कहौं जिह वसुधा पुनि होय।
प्रेम लच्छिना तिह मरम हरिहु बसीकृत जोय ।।
प्रेम लच्छिना पात्र जे जिन नवधा की रीति ।
बरनौं निजमत सक्त सम दृढ़मत प्रीत प्रतीति ।।

।। इति श्री सारसंग्रह बिश्राम ।।

।। अथ प्रथम भक्ति ।।

जानहु प्रथम अन्यनिता ज्यों त्रियपति ब्रतभेव ।
एक सर्न श्रीकृष्ण की दृढ़ चित साधा सेव ।।
किहु बिध आन उपासना करै न काहू काल ।
यही कामना इच्छि चित चाहै कृष्ण कृपाल ।।
भाव दासिता प्रीत अति निज स्वामी हरिमांहि ।
सब समर्थ हित कारते आनगनै चित नांहि ।।

।। अथ दुतिय भक्ति ।।

दुतिय भक्ति श्री कृष्णपद नीलंदीबर बर्न ।
नख गुलाब पखुरी मनौ अद्भुत छबि मन हर्न ।।
द्वै द्वै लर मोतीन की लपटी छबि सरसान ।
सोभा सागर अरुन मनु मानहु करत सनान ।।

अंकित द्वादस दून जुत चरनन ध्यान सुधार ।
समय समय रुच भाव कै बैठे खरे बिचार ।।
चरन कंजते लायदग अरु निज सीस लगाय ।
ध्यान लीन यों दंडवत करत प्रीति सरसाय ।।
चितहेरै चितवत प्रभू परम कृपा सरसात ।
उठि २ लखि २ बदन हौं पुनि चरनन लपटात ।।
करत रहै यों दंडवत करि २ ध्यान सुचित्त ।
दिनप्रति प्रेमानंद बढ़ि इच्छि भावज्यों चित्त ।।

।। तृतिय भक्ति ।।

भक्त तृतिय श्रीहरि सुजस सुनै कथा गुनगान ।
अपने स्वामी लहनने परम प्रीत सरसान ।।
सुनत नाम श्रीकृष्ण को है पुलिकित आसिक्त ।
उभय भाव आनन्द घन बरष हरष अतिविक्त ।।
प्रभु गुन चरचा सुनत मन मगन होत सुखमान ।
करत तर्क संदेह तहि रस सम्बाद बढ़ान ।।
हरि पंकज मकरंद गुन अलि वैष्णव मनमत्त ।
रस लंपुट संपुट रहै आतुर चातुर रत्त ।।
मित्र कुटुँबरु धाम धन लाज काज बिवहार ।
सुधन क्षुधातृष आदिजन श्रवन श्रवत श्रुतिसार ।।
बिभचारिन त्रिय चितहिं ज्यों जार बात तें लाग ।
पुनि २ सुनत अघात नहिं छिन २ चसक अथाग ।।
भिन्न २ सुख स्वाद रस चाहत बाढ सु नित्त ।
ऐसे श्रीहरि गुन कथा लगन वैणष्वन चित्त ।।
श्रवननते यह भक्ति सुख लेत रहै बड़ भाग ।
अब रसना गति लेनलभ कछु बर्नोजु अथाग ।।

।। चतुर्थ भक्ति ।।

बिधि चतुर्थ सुमरन रसनि सुरन मित्र हरिआय ।
उन मीले दग ह्वै जकत ज्यों तिय पिय सुधिछाय ।।
कबहुँ कथा वेदोक्त की कहत प्रीत सरसात ।
करषत मन बरषत सुधा हरष हृदय उफनात ।।
कबहुँ ध्यान आसिक्तता ह्वै आसय अनुराग ।
उरि रत तब मन की सुखहि गावत गति मति लाग ।।
कबहूं प्रीत प्रतीत पै प्रेम उक्ति सरसात ।
तब मतवारे ज्यों कहत कृष्ण नाम कहि बात ।।
कबहुँ भावना ध्यान कथ कहही प्रेम प्रकासि ।
कबहूँ छकि थकि चकि रहत हृदय माधुरी भासि ।।
श्रीहरि लीला मन हरन जबै हृदय फुरिआत ।
पुलकित तन गद गद गिरा सुर भंगसु बतरात ।।
बरनत गुन श्रीकृष्ण के बिहँसत पुलकत गात ।
तनमय प्रेमा नन्द मनु रोम रोम उफनात ।।
हृदय स्याम घन उनय कै दगन होत झरनीर ।
थकित पथक अधरन अखिर रुकि २ कढ़त अधीर ।।
परमा नंदित बिविध यों रसना सुमरन नित्त ।
रहत निरन्तर सर्बदा ह्वै आसिक्तजु चित्त ।।

।। पंचम भक्ति ।।

अब नेत्रन कै लाभविध पंचम कहौं बखान ।
दरसन श्री प्रभु मूर्त को करही रसिक सुजान ।।
प्रभु प्रतमा दरसन करत दग इन्द्रीजु लुभाहि ।
हृदय नेत्र सामिल तहां निज मूरत दरसाहि ।।
समय भाव चित लीन ह्वै मानत लोचन लाह ।
दरसत चंद चकोर कै ज्यों नासत दग दाह ।।
सिखते नख नखते सिखहि अति छबिहेर निहार ।
अंग २ चख चिहुटते लहत न चलन सँभार ।।
ज्यों लोभी निध पायकै लखत सिहाय सिहाय ।
त्यों प्रभु दरसन करत जन लोचन नाहि अघाय ।।
रूपधार घनस्याम की छबि तरंग की झोक ।
प्रेम प्यास कैसे मिटै नैनन नान्ही ओक ।।
मदरा मोहन माधुरी पान चसक दग पाक ।
समय सोभ सिंगार पुनि चढ़ै छाक पै छाक ।।
मुकट लटक दग गति अटक लटकन झुलन झुकाय ।
फहर चंद्रका लगि लहक अलक ललक लपटाय ।।
चलन चलानी भृकुटि कै तिलक पंथ लहि थाक ।

दृग चितवन बिलवन कहर कहनन आवकवाक ॥
इस्क मुस्क बँधि सस्कही चस्मचोट चितचूर ।
चस्क दरद बेहद्दकै छुटयो न चाहै मूर ॥
नासा वेसर बस परै छुट्ट सकत नहिं डोल ।
झूलन मुक्ता अधरकै बिन दामन लियमोल ॥
बिद्रुम रेखा से अधर मुसिकन मोहनि मंत्र ।
झलक रदन दुति बिच परै दृगसु चकाव्यूजंत्र ॥
चिबुक कसौटी चखन लग कंचन प्रीत परक्षि ।
गाहक चाहक लाह हरि लेन प्रेम निधलक्षि ॥
श्रवनन कुंडल मणि बिमल मंडल गंड सलोल ।
करत मीन दृग लीन तिह छबि निध लहर कलोल ॥
कौस्तभिमणि धुक्क किय अरु मुक्त माल की जोर ।
गरतें उरलौं लखत छबि होत भरे के चोर ॥
दल तुरसी अरु सुमन मिल लहलही जु बनमाल ।
तिह छबि दाम तुरंग दृग सँगमन बिके दलाल ॥
भुज भूषन भुज बंध लसि जुग भुजान जुग और ।
मनहु खंभ झूलन दृगन प्रेम डोर झकझोर ॥
पहुँचन पहुँची बलय पुनि द्वै द्वै लर मुक्तान ।
अंगुरिन पाति अंगूठि मनु मदन सिगारे बान ॥
कटि छबि केहर कदन कै छुद्रावलि मजिमुक्त ।
मनु रचना मंदर मदन बंदन माला जुक्त ॥
गुर नितंबलौं लखि छुटे स्याम सचित झनकेस ।
लट नागनि लहरै लहन दृग गति चेतनलेस ॥
रंभ कंभ जंघान अरु चंपकली पिंडुरीन ।
उपमा कहत न बनत है जिहि छबि द्रग आधीन ॥
द्वै द्वै लर मोतीन की नूपुर मीना कार ।
पद पंकज मकरंद छबि चढ़ि अलि द्रग मतवार ॥
नीलंदी बर बरन पद नख गुलाब दल रंग ।
अद्भुत क्रांतित जगमगै चकृत द्रग गति पंग ॥
तिनपै मधि बनमाल कै झूलत अम्बुज अर्नु ।
लोचन लाह सु लेत तिह रसना सकत न बर्नु ॥

मोती लर धोती गिरद पिंडुरिन लपटी वेर ।
ललच पिलच द्रग गति तहां पलटि सकत नहिं फेर ॥
मोतिन के फुदवा लसैं पटुरी बन्धन छोर ।
झूलत डुलत जघानपै द्रग बांधत वह डोर ॥
नाभी तै सुंदर उदर रोमावलि छबि देत ।
नागनि द्रग गति डसतसी लसत सुमन हर लेत ॥
मुक्तमाल बिच हृदय पै गुंज दाम छबि भीर ।
फसि द्रग गति खसिसक नहीं खवाखसी तिहचीर ॥
दुरन मुरन ग्रीवा खयन भुज उभरन छबि अंग ।
कर पल्लव नचि वैंन पै बांधत द्रगन त्रभंग ॥
पीतांबर ढरकन खये फहरन छूटे छोर ।
पवन परस छबि सरसही दृग चढ़ि लहर हिलोर ॥
बन्सीरंध्र न अधर लगि फोंकन असह अदाह ।
जिह छबि द्रग आवर्त गति पावत नाहिन थाह ॥
हृदय भाव भीनी ललित चितवनि चाल निहार ।
द्रगनन द्रगनन अतिचढ़ै अन उतरन मतवार ॥
कवल कर्नका कर्न इक रही अलक पै आय ।
लंपुट तिह संपुट परै अलिद्रग रसिक लुभाय ॥
अद्भुत सोभा मुकुट कै सुमनन छौगा झूल ।
मनहु सिखर सिंगार लसि फहरन ध्वजा दुकूल ॥
ऐसे सिखतें नखहिलौं नखतें सिखहि सँभार ।
तन मन के सामल द्रगन दरसन करन बिचार ॥
समय समय के भावसों बिबध सिंगार अपार ।
परम मनोहर माधुरी लखत रसिक रिझवार ॥
लखि २ रीझन पुनि लखन नाहिन हृदय अघाहि ।
पूरण प्रीति प्रतीति सौं प्रेम भक्त यह पाहि ॥
ध्यान धारना धरत यों निर अन्तर ह्वै जाहि ।
तब तिनकों यह प्राप्तता कछूजु दुर्लभ नाहि ॥

॥ अथ षष्टम भक्त ॥

अब षष्टम भक्ति यह नासा इन्द्रिय रीति ।
जिन मन गतिलय रहत हैं श्रीहरि ही कै प्रीति ॥

तुलसी दल पहुपन रचित भूषन प्रभुहि चढ़ाय।
पुनि उत्तीरन लहत जब लेत हृदय द्रगलाय ।।
तिह सूँघत हेरत सचित संपुट अंग सुबास ।
उमँग मुदित मन तन पुलिक ह्वै उर ध्यान निवास ।।
प्रभु प्रसादी बस्त्र कों सूँघ प्रेम उलहंत।
मरम जि छबि अरगज महक भावसु भरत अनंत ।।
गंजन कंजन गंध प्रभु सहज सुवासित अंग।
तातें सूँघत सोध वहि पंकज अतिहित बंक ।।
बनन बगीचे तें कबहु सुमनन मलय सुगंध ।
सीतल मधुर बयार लै आवत जब मकरंध ।।
तब निसा यहि गंध लहि हरिसुध आवत चित्त ।
मलय अंग बन माल मिल श्रमत महिक मनु नित्त ।।
अति मन हरन सुगंध कहु जबै नासिका पाय ।
तिह प्रभु अंग समर्पही प्रीत भावना भाय ।।
गंध ज्ञान मन हरन जो कछुय बस्तु लहिपाहि ।
भोजन भूषन लेप औ बिबध भोग के मांहि ।।
कोउ स्वाधीन सु प्राप्त अरु पराधीन ह्वै कोय।
प्रभुहि जोग्य जो चित चहत तिह अर्पन बिध दोय ।।
इक निज करन समर्पना बिध बिबेक रति जुक्ति ।
वस्त पराश्रय अरपही प्रेम भावना उक्त ।।

।। सप्तम भक्ति ।।

सप्तम बिध तें भक्त यह करई प्रीत करंत ।
दृढ़ दास्युत तें प्रभु अटल साधत बिवध रहंत।
लघु दीरघता नहिं गनै जहां तहां प्रभु काज।
निंद्या अस्तुत करन की जगते धरै न लाज ।।
नित कृत निज करिसुद्ध ह्वै जपिही मंत्र सचित्त।
बिनय कृपा कर जोर कै बन्दै गुरु पद नित्त ।।
बहुरि करन प्रभु टहल कों मंदर झार बुहार।
पुनि धोवै जल आनि कै दास्युत उमग अपार ।।
पात्रन मंजन करि करै तिलक सुपार्खदजान।
करवावै तुलसी दलन चंदन सलिल सनान।।
भ्राजन प्रभु हित प्रीत सों सज्या सुभग बिछाय।
प्रात जगावै प्रेम सों मधुर मधुर सुर गाय।।
दातुन मंजन भोग बिध भूषन बसन सिगार ।
करि सेबा सु बिधान सों दास्युत प्रेम प्रकार ।।
तुलसी दल चंदन सुमन प्रभु कै अंग चढ़ाय।
धूप दीप करि आरती गावैं तार बजाय ।।
जो कछु प्राप्त ह्वै निजहि ब्यंजन सुपै बनाय।
फल मिष्टानादिक रुचित प्रभु कों भोग लगाय ।।
सीतल सलिल सुगंध कै अचवन प्रभुहि कराहि।
बीरी रचि मुख बास जुत अर्पे रुचि कोचाहि ।।
समय २ बिधबिध टहल निजकर करत रहंत।
कछु सामिग्री प्राप्त तें कछू भावना तंत ।।
और अनेकन भांत तै प्रभु की टहल चहंत।
जहां तहां जो प्राप्त ह्वै निजकर करत रहंत ।।
वैष्णव जन की टहल अरु प्रभू टहल दुहुँ माहि।
भिन्न भेद मानै न चित करि २ भाग्य सिहाहि ।।
कर इन्द्री प्रभु अर्थ यों रहत लगावत नित्त ।
पद इंद्रिन बिध अष्टमी सुनहु भक्त हित चित्त ।।

।। अथ अष्टम भक्ति ।।

श्री हरि मंदर होहि जहँ तहां सुदरसन हेत।
परम प्रीतसों जाहि चलि लाह चरन को लेत ।।
समय सोभ सिंगार ह्वै प्रभु दर्शन मन हर्न।
तहां जाहि चलि प्रेम सों लेन लाह यह चर्न ।।
जे तीरथ सुभ छेत्र हैं तहां जाहि हित वंत ।
कहुँ सनान दर्शन कहूं करत फिरत बिचरंत।।
कहुँ वैष्णवन समाज कहूँ प्रभू कथा संवाद।
महा पुरुष एकंत कहुँ कहूँ भक्ति सुख स्वाद ।।
जहां जहां विचरत तहां अवनी करत पवित्र ।
जिन हिय भक्ति निवास जे श्रीहरि के प्रिय मित्र ।।
बृज बृंदाबन हैं प्रगट श्रीहरि को निज धाम ।
तहां निरंतर बसत नित कृष्ण कुंवर घनश्याम ।।

रमण सथल जिनके बिबध जहां प्रेम छक राज।
तहां तहां बिचरत फिरत लेन जन्म फल काज ॥
रमण स्थल निरखत सुलै रमण जुगल वहि ध्यान।
तन मन प्रेमा वेस कै अर्पहि भाव प्रमान ॥
नन्दी सुर बरसान अरु बन्सीवट संकेत।
गोबर्द्धन जमुना पुलिन कुंज निकुंज निकेत ॥
श्रीराधा संयुत जहां कृष्ण चन्द्र बिहरंत।
नित नउत्तम लीला ललित ठाँठाँ बिबध अनंत ॥
प्रेमा नन्दत मगन गति तहां फिरै धरि ध्यान।
मनुष जन्म के चरण तें पावैं लाह सुजान ॥

॥ नवम भक्ति ॥

अब नवमी बिध भक्ति जो मिश्रत सबही अंग।
दसुधा दसा प्रवेस कौं लगवग पहुँचन बंग॥
माया तन मिश्रत दशा नेह रूप ह्वै देह।
नवधा गुन एकत्र पुट राचे रंग अछेह ॥
वैष्णव जन की चरन रज अरु बृंदाबन धूर।
तामहि लोटैं प्रेम छक नाहि आन सुधमूर ॥
हरि हरि भक्तन की टहल कछु प्राप्त ह्वै आय।
तौ तन मन धन अर्थ तिह लावत नाहि अघाय ॥
हरि हरि वैष्णव जनन कों प्रश्न करन के काज।
निर्त करै गावै उमग रहै न जग की लाज ॥
करही हरि गुर वैश्न जब जन पर कृपा उमंग।
नवछाउर तन मन सुनिज हौं न भावना बंग ॥
तन मन कर कारज करत सो प्रभुही के हेत।
परम प्रीत आसिक्तता गति मति क्रिया समेत ॥
हरि २ वैश्नव जनन में मानत अन्तर नाहि।
सेवा सुमिरन करत नित दृढ़ दास्युत चित माहि ॥
चरनां मृत रु प्रसाद लहि मानत भाग्य सुधन्य।
हरि २ वैश्नव जनन की भाव सु भक्ति अनन्य ॥

॥ अथ दसुधा दशा प्रबेश ॥

कृष्णनाम किहु लेत सुनि लहैत रसासब पानि।
मन मतवारे वान वहि करत प्रान खुरवान ॥
रसना रस रंजित लसें मोहन कहि बतराय।
मूरत मदरा छकन चढ़ि प्रगट दृगन दरसात ॥
प्रेमानन्द अनंन्यिता लगन लगन गति पूर।
बही वही भावत सुमन आनन चाह जु मूर ॥
गहै मौन छिपत न छिलन बहै प्रेम की लाग।
दबहि न दाबी ज्यों अदब रुई लपेटी आग ॥
मन की मन ही छुटन जो कही कहा कछु जाय।
अति बीतन जीतन सुधहि कसिक सिसक उरराय ॥
कसत कढ़ै मुख तें मधुर भिदे भाव ते बैन।
प्रगट प्रेम निध चोर ह्वै तब मतवारे नैन ॥
नैन बैन अँग अंग जिन बिवस आन गति नित्य।
अन उतरन मतवार के चढ़ि छक छाजै चित्त ॥
प्रेमासव मतवार ह्वै पूरन दशा प्रबेश।
भाव सिद्ध प्राप्त सहज अन्तर रहत न लेस ॥
सो गत है दसुधा बहै महा भाग्य वर पाहि।
पूर्न प्रेम लच्छिना परै करनी कारज नाहि ॥
निगम अगम भाषत यहै परम गूढ़ मत तंत्र।
बसीकरन श्रीकृष्ण को भेव मनोहर मंत्र ॥
प्रेम लच्छिना है वही दसुधा बिवध प्रकार।
तिह हौं कहि जानौ कहा सुन्यों सुबर्न्यो सार ॥
मजनों लैली इस्कसों गति मति भयो बिदेह।
तन मन प्रेमा वेश त्यों ह्वै बिच कृष्ण सनेह ॥
कहरी कारे जहर ज्यों प्रेमासब मतवार।
लहरै तन मन चढ़ि लहत परमानन्द अपार ॥
अति राचै पाचै लखौ अचरज कहि यहि बंग।
बीरे रैसी प्रेम के भीने श्याम सुरंग ॥

॥ इति श्री सार संग्रह विश्राम ॥

प्रेम लच्छिना भेव है भाव सिद्ध गति लीन।
जग प्रबंध बिश्रत दशा आशय लय जु प्रबीन ॥
आगम बिबध प्रकार ह्वै इष्ट तथा चितलाग।

सिवरीष्टारो प्रभुहि ज्यों जूंठे फल बड़भाग ।।
इक आशय यह द्वितिय पुनि भाव सुबाछिल बीच ।
पनही पहरै सिद्ध करि करमां ख्वायो खीच ।।
इक बिध तुलसी दास जू लखि गोबर्द्धन नाथ ।
हठि कीनो तब गिरधर जू धनुष बान लिय हाथ ।।
इक आशय बिधतैं लखौ अद्भुत बात अथाह ।
नरसी की हुँडी लई ह्वै कै सावल साह ।।
नाम देव रैदास जू पीपा धना रु सैन ।
गोबिंद ग्वाल कबीर अरु मीरा यहि मत ऐन ।।
राँका वाँका आदि जे प्रेमी हरि आसिक्त ।
वसुधा प्रापत जो जिनहि सिद्ध भावना विक्त ।।
विक्त भावना इक जु यह प्रेम लच्छिना पूर ।
तातें अति आतुर प्रभू अन्तर रहत न मूर ।।
गूढ़ भेव श्रीकृष्ण कों जो बृज नित्त बिहार ।
श्रीराधा संगम बिबध बृन्दावन सुखसार ।।
जिह रस रसिक अनन्य ह्वै प्रेम लच्छिना वंत ।
दरस परस जिनको जहां अति आतुरता तंत ।।
बृज रस लोभीहू बिवध ज्यों मणि बिध २ भांति ।
नील पीत सित हरित रत जगै मनोहर कांत ।।
तिन मणिलोभी रस कहै नागर नन्द कुमार ।
रीझ रीझ धारै हृदय सोभा जथा सिंगार ।।
जोग यज्ञ तपदान बृत संजम नियम अपार ।
कोट क्रतुन नहि लहत पै बृन्दाबन रस सार ।।
निगम अगम कहि सो सुगम प्रेम लच्छिना लाह ।
जिह रस लंपट मधुप है संपुट कृष्ण सदाह ।।
नासवंत त्रियलोक है ज्यों बृन्दाबन नाहि ।
बृन्दाबन अद्भुत महा कापै बर्न्यो जाहि ।।
बृन्दाबन रज परस कों तरसत सुरगन चित्त ।
कृष्ण प्राण बललभ यहै बिपुन अलौकिक नित्त ।।
प्रभु अवतार बिहार ह्वै अवनी सपरसपात ।
तहां छेत्र तैं यह जु क्यों बिपुन अलौकिक बात ।।

नारद जू सों सउनकन पूछ्यो यह संदेह ।
उत्तर आद पुरान मै दिय सुनि सु पै अछेह ।।
अंस कला अवतार सब अवतारी नँदनंद ।
पर्मातम सरवग्य जे कृष्ण चन्द्र बृजचन्द ।।
जिन परमातम प्रगट श्री राधाजू तिह ठाम ।
नित्त निरंतर रमण उन बृन्दाबन निज धाम ।।
जिन चरनन के चिन्ह करि मंडित नित वह भूम ।
तातें श्री कृष्णहि हृदै परम प्रेम की धूम ।।
नन्दीसुर नृप नन्द सुत कृष्ण कुवँर घनश्याम ।
मदन कदन मूरत सु बृज मन मोहन कहि नाम ।।
एक कोटि जिनके सखा इकसो सुख नितसंग ।
गोधन बिपुन चरावही बिलसत प्रेम उमंग ।।
गोप भेष पट पीत लसि लकुट मुकुट बनमाल ।
मुरली रहसि बजाय कै मोहित किय ब्रजबाल ।।
इत बरसाने के नृपत राजत श्री वृषभान ।
जिन सुभ गुन निध पुत्रिका राधा प्रान समान ।।
गवरंगी पंकज नयन अद्भुत रूप अपार ।
नखसिख छबि लावन्य पै कोट करति नविछार ।।
छबि पावत भूषन महा अंग] अग कै संग ।
नीलांवरि धार सुदुति कोट सुधा धर पंग ।।
जा प्रभु को त्रियलोक सब जपत नाम करि ज्ञान ।
मत्त मोर चन्दावली मतहु धजा सिंगार ।
कवल कली फेरत करहि श्रीकृष्णहि बसिकार ।।
तीन कोटि जूथेसुरी सहचरि परम प्रबीन ।
सेवत राधा स्वामिनी प्रेम सहित हितलीन ।।
अष्ट सखी जिन मुख्य है श्रीराधा के संग ।
प्रिया प्रेम आसक्ति गति साधत टहल उमंग ।।
श्रीराधा सर्बेसुरी जिन श्रीकृष्ण अधीन ।
अति आसक्ति सुप्रेम छकि गति मति अर्प प्रबीन ।।
ज्यों श्रीकृष्ण त्रलोक के ब्यापक आतम अनूप ।
त्यों श्रीकृष्णातम प्रगट श्री राधा सद्रूप ।।

जा प्रभु को त्रियलोक सब जपत नाम करि ज्ञान ।
सो राखत श्रीकृष्ण श्री राधा सुमरन ध्यान ।
जिन प्रभु चर्नन नवत हैं नर सुरलोकन ईस ।।
सो श्रीराधा चरन कों कृष्ण नवावत शीश ।
जिन चर्नन मधि चिन्ह के लच्छिन कहों जु बर्न ।।
परम अलोकिक भेव है कृष्ण चन्द्र मनहर्न ।
जिनपद नख मणि कांति को रूप गोपिका बृन्द ।
नित बिहार में नित्त जे बिलसत प्रेमा नन्द ।
श्रीराधा के चरन इक है लघु रेखालीन ।।
मूर्तवन्त कवला बहै सेवत प्रेमाधीन ।।
अंकित नवका कों जु है करन सिंध भवपार ।
जो इन चरनन सरन ह्वै गहि अनन्यता धार ।।
तापै आड़ी लीक इक तिह सु अर्थ इक गौहि ।
ऐसी त्रिया त्रिलोक मैं भई न है नहिं होहि ।।
आद जु देवी है यही और सु याकी सक्त ।
सेवत श्रीराधा चरन महा भाग्य अनुरक्त ।।
नबका पै लीकजु अवर सो रबिकिरन स्वरूप ।
सेवत चरन सरोज कों मानत भाग्य अनूप ।।
जंबू फल जु अंगुष्ठ बिच ताको सुनहु प्रताप ।
ईश्वर जंबूदीप के बद्रीनाथ सु आप ।।
अरु नवका तर चन्द्रमा दुरच्योजु बिनती कर्न ।
सुमरन तारन तरन कों यहि जु नाव कै सर्न ।।
मच्छि चिन्ह यह कृष्ण द्रग ह्वै इक रूप प्रबीन ।
छबि सागर चरनन बिषैं सुधासीर सुखलीन ।।
जापै अमृत कलश है पात्र कृष्ण अनुराग ।
जापर गोखुर चिन्ह सो काम धेन बड़भाग ।।
तहां कलप तरु चिन्ह है बंछित फल सब देन ।
तिहि ढिग जब पकरन यह पति आधीन सुलेन ।।
अर्ध चन्द्र तिहि ढिग लसै कहिये कहा जु बर्न ।
बंदनीय त्रियलोक जे कृष्ण लगावन चर्न ।।
बहुरि ऊर्द्ध रेखा लसै जीतन सब त्रिलोक ।।

गति मति रतिश्रीकृष्ण की निज बसि कारकिरोकि ।
ताढिग चिन्ह सु है ध्वजा जयजस बानैरीत ।।
सब सुभगन निध नागरी कृष्णहि लीने जीत ।।
अंकुश अंकित है तहां सुनिये ताको हेत ।
मदमत गज श्रीकृष्ण मन कितहु न जानन देत ।।
एड़ी बिच है साथिया तिह लच्छिन सु प्रकार ।
अति मंगल आनन्द नित बर्तमान सुखसार ।।
तिहज साथिया मधि लसै चार बिंदु छबिलीन ।
चार पदारथ करत है सेवा चर्न अधीन ।।
दुतिय चर्न येंड़ी बिषै सात सिंधु की रेख ।
जिन संगम तीरथ सबै मानत भाग्य बिसेष ।।
अंगुलि पंजक चिन्ह है जिह गुन यहै सुबास ।
रस लंपुट संपुट रहै कृष्ण भ्रमर मन जास ।।
अंकित सिंदुन कों लसै तिह गुन सुनहु सुजान ।
इन चरनन जे सरन हैं तिन ततहित सुबिमान ।।
जाकें ढिग सोभित तहां कलप लता छबिरेल ।
कृष्णचन्द्र मन ईछि की पुरन आनन्द बेल ।।
अरु पर्बत कों चिन्ह है सो गिरिराज सुजान ।
श्रीराधा चरनन बसत कृष्ण प्रीत सरसान ।।
सहज अरुनता चरन तल राच्यो कृष्ण सनेह ।
तिह सोभा पद पंकजन बर्नै कौन अछेह ।।
श्रीराधा चरनन बिषै बेद सु नूपुर रूप ।
रिचा जंग ह्वै करत हैं अद्भुत शब्द अनूप ।।
नित्त समय संगीत कों उचरत जे मनहर्न ।
ठमक चलत चरनन बिषै कृष्ण अधीन सुकर्न ।।
सेवत श्रीराधा चरन बेद सु रिचान जुक्ति ।
धन्य धन्य निज भाग्य लहि परम प्रेम अनुरुक्त ।।
ऐसे राधा चरन मै प्रेमा बेसित चित्त ।
लागत है श्रीकृष्ण प्रभु लायलाय द्रग नित्त ।।
श्रीराधा चरनन बिषै मुकुट लुकट जुत प्रेम ।
गति मति अति आधीनता है कृष्णहि नित नेम ।।

ऐसी श्रीराधा सु जिन रमण जु वृन्दारन्य ।
चरण चिन्ह मंडित अवनि लहिही भक्त अनन्य ।।
यह रज अति प्रिय प्रान लहि हृदय लगावत कृष्ण ।
मन ईच्छा फल लेत है सब सुख मानस प्रष्ण ।।
जे अनन्य अति प्रेम गति श्रीराधा कैं सर्न ।
जिन दरसै वहि भूमरज चरन चिन्ह मनहर्न ।।
यह दरसन पावत जु ते तिनकी बात अनन्त ।
नित्त निकट वर्त्ती सु जिन राखत राधा कंत ।।
यातें जे नास्तीक मति अति पातिक गति पाहि ।
भक्ति भक्त भगवंत गुरु इन जिन कृपा जु नाहि ।।
ऐसे बृन्दा बिपुन कों ऐसो अद्भुत भेव ।
प्रापत्ति दसुधा तें यहै जिह तिह तरसत देव ।।
श्री बृन्दाबन कों सुनौ इक रहस्य मय भेव ।
जो नारद जू सों कह्यो बिष्णु देव मणि देव ।।
एक समय श्रीनारदजू बिध निज पिता सुजान ।
दरसन को आवत भये सत्य लोक हितठान ।।
जिह समि यै है करत तहाँ बिध प्रभु सुमरन ध्यान ।
मौन गहै मूदे द्रगन लगि समाध सरसान ।।
तहां नारदजू लखि पिता ध्यान धारना लीन ।
भर संभ्रम ठाढ़े रहे कर जोरे आधीन ।।
कितिक बेर ऐसे बिती पुनि समाप्त करि ध्यान ।
किय बिरंच कर जोरि तब प्रणित दीनता ठान ।।
पुनि समाध ते उठत बिध किय नारद सनमान ।
करि बंधन मुनि जोरि कर बोले संभ्रम वान ।।

।। नारद उवाच ।।

अहो पिता त्रयलोक के सर्बोपर हो आप ।
सब रचना है रावरी पूरन प्रगट प्रताप ।।
तुम तें श्रेष्ठ न आन हैं यह जानत हम भेव ।
पैं भ्रम हुव कोऊ जहै ईसु तिहारहु देव ।।
तुम तिह सुमरनध्यान करि किय बन्धन करिजोरि ।
भेव बखानहु करि कृपा यह भ्रम टारन मोर ।।

।। कबि वचन ।।

नारद जू के बचन यों बिध सुनि ह्वै अतिप्रश्न ।
परम श्रेष्ठ आतुर लहे मुनिवर को यहि प्रश्न ।।

।। ब्रह्मा उवाच ।।

अहो पुत्र तुम श्रेष्ठ मति नीको किय संदेह ।
सर्बेसुर भगवान है करता पुरुष अछेह ।।
मोजुत सबै त्रिलोक है जिन प्रभु कै आधीन ।
कोटिन अस वृहमंड जिह इक कच खंडहि लीन ।।
जिन निज नाभी कवल तें मुहि उपजाय अनन्त ।
तिनही इच्छा सक्त किय यह त्रलोक उतपंत ।।
ते सर्बेसुर हैं प्रभू जिन को सुमरन ध्यान ।
करत रहत जे प्रीति सों पावत मुक्त स्थान ।।
जिन आश्रयता तें करत मर्त मनोहर ध्यान ।
सुमरन उनही नामकर चहत कृपा सरसान ।।

।। नारद उवाच ।।

कहत भये नारद तबै अहो पिता प्रभु नाम ।
मूरत वहै मनोहरा अरु बसवे को ठाम ।।
मोको भले बताहु अब अरु जो आज्ञा पाहु ।
श्री सर्बेसुर जे प्रभू तिन दरसन को जाहु ।।

।। ब्रह्मा उवाच ।।

अहो नारद भगवान के नाम स्वरूप अनन्त ।
पै दरसन तुम चहत हौ तातें सुनिए संत ।।
बिष्णु नाम भगबान है जिन बैकुण्ठं सथान ।
सुन्दर श्याम चतुर भुज मूर्त मनोहर जान ।।
मो आज्ञा है जाहु तुम दरसन ह्वै है बिष्णु ।
सर्बेसुर प्रभु सोंहिगे सबै तिहारी त्रष्ण ।।

।। कबि बचन ।।

ऐसे सुनि कैं नार्द जू करिकैं पितुहि प्रनाम ।
दरसन हित श्रीबिष्णु के गवन कियो निहकाम ।।
बयकुंठ सु आय जु लखे संध्या साधत बिश्नु ।

दरसन कर प्रश्न सु भये ह्वै संदेह सु तृश्न ।। मनही मन सोचत खरे थकित भये गहि मौन ।
बिध सर्बेसुर एक हैं इन ते ईश्वर कौन ।। करि समाप्त संध्या प्रभु बन्दन किय कर जोर ।
ध्यान लीन सुद्रत्त द्रगन प्रेमाबेश निहोर ।। पुनि उठि कै प्रभु नार्द को आदर करे बिशेस ।
लख मुनि चक्रत भ्रम मई बोले बचन सुदेस ।।

।। श्रीबिष्णु उबाच ।।

नारद तुम आये यहां मो मनोरथ हुव पूर ।
दरसन पायो रावरो है यह आनन्द मूर ।। है वैष्णव जन की कृपा नित बांच्छित जु रहंत ।
दरस परस जब लहत तब सुख मुख कहि न बनंत ।। वैष्णव जन पद रज परस ह्वै बैकुण्ठ पबित्र ।
रोम २ मो पुलक हो मिलत प्रान से मित्र ।। वैष्णव मोहित वान हैं हौं वैष्णव हितवान ।
वैष्णव जन कै प्रान हौं मेरे वैष्णव प्रान ।। मुनि बर आये तुम यहां मो दरसन हित चाहि ।
चकित थकित पै ह्वै रहे ऐसे भ्रमभरि काहि ।। कछु अचरज देख्यो कहा तातें हे गति येह ।
कहिये अन्तर भेव अब जो चित को संदेह ।।

।। नारद उबाच ।।

बोले नार्द सँभार चित हे प्रभु तुम जगदीस ।
परमानन्द प्रापत भयो तुमहि नवावत सीस ।। प्रभु अन्तर गति लहन तुम कहो कहा संदेह ।
पै आज्ञा किय कहन सो है भ्रम सुनहु अछेह ।। हे प्रभु हौं लोकन बिषै बिचरत इच्छा धार ।
बिधि दरसन हित आय कै संभ्रम भरयो अपार ।। जानत हौं जु त्रिलोक के करताई सुचिहंच ।
तिन समाध बन्दन करत लखित चक्यो भ्रमसंच ।। जब समाधि तजि बिध उठे तब मैं पूछयो भेव ।
जग कर्ता सर्बेश हौ तुम ईसुर को देव ।। जब बिध दये बताय तुम सर्बेसुर करतार ।
तब दरसन हित रावरे आयो इच्छा धार ।। संध्या बन्दन करत अब लखे तुमहु जगदीस ।
सो यह भ्रम संदेह है प्रभु तुम तें को ईस ।। तिह प्रभु तुम बन्दन करत करि करि सुमरन ध्यान ।
कृपा करहु मो दीन पै कहिये भेव बखान ।।

।। कवि वचन ।।

यह सुनिकै श्री बिष्णु प्रभु परस प्रश्न कै चित्त ।
कहत भये मुनि नार्द सो सुनिये बल्लभ मित्त ।।

।। बिष्णु उवाच ।।

हे मुनि तुम हो श्रेष्ठ मो पारषदन के मांहि ।
मम अन्तर गति राखिहो तुम मैं अन्तर नाहि ।। श्री वृन्दाबन भुव जहां बसत निरंतर प्रश्न ।
अति अनन्त गति रमण जिन जे नँद नन्दन कृष्ण ।। नारायण तें प्रगट हौ मो तें सब अवतार ।
उन नख चन्द्र सुकांत के अन्स कला निर्धार ।। सर्बोपर सर्बेश वे परमातम सब आद ।
जिनके नित्त बिहार की कथा गोपि अंनाद ।। परमातमा त्रिलोक के जे श्री कृष्ण कुँवार ।
जिनकी परमातम प्रगट श्रीराधा निर्धार ।। जिन श्रीराधा जुक्त वे कृष्ण चन्द्र नँदनन्द ।
संग राधिका चरन नख क्रांत गोपिका वृन्द । बरसाने वृषभान नृप सुता राधिका तास ।
नन्दीसुर नँदराय कै कृष्ण पुत्र सुखरास ।। श्री राधा श्री कृष्ण के प्रिया प्रान आधार ।
जिन संगम आसिक्त नित उत्तम परम बिहार ।। नन्दीसुर बरसान गिर गोबर्द्धन संकेत ।
वन उपबन जमुना पुलिन बेद कहत जिहनेत ।। मधि नायक वृंदा बिपुन कुंज निकुंजन सोहि ।
परम प्रेम आसिक्त करि श्रीकृष्णहि लिय मोहि ।। यह श्रीवृज वृंदा बिपुन प्रेम लच्छिना राज ।

प्रेमावेश निहार नित दंपति सकल समाज ॥
चरनांकित मंडित सुभुव जिह रज सुमरन ध्यान ।
करि करि नित ध्यावत यहै मम प्रानन के प्रान ॥

॥ कबि वचन ॥

यहै भेव सुनि बिष्णु मुख नारद परम प्रबीन ।
करि करि बहुत प्रनाम पुनि बिन वत भयेअधीन ॥

॥ नारद उवाच ॥

हे प्रभु दीन अधीन लखि दासि आपुनो मोहि ।
करि अनुग्र यह कहहु मुहि दरसन कैसे हौहि ॥

॥ श्री बिष्णु उवाच ॥

बोले बिष्णु दयाल तब है नारद तू संत ।
प्रेम लच्छिना प्राप्त तुहि ह्वै मम कृपा अनन्त ॥
श्वेत दीप अनुरध प्रभू जिन दरसहि तुहि होहि ।
नित बिहार तब प्राप्त ह्वै उन आज्ञा तें तोहि ॥

॥ कबि वचन ॥

ऐसे सुनि श्रीकृष्ण के बचन नार्द ह्वै प्रश्न ।
करि परक्रम बन्दन गये गावत गुन श्रीकृष्ण ॥
ऐसी श्री राधा सु जिन ऐसो वृंदारन्य ।
सो प्रापत लहियत लहै प्रेमा भक्त अनन्य ॥
प्रेम लच्छिना भक्त को यह फल प्रापत जान ।
गूढ़ भेव श्रीकृष्ण को जो है प्रान समान ॥

॥ इति श्री बिश्राम ॥

प्रेम लच्छिना भक्ति यह जिनके हृदय न होय ।
ते मुक्तहु इक रूप ह्वै यह सुख नहि बिध कोय ॥
मन २ मिलवत कृष्ण के प्रेम लच्छिना पूर ।
हौहि बसीकृत प्रभु महा अंतर रहै न मूर ॥
जो कहिये प्रभु मिलहि तब मन अन्तर क्यों मान ।
ताहू को यह भेव है सुनिये कहो बखान ॥
नित वृंदाबन रहसि रस गूढ़ भेव जो कोय ।
तिह आश्रय बिन कृष्ण तें इक मन कैसे होय ॥
तिह दिष्टांत सु कहत हौं सुनिये रसिक सुजान ।
ज्यों लीला अवतार के मथुरा बिच भगवान ॥
नित्त निकट वर्त्ती सखा उद्धव जु पूर्त ।
पैये रसिक अनन्य यह ज्ञान अनंनित मूर्त ॥
तातें मन रंजन बिषै भेव भिन्नता मान ।
चाह्यो गोष्ठी पात्र तिहि संगम कृष्ण सुजान ॥
मुक्ति पात्र उद्धव महा परम तत्व पहचान ।
बर्तमान प्रापति सुतिह संगम कृष्ण निदान ॥
इच्छा फल दाता प्रभु मुक्ति सुच्यार अनूप ।
इक सालोक रु धवहि अरु पारषदन सारूप ॥
पुनि साजोग अघासुरहि ज्यों लिय जोत मिलाय ।
अरु उद्धव सामीप कों लहै प्रगट सुखदाय ॥
ज्ञान मूर्त पारंगता सखा निरंतर संग ।
तातें मन रंजन सु नित चाहत गोष्ठी वंग ॥
तातें वृज गोपीन कों देन ज्ञान उपदेश ।
उद्धव कों चातुर्ज करि पठयो मिस संदेश ॥
जब यह लीला प्रगट कों भये कृष्ण अवतार ।
तब वृज जनहू जानिये प्रगटे तीन प्रकार ॥
प्रगटे बिवहारीक अरु देवासी जु नबीन ।
त्रतिय जु नित्त बिहार के साथी किते प्रबीन ॥
नित बिहार साथी सुजिन निर अंतर जु बिहार ।
बिवहारी देवास जिन लीला प्रगट प्रचार ॥
तिनहि ज्ञान उपदेश हित उद्धव वृज को आय ।
किय चरचा संबाद अति षट मासन सुख छाय ॥
प्रेम रंग रैनी सु वृज उद्धव रचे सुजान ।
नेह चिगट चिक्नाय अति गई सुखाई ज्ञान ॥
वृज तजि अति कठिनायतें आये उलट बहोर ।
लखि श्रीकृष्णहि कहत तब है मोहन चित चोर ॥
गये हते वृज नाहि जब कहते प्रभू अनंत ।
ऐसे किय मन मेल निज कृष्ण जु उद्धव संत ॥
इक समिये श्रीकृष्ण सों उद्धव बिनती कीन ।
अहो प्रभू हौं रावरे आश्रय दास जु दीन ॥

यं हौं भयो कृतार्थ नहिं करहु कृपा अपनाय ।
यह सुनिकै श्रीकृष्ण हँसि कहत भये सुखदाय ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

हे उद्धव तुम मो सखा धरत संग गरबांहि ।
यातें अधिक सु है कहा कहत कृतारथ नाहि ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

हे प्रभु हौंन कृतार्थ हौं लहूँ भेव निर्धार ।
पूरन कृपा जु कीजिये अब निज दास्य बिचार ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

हे उद्धव मेरी कृपा किह बिध पूरन मान ।
होन कृतारथ चहत है सो कह भेद बखान ॥

॥ उद्धव उवाच ॥

यह तुमही करि कै कृपा अहो कवल दल नैन ।
ज्ञान देन बृज रावरे पठयो दिच्छा लेन ॥
तातें श्री बृज के कृपा भेव रावरो गूढ़ ।
समझायो भिन भिन्य कै हौं महामति मूढ़ ॥
तातें प्रभु करिकै कृपा अब अपनावहु पूर ।
प्रापति कीजै सीस मम बृज बासिन पद धूर ॥
गुल्मलता त्रण विच जनम बृज अवनी मम होहि ।
तब कृतार्थ हौं धन्य धनि करहु प्राप्त यहमोहि ॥
नित बिहार जो रावरौ तिह दरसन सु लहंत ।
सनी रहे मम अंग रज चरनन सपरस वंत ॥
अमर न दुर्लभ है वहै श्री वृन्दाबन धूर ।
सो प्रापत ह्वै मोहि वह मेरी जीवन मूर ॥
यह पूरन करिये कृपा तव कृतार्थता होय ।
हे प्रभु परम कृपाल मम औरन इच्छा कोय ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

हे उद्धव तू अब भयो परम सखा मम मान ।
अन्तर गति अन्तर हुतौ सोहुव नास सुजान ॥
जाहु बद्रिकाश्रम अबै आज्ञा यह मो मान ।
छाया रूपसु तें तहां नित उपदेशहु ज्ञान ॥
अरु निज रूपज आपने प्राप्त भाव सिधहोय ।
निरअन्तर बृंदा बिपुन बसहु अलौकिक जोय ॥

॥ कवि बचन ॥

उद्धव आज्ञा पाय जब बद्री आश्रम जाय ।
करे मनोरथ पूर्ण सब निज इच्छा फल पाय ॥
श्री बृंदाबन गुल्म अरु लता दूब के माहि ।
उद्धव तहां प्रवेश करि पर्म जन्म फलपाहि ॥
प्रेम लच्छिना करि भयो प्रापति नित्त बिहार ।
जान्यों प्रागट सबन सों सुनहु भेव निर्धार ॥
श्रीकृष्णा अवतार ह्वै लीला करि अनपार ।
निज इच्छा गति चरित किय पुनि बैकुण्ठ पधार ॥
तिन सित्रीच द्वारका सो रहती सेस बिशेष ।
सो कलीन के उरहि की कीनो अग्न प्रवेस ।
रही हुती जे त्रिय सबै महा सोक गतिलीन ॥
बर्तमान तिन दुख दशा लोकिक रीति अधीन ॥
रही जु पटिरानीन मैं जमुना जू निरधार ।
तिन कै आनन्द उमग करि नित नउतन सिंगार ॥
और सबै रानीन तब पूछयो तिनहि बिचार ।
हम ज्यों तुम तुमरे कहा यहै भेव निर्धार ॥
बिन ईर्षत लखि दीनता जमुना जू सबहीन ।
कहत भई निज भेव की बात सु प्रगट प्रबीन ॥

॥ जमुनाजू बचन ॥

तुम लीला अवतार कै मध्य सु ऐसे भाय ।
नित बिहार मैं प्राप्त हौं बृंदा बिपुन सदाय ॥
श्रीराधा मम स्वामिनी जिन दास्युत जु प्रताप ।
उनही प्रापत मोहि किय लै निज संगम आप ॥
रुकमनि जू प्रापति भई उही ठाम को जाय ।
अरु उद्धवहू जू तहाँ है निज इच्छा भाय ॥
उद्धव दरसन प्राप्त जो अबहू तुम कौ होय ।
तौ श्रीराधा दास्यता लहो जु बस दुख खोय ॥
तब वे स्त्री गन सबै श्री जमुना पद वंद ।

करत भई बिनती बहुरि लहि अति परमानन्द ॥
॥ सर्ब स्त्री गन बचन ॥
हे श्रीजमुना जू करौ पूर्न कृपा सुख रास ।
कहहु भेव कैसे लहो उद्धव होय प्रकास ॥
॥ श्रीजमुनाजू बचन ॥
हे सजनो तुम मिल सबै बृज फिरना मिल संग ।
वृंदाबन गिरराज ढिग ह्वै येकत्र उमंग ॥
लै बाजित्र मनोहरा निर्त गान संजुक्त ।
आबाहन बिध कीजिये प्रेम लच्छिना उक्त ॥
तब प्रसन्न ह्वै कै प्रगट उद्धव दर्शन देहि ।
तब मनोर्थ तुमरे सबै निश्चय पूरन होहि ॥
श्रीकृष्ण चरनन बिषै बज्रांकित सु प्रकाश ।
बज्रनाभ अवतार तिह सो निज लहहि निवास ॥
॥ कवि बचन ॥
जमुनाजू कों सब त्रियन करि प्रनाम ग्रह आय ।
बज्रनाभि लै संग अरु कीनो यही उपाय ॥
गोकुल गोबर्द्धन सु बिच श्रीवृंदाबन भूम ।
तहां कियो आरंभ इन परम प्रेम कै धूम ॥
अद्‌भुत परमानंद ह्वै प्रेम लच्छिना पूर ।
आवेशित गति मति दशा नहि न आन सुध मूर ॥
तब त्रन गुल्म लता जुहै जहां संकुलित भीर ।
तिन तें उद्धवजी कढ़े ज्यों शशि घटा जु चीर ॥
सुंदर स्याम सरूप अरु पीताम्बर बनमाल ।
अद्‌भुत शशि आभा लसै भूषन अंग रसाल ॥
उद्धव ऐसे रूप सों आय दरस इन दीन ।
चकित थकित पुनि ह्वै सबै अति आदरबिध कीन ॥
परमानंद अथाह बढ़ि सबन लह्यो अहलाद ।
एक मास उद्धव इन्हें दयो प्रेम मुख स्वाद ॥
श्रीराधा श्रीकृष्ण जहां गोपी सकल समाज ।
नित बिहार दरसन दयो पुरये सब मन काज ॥
ऐसो फल प्रापति करन प्रेम लच्छिना भक्त ।
नित बिहार वृन्दाबिपुन लहियत ताकैं सक्त ॥
प्रेम लच्छिना सम जु फल कछु न कहा प्रभु देहि ।
तातैं हारि सु ह्वै रिणी नित बिहार मैं लेहि ॥
नित बिहार बिध वेदतें अगम कह्यो कहा जाहि ।
प्रेम लच्छिना बिनय है किहु बिध प्रापत नाहि ॥
श्री वृंदाबन प्रेम जब उद्धव हू हिय छाय ।
तब मिल मिल मन कृष्ण कै यह फल प्रापति पाय ॥
परम अलौकिक भेव यह राधा कृष्ण कुवार ।
नित्त निरंतर करत जो वृंदा बिपुन बिहार ॥
ऐसो वृन्दा बिपुन रस प्रेम लच्छिना पूर ।
जिन बैष्णव है रसिक जिन राधा जीवन मूर ॥
राधा जीवन मूर जिन जे हरि जीवन मूर ।
हरि कै जीवन मूर जिन सिब धारत पद धूर ॥
बिबिधि भांत तें बिबध बिध वैष्णव जन कै मर्म ।
निज २ मत तत कै मतै आशय इष्ट सु पर्म ॥
चार प्रकार सु संप्रदा प्रगट करन प्रभु आप ।
ह्वै आचारज रूप जग कीनी भक्ति सथाप ॥
ते चहुं मारग भक्ति के तामैं भिन्न न आन ।
भाव सिद्ध बिग्रहु लहन राम कृष्ण इक जान ॥
जिह बिध राचै रंग अति त्यौंही दे पुट संग ।
बौरो रेनी प्रेम मन रँगिये स्याम अभंग ॥
यह श्री वृंदा बिपुन कौं गूढ भेव सुख सार ।
पूर्न प्रेम लछिनां लहै ह्वै प्रापत निरधार ॥
दशुधा जुत वैष्णवन के भक्त भेव गुन वर्न ।
कहें जु ये मत सक्तसम जे प्रभु के मन हर्न ॥
शेष महेस रु बेद बिध कहत अगम अनपार ।
कितिक मात्र हौं कहन सों वैष्णव भक्ति प्रकार ॥
बैष्णव गुन बरनन करत होत प्रश्न भगवान ।
तातें निज मत सक्तसन किय सुमरन यहजान ॥
रूप नगर नृपराज सिंह गिरधर भक्त अपार ।
जिन तनिया सुंदर कुंवरि यह किय संग्रह सार ॥

संग्रह सार जु नाम है ताको अर्थ सु येह।
सब सारन को सार लै किय एकत्र अछेह ।।
जो बांचै श्रवनन सुनै प्रश्न सु मौपै होय।
कहिहों योंही प्राप्त हो पूरन दसुधा तोहि ।।
सुंदर कुँवर सु नाम मम तातैं सुंदर आस।
दंपति सुन्दर कुँवर द्यौ सुन्दर बिपुन निवास ।।
श्री हरि गुर वैष्णवन के पूरन कृपा प्रकार।
ग्रन्थ कियो बर्नन यहै नाम सु संग्रह सार ।।
सब सारन को सार यह लीनों सोधि बिचार।
श्री हरि अंतर भेव है परम गूढ़ निर्धार ।।
श्री राधा राधा रवन श्री गुर रसिक जु सन्त।
यह सुमरन मम जानि कै करि हैं कृपा अनन्त ।।
जिन कै कृपा प्रताप तैं कछुय न दुर्ल्लभ जान।
याही तें इन भेव प्रिय सुमरन कियो बखान ।।
विनती यह आतुर सुनो रीझ जुगल रिझवार।
हास हुलास बिलास कै अवन सलाह अवार ।।
संबत शुभ षट त्रिगुन सै पैंतालीस उपरंत।
साके सत्रहसै रु दश सिद्धारत सु कहंत ।।
कातिक मास रु शुक्लपखि नवमी चन्द्र जु बार।
सम्पूरन यह ग्रन्थ हुव नाम सु संग्रह सार ।।
जो यह संग्रह सार गुन नेक सक्त अनुसार।
अंगीकार जु करहिं ते होत सिंधु भव पार ।।

।। इति श्री सार संग्रह सुन्दर कुंवरि कृत सम्पूर्णम् ।।

रंग झर

।। दोहा ।।

श्री बृजराज कुँवार की सर्वस निधि सुख दैन।
अलबेली राधे कुँवरि बंदौं जिन पद रैन ।।
मदन मनोहर कुँवरि बर सुन्दर श्याम सुजान।
दीन पतित मुह आन उर करहु कृपा निजमान ।।
सथल सलेमा बाद श्री प्रभु वृन्दाबन देव।
भक्ति मुक्ति दत दैन जिन करत चरन रज सेव ।।
हृदय तिमर कलि के हरन प्रगट भान आनन्द।
जिन की कृपा प्रताप तें मिटैं सु माया फंद ।।
बन्दौं इन पद रैन नित श्रीगुरु प्रभू कृपाल।
जिन दास्युत की छाप तें अपनावहिं नन्दलाल ।।
जुगल उपासिक रसिक जन सब हरि भक्ति समाज।
इन पद रज बंदत रहौ भूषन भाल बिराज ।।
हरि गुन भक्ति सुभक्त जन येही मो कुल देव।
इन पद रज बन्दन करौं इनही को करि सेव ।।
एक रदन गज वदन शुभ लंबोदर चव-पान।
गनपति बन्दौं देहु मुहि कविता उक्त बिधान ।।
गवरंगी पंकज नयन सरस्वति सुमति निवास।
बन्दौं बर दायन कहत दंपति बिपुन बिलास ।।
सर्वोपरि अद्भुत महा परम अलौकिक भेद।
कौन कहन सामर्थ जिहिं नेत नेत कहि बेद ।।
ताकें आश्रय लाग हौं कहत मानसी ध्यान।
सो राधा राधा रवन करौ प्रगट हिय आन ।।
नन्दीसुर बरसान गिर गोबर्द्धन संकेत।
बन्शीबट जमुना पुलिन कुंजनि कुंज निकेत ।।
लीला ललित अपार जहँ दम्पति प्रेम प्रसंग।

षट ऋतु लै ऋतु राज तहँ सेवत समय अनंग ।।
सावन मन भावन तहां आवन अति छबि देह ।
नेह मेह बदि होड़ ज्यों छायो उमड़ अछेह ।।
बरसाने के बाग सों नवल रंग अनुराग ।
पहलसा वनी तीज पै चोप चतुर चितलाग ।।
चोप कोप अति उलहियित मात पिता के भाव ।
पीहर प्यारी पाहुनी किय दुलरावन चाव ।।
गो धन लै तागरिन पुन बरसाने नित आय ।
कहै घास ई है घनै गैयां चरैं अघाय ।।

।। दोहा ।। अरिल्ल ।।

जहां बाग चित लागि तिह अति शोभित गुलजार ।
द्रुम बेली छबि सों महा पंछी ललित अपार ।।
पंछी ललित अपार बान चटसार मदन जनु ।
महल उतंगन नचत मोर टेरत पियही मनु ।।
नहर हौज बिच कुमुद कंज पै भंवर गुंजारै ।
अद्भुत रूप अनूप बिविध जल जन्त बिहारै ।।
बन बिछात मखमलि हरित रस तन लौं सबठौर ।
परदे शाईबान तहँ अरु अनमोल सुतौर ।।
अरु अनमोल सुतौर कटहरा लसत चौतरनि ।
मणिमय तहँ हिंडोर ठौर ठौरन सु बिविध बनि ।।
कहूँ ललित उतुंग द्रुमनि डोरिन परि झूले ।
पटुरी पन्नन हीर जटित नरगिस मनुफूले ।।
रचना पौढ़न पलँग की शोभित अटा अबास ।
मद्धि महल मसलंद तहँ बैठक रंग बिलास ।।
बैठक रंग बिलास ठौर ठौरहिं रुचि रुचि पर ।
मादिक सुमन सुगंध पान मुख बास जुक्त कर ।।
पांन दान चंगेर क्षान चे अतर दंन अति ।
बहु गुलाब पा संजु अरगजे दान सोभियति ।।
नकुल क्षान अरु चौघरे किस्त सोंज लों आदि ।
अगर बाति हंसनि लिये सोभा हदते ज्यादि ।।
सोभा हदते ज्यादि जहां तहँ सौंज बिबध थित ।
समैंदान फानूस दुसाषे निस आगम हित ।।
मणिमय कंचन कलित स्वाद अरु मीनाकारी ।
जोरन जोर सुतौर लसै ठांठां छबि भारी ।।
नरगस दानन आदि सब सौंज बिविध बिस्तार ।
बाग बीच बागीच बनि अजब जलूस अपार ।।
अजब जलूस अपार रचन जो भान भवन की ।
ब्रह्मा बिष्णु महेश चकित मति कहन कँवन की ।।
प्रानन तें प्रिय कुँवरि लड़ैती तहां झुलावन ।
श्री बृषभान जलूस रचाई तीजा सावन ।।
चोंप चपल चित धारिकै गोप सुता सुकुमार ।
कुँवरि बुलाई ते सबै आई झुंड अपार ।।
आई झुंड अपार साजि सिंगार सुचावन ।
अति सुरङ्ग बहुरङ्ग चूनरी बानक सावन ।।
सहस बीन में चंद मनो लखियत यों सोहै ।
अति प्रवीन इक बैस सची रंभा रति को है ।।
भांन भवन आई सबै महा छबिन की भीर ।
कुँवरि ललीसों मिल खिली आतुर प्रेम अधीर ।।
आतुर प्रेम अधीर कुँवरि मिल चली सुबागै ।
गावत राग मलार उमँग अति अङ्गन जागै ।।
घटा सघन मन हरन छाय दामिन दरसावै ।
हरी भूम तहां चलत छबीली अति छबि पावै ।।
चातुर चित रिझवार अति नवल चहुल नवचोंप ।
आय बाग देखत सबन बढ़ी चोंप के कोंप ।।
बढ़ी चोप के कोप किलोलन बिथुरीं जिततित ।
रस्तन रस्तन झुंड झुंड क्रीड़त मिल प्रमुदित ।।
केउ कहूँ कुसमन गेंद तहां गुल बाजि मचावै ।
केउ नवला सिन खेलि केउ चक्र डोरि फिरावै ।।
दै गर बाहिन के लखै हौज नीच मुखजोर ।
केउ अनार दाने लिये करन चुगावत मोर ।।
करन चुगावत मोर केउ कोकिल सँग गावै ।
केउ गहत जल जन्तु केउ डरि भजि छबि पावै ।।

करन रचै चूनरी केउ कुसमन के रङ्गन। केउ लै कँवल पराग बनावत चित्र सुअङ्गन ॥
केउ केउ तारी दै भजत गहत तहां कर हास। शोभा देखत बाग की आई झूलन पास ॥
आई झूलन पास उमग चित चहुँलन छाये। जित तित चढ़ी हिंडोर जाहि जैसे मनभाये ॥
केऊ फिरकी कै झुलत केऊ चक्र पालन झूले। केउ डोरन पटुरिया केउ सिंहासन झूलै ॥
उतर चढ़त पलनां जहाँ झूले गोप कुमारि। सुर रमनीन बिमान छबि कोटिन डारौं वारि ॥
कोटिन डारौं वारि सची रंभा रति शोभा। फिरकी झूलैं फिरत चक्र बंधि दृग ह्वै लोभा ॥
मणि मय थम्भन डोर पटुरियन झुलन चकोरैं। चढ़त बढ़त छबि छहर फहर अम्बर चितचोरै ॥
द्रुमन झूम बिच झूलही सो छबि यों सरसाय। अद्‌भुत घन में अद्‌भुता चपला अद्‌भुत भाय ॥
चपला अद्‌भुत भाय अंग सोभा सुकुवारिन। राग रंग उछरंग रचत चातुर्ज अपारन ॥
केउ कहुँ केउ कहुँ लतन द्रुमन बिच उत्तम केलिन। बिहरत बाग अथाग सोभ मनु मुक्ता बेलिन ॥
बीचौं बीच इक चौतरा कुरसी बंध रसाल। तहां कटहरा दोहरा लाल मणिन के जाल ॥
लाल मणिन के जाल रूप अनुराग बाग को। चहुं ओरै जग मग्यो प्रगट बड़ भाग लाग को ॥
अद्‌भुत तहां हिंडोर सिंहासन ता मधि सोहै। बनी अलौकिक रचन तहां कहि सकै सुकोहै ॥
सिंहासन मसलन्द तरु झालर शोभा वान। बिहर सबन में कुँवरि पुनि यहां बिराजी आन ॥
यहां बिराजी आन लखत चहुँ दिश की शोभा। सोभा सिमिट समूह तहां झलन दृग लोभा ॥
कोटन की हद छोड़ि समुख ललितादि बिराजै। राग रहसि बंधान तान मिल साज सुबाजै ॥
राग मलार अलापि कै ख्याल समय रुचिलीन। गावत अनुभव रचि तहां अद्‌भुत रंग नवीन ॥
अद्‌भुत रंग नवीन रचत प्यारी दुलरावत। प्रेम पहेलिन रीझ कुँवरि मुसिकत बतरावत ॥
दुहुँ दिस थंभहि डोर जोर अगबार पचीजू। श्रीमन मंजरि इतै उतै गोबिंद सखीजू ॥
श्रीमन मंजरिजू लिये खवान चिमरजी भाय। रसिक चसक दै झकुर गहि रुचि २ मन की पाय ॥
रुचि २ मन की पाय सखी गोबिंद इतै ततपर। लिये चोघरा खरी देत मुख बास करन कर ॥
बगलौंही पिछवार थंभ ढिग दुहुं दिस जोरैं। नंदनि चंदनि सखी मोर छल छबि सों ढोरैं ॥
सखी सुहागिन अंक भरि प्रेम पुंज छक तोर। प्रेम पूर चित चूर तहँ रमक देत गहि डोर ॥
रमक देत गहि डोर झुलावें ज्यों सुख पावै। केउ बैठी केउ खरी ठौर निज निज छबि छावै ॥
नवल नेह लहि सोध चलीं बागायत देखन। मतवारी ह्वै बहुर लैन छक छाकि विशेषन ॥
प्रथम अरज करि कुँवरि सों कही कि अज्ञापाहु। इत द्रुम देव जु देत हैं अदभुत मादिक ल्याहु ॥
अद्‌भुत मादिक ल्याहु जबै इन बिन बिनती कीनी। कुँवरि समझ मुसिक्याय चतुर चख आज्ञा दीनी ॥
मतिवारी यह चली करि जु मजलस मतवारी। मादिक आवत सुनत छकित मन मादिक भारी ॥
देखत शोभा बाग की गहवर बेलिन गैल। गावत आवत यह चली मानहुँ मत्त अरैल ॥
मानहुँ मत्त अरैल चाल आई मतवारी। कछु लतान कै ओट लखी कोउ इक सुकुमारी ॥
झीनी चूनरि बीचि अंग छबि अद्‌भुत झलकै। नील मणिन की बेलि फली मोतिन मनु ललकै ॥

घूंघट में चितवन दृगन खंजन गंजन जास।
भाव भरी भौंहें नचत उद्भव मदन प्रकास ॥
उद्भव मदन प्रकास बदन मृदु हासि बिलासनि।
पग पग धरन अदाह अंग अद्भुत छबि रासनि ॥
आतुर चातुर फिरत लतन में अलि अलबेली।
नवल नेह जिहि कह्यो अहा जू कौन नवेली ॥

॥ नवल नेह बचन ॥ दोहा ॥

कहा हिरौंही फिरत हौ बिवस बिकों है हाल।
डारन आई मोहनी बँधी मोहनी जाल ॥
बंधी मोहनी जाल आहु दृढ़ फन्द बँधावहु।
बोली नवला तबै कृपा ऐसी सरसावहु ॥

॥ नवल सखी वचन ॥

अरी हिरौही हौं जु मिलै निधि बकस निहाली।
बस जु तिहारे लेहु बिकावहु करहु दलाली ॥
जिहकर बंधन बँध रही महा मौंहरी डोर।
जार परन आई तही हेरत वहि चितचौर ॥
हेरत बहि चित चोर फिरत हौं कोउ मिलावै।
ताही के गुन मानि देहु जो जिहि चित भावै ॥
रेरी बहना नाम सँग लै चलि तू मोकौं।
कर उपकार अपार कहै सो देहौं तोकौं ॥

॥ वनल नेह बचन दोहा ॥

नवल नेह बोली बिहँस मो सँग चलहु सुजान।
नेक जहाँ राखौ तहां रहियो समय पिछान ॥
रहियो समय पिछान राखिहौं नजरन मे लै।
कछु संग्या कै परत बहुर झूलहु मिलि झेलै ॥
करि मन बंछित केलि परम प्रेमासब लहिये।
समय २ मुहि देहु टहल तहँ जो चित चहिये ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

मरजी मेल सुकरि यहां नवल नेह सँग लाग।
चली नवेली नागरी देखन शोभा बाग ॥
देखन शोभा बाग सामुहे कढ़ी आय कै।
घूँघट ऊसरत चहत छबीली चलि अदाय कै ॥
नवल नेह तहँ गाय सुनायो ख्याल टेरि कै।
रँग छे वागां कुँवरि कह्यो मुसिक्याय हेरि कै ॥

॥ दोहा ॥

श्रीमन मंजर जू तहां खरी कुँवरि कै पास ॥
प्रेमासब मांती उमँग बोली है स्याबास।
बोली है स्याबास टेरि कै श्रीमन मंजरि ॥
करि प्रनाम तिन नवल नेह उत चली रंग भरि।
इक गुल तुर्रा तरें चौतरा कवल बन्ध है ॥
तहँ ठाढ़ी नव नारि समुख लगि रहसि संध है।
कछु दूरै २ नहीं चूरें मदरति मैन ॥
प्रेम पहेलिन अंग छबि बनीजु नैनन नैन।
बनीजु नैनन नैन नवेली अंग अदाहै ॥
उतहु आन छबि मुरिन मिलन दृग लजि मुसिक्याहै।
सब समाज मन मेल यहां मजलस मतवारी ॥
नेह मेह की झूंम हेर घूमन रिझवारी।
निज पै नवला नागरी ढाढ़नि लई बुलाय ॥
इत तैं प्रेम पहेल के गावन ख्याल सुनाय।
गावन ख्याल सुनाय ज्वाब के स्वाल दुहूं दिस ॥
हेरत दिवस बितीत होंन संग्या आगम निस।
फेरत लै चकडोर बिराजी कुंवरि हिंडोरें ॥
उसस अंग कर झेंमक छोर अैचन चित चौरें।
झूलन मे चकझोर इन खेलन नवला हेर ॥
जकी थकी दृग गति रही अहुटि सकत नँहि फेर।
अहुटि सकत नँहि फेर लगी चाहन कै चसकै ॥
मदन मंत्र चक डोर बँध्यौ मन नांहिन बसकै।
बिवस दसा अति नवल नार मतिवारनि झूमै ॥
ठहर सकत नहि पाव गहैं गुल तुररा लूमै।
झूमन हन घूंमन छकी लूम रही गहि डारि ॥
बिगस बिकानी सीखरी तन मन सर्वस हारि।
तन मन सर्वस हारि रही प्रेमासव छाकी ॥

तनकी सुधि न सँभार भई मन मूर्त्त प्रिया की ॥
यहै दशा इन हेर कुंवरि सतरान जतावैं ।
गोप सुता सब चतुर चितै कोउ मति लखि पावैं ॥
अनुभव करि ढाढ़नि कहत इन सम्हरावन काज ।
गाय जताय जु खुलत है यह घूंघट की लाज ॥

॥ ढाढ़न बचन छन्द ॥

यह घूँघट की लाज सम्हारहु कहा रही छकि ।

॥ नवल सखी बचन ॥

बोली नवल सुजान अरी मन जान तुहीं तकि ॥
छोर डोर चकडोर संग अँचत है मन को।
गति मति कर पल्लवन दोष कहा बेबस तन को ॥

॥ ढाढ़न बचन दोहा ॥

कहत भई ढाढनि तबै बाढत रंग अपार।
निज चकडोर फिराहु करि अरस परस बिवहार ॥
अरस परस बिवहार करन इनहू मन आनी।
लै चकडोर फिरान लगी अति छबि सरसानी ॥
इततै उततै जोर परी चौरन चित छबिकी।
डारि मोहनी जार दृगन बांधी गति सबकी ॥
झमक्कि झोक छोरन करन अहुटि पल्लवन केलि ।
वनसीसी जकरी मदन यहि चकरी की केलि ॥
यहि चकरी की केलि बनी अब अजब रंगपर।
झमक जुरन दृग घुरन तहां चकडोर लुटन धर ॥
छुटि अंचर टुटि हार ढरक भुज बंध कहुनि पर।
बे सँभार गति सिथल प्रेम मतिवार दुहूँ भर ॥
इत घूँघट खुलि बदन तै थकित दृगन मुख मौन।
नवल नेह मन जान सों कहत बनी यह कौन ॥

॥ नवल नेह बचन ॥

कहत बनी यह कौन बहुरि संदेह सुमेरैं।
दैन लैन दुहु ओर तहां कित सरस सुजेरैं ॥

॥ ढाढ़न बचन॥

कहि, ढाढनि इहां सिरें जेरपन यही बिचारन।
गति मति तन मन नैन फूलि जीतन की हारन ॥
बनी रंग की मौज अब आई संझ्या बेर।
इत सम्हराय रिझाय कै राखहिं रहसनि घेर ॥

॥ कवि बचन ॥

राखहि रहसिनि घेर कहि सुगाई तिहि तंता।
छँछँदी लोयण जेर किया लोयण लज बंता ॥
नवल नैन अनुभवन गहि जु अंचर सम्हराई।
बोली तब मुसिक्याय नवल नागरि छक छाई ॥

॥ नवल सखी बचन दोहा ॥

अरी मौज झूलन यहै कैधौं मौज सिकार।
मन मृग मेरो बिवश किय करि २ घाव सुमार ॥
करि करि घाव सुमार मोहिं कीन्ही बेबस की।
अति गति आवत कहँन नांहि आवत जिय ससकी ॥
अब कोउ करि उपकार मोहि उत सर्न लगावहु ।
लै चलि बेगहि डोर डोरि कै बांह बसावहु ॥
लावन में पावन झमक तहां कोटन कै काज।
उपगारन सारन गरज करिये जलद इलाज ॥
करिये जलद इलाज अरी हा हा है सजनी।
सैन सजीवन साँझ भई आगम अव रजनी ॥
को लगि धरिये धीर बीर वह पीर न जानै।
जाय कहौ वे मिहर मिहर कर मरम पिछानै ॥

॥ ढाढन वचन दोहा ॥

ढाढनि हँसि बोली तबै नवन नेह अब जाहु ।
हौं इत गाय लुभाय हौं तू मरजी लै आहु ॥

॥ कबि वचन ॥

तू मरजी लै आहु कह्यो जबही मतवारी।
उठि यह गावत चली तहां झूलत है प्यारी ॥

॥ ख्याल ॥

अन उतरन मद पाय पनानै अन उतरन मद पावा।
खंजर दृग मन पंजर बेधन इनै साण चढाबा ॥

॥ नवल नेह बचन दोहा ॥

इत मजलस मे आय कै किय फरियाद पुकार ।
तीजा झूलन मौज है कैधौ मोंज सिकार ॥
कैधो मौज सिकार बनी पै अजब करी है ।
जेर भवर पै जुलम रीत कै सरन करी है ॥
हसि हसि कसत अचूक बिजय धनुबाण अन्यारे ।
टूक टूक को टूक टूक यहां करत निहारे ॥
अति अनीत यहि ठा भई सो अब सही न जाय ।
शरण गहे वे मिहर कें लगै पंच सरघाय ॥
लगै पंच सर घाय सुनत नहिं कोऊ पुकारै ।
निकट बसै बे पीर मरम समझै न सँभारै ॥
महि पति मुद्दिय मदन चढ्यो दिन बिजई जालिम ।
जुलम जवर जिहिं बितै विकलता है किहुँ मालिम ॥
चूर चूर ह्वै चित बिवस वेहद दरद सपूर ।
कछु उपचार न चलत हैं परै अकेलैं दूर ॥
परै अकेलै दूर जरब की जुलम घुटन है ।
गाहक नाहक निकट नाहि क्यों सहत लुटन है ॥
अरज गरज की परज लरज जिन करज अड़ानी ।
को पूंछै को लखैं साझ किहिं जान पिछानी ॥
निज निज चालै सब लगी जित तित उमग लुभाय ।
अतन अदल जापै सुतिहिं किहुंन सोध चित आय ॥
किहुंन सोध चित आय न्याय पै यहां सु कहनौ ।
है श्रीभान कुमार इनहि दुखियां दुख दहनौ ॥
जो पै बनी अनीत सु मोपै बहना जानै ।
बेठै ठीहै लखो अरज करिहै यह आनै ॥
हुकम होय लै आहु उन दीजै न्याय निवार ।
बितई बैठी कठन सों चार घरी जुग चार ॥
चार चरी जुग चार बितै सत प्रीत प्रतीतन ।
त्रेता तपिकै दूरदान गति मति द्वापर गन ॥
कलि प्रपंच बेषन सुबिबध छल उक्ति न ठानत ।
अबै अलोकिक सांझ पंचमी मेलहि मानत ॥

॥ कवि बचन दोहा ॥

सुनि २ इन बातन कुंवरि खिली मन्द मुसक्यान ।
बदन मनोहर पै द्दगन प्रेम छकन पतरान ॥
प्रेम छकन पतरान द्दगन भौहन छबि बाढी ।
लाज नेह उछरंग अमल अन उतरन चाढ़ी ॥
रुकत रसनि बतरान आन अधरन पुनि दावैं ।
सतरानी अँगरांन अंग छबि अद्भुत फावै ॥
नवल नेह गावत हठी ज्वाब लेन के काज ।
चाकर खासा राजरै ढोलिया हरा यह राज ॥
ढोलिया हरा यह राज दास हथलेव मुलाया ।
मिहर तलव दिल बरी नजर बकसीस लिखाया ॥

॥ श्री प्रिया बचन ॥

यह सुन बोली कुँवरि लखौ ललिता या जीकी ।

॥ श्री ललिता बचन ॥

हँसि ललिताजू कहत भई इन कही जु नीकी ॥

॥ श्री ललिता आज्ञा नवल नेह बचन दोहा ॥

श्री ललिता बोली बिहँसि नवल नेह अब जाहु ।
तेरी वहना ल्याहु किन काहे बेर लगाहु ॥

॥ कबि बचन ॥

काहे बेर लगाय कह्यो जब यह मतवारी ।
मतवारी करि सबन चली उत ढिग मतिवारी ॥
मतिवारी गति चली गात तानन मतबारी ।
मतवारी लखि समुख आय नवला मतवारी ॥
मतवारी ढाढनि लिये छबि मतवारी संग ।
गावत मतवारी लहर चढ़ि मतवारिन रंग ॥
चढ़ि मतवारिन रंग नवल नागरि चलि आई ।
नवल नेह तहँ जाय नवल रहि सहित बधाई ॥
रीझ मौज इन दैन माल गरते जु उतारिय ।
यहि कहि ल्यों ह्वै जबै मरगजी सुगंध अरगजिय ॥
नवल नेह की बांह गहि अगवारे निज कीन ।
ढाढनि जिम आगे चली गावत रहसि नवीन ॥

गावत रहसि नवीन पनाजी नजर मिलावो ।
बागां जाझी मोज रंगरी जिन सतरावो ॥
झूमत झुकत अदाह चाह कछु अजब नबेली ।
घूंघट उघटत गहल जात आवत अलबेली ॥
निकसी नियरी आय जब नजर नजर के मेल ।
नजर नजर अति गति बनी नजर नजर कै झेल ॥
नजर २ कै झेल भार दुहुँ दिस पर सरसै ।
सोन कहन बनि आहि जानही जिन दृग दरसै ॥
जिन दरसें जिन दशा नवल सरसें मतवारी ।
मुसिक्यावत छकि चकित अधर अँगुरी दिये प्यारी ॥
ढाढनि आय जु चौतरे गाय सुनायो येह ।
ढीली नथ वाली अबै मुजरौ म्हारो लेह ॥
मुजरौ म्हारो लेह जबहि ढाढनि यह गाई ।
मतवारी तहँ तबहि लिये नव नागरि आई ॥
नवल नेह निज बहिन कुँवरि कै चरण लगावत ।
यह नियरावत प्रिया पिछोंही ह्वै सतरावत ॥
नजर मिलत जो नजर ह्वै रहस रंग मुसिक्याय ।
सो दुहु दिशि लहरें उमड़ छबि निध कही न जाय ॥
छबि निध कही न जाय लहर रहसिनि मतवारी ।
गहि हिंडोर की डोर खरी नवला मन हारी ॥
मन मंजरि जू निकट अगौही होय झुलावत ।
झूलत मुरि मुसिक्यान लखै घूंघट सिथलावत ॥
जुरन घुरन दृग दुरि मुरन दुह दिल विहरैं रंग ।
प्रेम उदधि हिय छिलन छवि अद्भुत झमकै अंग ॥
अद्भुत झमकै अंग बंग अद्भुत सुहिंडोरें ।
दै झकझोरें कबहु रहत गहि डोर निहोरें ॥

॥ नव सखी प्रति श्रीललिता बचन ॥

हँसि बोली ललिता जु सहेली सुनहु नवेली ।
सहल नहीं है टहल बिरानी छाप सुकेलो ॥
नजर तलब कोचाह चित बकसी सें बतरान ।
आसंगायत आतुरी प्रगट बता सतरान ॥

प्रगट बता सतरान अनौखी धीर न धारें ।
यहि बढिवारिन भार लाज घूंघट संभारें ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ललिताजू प्रति ॥

तब सुनि हंसि कें कुंवरि कह्यौ यहि कौन बुलाई ।
ठगत ठगत ब्रज यहां ठगौरी डारन आई ॥

॥ नवल सखी बचन ललिताजू प्रति, दोहा ॥

बोली नव नागरि तहां आजु ठगी इन मोहि ॥
नख सिख भरी जु मोहिनी कुंवरि तिहारी सोहि ।
कुंवरि तिहारी सोहि बसीकृत मंत्र नसानी ॥
गति मति मेरी हरी बनत नहिं कछू बखानी ।

॥ कबि बचन ॥

तब गाई ललितादि राज मत वाला म्हारा ।
जुलमी खूनी और फिरादी लोयण थारा ॥
पान दान नवला लयो बीरी दैन सुजान ।
नवल नेह पिछवार तिहि लै हाजिर पिकदान ॥

॥ नवल नेह मतवारी वचन ॥

लै हाजर पिकदान तहां बोली मतवारी ।
बदरा बिथुरन लखो प्रभा ससि कढ़न अहारी ॥
चहुँ दिशि तैं जग जीत चन्द्रकन आभा सोहत ।
बिच द्रुम बेलन रंध्र आन यह सरस बिमोहत ॥
कोमल आभा की यहै अद्भुत छबि दरसान ।
नवल मौज नवरंग की नवल चहुल सरसान ॥
नवल चहुल सरसान नवल सुगलन चरचाई ।

॥ कबि बचन ॥

नवल नेह की बात नवल नागरि मन भाई ॥
आतुर चातुर पान दान धर चाहि नवेली ।
घूँघट सिथल सवार चली छबिसों अलबेली ॥
समैं दान दुखदान जे जुपै सु जोरन जोर ।
गुल हाथन गुलगीर लै गुल कीनै गुलमोर ॥
गुल कीने गुलमोर दई तहँ बिदा तरस को ।
आन पान निज पान छुवा हठ अधर परस को ॥

गहन करन कर झूम झेंम कस तिरन उरन की।
अनुभव कर ललितादि गाय लहि चतुर नमन की॥

॥ ख्याल ललिता जू बचन दोहा ॥

यान्है छछँदीजी छली काँई कहौ जराज।
ऐ झुझुलावै लाजनै किणहठ लाग्या आज॥
किणहठ लाग्या आज गाय ललितादि सुनायो।

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

कुँवरि कह्यो झुझराय भयो अब सब मन भायो॥

॥ नवल सखी बचन ॥

नवला बोली अजू अधर रँग फीक धरी है।
बीरी लेत न देत सुपें यह चूक परी है॥

॥ कवि वचन दोहा ॥

ललितादिक गाई तबै तीज रमण रै चाव।
झमक हिंडोरे पै चढ़ा ल्यौ पियजी रौ नाव॥
ल्यौ पियजी रो नाव कहत नवला मुसिक्यानी।
दगन जोर दग समुख रोक झूलन छबिसानी॥
प्यारी मुर मुसक्यान लजन सतरान सु लहरैं।
इतै ढिढौही हठन मिलन नैनन छबि कहरैं॥
कँवल कली कर कंध धरिहि नवला हठ लाग।
कहौ २ जू कंत हैं कौन नाम बड़ भाग॥
कौन नाम बड़ भाग कहिजु निज गरै अंगुरि करि।
कँवल कली तब अपुनि कुँवरि नवनागरि उरधरि॥
स्वेद कंप रोमांच प्रगट बिवरन सिथलाई।
यहि छबि लखि कै प्रिया नवेली हृदय लगाई॥

॥ नवल सखी बचन दोहा ॥

कहत भई सांवरि सखी सबन सुनत रिझवार।
पटुरी झूलै अब खरी झूलन मोज अपार॥

॥ कबि बचन ॥

झूलन मौज अपार सुनत चित सबन सुहाई।
ढाढनि बोली टेर कहो मेरे मन भाई॥
सहु समाज मन मेंल रहँसि कै केलि लुभानी।
उठि ठाढी तहां लिये तमूरा ढाढनि गानी॥

॥ ख्याल का दोहा ॥

याँरी बांहडली गहौ नवल सहेली सैण।
ऐ मतवाली छै घणी मौज सैल सुख लैण॥
मौज सैल सुख लैग नवल नागरि उमगानी।
कर गहि कुंवरि हिंडोर सिंघासन तें उतरानी॥
गरबाहनि कर चली महा छबि नवला प्यारी।
प्रेम पुंज तहाँ धरी दुहुनि पनही समुहारी॥
गवर श्याम पद कवल छबि जावक भूषन भींन।
पनही पहरत लखि छकी रीझ बलैया लींन॥
रीझ बलइया लीन निहुर पद दगन लगावत।
धरि करि याकैं सीस चले दोऊ मुसक्यावत॥
सब समाज मन मेल संग सहचरि छबि पाहीं।
गउरश्याम दुहु चतुर दिये आवत गरबांहीं॥
मणि जालिन फानूस लघु समैंदान जिह जोति।
अगुहीं लै चित चूर इक सखि निवछावर होति॥
सखि निवछावर होति चली कोमिल ऊजियारैं।
सुमन छरी इक प्रेम पूर लै झूम निवारैं॥
गज गति चूर गरूर चाल आवत यहि शोभा।
रहस लुभानै सैन निरख ह्वै हीं दग लोभा॥
लता टार निकसे इतै अदभुत ठोरइ कौंहि।
पटुरी झूला आदि सब हीरन रचना सौंहि॥
हीरन रचना सौंहि रही सनि मकर जुन्हाई।
कबहुँ कबहुँ बदरान बीच खुलि छबि सरसाई॥
आय रसिक रिझवार इहां सब झूलन चांवैं।
झमक पटुरियां चढ़ी कुँवरि नवनारि झुलावैं॥
प्यारी पद नूपुर जु इक छूट परयो मँग पाय।
नवला कर ढाढिन दियो कहयौ देहु पहिराय॥
कहयौ देहु पहिराय तबै लैकै नव नागरि।
पहरावन निज करन चहत आतुर गुन आगरि॥
पटुरी गहि कर चरन छुवत यह टहलन सांनीं।

उतै सकुच सतरान निहोरन इत उत रानी ॥
झुकि झूमन्न हठि करन कर नैन बैन बतरान ।
दुहु दिशि नाहीं नां कहैं दुहु दिशि हाहा खान ॥
दुहु दिशि हाहा खान रंग रहसिन की लहरै ।
कहन परत कछु लखि जु लही जिन दग छग छहरै ॥
रंमकि चहत उतरन सुप्रिया उतरन नहिं देही ।
खरी पटुरिया डोर सहत हँसि भुज भरि लेहीं ॥
दग गति मति ते मन लयो याको जीत कुवारि ।
पाय जेब कै बाह वसि हठि जीती नवनारि ॥
हठि जीती नवनारि चरन नूपुर पहिरायो ।
सो बिधि छबि को कहै लषत जिन दग फल पायो ॥
सखी सुहागन आन लौन कीनो नव तियपै ।
छकी छकन सौं रीझ उर रहिय रुकी न जियपै ॥
अद्‌भुत अतर गुलाब लै यहै रंग कै गोहि ।
नव नागरि करि दै गई कहि जु अरगजा होहि ॥
कहि जु अरगजा होहि सुनत ही नवल प्रवीनी ।
लायर रज सहु बसन अंग सहु गंधित भीनी ॥
गहि कै पटुरी डोर अंच उर चरणन परसै ।
लजन खिजन झिझकनसुझुकन लखि इहिछक सरसै॥
दै झकझोर सु और इक ह्वै ठाढ़ी रिझवार ।
मचकन झमक झकोर बढ़ि छुटि अन्चर टुटिहार ॥
छुटि अन्चर टुटि हार लंक लचकन लखि शोभा ।
छकी थकी इत टकी डोर सँग दग गति लोभा ॥
सुख सम्पद चखलाह तदपि अन्तर मन मूझैं ।
तरस परस बतरान बनी चित खुल हि न गूझैं ॥
भई श्रमित झूलत कुँवरि थकी डोर झकझोरि ।
उतरि बिराजी सिथल छबि नवनागरि चितचोरि ॥
नव नागरि चित चोरि चुरावन गति मति करहीं ।
लै निज अन्चर छोर पवन दै श्रमकन हरहीं ॥
प्रेम पूर यक सखी सुमन बिजना लै ढारत ।
बेनी बिथुरी पीठ दीठ बदि प्रानन वारत ॥

॥ नवल सखी बचन दोहा ॥

कह्यो नवेली कुवर सों झूलन श्रम भौ दूर ।
द्वै द्वै मिल झूलत सु ह्वै अंग खेद नहि मूर ॥
अंग खेद नहिं मूर होहि ऐसे मिल झूलैं ।
यहै समय यह सौभ हेर मौजन मन फूलैं ॥

॥ कबि बचन ॥

बहुर उठी यह सुनत कुवरि झूलन कै काजै ।
आन पटुरिया चढन लषित छकि सकल समाजै ॥

॥ श्रीप्रिया बचन दोहा ॥

कह्यो कुंवरि ललितादि दिस कोउ सँगझूलन आहु ।
द्वै मिल रमक बढ़ाहि अति श्रम न होहि सरसाहु ॥
श्रमन होहि सरसाहु यों जु सुनि यहै नवेली ।
झमक डोरि गहि चढ़ी संग झूलन अलबेली ॥

॥ प्रिया बचन ॥

कुंवरि कह्यो सतराय तिहारै सँग नहिं झूलौं ।

॥ नवल सखी बचन ॥

बह बोली है तुमहि कहा हौ तन मन फूलौं ॥
कोटि चंद्रका अमल छबि नहिं तुम उपमा जोट ।
दीठ लगन भय चन्द कै आई होन सु ओट ॥

॥ कबि बचन ॥

आई होन सु ओट कहत झूलन को साथै ।
मन मंजर जू दई गुलाबी तहां इन हाथै ॥
द्रुम सुरदत अस बसु पान दुहु रहसिन कीनौ ।
अधर रसासब पुटिन चढ्यो अन उतरन भीनौ ॥
गुन मंजरि जू दिय तबै नवला कर मुख बास ।
चंदनि जू बीरी दई सौगंधित सुख रास ॥
सउ गंधित सुख रास इक जु नवला कर लीनी ।
कर विभाग दुहु रदन तहां जैवन रँगभीनी ॥
अंतर बहु वेरन सु तपन तन मन की नासी ।
गुल गुलाब अरगजा महक लगि पवन प्रकासी ॥
नंदनि झमक झकोर पुनि दीनी दुहुनि झुलान ।

यहि दिस ये वे उहि दिसैं लहरैं चढ़न मचान ।।
लहरैं चढ़न मचान बढ़ावन छबि धुरवाकी ।
त्रिविध समीर सुपरस महक सबहि न मति छाकी ।।
हार हार उर अरुझ तुटे छुटि अंचर सोहै ।
नील मणिन मण हीर बेलि अरु फन छबि कोहै ।।
अति झकोर चढ़ि बढ़त जब प्यारी डर घुरिजान ।
नव नागरि उर झेलि कै रहसि केलि सरसान ।।
रहसि केलि सरसान तहां प्यारी सतरावत ।
काँई कहुछौ राज छछंदी ढाढनि गावत ।।
कछुक दूर पखवार यहां तै झूलत रंभा ।
चहुल चतुर लहि उलहि अजब यह परख अचंभा ।।
रँग छै वागा आज यह हँसि गाई तिहि वेर ।
इक बनाय चित ख्याल पुनि नवल नेह लिय टेर ।।
नवल नेह लिय टेर गई तहँ तब मतवारी ।
कह्यो याहि कहि जाय वहां झूलन यह न्यारी ।।
पुनि यह दियो सिखाय ख्याल निज उक्त बनावन ।

।। रंभा जू बचन ।।

ललितादिकन सुनाय यहै मोदिस तै गावन ।।

।। कबि बचन ।।

किहुन चही रंभा लही सो छानी बतराय ।
नवल नेह पठई बहुर तब यह यहिठाँ आय ।।
तब यह यहिठाँ आय ख्याल ललितानि सुनायो ।
श्रीललितादिक गाय तहां अति रंग रचायो ।।

।। ख्याल सोई अनुभव सहित बरनन ।।

कोहै झूलन हार नई यह अनुभव बूझन ।
जान अजान सु अरन हरन मन मन की गूझन ।।
स्यामा कै सँग छबि भरी सोहत सखी नवेल ।
अति सुन्दर तन सांवरी मनहु नील मणि बेल ।।
मनहु नील मणि बेलि कोऊ ऐसी न निहारी ।
चक्रत उपमा जुक्त हठन बूझन मतवारी ।।
देहा दै यह ख्याल गान अनुभव सरसावैं ।
निंदन सुत तन भाय रचन जो २ दरसावैं ।।
स्वेद कंप रोमांच ह्वै जान परत कछु तोत ।
झुकि २ झोटन मैं मिलै कुंवरि लजोंही होत ।।
कुंवरि लजोंही होत दशा निज अंग बतावन ।
आसंगै को मिलत कहन लहि तोत धिरावन ।।
स्वेद कंप रोमांच स्वातिकन अरु संचारी ।
प्यारी तन वतराय उरहनौ दिस नवनारी ।।
देखो फूल नेह की सखी चतुर सिर मौर ।
हम जानी जानी सबन यह झूलन कछु और ।।
यह झूलन कछु और जबै दोहा ये दीनौं ।
सबन लही कै भाव करि जु रंभा दिस कीनौं ।।
यह झूलन और हि जू नेह झूलन छबि चातुर ।
सो वलाय कै कहत लही हम नवला आतुर ।।
सबै छकाये नागरी दगन रसासब पाय ।
लपट रूप यह मोहनी प्रगट भई ब्रज आय ।।
प्रगट भई ब्रज आय कपटनी यहै बतावत ।।
दगन रसासब छबि सनेह चातुर्ज जतावत ।
दशा बिवस ब्रज बधुन छकी यातै सुवताई ।।
जादू गारनि यहै मोहनी तिय पिछनाई ।
रंभा कृत यहि ख्याल को दोहा दै दै गाय ।।
ललितादिक अनुभवन करि अद्भुत रंग रचाय ।

।। नवल सखी बचन ।।

अद्भुत रंग रचाय तहां नव नागरि बोली ।।
कुंवरि तिहारी मोहनी सु बिन दामहि मोली ।
सबन छकावत हुती सु तौं मुहि इनजु छकाई ।।
कपट इहाँ मो नांहि निकट की टहल लिखाई ।
पूंछत तुम मुहि कौन ई हौ ऐजू मनिहारि ।।
पीहर नन्दी सुर जु मुहि बरसाने ससुरारि ।।
बरसाने ससुरारि मनोहर बसी करन है ।
बेलो हीरन नील मणिन तहां जोर परन है ।।

॥ कवि बचन दोहा ॥

लहि रंभा की लहन कहन बातैं सरसानी ।
प्रगट होत पिय जान कुंवरि झूलत सकुचानी ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

उतर न देहु जु मोहि अब कहत प्रिया सकुचाहि ।
रंभा सौं बैरन लही बाहुर बिथुरे जाहि ॥
बाहुर बिथुरे जाहि देहु मेरी सौं उतरन ।
वहि मुहि केरैं लागि खिजै है सुनि हैं गुरुजन ॥

॥ कबि बचन ॥

प्रियासौंह पिय सुनत झकोरन डोर थकानी ।
उतर दुहू इक ओर चौंतरे बैठक ठानी ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

ललितादिकन न अरु सवन कह्यो प्रिया तब टेर ।
मिल मिल तुम झूलहु अबै यहै रंग की बेर ॥
यहै रंग की बेर कढ़न बदरन बिच राका ।
नहर हौज झल मलन बाग छबि लखि मन छाका ॥
श्रीललितादिक लगी तबै झूलन मिलि द्वै द्वै ।
गावत हँसत हँसात रंग सौं प्रमुदित ह्वै ह्वै ॥
और सबहि झूलत भई अपने अपने बेर ।
नवला कुंवरि सु हँसत तहँ केलि किलोनन हेर ॥
केलि किलोलन हेर हँसन चातुर्जन सरसैं ।
कोटि करति नौछार जिनन सोभा छबि दरसैं ॥
इत दोऊ इक ओर रहसि प्रेमासव माते ।
तन मन अरुझे नैन बैन सुगलन सरसाते ॥
प्यारी को बीरी दई नागरि नवल बनाय ।
पीक दान चाहत तहां नवल नेह लै आय ॥
नवल नेह लै आय करी हाजर पिकदानी ।
अरुझी बैठन थकित दुहुन लखि रीझ छकानी ॥
कुंवरि कह्यो हँसि लैन गई मादिक सु कहा वह ।
चोखो फूल सुगाय छकी बतराय कहत यह ॥
रीझ नवल नागरि जु मुहि दई सुरमजी माल ।
सुगँध अरगजी लहि चढ़ी मतवारी मतवाल ॥
मतवारी मतवाल माल इन निध लह पहरी ।
दुहुँ गावल पुनि ख्याल यही मतवारी लहरी ॥
छय अनुभव हग दुहुन २ गति मति तन उलही ।
लाज काज भजि तहां छकन अन उतरन खुलहीं ॥
छके थके नैनान कै ह्वै बैना बतरान ।
रीझ भार सहि ना सकत आह कढत जब बान ॥
आह कढत जब बान बतावन सैनन तेंतें ।
पुनि दुहु दिसि तैं सम्हरि कहन बैनन हिं मेंतें ॥
गर धर बांह सुकुंवरि झुकी मतवारी पर तहाँ ।
आधे २ अखिर कहत कह स्पाद बोल यहाँ ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

को है कहि मोसों अरी तोकों मेरी सोंह ।
मुहि जु ठगी नागरि नवल नवल भेष कै गोंह ॥

॥ कबि बचन ॥

नवल भेष कै गोह ठगी कह छकन छबीली ।
नव नागरि इत कलत प्रेमसागर मति कीली ॥

॥ नवल नेह बचन ॥

मतवारी बोली सम्हार सुनिये हे प्यारी ।
चोखो फूल सु अरस परस है अदल अहारी ॥
इतकी उत उतकी इतै तुमहिं कचस कें छाक ।
दुहुँ दिशि तैं मोपै अमल आवत यहै न वाक ॥
आवत यहै न वाक इती निठ कहत सम्हारैं ।
बैठक रचै समाज न्याव ललितादि बिचारैं ॥

॥ प्रिया बचन ॥

कहि प्यारी इनकरी अतिहि मतवारी मोहै ।
अपुनै पेच अचूक सोध किन परख सु तोहै ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

मतवारी प्यारी लखी मतिवारी अति हैफ ।
बोली यह जो उतकमी देहु कैफ पै कैफ ॥
देहु कैफ पै कैफ सुनि जु प्यारी कह्यौ देहौं ।

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

कहा नन्द तैं भान घाटि है पलटा लैहौं ॥

॥ कबि बचन ॥

दैन चसक पुनि सम्हरि झटक नव नागरि अंचर ।
झटक निपट कै चौंक नवेली बँधे दृगंचर ॥
कुंवरि देत हँसि चसक तब रसिक बसिक करिलैन ।
करतै कर झेलै न इत मुखहि देन के सैन ॥
मुखहि देन के सैन कुंबरि हठि लखि सतरानी ।
गहि करि २ धरि अरि जु लैन निज सोंह जतानी ॥
लै नवला पुनि आपु देत हठ मुखहि पियारी ।
प्यारी कर कर गहत इनहु निज सोह उचारी ॥
नव नागरि मुखसोंहि सुनि कुंवरि सकुच मुसिक्याय ।
रसिक चसक गरबांह दै देत मौज सरसाय ॥
देत मौज सरसाय दई मुख बास मनोहर ।
दुहुन अंग की घुरन जुरन दृग महा रंगभर ॥
मतवारी तहँ नवल नेह ह्वै अति मतिवारी ।
निज गरतें जु उतारि वारि मोतिन लरडारी ॥
प्यारी मतवारी दिसहि कहत भई मुसिक्याय ।
मोहि करी है तैं बिवस हौं तुहि दैहु छकाय ॥
हौं तुहि देहु छकाय कहिजु कर लई गुलाबी ।
कर धर यहि सिर दैन यहै छबि कोटि सुराबी ॥
लखि मतवारी दैन इतै नवला मतवारी ।
तिहि मतवारहि धुकी प्रिया नव नेह सम्हारी ॥
छपा छपाकर की छिपी घुमड़े घन घहरात ।
चहुँ दिसि तै दामिनि दमकि फुही सुही सरसाय ॥
फुही सुही सरसाय निसा आधी नियरानी ।
मादिक सुमन सुगंध बिलस मोजन सरसानी ॥
जित तित गोप कुंवारि सिमट ग्रह चलन सुठानी ।
रंभा सबहिन झोरि रतन में बासु भरानो ॥
झुंड २ मिलि सिमट सब गोप कुंवरि इक संग ।
गावत गीत सु ग्रह चली भरी मोद उछरंग ॥
भरी मोद उछरंग संग रंभा लै गवनी ॥
रही बागमहि कुंवरि निकट की इकमत कवनी ।
श्रीललिता तहँ आय जहां नव नागरि प्यारी ॥

॥ ललिताजू बचन ॥

कहत भई घन धुमड़ मेह आवत है भारी ॥
मध्य महल बैठहि चलौ नेह मेह कै धूम ।
मौज मनोहर हैं तहां महा रहसि रँग झूम ॥

॥ कबि चचन ॥

महा रहसि रँग झूम दुहूँ गरबाहीं दीनै ॥
समय निसंक सु हेर चले उठ गज गति छीनै ।
प्रेम पुंज तब समुष धरी पै नहीं अति सोहन ॥
समैदान ह्वै बिमल सखी लै चली अगोहन ।
प्रेम पूर सहचरिसु लै छतना बूंद बचात ॥
ढाढनि टारत झूम द्रुम सनमुख गावत जात ॥
सन मुख गावत जात तँमूरा लिये रिझैना ।
महलाँ छायो मेह नेह छायो छै नैंना ॥
सरस सुहागिन नवल नेह दुहुँ दिस ढिग पावन ।
बरषा जल भुव हेरि दुहुँन कर झेलें लावन ॥
सब समाज ललितादि दै अति रिझात बतरात ।
प्रेम पहेलिन प्रेम छकि अद्‌भुत रँग रचात ॥
अद्‌भुत रंग रचात आय चढि सिढ़ी अटारी ।
मध्य महल बैठक जलूस अति सोभ निहारी ॥
तजि छल नवला भेष बसन भूषन निज सजकरि ।
बैठे दुहु मसलन्द आनि पिय प्रिया मनोहर ॥
ललितादिक गावत समुष तानन तान बितान ।
केउ बैठी केऊ खड़ी निज २ ठौर सुजान ॥
निज निज ठौर सुजानन सै प्रेमासब छाकी ।
मन मंजरिजू निकट दुहुन आज्ञा लहि साकी ॥
समैदान ह्वै साख जगै तहँ जोरन जोरै ।
जग मग सोभ जलूस जुगल बैठक चित चौरै ॥
ललित बांध नुको ललित लसत लपेटा लाल ।

सुमन जवाहिर भूषनन झूमबास दिसभाल ।।
झूम बाम दिस भाल झुलन लटकन कों हीरा ।
भौंह बिलंदै छकन हगन रचि अधरन बीरा ।।
अंग २ भूषनन सोभ वनमाल बिराजै ।
लखि पीताम्बर खिसन खरो तें मन मथ लाजै ।।
मनु अद्भुत सोभा धरै नव घन दामिन सँग ।
नेह मेहतें बढ़ि छिली सलिता प्रेम उमंग ।।
सलिता प्रेम उमंग सबन चढि रंग सु लहरें ।
मजलस बिलसन मौज लाह हग लहि छकछहरें ।।
श्रीललितादिक गान रचत रचितान बितानैं ।
महा मनौहर साज बाज अनुभव अति ठानैं ।।
केउ चरचा चातुर रचै जुगल रिझावन चाव ।
केउ कर प्रेम पहेलिका रहसि बढ़ावत दाव ।।
रहसि बढ़ावत दाव छकन प्रेमासब आतुर ।
निरखत जुगल बिनोद अघातन हग मन चातुर ।।
मालन तहां ल्याई सुसुमन माला नजरानै ।
ढाढनि सोच बिचार धरीढिग स्याम सुजानै ।।
लखि अति अद्भुत माल बह रसिक चतुर रिझवार ।
लिय कर पहरावन प्रिया परचो कठिन पै भार ।।
परचो कठिन पै भार सँभारन छबि निध लहरै ।।
लिये हार गतिहार निहारन छक थक कहरै ।।
पहरावन बिध धरन करन गर बहुरि सवारन ।
तहां दुहूदिस कछुबनन बान अति गति रिझवारन ।।
रूप लाल चीचख चतुर दुहुं दिस जुर बतरान ।
उतै निहोरन अरन घुरि इत झिझकन सतरान ।।
इत झिझकन सतरान हेर उत चावन चिहुटै ।
उत की चहुटन चहत चख उझक सुअहुटै ।।
दुहु दिसकी छबि छाक परसपर अति सरसानी ।
जुगल सुगल सामिल जु चतुर चहि सखी लुभानी ।।

।। ललिता बचन दोहा ।।

श्रीललिता कहि तुम छकन इक इक औरहि भार ।
इत गति को को बरत हैं दुहु दिस की मतिवार ।।
दुहु दिस की मतिवार भार लहि कैसी बीतै ।
सो अब लहन लहान सला है पुरख प्रतीतै ।।
मन मंजरि किन धरहु मुकर लै समुख चहन को ।
अरी कियन बिध कूर रसनि हग वरुनि कहन को ।।

।। कबि बचन दोहा ।।

नवल नेह लै आय श्री मन मंजरि कर दीन ।
दुहु बिच सामुह इन कियो मणि मंझित आईन ।।
मणि मंझित आईन बिमल सोभा सरता महि ।
सामल जुरि प्रति बिंब जुगल हेरत निज सामहि ।।
गवर श्याम बानक जु अलौकिकै अद्भुत सोभा ।।
मूरत मदरति मदन कदन लखि ह्वै हग लोभा ।।
छय हग भौंहन भाव घन नेह मेहझर रंग ।
उमड़ि प्रेम निध छबि लहर पैरन गति मति पंग ।।
पैरन गति मति पंग निजहि प्रति बिंब निहारै ।
रीझ छकन सरसान दरस तिहि बिवस अपारै ।।
बिबस दशा तैं धुकन परसपर जुरि घुरि घूमै ।
घूमन झूमन लखन थकन ककि लाहन धूमै ।।
निज निज नजरन जुगल कैं जुगलहि रूप बिनोद ।
तामहि लक्षन लक्षि हग बिलसति सम्पति मोद ।।
बिलसति सम्पति मोद निरख बोली मतवारी ।
रहसि रंग कै खुलन उक्त रचि जुक्ति उचारी ।।

।। नबल नेह बचन ।।

कहत भई यहि मौन गहै जानै को मन की ।
श्रीललिता संदेह हरन किन कहत लहन की ।।

।। श्रीकृष्ण बचन दोहा ।।

सम्हर कुंवर बर कहन तिंहि बरसानौ बसिकार ।
बसीकरन लगि रंग झरि यहि को पावत पार ।।
यहि को पावत पार रीझ भीजन सु बिवसता ।
कलित भई मति पंग कहन का लहहु दरसता ।।
शशि आभा कै मेल लसत घन शोभ सुहानी ।

यह कछु बिधना रची संगतैं छबि सरसानी ।।

।। श्री प्रिया बचन दोहा ।।

कुँवरि कह्यो मुसक्याय तब बरसाने झर रंग ।
गोकुल दिशि तैं उनय घन बरस करी मति पंग ।।
बरस करी मति पंग फूल चोखै बरषारी ।।
हौं तुहि पूँछत हुती तबहि कहियन परखारी ।
ललिताजू पैंत्याव रख्यौ अब वहि कित लहिये ।।
मेरे मनकी मनहि रही सो कैसी कहिये ।।
बसीकरन बरसान कहि इक सुख कहो न मान ।
नगर बगर घर २ कहै बिरद नाम जिहि जान ।।
बिरद नाम जिहि जान परै तिहि गुन ये लहिये ।
सहिये अदब अपार तहां को संभ्रम गहिये ।।

।। श्रीललिताजू बचन ।।

श्रीललिता सुनि जुगल बैन छकि प्रमुदित बोली ।
मन की मन ही रही सुकावह कहि किन खोली ।।

।। श्री प्रिया बचन दोहा ।।

चुंवरि कह्यो मुसिक्याय मृदु बीती वहि छिन भूल ।
मतिवारी कहि है अबै को तहां चोखो फूल ।।

।। कवि बचन ।।

को तहां चोखो फूल यहै बूझन मतवारी ।
श्रीललिता ढिग आय गोपि वहि रहसि उचारी ।।

।। ललिता बचन ।।

इन सुन कुंवरिहिं कह्यो अबै वहि चित्र सिगारै ।
दृगन तुलाकर दुहू ओर परखैं उजियारै ।।
चोखो फूल सुदुहु दिसहि सबहि न यह दरसान ।
समैदान तैं जानिये अब जो जिहि सरसान ।।
अब जो जिहि सरसान हेरिये तब कछु कहिये ।
कुंवरि कह्यो तत चित्र बहै तादस कित लहिये ।।

।। कवि बचन ।।

इन बतरावत तबहि एक अवधूतनि आई ।
मतिवारी गति भिरत बाग वहि खुसि मनगाई ।।

।। ख्याल दोहा ।।

इश्क सहर दे बिच अजब मद वेचस्म लुभान ।
आशिक महबूबा तहां परदे नांहिं पिछान ।।
परदे नांहिं पिछान तान यह कान परी इत ।
सुनि अवाज ललिताजु तहां तै आई यह तित ।।
कहत भई ये याहि भलै आई मन रंजन ।
चलहु कुँवरि पै बेग हमारै चित भ्रम भंजन ।।
करतैं कर ललिताजु गहि अवधूतनि लै आय ।

।। ललिताजू बचन ।।

कह्यो कुँवरि को यह लखौ वहि सिंगार सजाय ।।
वहि सिंगार सजाय बही उनिहार सु लहिये ।
मकर उजारैं परख परी नहिं सो अब चहिये ।।

।। कबि बचन ।।

लखि अवधूतनि कछुक साम है दुहु उठिआये ।
इन आवन में छकी वहै ऐ उहि सु लुभाये ।।
नमस्कार करि जुगल यहि आदर जु बतराय ।
इन आशिष दिय दुहुन को छकन प्रेम सरसाय ।।
छकन प्रेम सरसाय बहुरि मसलद अगवारै ।
समैदान ढिग आन बिराये अति रिझवारै ।।
अवधूतनि तहां निकट लई बैठारजु भावन ।
कहत मनोहर स्याम अजू तुम किय हम पावन ।।

।। कृष्ण बचन दोहा ।।

को हौ कित तैं आइ इत दरशन दिय बड़ भाग ।
महा तेज खराबरौ जान्यो परत अथाग ।।
जान्यो परत अथाग भेव निज प्रगट कहीजै ।
परम मनोहर दिब्य मूर्त्त यह कठिन लहीजै ।।
मेरौ चित तुम लीन यहां संदेह सुहरिये ।
अपनो जन्म रु कर्म प्रगट कहि कृपा जु करिये ।।

।। अवधूतन बचन दोहा ।।

अवधूतनि बोली मुसिक श्रीब्रजराज कुंवार ।
मोचित नित यहिलालसा देखन जुगल बिहार ।।

देखन जुगल बिहार यहै गह मह सुनि आई।
भ्रमत फिरत त्रियलोक ठाम इक नहिं अपनाई ॥
बेदव्यास मम पिता जन्म मो अद्भुत गति कै।
कर्म यही नित लहन कहन हित चित तुमरति कै ॥
पूर्व जन्म में सुक हुतौ ताते नर तन पाय।
जाही संज्ञा नाम पुनि यह स्वरूप सुखदाय ॥
यह स्वरूप सुखदाय जाहि सो कहा कह्योजू।
जुगल सुगल सामिल सु आन तिहि लाह लह्योजू ॥
अन उतरन मद बिहद बाग यहि लहियत आजै।
हौं आई तिहि लोभ सरे मन बंछित काजै ॥

॥ ललिता जू वचन ॥

श्री ललिता मुसिकत कहत आन बात किहि काम।
त्रिकालज्ञ अवधूतनि पै मन रंजन नाम ॥
पै मन रंजन नाम भाम है लली जु यातै।
करिये अब रस रीत प्रीत उन-हारहि नातै ॥

॥ श्रीप्रिया वचन ॥

कुंवरि कह्यो मुसिक्याय अहा अति मिलन मिलाई।
कदवावहु सिंगार वही सब बिधि सरसाई ॥
उत्तीरन अबहीं भये पट भूषन सु मँगाहु।
मंजन तेल तँमोर रचि अंजन सरस बनाहु ॥
अंजन सरस बनाहु बान दृग सान चढ़ावहु।
समैदान ह्वै साख इनजु ढिग नियरै लावहु ॥
अवधूतनि सों कुँवरि कहत तुम अतिही नीकी।
करहु सरस सिंगार भेष यहि लागत फीकी ॥

॥ अवधूतनि बचन दोहा ॥

कहत भई अवधूतनी हे श्रीभान कुँवार।
हौं आज्ञा बस रावरे लहिहौं भाग्य अपार ॥
लहि हौं भाग्य अपार कृपा मन रंजन कीनी।
अन उतरन मद पाय सबै गति मति हरलीनी ॥
श्रीशिवदत यह रहसि मंत्र मो प्रान गताई।
ललिता जू अपनाय नाम दै बांह बसाई ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

अवधूतनि की बिनय सुनि कुंवरि सखी निज कीन।
आग्या सिंगारन यहि सु ललिताजू को दीन ॥
ललिताजू को दीन जबै आज्ञा लहि बोली।

॥ ललिता जू बचन ॥

भिन्न २ कर मैं न लही निस रचन अतोली ॥
तुमहि परी है परख करन निज यहै सिंगारै।
हमहु लखै अब यहां समैदानन उजियारै ॥
कछु २ टहल बिभाग सों मिल करि हैं चतुराय।
कितक रचन निज परख की आपुन रचौ बनाय ॥
आपुन रचौं बनाय कछू वहि छबि गति झीनी।
हमहि परख जो नांहि रावरी नजरहि भीनी ॥

॥ कवि बचन ॥

ल्याई मन मंजरि जु तब सामग्री सिंगार।
पट भूषन कीने जु ते उत्तीरन नव नार ॥
उत्तीरन नवनारि बसन तिन अंग सुवासति।
लह मनरंजन हृदय लाय छकि प्रेमासब गति ॥
प्रेम पूर चित चूर अंग करि अतर सु मंजन।
प्रेम पुंज अंगौछि ललित पट तन मन रंजन ॥
नवल नेह कर पद कमल पौंछ अपुन पट छोर।
जावक अति छबि रुचिरु निज लावत दृगन निहोर ॥
लावत दृगन निहोर बहुरि भूषन पहिरावत।
अखियन में घुरि रह्यो करू भौ ढाढ़नि गावत ॥
सुमन सुगंधित तेल मेल सीसहि जु सुहागनि।
पटी लटी गुहि छोर केस अलकैं जनु नागनि ॥
मन मतंग मनु कुलफ को जुलफ जजीर बनाय।
प्यारी अपने करन कर लखि छकि रही लुभाय ॥
लखि छकि रही लुभाय दृगन छबि छिलन सुरत उर।
अधर मधुर मुसिक्यान रीझ जुरि सुरि नव रुनिघुर ॥
यहि बिधि झीनी झमक रीझ छबि चाहन चसकै।

निज करलै पिय समैदान नियरानै हँसिकै ॥

॥ ललिताजू बचन दोहा ॥

ललिताजू बोली समझि अब प्यारी निज पान ।
अंजन खंजन दृग रचौ गंजन खंजन बान ॥
गंजन कंजन बान भौंह धनु सजि संधानै ।
बेधा मन रिझवार पार ह्वै सहज चलानै ॥

॥ कबि बचन ॥

तब प्यारी सुनि सम्हरि लयो अंजन दृग दैंनन ।
कजरासनि कै सलक चह्यो भरनन पल नैनन ॥
कर कंपत हिय थहर कै ध्यान वही दृग छाय ।
सकुचि मनहि मुसक्यात मुरि समैदाम झिझकाय ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

समैदान झझिकाय कहत यह को सुभाव है ।
रचनन देत बनाय अड़ो है परन चाव है ॥

॥ कबि बचन ॥

झझिकन लखि पिय कहत महा प्रेमासब पागै ।

॥ पिय बचन ॥

तुम सजात सिंगार हमहुँ कछु टहलहि लागै ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

ललिताजू हँसि आय कै अंजन दृगन बनाय ।
जुत सुगंध बीरी सु दै अधरत बोल रचाय ॥
अधरत बोल रचाय बसन भूषन पहराये ।
अद्भुत अतर गुलाब अंग औ बसन सनाये ॥
सुमन माल पहिराय कर्न धरि कवल कर्नका ।
नव नागरि उनिहार मिलत अति कहौं बर्निका ॥
सजि सिंगार बैठारि ढिग दंपति लखत लुभाय ।

॥ ललिताजू बचन ॥

ललिताजू बोली तबै घटि बढ़ि का दरसाय ॥
घटि बढ़िका दरसाय जबै पूछी ललिताजू ।

॥ नबल नेह बचन ॥

नवल नेह बिच बोलि कही माधुर्ज महाजू ॥
पैंचित बनि छनि अंग तरंगन सागर लहरै ।
वह अद्भुत गति आन नांहि जो कछु ही कहरै ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

यह सुनि लखि कै मुख प्रिया हँसे रसिक चितचोंर ।
प्यारी उर सुधि आय दृग घुरि मतवार निहोर ॥
घुरि मतवार निहोर दृगन मुसिक्याय सुरानी ।
मन रंजन लखि जुगल छटा छबि छकि सरसानी ॥
ललिताजू गहि बांह पीठ थापिरु मतवारो ।
हृदय लायकर सीस धारि रीझी अनपारी ॥
यह गहि चरणन परिय पुनि बिनती किय करजोर ।

॥ नवल नेह बचन ॥

कृपा रावरी तें पहुँचि पइयत यहै सुतोर ॥
पइयत यहै सुतोर रावरै कृपा कृपा यहि ।
श्रीमन मंजरि दासि छापतै पहुँच लाह लहि ॥

॥ कबि बचन ॥

पुनि ललिताजू कहत कुंवरि सों छठा प्रकासै ।
मन रंजन को देहु चसक दृग ह्वै छबि रासै ॥
कुँवरि चतुर मुसिक्याय कै लई गुलाबी पान ।
मन रंजन गर बांह धरि दयौ कृपा सरसान ॥
दयौ कृपा सरसान हेरि ढाढ़नि तहँ गाई ।
चोखो फूलन वहै करू भौ यह सरसाई ॥

॥ ललिताजू बचन ॥

ललिताजू पुनि कहत अधिक निस अबन बितावहु ।
सामिग्री है धरी सुगल जैंवन सरसावहु ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

यह सुनि आज्ञा दिय जुगल तब ललितादि सुजान ।
तर मेवा मेवाजु कटि षट रस अति पकवान ॥
षट रस अति पकवान बिवध ब्यंजन सुरसाला ।
इक दिन जैंवन ठौर करी थित रचन बिसाला ॥
सीतस सलिल सुगंध मेल मणिमय पात्रन भरि ।
धरि करि सब बिध सिद्ध जुगल पधराय मनोहरि ॥

जेंवन कै आसन शुभग जोरै दुहू बिराज।
मनरंजन हि बुलाय लिय समुख निहारन काज॥
समुख निहारन काज निकट बैठारि जु लीनी।
मन रंजन कहि नाम प्रिया निज सहचरि कीनी॥
अवधूतनि पन त्याग यहू ह्वै सखी लुभानी।
प्रेमासब मतवार पूर सुध आन लुभानी॥
तातै यहि साकीज किय गोबिंद सखी सुजान।
मन मंजरिजू अपुन ढिग राखी ध्यान चिदान॥
राखी ध्यान चिदान रसासब लैन नवीनो।
अद्भुत स्वाद सुगंध असर उलहन रँग भीनो॥
परम अलौकिक प्रेम मोज मतवार जु सरसन।
ताके रहस बिनोद उमड़ि घन रंग सु बरसन॥
रुचि २ पै तिह चसक लै जैवत रहसि लुभान।
मन रंजनहू कौं दई पतरावलि निज पान॥
पतरावलि निज पान दई सो लहि सुखसानी।
जेंवत इकटक रहत कवहुँ लखि जुगल छकानी॥
पुनि २ दम्पति रुच्छित स्वाद सो इनहु चखावत।
हँसत हँसावत रहसि रंग सुगलन बतरावत॥
कबहुँ कौर पिय लै करहि देन प्रिया सुखबंग।
अधर परस ही चतुर चित उद्धव बिवस अनंग॥
उद्धव बिवस अनंग पँग हगनन मुसिक्याहीं।
इत झझिकोंही झुक जु भोंह भंगन सतराहीं॥
लोंन संग तब वार कोर पिय आपुन लैही।
यहै जुगल छबि निरख मुदित मन रंजन ह्वै ही॥
कबहुँ जिमावत परस पै दुहूँ प्रेम छकछाय।
जुरि घुरि हग रहि जाय थकि सिथल अंगसरसःय॥
सिथल अंग सरसाय बिसरि जैवन सु बिबस गति।
लखि २ छकि ललितादि गाय सम्हराय मुदितअति॥

॥ सो ख्याल॥

पल लोयन ऐ भूल भुलावै छै मतवाल।
वेहद लगन अचूक बान अर्जुन ए चाला॥
गाई यह ललितादि जब जुगल सम्हरि मुसिक्यात।
उदर अघाने जैय कै हगनहि त्रपत न पात॥
हग नहि त्रपत न पात तबै अचयो जल दम्पति।
कर खरका जल पान पखारे कर ह्वै त्रम्पति॥
पान दान पांननि ललित ललिता जू ल्याई।
अति सुगंध मय सुरग दुहुन बीरो अरुगाई॥
मन रंजन हू को दई बीरी प्रिया बुलाय।
मसलद पै गरवाह दै दुहू बिराजे आय॥
दुहू बिराजे आय तबै आज्ञा लहि सबहिन।
मेवादिक व्यंजन सुजै ललितादिक सखियन॥
अचय नीर सुखत्रास सुक्ति बीरी लैकै सब॥
चली आरती साजि दुहुनि पै प्रेम सनी तब।
मणिमय कंचन कलित तिहिं झूमन सुक्तालूम॥
दीप सजोवत जग मगी छबि सोभा की धूम।
छबि सोभा की धूम समुख नियरी गह मह भर॥
गावत मंगल बानि साज बांजित्र मनोहर।
झल मल प्रभा प्रकाश आरती बारत फेरत॥
रहसि रंग हग दुहुनि नवल गति चातुर हेरत।
सिथल ललिक पलकै सुरी घुरी लजल सगरान॥
तिन पर उद्धव मदन छक भरे हगन उतरान।
भरे हगन उतरान जकन प्रेमासब कहरै॥
रूप उदध कै छबि तरंग बढ़ि बादि सु लहरै।
सखी रसिक रिझवार बिवश गति छकी निहारत॥
भई आरती रूप अपुनपौ सर्बस वारत॥
करजु आरती ढार जल बिनई सैन बिलास।
तब उठि कै दम्पति चले पौढन अटा अवास॥
पौढन अटा अवास चले दै बांह प्रिया गर।
लिये हांथ मन हांथ हांथ महि रसिक चतुर वर॥
पगन प्रेम मतवार पगन डगमग गति सोहै।
चलत पैट द्वै रुकत बंक चितवन जुरि मोहै॥
मधुर अधर तें कढ़न छकि आधे आधे बैन।

भिदे भेद मुसिकात पिय सरन लगत सरमैन ॥
सरन लगत सर मैन चतुर पिय रसिक बिहारि ।
झेल भुजन पै रीन चढ़त मतवारी प्यारी ॥
अगवारै ढाढनि सुगाय तानन लहकारी ।

॥ सो ख्याल ॥

अै मतवाली बाह गहौ सा वा जी यारी ॥
आऐ अटा अवास जब निकट बर्तनी संग ।
ब्राजे पलका अंक लै प्यारी पिय जु उमंग ॥
प्यारी रहसि उमंग भरे पिय दग मतवारे ।
लखि लखि इन छकि पूर सखिन कढि परदा हारे ॥
पिछवारै दर खुले बाग जल शोभा दरसै ।
मंदर मदन निवास तहां अद्भुत छबि सरसै ॥
मादिक सुमन सुगंध जल बीरी नकुल जलूस ।
मणिमय पात्र सरोज रचि समैदान फानूस ॥
समैदान फानूस जगै लगि अद्भुत सोभा ।
पलिका मणिमय सुमन सेज छबि लखि दग लोभा ॥
तापर सैन बिलास रचिय रिझवार मनोहर ।
सीतल मन्द सुगंध पवन परसत तन रुचिपर ॥
परदा बाहर महल तिहिं, सखी टहल आधीन ।
नूपुर किंकन धुन मधुर सुन मन हरन प्रवीन ॥
सुन मन हरन प्रवीन मन्द वाजित्र बजावत ।
तानन तान वितान मान रुचि रहसि रचावत ॥
अति चातुर्जन भेव कहत केउ प्रेम पहेली ।
चरचा चहुलन सुगल मनोहर रहसि नवेली ॥
केउ चरचा कबि तर्कसों कहही निज चित लागि ।
अन उतरन मतवार कै उमड़ि उझल अनुरागि ॥
उमड़ि ऊझल अनुराग थाग कछु तिहिं नहिं आवत ।
बिबस गता गति मुखहि उररि उर की उफनावत ॥
तातै निज निज मिलत बात बीती मतवारै ।
पुन अनुभव रचि भिदत ख्याल छकि तानन गावै ॥
बानि पलट मतवार बसि भिदी कहन कै काज ।

इक बोली मत दुहुन के स्यौखी गजब रिवाज ॥
स्यौखी गजब रिवाज चस्म बे दरद अमाने ।
कवल पखड़ियौ म्यान मढेधा कर्द छिपाने ॥
इक बोली रो कर्द करै कतलान सु अदलै ।
अछक गरुरी मस्त लगै बेजरब हि बदलै ॥
इक बोली निज बदल पै कहा रही री बीर ।
हुनर फिरंगी खंजरन बरषे चहुँ दिशि तीर ॥
बरषे चहुँ दिशि तीर सबहि मन मृग किय घायल ।
बेबस की गति घून कढत ससि की ह्वै मायल ॥
इक बोली मृग जेर अपुन मन कहा गननि है ।
दुहूं ओर बरजोर तहां की अजब बननि है ॥
चूर चूर चित गौल है जूटत हर बल सैन ।
मुद्दिय लगयौं लाज गढ महि पति मुद्दिय मैन ॥
महि पति मुद्दिय मैन सदन पिय मन मुत सद्दिय ।
लग्यौ प्रिया पुररूप नगर लहि हद्द बिहद्दिय ॥
दग हरोल समुहीय सैन दुहु दिशि भट जूटहि ।
रण रसधाई भूम मंडि पलि पगन अजूटहि ॥
घाय बिबस सरदार दुहु लगन अचूकै चोट ।
हुद्दिय अति गति लहन लहि गढई दुरि गढि ओट ॥
गढई दुरि गढ ओट बिथाकर गोपि गरूरै ।
रहत दुहू यहि बान आन सुध नाहिन सूरै ॥
इक बोलीरी सुधज आन की कहा बिचारन ।
यहि जु जंग की जीत अपुन पै सुध सब हारन ॥
उत लोभन छोभन इतै जब सरसै बढवार ।
तब तोरन को लाज गढ़ गहत निहोरन हार ॥
गहत निहोरन हार तबै जीतन जु लाह है ।
पुनि गढई गढ सजत तहां जय तै उ लाह है ॥
सुनत यहै कछु समय भेव ढाढन तहां पायौ ।
पन्ना नजर मिलाय रंग लहरन लै गायौ ॥
गायन है पुनि अवर लिय तब भीतर परदान ।
पिय अवाज मधुरै दई यही यही नहिं आन ॥

यही यही नहिं आन रंग भर ढाढनि गाई। जब लगि बैठे सेज सिथल सोभा सरसाये॥
पुन भीतर कै भेव किहू कछु लखो न पाई॥ दर्पन सखी दिखाय परस पै बदन निहारन।
जुगल लगन चित पगन मगन प्रेमासब पूरत। तामहि दम्पति लखन छकन निज छबि अनपारन॥
ध्यान भाव सब रचत सखीगन ह्वै मन मूरत॥ विरहाने निकसे जगे सर बरसा ते मैन।
दुहु पोढत लहि नींद महि घरी चार निस जान। बिहँस दुराने परस पै रहस भुलाने सैन॥
ललितादिक पौढी करत ढाढनि ओलग गान॥ रहस भुलाने सैन घुरन अध खुली सुपल कै।
ढाढनि ओलग गान करत तहां औरहु जागै। निस बिनोद सुध आन दुहू दिस दग छबि छलकै॥
ढोलकि मंद टकोर लाय कोउ ललित अथागै॥ इत सतरौही ढुरन मुरन छकि कहर बितावन।
कोउ घुँघरू मुहचंग लिये मन हरन बजावैं। उत उररौही जुरन घुरन सुध चितय चितावन॥
कोउ अनुभव रचि केउ सरस तानन रचि गावैं॥ दर्पन अर्पन चतुर चख चितवन बिबिध बिलास।
ललितादिक पोढी तिनन केउ केउ चापत चर्न। लखि छकि सखियन भय लह्यो दिनकर होनप्रकाश॥
केउ केउ प्रात बिहार पुनि अगम कहत मन हर्न॥ दिनकर होन प्रकाश संकि सखियन सम्हराये।
अगम कहत मन हर्न अरी दुहु बेग जगै है। परदा दये उठाय सबन दग दरस लुभाये॥
रसिक रहसि मतवारि नींद भरि बेर लगैहै॥ चलन ग्रेह को कहत सखीबर अखर अभावन।
मात पिता परवार जगन पहले ग्रह चलि है। उठत प्रिया पिय नींद बिवस ह्वै झुक लपटावन॥
पै रंभा लहिहै जु पसमसी छबितन रलि है॥ झिझक कुंवरि सतराय तब उठ पिय दिय गरिबाहि।
उततै गौधन प्रातही लैकै सखा उमंग। चलन कहत तिह मुख लखन उत्तर दियो न जाहि॥
इत अैहै तब रसिक बर उन महि मिल निज बंग॥ उत्तर दियो न जाहि रंकतै जनु निध हरहीं।
उन महि मिल निज बंग बिपुन संकेतहि जैहै। अैट पैट ह्वै चलित थकित गति पायन परहीं॥
रोज सुमति पै जात तहां रलि रंग बढ़ै है॥ अकथ कथा यह बिथा लखन मै नैंक बिसारत।
अैसे बातन करत भई भुर हरी सु बिरियां। प्यारी निध लोभी सुपाय ज्यों दग नहिं टारत॥
सुनि पंछी गन बान सखी सब जग उठि घिरियां॥ पैडु पैडु चलि रुकित तब सुधि दै सखी सभार।
गावत भई बिभास तब सुघर बजित्र बजात। मनु मंतग अडिदार को लिये जात मड़िदार॥
ललित मनोहर तान लै पौढ़ै दुहुन जगात॥ लिये जात मड़िदार दुरद त्यौं चहुँ दिशि सखिया।
पौढ़ै दुहुन जगात रचत चातुर्ज नवीनै। ह्वै कठोर बिछुरान कहत चाहत सुख लखिया॥
श्रवन परत तिह भनक जगैं दम्पति रंग भीनै॥ उतर अटा तै मध्य महल यहि बिध निठ आऐ।
अरसाने निस जगन लगन सर मैन रसीले। पुनि तर हरि जुहि ठोर और तहँ ते पधराये॥
बोलत मधुरे बैन अखर आधै उन मीले॥ ललित लपेटा लाल उत पीताम्बर छबि अंग।
अति प्रवीन ललितादि सखि आज्ञा जान सुजान। इत झीनी भीनी तनहि चूनरि अरुन सुरंग॥
भीतर परदन कै किती प्रेमावेशित आन॥ चूनरि अरुन सुरंग सनी अति अद्भुत दरसै।
प्रेमा-वेसित आन बसन भूषन सम्हराये। लटपटान अरसान दुहुनि शोभा निध सरसै॥

भूषन मणि मुक्तान सिथल मरगजे सुमुमननि ।
रतनारे दृगबान चढे मनु सान नींद सनि ॥
अलक खुटी भौंहैं जुटी छुटन घुटी मुसक्यान ।
तुटी माल सुधि गति लुटी रंग जंग सरसान ॥
रंग जंग सरसान बान लखि सखी निसानी ।
छकी थकी सम्हरान कठिन सम्हरन न परानी ॥
हेर भुरहरी बेर बाग सोभा छबि दंपति ।
चहत लुभानी लाह लोभ रहसनि सुख संपति ॥

॥ ललिता जू बचन दोहा ॥

श्रीलललिता गहि कर कहत प्रेम छकि भर पूर ।
अरी घर बसी जात कित मेरे चित को चूर ॥
मेरे चित को चूर चली हो जान न दैहौं ।
यहै समय यह सोभ लहन छबि लाह झुलैहौं ॥
रसिक सिरोमन स्याम मनहि मानी निज जीकी ।
कहत भये हँसि अहा कही नीकी जू नीकी ॥
दिये जुगल गर बांहि तब चातुर चले लुभाय ।
सिंहासन हिंडेल पै दुहू बिराजे आय ॥
दुहू बिराजे आय महा मन मौज लुभाये ।
सखिगन चतुर झुलात गान रंगन सरसाये ॥
यह जु भुर हरी बेर बाग हिंडोरहि सोभा ।
यह अद्भुत छबि जुगल सुगल रहसनि दृगलोभा ॥
चरचा चतुरन चावकौ गात ख्याल रिझवार ।

॥ सो ख्याल ॥

मनहि मोहनी चित चढी लौनी साँवरि नारि ॥
लौनी साँवरि नारि मंत्र कछु पढ़ि २ डारचो ।
करि जु बावरी गई अरी गति मति वटि पारचो ॥
सुनि बोली हँसि कुँवरि जान खूननि नहिं दीजै ।
खरखो बागहि बंध करौ वह हेर गहीजै ॥

॥ श्री प्रिया बचन दोहा ॥

मुसिक रसिक बर कहत तब नीकी यही सलाह ।
अबहीं गहि रोकहु इहां जिन चूकहु चितचाह ॥

॥ कबि बचन ॥

जिन चूकहु चित चाह कही पिय तबै पियारी ।

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

हँसि बोली वह चौर छछंदनि अति गुनगारी ॥
घर घर की मिजमान गही रहिहै सो किह पै ।
सबन गहत निज फंद मोहनी जार सु तिहि पै ॥

॥ ललिताजू बचन दोहा ॥

ललिता बोली कौवही अब लख चपल तुरंग ।
बाँधे पंकज कै कली छुटहि न काहू बंग ॥
छुटहि न काहू बंग यहां वह जरे मोहनी ।
सुमन माल इत अटक लखौ कित जाय पौहनी ॥
लक्षिन खूननि चोरि लहि जु तुम कही कि गहिये ।
हौकर कर हिमहाउ दयों गुन फल तब चहिये ॥
वाही कै खूनन जु मन घूमत घाय अघाय ।
अरु चित चोरचो ताहि गहि पलटा लेहि दबाय ॥
पलटा लेहिं दबाय तबै ग्रह जान सु दीजै ।

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

यह सुनि बोली कुंवरि अरी हां यही जु कीजै ॥

॥ ललिताजू बचन ॥

ललिताजू तब कही सुनौ वह चोर कहावै ।
आज्ञा बिन श्री भान राय कै जो छिप आवै ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

हँसि ललिता जुउ तबै गहि पीतांबर छोर ।
चोर गहाये कुंवरि को समुष भुरे करजोर ॥
समुख भुरे कर जोर तहां प्यारी सकुचानी ।

॥ ललिताजू बचन दोहा ॥

ललिताजू तब कहत भई यह अब नब दानी ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

झुकिलन ललिता श्रवन कह्यो प्यारी मुसिक्यावत ।
चोर छछुंदी दीठि यहै कर काकै आवत ॥

नहि गहाय हिय तुम सु अब तापै यही उपाव ।
बाबा कीसों सुहि ठगी लैहौं अपनो दाव ॥

॥ कबि बचन ॥

लैहौं अपनो दांव कहि जु लै सुमनन माला ॥
गरतैं कर धरि करन जुरन लपटाय रसाला ।
एक ओर गहि छोर कहत चित देहु बिरानो ॥
कहन गहन यह चहन लेत पलटै मनमानो ।
बाधन मैं बधि श्याम श्य मन मन करि करि मांहि ॥

॥ ललिता जू बचन ॥

हँसि ललिताजू कहत अब कौन चोर को साहि ।
कौन चोर को साहि लखे दुहु दिशि गुन पूरन ॥
अबै रहौ चपि जुगल सुगल यह मोसन चूरन ।

॥ कबि बचन ॥

मुरि मुसिक्यायसु कुंवरि माल दिय डारि छोरिकै ।
छके परसपर चाहि चतुर चित चोरि चोरिकै ॥
उत ग्रह अति प्रातहि जगी रंभाजू यहि चाहि ।
निज किंकनवा गहि पठय दंपति सोध मगाय ॥
दंपति सोध मगाय सुनी दुहु झूलन आये ।
लखि लखि सोभा बाग दिये गरि बाहि लुभाये ॥
रंभा जू तब आय जहां श्री कीरति रानी ।
कहत भई निस बात गोपि प्रेमासव सानी ॥
प्रातहु की सुधि सुनत अब उमग प्रेम चितचाह ।
रानीजू बागहि चली लेन गोपि दृग लाह ॥
लेन गोपि दृग लाह मात भावज केउ गुरजन ।
आय बाग बट भाग लखत लहि महा मोदमन ॥
लता रंध्र संकुलित बीच ह्वै मुदित निहारै ।
गति मति प्रेमा-नन्द मगन सुध तन न सँभारै ॥
रीझ रीझ तोरत त्रनहि टारन भूषन वार ।
श्रीरानी कीरत कह्यो जसुमति भागि अपार ॥

॥ माता बचन ॥

जसुमति भागि अपार कह्यो श्रीकीरतरानी ।

॥ श्रीभावज बचन ॥

हँसि बोली रंभाजु कृपा यह सब बरसानी ॥

॥ कबि बचन ॥

इनतें ही लखि सुमन माल केलिन छबि दोही ।

॥ श्रीमाता बचन ॥

रानीजू हँसि कहत करत का यह लरि-कोही ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

बलिहार श्री कीर्ति की छिप्रनि पंगा नाम ।
जन्म कान्यका वृद्ध बय सावधान कृत धाम ॥
सावधान कृत धाम रहसि सम्भन मति भोरी ।
तिनहु लखे कर श्याम कुंवरि बाधे हैं चोरी ॥

॥ सास पंगा बचन ॥

श्रीकीरति पै आय कोपसों अति झुंझलाई ।
कहन भई तैं अहा पुत्र का भलो पठाई ॥
अति ही लाड चढ़ाय के सुता दई बोराय ।
चोरी दै बाधत पति हि तु लख हसत सिहाय ॥
तू लखि हंसत सिहाय अहा तब का सिख दैहै ।
वह भूली हित बंत कंत नहि कबहु छितैहै ॥
बे वहु नायक छैल चली यह कित मत भोरी ।
कहूं सुनो है रीत पतिहि बांधत दै चोरी ॥
लयौ राज घर जन्म पै इती समझ नहि सूर ।
सुनि २ याके चरित नित पकत हृदय मो पूर ॥
पकत हृदय मोपूर भांति भांतिन समुझावत ।
बिगरे लक्षिन सबै याहि उर सूरन आवत ॥
ऐसीही सब संग खिलारैं काउ न जैहै ।
रोमइया जू लखत हँसत कबहूं पछितैहै ॥

॥ रंभाजू बचन ॥

रंभाजू गहि याहि कर ह्वै हित की बतराय ।
कहतजू मइया अव रहौ मिल कहि है ग्रह जाय ॥
मिल कहि है ग्रह जाय इकोंही सीख सला है ।
बहुरि जु मानहिं नाहिं ततौ मुखमाय जुरा है ॥

॥ श्रीमाता बचन ॥

श्रीकीरत मुसिक्याय कह्यौ कहियो मन भाई ।
पै मेरो जिन नाम लेहु वे लखन जू आई ॥
रंभा जू निज मेल करि राखी यह समझाय ।
इत प्यारी भुर हरिय तें लखि प्रकास अधिकाय ॥

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

लखि प्रकास अधिकाय कहत चक चितय सु अैसे ।
उत जगि है गुरजन जु तबै ग्रह चलिहैं कैसे ॥

॥ ललिता बचन ॥

ललिता जू कहि कहा सोच नीकैं लै जैहौं ।
लही मौज ये अबै पटुरिया टोर झुलै हौं ॥

॥ कवि बचन ॥

यह सुनि प्रिया हिंडोर तै उतरत उतरे स्याम ।
पटुरी झूला दिस चले चूरत मद रति काम ॥
चूरत मद रति काम चले दुहु दै गरबांही ।
सहचरि संग समाज सवै अति छबि सरसाही ॥
चरन धरत गति गज गरूर चूरत तहां चलितैं ।
अंग अंग माधुर्ज पर्म प्रेमासब ललितैं ॥
आय दुहू झूलन इतैं अद्भुत रहस हिंडोर ।
झमक पटुरिया पै चढ़ी प्यारी पिय चितचोर ॥
प्यारी पिय चित चोर रमक दै टोर चलाई ।
छुटि अंचर कटि चलन मचन अंगन छबि छाई ॥
बेनी भूषन सिथल बसन फरहरन झकेरिन ।
लखि पिय गति मति थकित बधें द्दग लहरै डोरिन ॥
प्रेम सिंधु लहरै कहर उमडि छिलीवै नोन ।

॥ पिय बचन ॥

बोले पिय तन प्रान हैं संगहि राई लोन ॥

॥ कबि बचन ॥

संगहि राई लोन होन कहि भूखन बारत ।
सहचरि करि नोछार माल मुक्तान उछारत ॥
नवल नेह तब आन सामुहे लोन उतारचो ।
बार नीर चहुँ ओर डारि पुन निज मुख धारचो ॥
दिष्ट लगन कहि इहि दयो रसिक कुंवर कर आन ।
इनलै जल अरु लोन कन करचो पान निजपान ॥
करचो पान निज पान लख जु प्यारी झुंझलानी ।
झूलत थाँभि झकोर पटुरितै उतरि परानी ॥
इतनै ही सब ग्वाल लिये गोधन इत आये ।
सैन बैन मैं टेर रसिक बर कुंवर बुलाये ॥
अैचत प्रानन सीस बन आई धुन दुखदान ।
कुंवरि चली ग्रह पिय चले खिरकी लौं पहुँचान ॥
खिरकी लौं पहुँचान चले पिय प्यारी संगहि ।
दीनै दुहु गरबांहि करत सब द्दग गति पंगहि ॥
निज २ टहलन सोंज लिये सहचरि गन आवत ।
लिये तबूरा खड़ी अगोही ढाढनि गावत ॥

॥ ख्याल ॥

ओलंभो देस्यां नहीं म्हे इण चाल्लौ चाव ।
मन बस करि लीनौपना लेस्यां पलटै दाव ॥

॥ पिय बचन ॥

लेस्यां पलटै दाव कह्यो सुनि रसिक पियारै ।
तन मन सर्बस पेस इहां दै पितर जुहारै ॥

॥ कबि बचन ॥

इहि बिधि आवत लखे इतै श्री कीरत रानी ।
कियो गवन मिल भवन लखत ही जे छिपि छानी ॥
प्रेम छकन मिल द्दगज कन थकित चलन गति पाय ।
मिलन ठाम संकेत पुनि निठ खिरकी लौ आय ॥
निठ खिरकी लौ आय खरे थकि बदन निहारै ।
को सिख लैहि रु दैं हि कौन किहि सुध गत हारै ॥

॥ ललिताजू बचन ॥

श्रीललिताजू कहत भई क्यों दिवस चढावत ।
सब जगि हैं तो कहहिं बेर यहि किततें आवत ॥
प्यारी चलिये गेह पिय मिलि पै ग्वारन माहि ।
नित कृत करि येऊ इतै श्रीजसुमति पै आहि ॥

श्रीजसुमति पै आंहि तबै संकेतहिं ल्याओ।
बेगहि दुहुन मिलाहु तहां कछु रीझहि पाओ।।
।। कबि बचन ।।
सुनत कुंवर इत चली ग्रेह ललिताजू कर गहि।
निकट बाग तैं कढत मिले एऊ ग्वारन महि।।
।। सखा बचन ।।
मन के लूके लूनि पुनि ग्वार हँसे लख आत।
कहत मुबारख सुर कृपा रातीजग जगिजात ।।
राती जग जगि जात अहा फल पूरन पाऐ।
लहि तिहि छाप प्रताप अन्य नित प्रगट लखाऐ।।
।। श्री कृष्ण बचन ।।
बोले रसिक सुजान करत अब हँसि हँसि मेलै।
गहे ग्रेह सब यहां छाड़ि मुहि बनहि अकेलै।।
बस्ती बागहि लहि बसे बरषा भय द्रुम छांहिं।
कहा उरहनौ देहु यह तुम बिन कौन बिताहि ।।
।। कबि बचन ।।
तुम बिन कौन बिताहि कह्यो जब रसिक छ्छंदी।
हँसे ग्वार दै तार लखत इन बातन फंदी ।।
बिवध तर्क बतरात जुक्त आनत चातुर्जन ।
हँसत हँसावत सखा स्याम आये बृन्दावन ।।
परम अलौकिक छबि बिपुन नित्यानन्द निवास ।।
तीर तरुणिजा मन हरन, भौ तहँ अरुन प्रकाश ।
भौ तहँ अरुन प्रकास कुंद अम्बुज गन बिकसे।।
तिन रसलंपट गुंज पुंज अलि जित तित निकसे।
सुभग पुलिन पर आय रसिक तहां नित कृतकीनै।।
बहुर चले संकेत संग लै सखा प्रबीनै।।
मीनकेत जय खेत नित हैं अद्भुत संकेत ।
बिरद रढत मागध पछी उद्दीपन दत लेत।।
उद्दीपन दत लेत तहां मन मोहन आऐ ।
लखत समय सोभा अपार छकि नैन लुभाऐ ।।
अरी भूम बन झूम सुमन रचनिन द्रुमझूले ।
छबि संपति लहि चोर भरे कैसे दग फूले।।
बन बिनोद तहँ सखन बिच करत कलोल उमंग।
गान बजानजु बैन कछु बिहसन बातन रंग।।
बिहसन बातन रंग कहू गरबाहिन डोलै।
कहुँ जल बिंबहि हेर बदन लखि तन छबि तोलै।।
सहु सजि भूषन सुमन कहू मिल झूलत झूलै।
मन बंछित कर बिबध केलि इहि बिध अतिफूलै ।।
अरु इत गहि ललिताजु कर कुंवरि चली निजगेह।
अछन २ पग धरत लजि जिन कोऊ लहिलेह ।।
जिन कोऊ लहि लेह भय सु नूपुर रव करही।
सरस बिहारन श्रमित सिथल गति पगन संभरही ।।
सूचत सुध चितसनी रहसि छक छबि मतवारी।
मुसिकनि बदन बिभाव घुरी अखिग्रां रतिनारी ।।
ललिताजू गरबांह इक इककर कवल फिरात।
आवत अलबेली कुंवरि चहुँदिस चमक चितात ।।
चहुँदिश चमक चितात महल निज नियरै आई।
तहां खरी मग रोकि लखि सु रंभा मुसिक्याई ।।
नजर मिलत सकुचाय कुंवरि सतराय मुरानी।
सिथलानी तहां दुरत पीठ ललिता लपटानी।।
आय गहो रंभा तहां हँसत कहत मुसिचाहि ।
।। भावज बचन ।।
चीर गहत बाधत सुने ऐहैं लक्षिन साहि ।।
ऐहैं लक्षिन साहि सबन सों बलखि बतावन।
बिवहारन निध पुंज अबहि नवला मुसिलयावन ।।
।। श्रीप्रिया बचन ।।
कहत प्रिया सतराय अरी नवला को कैसी ।।
।। भावज बचन ।।
बोली रंभा चित्र बहीं दग मंडित अैसी ।।
।। श्री प्रिया बचन दोहा ।।
कह्यो कुंवरि दगहिन सुनी बनत चित्र कहुलीक।

॥ भावज बचन ॥

रंभा बोली होत है अंजन पलटै पीक ॥

॥ कबि बचन ॥

अँजन पलटै पीक सुनत प्यारी सतरानी ।

॥ प्रिया बचन ॥

कहत जगी का कची नीद बोलत बररानी ॥

॥ भावज बचन ॥

करि रंभा बररन सु जगै अन मिल बतरावन ।
काहे को छिप चपत चोर ह्वै ग्रह को आवन ॥

॥ श्रीप्रिया बचन दोहा ॥

कुंवरि कह्यो ह्वै साहसब आई मुहि उत छाड़ि ।
मैंनहिं जानी कब गई खिरकीहू किय आड़ि ॥
खिरकीहू किय आड़ि बाग हम रही सुरातहि ।
मइया जूकै मान खिजन भय आई प्रातहि ॥

॥ भावज बचन ॥

कहि रंभा सब हीन रिझन कैसी कल खाई ।
नीकी तीज रमान रीझ नवला दै आई ॥
चलो चलो नित कृत करौ का इहिठा झकझोर ।
मइयाजू पै न्याव है साहहि डाटत चोर ॥

॥ कबि बचन ॥

साहहि डांटत चोर कहत रंभा बिहसावत ।
साथणि कामणि किया पनानै गावत आवत ॥
आय कुंवरि निज सदन किये कृत दातुन मंजन ।
बैनी सुमन सुगंध सानि रचि दिय द्दग अंजन ॥
भूषन बसन सँवारि सज अतर गुलाब लगाय ।
सुमन माल उत्तम पहिर अधर तमोल रचाय ॥
अधर तमोल रचाय रतन चौकी पर ठाढ़ी ।
सहचरिमुकर दिखात निरख निज चबि चकबाड़ी ॥
आय सुरत मन मीत चित्त संकेतहि झूलन ।
घुरन धुमारै द्दगन ध्यान मुसिकनि मुख फूलन ॥
महलन मुरकत खात इन प्रतिबिंबसु चहुँ ओर ।
जित तित लखि द्दग सबन के भरो भरे के चोर ॥
भरो भरे के चोर लखत रंभा मति छाकी ।
बोली सोध सभार दशा मन जानि प्रियाकी ॥

॥ भावज बचन ॥

लखहु भुकर मुकर हुन लही मैं सुरत सरक की ।
मइया जू पै चलहु करहु उपगार समर की ॥

॥ कबि बचन ॥

चली नँनद भावज हँसत रानी कीरत पास ।
लाज भरे द्दग लाड़िली प्रेम बिवस छबि रास ॥
प्रेम बिवस छबि रास सखिन बिच्च आवत सोहै ।
राका सिमट स्वरूप धरै उड़गन मधि कोहै ॥
आय मात ढिग किय प्रनाम मइया उर लाई ।
जननी ब्यंजन बिवध रुचित कर ओट जिमाई ॥

॥ भावज बचन दोहा ॥

दैहि कोर रानी जु तब कहि रंभा मुसिक्यात ।
रही टेवपर यह इन्हैं जैवन पर हथ आत ॥

॥ कबि बचन ॥

जैवन पर हथ आत समझि प्यारी सकुचानी ।
मन ही मन झुझराय कहत अबजैय अघानी ॥
बोली रंभा उदर तनक अति छुदा द्दगन की ।

॥ श्रीप्रिया बचन ॥

मीजत नैनन कुंवरि कहत यह बक निजुमन की ॥

॥ कबि बचन दोहा ॥

रानीजू रंभाहि दिस मुसिक कहत सतरात ।

॥ श्रीमाता बचन ॥

जैवन दै लरकनिय को काहे याहि खिजात ॥

॥ कबि बचन ॥

काहे याहि खिजात कह्यो रानीजू रिसकै ।
रंभा तब उठ चली गबावन ढाढनि मिसकै ॥
टोक इतहि उत रीझ निजहि कहि ख्याल गवावत ।
सुनत कुंवरि सकुचात मात ढिग कछु न जनावत ॥

इतै जैंय रुचि कुंवरि जल अचय सुगंधित सीत ।
लै बीरी सुखवास जुत बैठी सभा बिनीत ॥
बैठी सभा बिनीत सामु है ढाढनि गावत ।
रंभा जू कहि तबै तहां औलूज गवावत ॥

॥ ख्याल ॥

पंना थारा सोंह राज औलौंड़ी आवै ।
सुरत सरक उठि २ जु मनहि सहु समझ झुलावै ॥

॥ श्रीमाताजू बचन दोहा ॥

यह लहि श्री कीरत मुसिक कह्यो प्रिया दिस चाहि ।
लली जसोमतिजू दिवस तुम बिन कठिन बिताहि ॥
तुम बिन कठिन बिताहि पलहि पल श्रीबृजरानी ।
द्वै दिन भये बितीत मिलौ अब प्रान समानी ॥

॥ कवि बचन ॥

यौं कहि हृदय लगाय लगन भय दिष्ट बिचारयो ।
बारि आरती नीर ढार पुन लौंन उतारयो ॥
सहचरि सबहि जिमाय जिन अचय सुबासित नीर ।
बीरी लै मुख बास जुत आई प्रेम अधीर ॥
आई प्रेम अधीर सबै तहां रमकत झमकत ।
लखि श्रीकीर्त्त सिहात मनहि मन बिहसत प्रमुदित ॥
मेवा बिबिध न झोरि कुँवरि कै भरी रसालनि ।
कह्यो दीजियो जाय महरिजू को यह लालनि ॥
सब सखियन की झोरि भर मेवा बिबध सुदीन ।
हृदय लायकर शीश धरि यथा योग्य सिखकीन ॥
यथायोग्य सिख कीन बहुर पकवान मिठाई ।
मेवा ब्यंजन बिबध डलिन सामा सरसाई ॥
दियजु सखिन कर साथ कुंवरि कोमगहि जिमावन ।
गहि रंभाकर कुंवरि चली पौरहि पहुँचावन ॥
आय पौरि रंभा कियो गहि कर कुँवरि करार ।
लहि लहान को कहत पलटाइहि उपगार ॥
पलटा इहि उपगार लैन रंभा जु आतुर ।
ढाढनि कोइक ख्याल उक्त निज दयो जु चातुर ॥
कह्यो जात यहि गात दुहुन यहि बननिजु लहनी ।
झूझन गूझन खुलन ख्याल चल चाल सुगहनी ॥
पारी तै रंभाजु पुन आई अपुन निवास ।
प्यारी सखिन समाज मैं चली सास के पास ॥
चली सास के पास मार्ग संकेतहि ललिता ।
नेह मेह झर प्रेम प्रवाहन मानहु सलिता ॥
कोमल गिलम सु हरित अवनि प्रफुलित बनराई ।
लता तरुन संकुलित सघन कुँजन छबि छाई ॥
कौंध छटा फहरन ध्वजा सैंन सघन छुटि बाज ।
गरज चढाई मदन मनु आवत बंब अवाज ॥
आवत बंब अवाज पक्षि बंदी जन जाचैं ।
भृंगनि गुंजन गान मुदित मन मोर सुनाचैं ॥
यहि सोभा मन हरन लखत प्रेमासव पूरित ।
चलत कुंवरि बिच सखिन चरन कोटिन रतिचूरत ॥
जावक रंजित पद कँवल अति भूषन छबि लाग ।
परस हरित भुव उघर लसि मनु उलहत अनुराग ॥
मनु उलहन अनुराग सनी जावक भुव सोहै ।
उपमानहि त्रयलोक कहन मन हरन सु जोहै ॥
गावत हँसत कलोल केलि चहुलन सुख सरसै ।
चपल चलनतैं झुलन माल छुटि अन्चर दरसै ॥
बिबध सुनीके कुसुम लखि कोउकित कोउ कितजात ।
ल्याय सुमन ते कुँवरि को भूषन रचि पहरात ॥
भूषन रचि पहरात तहां कोउ छिप छिन वारी ।
इस्क पेव की माल हँसत प्यारी गरडारी ॥
कहत तिहारे परी गरै यह अति छबि सरसै ।
याही सनि घनस्याम सोभ नव रंगन बरसै ॥
चरचा चतुरन चहुल मैं नियरी निकसी आन ।
कछुक दूर तै हग परे झूलत रसिक सुजान ॥
झूलत रसिक सुजान लखत ऐ खरी छिपौही ।
प्यारी अंग सुवास बंधावन गई अगौही ॥

पल २ हेरत हुते मगहि सोच कि अब बरही ।
मतिवारी मकरन्द चितौनन पथिक हु परही ।।
चहुँदिस हेरन चकित चित चंचल चितवन चाहि ।
अरवरान गति मत उलहि मनकी तन दरसाहि ।।
मनकी तन दरसाहि परख मधु मंगल बोले ।
हेर कितैं हरि कितै कौन बिन दामन मोले ।।
बोले सुघर सँभार तुमहिं किहु भृमहि पठाऐ ।
मोगई याऐ चरित और गोधनन लखाऐ ।।
अब अपने गोधन अबहि करिये सोध सँभार ।
कढि जैहैं कितकी कितैं हेरहु बेग बिचार ।।
हेरहु बेग बिचार भगे सबही मिल जिततित ।
झूलत रसिक सुजान अकेले रहे तबै इत ।।
करि मचोर थिर उतर बैन लै अधरन धारी ।
उचरी धुनि कलिगान आन मिल जीवन प्यारी ।।
दरसत रस ब्याकुल बिथा बिवस दसा अकुलाय ।
हेरत चहुँदिस चकित चख टेरत बैन बजाय ।।
टेरत बैन बजाय दिष्ट आवत नहिं कितही ।
गहि सुबास मग चले लता तरु गहिबर तितही ।।
श्रीललितादिक तहां परम प्रेमासब छाई ।
हँसि रंभा कृत ख्याल टेर ढाढनिहि गवाई ।।

।। सो ख्याल दोहा ।।

उपगारा सारा गरज मेल्ला सैंणा सैंण ।
कल्ल मल्लि मोलण मनां भिल्लियां नैणा नैण ।।
भिल्लियां नैणा नैण रंग झड बाता झीणी ।
पांवां पांवां राज मांगि पलटै म्हे लीणी ।।
गहै गान धुनकांन आन पिय प्रेम छकाऐ ।
बिकल बिथा घनसार भई मन बंछित पाये ।।
चले चपल उठि चतुर तब गहै गान धुन गैल ।
मनकी उद्भवत न छबि चूरत गति सु अरैल ।।
चूरत गति सु अरैल आत कर कँवल फिरावत ।
लता सघन निरवार कढे सनमुख मुसिक्यावत ।।
नैन नैन कै मिलन बैन की रही न तागत ।
नजर नजरपै नजर जिनन छकि पल नहि लागत ।।
निकट आय गरबांह दै प्रेम पुंज सरसात ।
देखी सोभा बिपुन की रंग भरे बतरात ।।
रंग भरे बतरात झुंड सहचरि गन संगहि ।
फूलन झूलन और चले अति भरे उमँगहि ।।
सहचरि सुघर समाज दुहुनि अति रंग रचावत ।
लिये तमूरा हाथ पहेलिन ढाढनि गावत ।।
कदली दल कुसुमन बिवध रचना रची बिछांत ।
तहां आय ब्राजित बढचो घरी चार दिन प्रात ।।
घरी चार दिन प्रात चढ़त लखि सखी सयानी ।
श्रीकीरत जू दई छाक सो आन जिमानी ।।
जैंवत रहसिन रसिक दुहू प्रेमासव छावै ।
छकन थकन सहचरि सुजान पुनि २ सम्हरावै ।।
उदर अघाने मिलि दुहूँ दृग कबहू न अघाय ।
अचय सलिल पुनि परसपर बीरी जुगल जिमाय ।।
बीरी जुगल जिमाय गान चरचा रच केलैं ।
बंसी प्रिया बजात राग रागनि मति पेलैं ।।
रीझ रीझ तहां रसिक सुघर बर छकि २ घूमैं ।
प्रेमासव मतवार सनी अति रहसिनि धूमैं ।।
पुनि मेवा पकवान अरु ब्यंजन सब सरसाय ।
सखिन लयो फिर अति रह्यो दयो सखन पहुँचाय ।।
दयो सखन पहुँचाय ग्वार सब जैंय अघाने ।
इतै प्रिया पिय रहसि उमँग झूलन मन आने ।।
गावत सखी समाज जुगल मिल झूलत रहसनि ।
प्रेमासब छक पूर चतुर बतरावन बिहसनि ।।
बिवध तर्क चातुर्ज कै सहचरि रंग बढ़ात ।
कहन परत पल पल नवल प्रेम बिनोदन बात ।।

।। अथ छूटक दोहा ।।

फूलन झूलै जुगल छबि कहै बनत नहिं बैन ।
नैनन के रसना नहीं रसना के नहिं नैन ।।

श्रीजसुमति पठई जु इत छाक लिये छकिहार।
आय इहां लख छकि रही झूलत जुगल निहार॥
इतै दुहुनि कित आन सुधि मिले जु नैनन नैन।
सैनन कै बैनानि गति कहत बनै का बैन॥
लखि हारिन छकि हारिलौं छकि थकि सुधनशरीर।
उन दोही अखियन बँधन बँधी दृगनकी भीर॥
कुहक मोर कै सोर सुनि चौंकि सोध सुधि आय।
ललिताजू बोली तबै बिती दुपहरी जाय॥

॥ ललिता बचन॥

छाक पठाई महरिजू लिये खरी छकि हारि।
जेवन बेर सु टरत अब काहे करत अबारि॥

॥ कबि बचन॥

गहि हिंडोर सम्हराय दुहु झूलत तर पधराय।
छकि हारिन ब्यंजन बिवध धरेसु आगे ल्याय॥

॥ छकिहारी बचन॥

श्रीजसु सहचरि हँसि कहत निसते भयो बिहान।
सोध मँगायो महरिजू कित हैं मेरे प्रान॥

॥ श्रीकृष्ण बचन॥

कह्यो कुंवर बर बिहसि कै मइया सौं कहु जाय।
ग्वार खिलारी संग के जिन गुन कहिहौं आय॥

॥ प्रिया बचन॥

प्यारी बोली मोहि उन पठई ही बरसान।
प्रातसु आवतही बहुरि मग ठग घेरी आन॥

॥ कबि बचन॥

सुनि कै बातैं दुहुनि की हँसी सखी छकिहार।
कहत भई नीकी बनी यह सबहिन सुखसार॥
षटरस ब्यंजन छाकके दम्पति अति रुचि लीन।
जेंवत रहसित रंगसों परम प्रेम छक भीन॥
हँसत हँसावत सहचरी सुघर सुगल सरसाय।
छकिहारी सब गेह को जात भई सुख पाय॥
छुधा नसाने अचय जल दरस अघाने नाहि।
बीरी देत सु परसपर मिलत दृगन छुटि जाहि॥
सखियन कीनी आरती चले सैन अभिलाख।
बँगला सुमनन रचन को जहां कदँब कै साख॥
पंकज तम्र बिछात जहँ चतुर चितहि सुख दैन।
आय तहां किय भाव ते रहसि लुभाने सैन॥
तिह तख तरवा तरहरैं सहचरि सबै प्रबीन।
गावत हँसत हँसात रचि अद्भुत केलि नवीन॥
मन्द २ गरजत सुघन बरसन बन छबिछाय।
बूंदन परसत रहसि सुख बिलसत जुगल लुभाय॥
घरी चार पछले दिवस बिथुर घटा थकिमेह।
इत पल २ नित नवल गति रहत लगी झरनेह॥
तहँ झूलत जित तित सबै सहचरि गन सुकुंवार।
बँगलातै सोभा दुहु लखि रीझत रिझवार॥
घेर ग्वार गोधन करी सैन बैन कै गान।
चलन ग्रेह गर बांह दै उतरे रसिक सुजान॥
सीढ़िन उतरत लखि दुहुनि सिमिट सखीगन आय।
चली कुंवरि ग्रह चपल गति पिय मन संग लगाय॥
गोधन पहलस चाल है प्रिया सास पै आय।
परसे पाय सु इन सु उन लोनी हृदै लगाय॥
मात और तै झीर लै दई सास कै झोर।
श्रीकीरत दिस की सखिन बरनी बिनय निहोर॥

॥ जसोमति बचन॥

श्रीजसुमति लखि २ प्रिया बोली उमँग उचार।
मो कान्हरकै भागि यह बरसाने ससुरार॥

॥ कबि बचन॥

कछुक बेर पिछवार तब परी श्रवन धुनि बैन।
चली पौर सुनदौर लै सखी मनौ रति सैन॥
लै बलाय उरलाय सुत बारि आरती नीर।
गौरज झारी बदन तैं कर धर अंचर चीर॥
मंगल गान सु मन हरन करही सखी समाज।
तहँ प्यारी घूंघट किये छबि निध लाज जिहाज॥

झमक मिले दृग दुहुन के रुके न झीने चीर ।
हलकी फौज हरोल मनु परी गोल पर भीर ।।
रूप धार दुहु नेह निध छवि तरंग की झोक ।
प्रेमप्यास अति परस पै नैनन ही भरि ओक ।।
प्रेम गैल बिच रूपकी खवा खसी लहि पूर ।
अखियन गति मति बापुरी भई जात है चूर ।।
श्रीजसु बहुरी सदन को खरक और बृजचन्द ।
गो दोहन मोहन जु कर आय जहां श्रीनन्द ।।
घरी चारि निस जात पुनि आए मातहि पास ।
परम प्रेम आनन्द घन बरखत तहां प्रकाश ।।
षटरस ब्यंजन अति रुचित श्रीजसु जुगल जिमाय ।
जल अचाय बीरी सु दै करी आरती ल्याय ।।
सहु सखियन भोजन बिवध गये सु अति रुचि पाय ।
अचय सलिल बीरी जु लै सबहि कुंवरि ढिग आय ।।
लहि अथाह दृग लाह श्री बृजरानी सुखरास ।
उर लगाय सुत को बहुरि पठऐ सैन निवास ।।
कछुक बेर रहि पुनि प्रिया आग्या सासुहि पाय ।
आई पौढ़न निज महल जहां रसिक सुखदाय ।।
परम प्रेम सुगलन ललित खुलत रहस किय सैन ।
परदा बाहर सब सखी चातुर पहरै रैन ।।
रैन बिनोद बिहार पुनि प्रात बिहार अनंत ।
सदन कुंजबन जमुन तट गोवर्द्धन परजन्त ।।
बंसीबट संकेत पुनि खोर साँकरी ओर ।
जुगलकुंड वन उपवनन नितनव रति चित चोर ।।
नंदी सुर बरसान है नव नव नित्त बिहार ।
बिविध अलौकिक घटि रितन अद्भुत प्रेम प्रकार ।।
तीज सावनी प्रथम जब यहि बिध किय बरसान ।
तब ठांठां नित नवल रुचि दुहु झूले दिन आन ।।
तीज द्वितिय जसुमति रचिय निज आंगन सरसाय ।
फरस फरूस जलूस अति झूला बिबध रचाय ।।
न्यौति बुलाई श्रीमहरि निज कुटंबनी नारि ।
और सबहि गोपांगनां आई उमँग अपारि ।।
कोटि रमासी भीर तहँ जसुमति आंगन भौन ।
गावत हँसत कलोल रचि अति उमँग सरसौन ।।
मादिक सुमन सुगंध अरु अतर पान मुखबास ।
बटै घाँन के घाँन जहां बिलसै रचै बिलास ।।
श्रीजसुमति निज बधुहि कै निजकर रचि सिंगार ।
मणि मुक्ता झोरीन भरि बारत देत उछार ।।
उत बृजपति निज कुंवरको अति सिंगार सजाय ।
झूलत देखन जुगल छबि अधिक चोप सरसाय ।।
दुरि देखत बृजराज तहँ झूलत चहुलन सोभ ।
रूपगुनन आगर सुगल लखि छकि ह्वै दृग लोभ ।।
महल महा आंगन इतै रचना कही न जाहि ।
जैसी कहूँ त्रिलोक मैं लखी पुरंदर नाँहि ।।
सास संग तहँ श्रीप्रिया रमन तीज कै चौप ।
हँसत हँसावत सबन उर बढ़त प्रेम की कौप ।।

॥ कवित्त ॥

बोलि कै जिठानी दिवरानी श्रीबृजेसुरीजु,
गोपन कुंवारी औ दुलारी सब संगलै ।
आंगन उदार ठौर ठौरहि बिबिध झूलै,
झूलत झुलावत लडखत उमँग लै ।।
हँसहि हँसावै सबै मोद सरसावै,
अति चहुला मचावै छबि छावै यहि वंगलै ।
रहसि रचावै पिय नावहि लिवावै,
तहां झुक झुझलावै मुसिक्यावै कहैं रंगलै ।।

॥ दोहा ॥

श्रीप्यारी झूलत तहां नांव लिवावन हारि ।
लखि लजान सिथलान इन त्रन तोरत थुथकार ।।

॥ कवित्त ॥

जित तित झूलैं सब गोपिका समूह,
झंड झमक झकोरन की सोभासरसावहीं ।

पटुरीकी डोरन हिलोरन द्रुमन मानों,
अछुरी दै चटा भौर ओट घन आवहीं ।।
केउ चवपालन चलन सुर रमनी ज्यों,
रीझ तीज रमन बिमानन पै धावहीं ।
फिरकी कै फिरतै घिरत दृग संग,
रूपजाल चक्कपरि फिरन न पावहीं ।।

।। दोहा ।।

बृजरानी झूलत जहां सिंहासन छबि पाय ।
निर्त गान वाजित्र कै महारंग सरसाय ।।

।। श्रीउपनंद रानी बचन कवित्त ।।

बोली नंदरानी जू सों रानी उपनन्दजू की,
सुनहु सयानी सुजानी सब भाय कै ।
झूली सबै झूली अबै लालन बुलैहौ कबै,
तीज लाह लीजै संग जुगल झुलायकै ।।
ब्रज उजियारी मेरे प्रानन अधारी राधा,
आज हरे बाधा यह जोग बन्यो आयकै ।
प्रेम लाज उरझन मैं दोऊ मिलै गुरजन मैं,
देखैरी अलेखै सुख रंग सरसाय कै ।।

।। श्रीरानी जसोमत बचन दोहा ।।

सुनत जिठानी बचन यौं बृजरानी मुसिक्याय ।
कहत सबै बिवहार हैं तुमहीं आज्ञा पाय ।।

।। कबि बचन कवित्त ।।

किंकर बृधानी तब टेरि उपनन्द रानी,
प्रेम सरसानी कह्यो लालन को लाइये ।
आज्ञा यह पाय आय आली मन मोहन पै,
कहत बुलाऐ चलौ तीजहि रमाइये ।।
चातुर चकोर चखचंद मुख ध्यान आन,
नाऐ दृग देखि कहैं काहे को लजाइये ।
बाँह गहि आने आन बोली सकुचाने,
ऐतो अति सिथलाने आज हृदय लगाइये ।।

।। दोहा ।।

गुरजन सबै बुलाय लै त्रन तोरत थुथकार ।
जिहि छबि दृग जाके परै रहै तही गतिहार ।।

।। कवित्त ।।

गुरजन देखै सोतों सरबस प्रान लेखै,
बांछितता भाव भीरै बोलन बखाने पै ।
प्यारी लै दुकूल झीनै घूँघट कै ओट चख,
झमक चितौन चले झुके सकुचाने पै ।।
गोपी नित नेम प्रेमसानी भूल झूलन को,
कुटिल कटाक्ष दृग चलत छकाने पै ।
नैनन के बान चहु ओर ते अचूक छुटि,
बरखझारी ह्वै मन मोहन निसाने पै ।।

।। दोहा ।।

कुल संघट की लाज गढ दृग अहि डासु चलात ।
चतुर चौर चहुँ और तें चित चुराय लै जात ।।

।। कवित्त ।।

झूले तें उतर बृजरानी महिरानी सबै,
बैठक जो ठानी तहां ब्राजै आय छबि सों ।
लालहि लडावे प्रेम छाबै बतरावै,
जब लाडलडकीले गर लागै ढिग सब सों ।।
आन कान लगि बूझै भावज सुजान जान,
अति लडकाने भोरे बारे अैसे कबसों ।
घँघट कै घेरै गति बैरन को सुनै है इत,
ऊत रन देहु का ह्वै दानवै लाज दबसों ।।

।। दोहा ।।

कुल नातै भावज तबै गुरजन आज्ञा पाय ।
रसिक बांह गहि लै चली जुगल झुलावन चाय ।।

।। कबित्त ।।

सामुहै लखत हिये हरष समात नाहि,
गुरुजन जन्म लाह मानो मोद छाई है ।

नँनदै पठाई उत प्यारी गहि ल्याई,
इत घृघत लै आवन लजान सरसाई है ॥
दोऊ दिस मिस जु बनान बतरान हठि,
ठठिकन ठान आन सबन छकाई है।
कहै भवजाई श्याम अन गनही ठनगन पै,
बनी मन भाई काहे रसना नटाई है ॥

॥ दोहा ॥

सिंघासन हींडोरि ढिग किय ठाढ़े दुहु आन।
लाजन बिद्या मोहनी सर अचूक बरखान ॥

॥ कबित्त ॥

भावज धकावै श्याम झूलन चढ़ावै,
ऐतो भय अति पावै कहै कैसे झूलियत है।
गहि नियरावै इत ननदी लडैती तहां,
द्दगन तुला ह्वै नाहै चाहै तूलियतु है ॥
हठि नभिरामै आनै गाहक दलाल जैसे,
झीने पट झूमैं प्रेम धूमैं खूलियतु है ॥
मदन भुवाल कुतवाल झूला चौतरे पै,
घूँघट कै झोलै बिन मोलै मूलियतु है।

॥ दोहा ॥

सौंहन सों जोरैं जुगल सिंघासन बैठार।
श्रीजसु सखा झुलावहीं लखत सबै रिझबार ॥

॥ कबित्त ॥

सांकरे सिंघासन पै राजै छबि छाजै दोउ,
बसन बचावै निहुरावै सतरान में।
झूलन झकोरन कै झोकन परस अंग,
नंगन ज्यों चौकें रंग सम्हरन बान में ॥
बरुनी की ढरुन रुकन कतरानी चलि,
लोभ ललकानी सानी मृदु मुसिकान में।
घूँघट पै चोटैं छिप करते परत जोटैं,
मारै बरछान ऐ चितौनें तिरछान में ॥

॥ दोहा ॥

लखि लखि गुरजन हरष उर त्रन तोरत थुथिकार।
मणि मुक्ता हलिवारि कै चहुँदिस बरष अपार ॥

॥ कबित्त ॥

प्रेम मतवारी वृजबास रिझवारी,
सब लखत बिहारी छबि लाजन की छलकै।
केऊ मुसिक्यावै द्दग भौंहन नचावैं,
बतरावन सुनावैं तर्क चातुरके रलकै ॥
गावै सरसावै रंग कोरन कटाछि बंगरति,
मति पंग ह्वै निहारै अंग ललकै।
रसिक सुजानजूके लोचन अचूक बान,
बहत दुसारे वे घुमारे मुरि पलकै ॥
मदन अनी उमड़न बनी गुरुजन गनतै ओट,
नैन बैन चातुर्ज की कहत अचूकै चोट।

॥ ब्रजगोपीगन वचन कवित्त ॥

कोऊ लैकै इंदोबर नील औ अरुन जोरै,
कहत अहाहा कैसो बानक है लहिये।
कोऊ कहै लौन करै बोलीरी सवासनीन,
कोऊ कहै चित्र लिख लोजिये अबै हिये ॥
कोऊ कहै अंगी ह्वै अनंगी आयो नंदजूके,
कोऊ कहै ध्यान हिये या छिन को गहिये।
कोऊ कहै अर्जुन के बान चढ़े सान द्दग,
कोऊ कहै सामुहैं मुकर गहे रहिये ॥

॥ दोहा ॥

कहत सु हुनर फिरंग के भरे अपारहि अंग।
भई चौकरी चंद लखि का कहिये मतिपंग ॥

॥ कबित्त ॥

कोऊ कहै रोकै पल पल हू न लागी आली,
हियहि बिचार देखौ अचरज मैं मनहै।
अर्जुन के बानन तैं बान ये अनोखे जानो,
गंज्यौं इन जग जेता धनबी अतनहै ॥

पारथ द्रब्यि औ सुलभ हू कै मन लोरी,
तारन की गनना कहन कापै बनहै।
ऐसे अन गनहू सो सुनिगन राखे गनि,
लखि रोग नैन जाहि कैसे ठनगलहैं ।।

॥ कवि वचन दोहा ॥

बतरावन गोपीन की सुनि सुनि रसिक सुजान।
आय छैलता फैल सुधि खिलत मधुर मुसिक्यान ।।
तबही आगम सांझ कै बहुरी गोधन बृन्द।
नियरी ग्वारन बैन सुन चलन चहे बृजचन्द ।।
गोधन आवत जान सब मंगल गान उचार।
श्रीजसु कीनी आरती जोरें जुगुल निहार ।।
तिहि छिन दम्पति छबि लखत सब दृग रहे लुभाय।
चलत आरती चित भये रूप आरती छाय ।।
पुनि आतुर झूलत उतर गुरुजन आग्या पाय।
चले चपल गति खरक को रसिक दुहावन गाय ।।
इत प्यारीहू उतर कै लीनै पिय चितचोर।
आई जित तित गोपिका झूलै बिबधन ओर ।।
रुचि रुचि झूलन झूलही ग.वत हँसत हँसात।
तहां प्रिया मिलतैं सबैं खिली प्रेम सरसात ।।
लखि लखि ब्रजवासी मुदित कहत सिहाय अपार।
यह गुरुजन को भागि है सानकूल करतार ।।
गुरुजन सबै कुटम्बनी प्रेमानन्द उमंग।
लखि लखि वारत प्रान निज फूल समात न अँग ।।
चिरागान मजलस मही ह्वै जगमगल प्रकास।
दूर दूरलौ तिहि प्रभा कछु कछु मन्द उजास ।।
बिसा तिमरके समय तब बनी जु नेहिन बात।
इत प्रकास चिक चौधितै उतकी दिष्ट न आत ।।
गोदोहन मोहन जुकर छिप आये इन ओर।
जितै रमत ही लाडिली रसिक चतुर चितचोर ।।
परछांही द्रुम लतन कै कहु झूलन के ओट।
प्रियासंग गोपांगना तहां मिलै हित जोट ।।
अँधियारै पाईजु निध प्यारी प्रान समान।
दृगमूंदे औचक गही पीछावरि पिय आन ।।
चौकि झमक कर गहि हँसी चोरी चतुर पिछान।
छबि निध लोभी भुजन भरि तब लीनो उरसान ।।
मधि नायक प्यारी प्रिया बैठे बिच बृजबाल।
छिप मिलबो नेहीन कै परम प्रेम को जाल ।।
कुल कपाट आड़न जिन सु लखत न रस दिन रात।
सो राधा संगहि लह्यो हिल मिल सुख सरसात ।।
मिले खिले रहसिन रले दरसन परसन अँग।
रहसि बिहसि बतरान तहँ उद्भव रंग अनंग ।।
बिबिध बिहार अपार सुख सबहिन बंछित पाय।
रास समय जैसे लहे निज निज प्रेम प्रभाय ।।
कहुँ झूलत मिल संग में कहुँ गहि डोर झुलात।
कहु गरबांही दै फिरत कहु इकन्त चलिजात ।।
जेती सबै बृजांगना तिते रूप किय स्याम।
करत बिहार सु पिय लहे निज निज ढिग सब भाम।।
रसिक चतुर निज रूप ते गंजत कोटि अनंग।
प्रेम पके गति मति छके प्रान बल्लभा संग ।।
कछुक निसा बितई भयो ससि प्रकास सरसाय।
राका छाका परस पै लोचन रहे लुभाय ।।
प्रेमरसासव सिंधु की लहरैं दुहु ऊर छाय।
बिसर अपन पै परस पर पलट बैन बतराय ।।
सहचरि तब सम्हराल दुहु मन्द मन्द करगान।
चौकि तहां मुसिक्यात पिय प्यारी भरत लजान ।।
एक भुजा गरधर रसिक इक कर चिबुक उठाय।
प्रेमलाज लखि दृग प्रिया लोभी रहे लुभाय ।।
जुगल सुगल पल पल नवल नितहि नवेले नेह।
अन उतरन मतवार तहँ बरखै रंग अछेह ।।
अति निख बितवत जान उत कह्यो बृजेसुरि टेर।
लालन को आनहु कोऊ जेंवन होत अबेर ।।
श्रीजसु किंकरि लघु किहू लखेहुते इन ओर।

आय बुलाये उन रसिक नागर नवल किसोर ॥
चातुर आये मात ढिग आतुर छुधा जताय।
श्रीजसु सामग्री बिवध जैंवन लई मंगाय ॥
रानी श्रीउपनन्द की बोली श्रीजसु ओर ।
जोरैं जुगल जिमाय हौं कित है मो चितचोर ॥
यह सुनि श्रीजसु सहचरी गुरुजन आग्या पाय।
जोरैं जैंवन कौं प्रिया लै गइ तबहि बुलाय॥
करि ओरट इक ओर कौं गुरुमाता ढिगआन।
जुगल जिमाये संग रुचि ब्यंजन बिबध बिधान ॥
लखि अघान अचवाय जल बीरी दई सुरंग।
पुनि करि राई लौन छबि बारि आरती संग॥
रानी श्री उपनंद की अरगहि दुहु लै आय ।
पौढ़न मोहन किय बिदा प्यारी लिय बैठाय॥
ब्यंजन बिवध प्रकार दै सहचरि सबै जिमाय।
रुचि अघाय जल अचय सहु बीरी बदन रचाय॥
प्यारी पै आई सबै अति उमंग सरसात।
लखिलखि श्रीजसुमति तहां हरखित मनहि सिहात॥
पुनि कछु यक रहि कै इनहु कह्यो प्रियाग्रह जाहु।
अरसानी झूलत श्रमित प्यारी अति दरसाहु ॥
आग्या पाय प्रनाम करि गुरुजन कौं सुकुवार।
आई सैन निवास निज जहां रसिक रिझवार॥
आवत लखि इन कौं रसिक गैल सांकरी आय।
सोये ह्वै पग पांवडे हिये परें जौं पांय ॥
ललिता पीठ लगाय मुख गरडारै दुहुबाहिं।
आई लडिकानी प्रिया पिय छल जान्यो ताहिं॥
लखि ललिता पग टारि कै निकसी कछू अगवार।
बैठि गई प्यारी तहां हा हा खात निहार॥
रुकन झुकन मैं झिझक दृग झुझलोंहीं सतराय।
हठि तजि उठि लोभी रसिक लोनी हृदय लगाय॥
पुनि गरवांही दै चली पूर प्रेम छबि भीर ।
आये सैन निवास जिहि सेवत मदन अधीर ॥

सोभित मणिन पलंग तिहि सुमन सेज छबिरास।
तापै जुगल बिराज कै ईक्षित सैन बिलास॥
समझ रसिक मनकी समय बहुरी सखी प्रबीन।
परदा डारे महल के जुगल सैन सुखकीन॥
परदा बाहर सहचरी मन मेलू मन जान।
साज मधुर मन हरन लै ख्याल गान रचितान॥

॥ ख्याल दोहा ॥

अहजन गारी रै महल रह्या पनाजी माणि।
रूप लुभाणां नेह छक लहि धणि प्राण समाणि ॥
उत श्री बृजरानी सबन करी बिदा हितछाय।
अधिक प्रीति रसरीति सौं मेवा झोर भराय॥
सब मंगल गावत चलीं देत अशीश अपार।
प्रेम छकी उर ध्यान लै राधा नन्द कुमार॥
वृजरानी वृजराज मिलि आनन्द उर न समात।
पुत्र बधू बातन सुमिर अति सिहात बिहसात॥
इत श्री ललितादिक सबै गाय रंग सरसाय।
पौढ़न इछचा समय किय जुगल कहानी चाय॥
ललिताजू आग्या दई नवल नेह को जान।
कहत भई यह उक्त सो दम्पति रसिक रिझान॥

॥ अथ कहानी बर्नन चौपाई ॥

एक भूप ससिबंश प्रकासी ।
रानी महा भाग्य सुखरासी ॥
पुत्र भयो जिन छैल छछन्दी।
रूपगुननि जिहिं सबमन फन्दी॥
देश कोस राज श्री सम्पद।
ईन्द्र कुबेर लखत ह्वै बेमद॥
नित्यानन्द नगर जिहिं सरसै।
प्रेम प्रमोद मोद घन बरसै,
द्वितिय नृपेसु प्रभाकर बंशी।
कुल भूषन त्रियलोक प्रसंसी॥
जिहि रानी को लहै जु भेवै।

कोटि रमा तिह चर्नन सेवै ॥
तिहि इक सुत अलौकिक मोहन।
जिहि सम भई त्रिलोकिन हौंहिन ॥
जहां राज श्री बिभय बिशेखा।
तिहूँ लोकतै गाथ अलेखा ॥
अष्ट सिद्धि जिहि नगर बुहारै।
राज द्वार दूरहितें झारै ॥
नव निध भीष भिषारिन परै।
मुक्ति चार तहँ जल नित भरै ॥
कमला जहां फिरत है मालिन।
घर घर बांधत बंदन वालिन ॥
प्रेमानन्द सुनि तन बस सरसै।
सुख संपति ग्रह ग्रह घन बरसै ॥
दुहु भुवाल मित्राई अैसी।
एक प्रान द्वै देह जु जैसी ॥
ससि बंसी नृप सुतहि सुजान।
सुता दई इन प्रान समान ॥
सजन भए दुहु अतिही हरषै।
नित नव मंगल आनन्द बरषै ॥
नियरे बास प्रेम सुख लह्यौ।
दुहु बिवहार रोक ह्वै रह्यौ ॥
आवत जाव न इत उत अैसहि।
इक ग्रह ज्यौं सन्देह न कैसहि ॥
तहाँ ससिबंसी नगर बिलासी।
एक मोहनी त्रिया प्रकासी ॥
कपट रूप बहि छली छछन्दन।
ठगत सबन आवत नहि फन्दन ॥
बेलि नीलमणि सीलहि लही।
अँग अँग छबि जातन कही ॥
चितवन मनहु मदन सरखोसे।
भौहैं धनुष लिये जनुगोसे।

अलकैं ललिकै मनुमन फांसी।
मदन कृषान बहन सी हांसी ॥
बेनी नाग छबिहि सरसानी।
लंक लचन गति चलन भुरानी ॥
जोबन जेब छिकन मदहूकै।
जुलम मिजेज अदाह अचूकै ॥
अँजन दै दृग सरस बनावै।
मदन बान मनु सान चढावै ॥
बीरिन अधर रचाय तबोर।
देखत ताहि लेत चित चोर ॥
बोलत मंत्र मोहनी डारन।
घूंघट लाज छबि सु वट पारन ॥
नगर बगर घर घर तिय हेरै।
घाट बिहाट इकौही घेरै ॥
जाकै छकन तिया घुटि लुटै।
इस्क मुस्क बँधि बहुरिन छुटै ॥
एक समय रबि बंसी राई।
सुता लाडिली तीज रमाई ॥
चली चली यह तिहठाँ गई।
काहू तहां अटक नहिं दई ॥
ससि बंसी पुरकी तिय जानी ॥
प्रेम प्रतीत सुतातै मानी।
आई जहां मोहनी भीतर ॥
बाग लाग दृग छकी प्रेम भर।
लता द्रुमन गहि बरबिच डोलै ॥
लाज भरी किहु सों नहिं बोलै।
उझकत दृग घूँघट मे चहै ॥
निज चित की ढिग नाहिन लहै।
मदन सुसद्दी लोयन ललकै ॥
हित चित मनै पुकारत पलकै।
झूला निरख जलूसिन सरसै।
झूलन राज कुँवरि छबि बरसै ॥

राग रंग गह मह चहु ओरै ।
लेत मोहनी को चित चोरै ॥
रमत सबै जित तित मिलरली ।
मनहि मोहनी इत झलमली ॥
राज कुँवरि संग सखी अनेक ।
क्रीडत इत आई कोउ एक ॥
तिहिं संग यह लिलाय लगिआई ।
राज कुँवरि ढिग सखी सुल्याई ॥
वहै छछन्दनि लखी प्रबीनी ।
राज कुँवरि निज सखी सु कीनी ॥
राज कुँवरि इन लई भुराय ।
रही सबहि ठगवरी सुखाय ॥
यह कुलबधू सु घूँघट कीनै ।
आतुर दृग गति मदन अधीनै ॥
लछि सू लखि पुनि राज दुलारी ।
सखिन कह्यो यह कैसी नारी ॥
जंत्र मंत्र यह जानति अति है ।
सबहिन बांधि लई दृग गति है ॥
जान लई तिह राज दुलारी ।
सबन ठगत ही पै यहां हारी ॥
गहि तब सुमन मालतैं बांधी ।
छूटि सकी नहि गति मति साधी ॥
सखिन छुडाई हा हा खाय ।
सर्बस हारि तहां तैं आय ॥
ठगन गई ही गई ठगाई ।
यहै तिया अब कौन कहाई ॥
यह संदेह सखी गन चातुर ।
पूंछत राज कुंवरिसों आतुर ॥
जू सब ठगत सु ठगनी कहिये ।
ठगनी ठगै ताहिको लहिये ॥
राजदुलारी मुरि मुसिक्यावै ।
कहै ठगन को ठगनी पावै ॥
सखियन मन संदेह जु बन्यो ।
सो काहू बिध नाहिन भन्यो ॥

॥ इति कहानी सम्पूर्णम् ॥

॥ दोहा ॥

पिय प्यारी सुनि २ हँसत सुगल यही बतरान ।
सो मधुरे धुनि गावही अखिर न परत पिछान ॥
तहां जामनी जाम इक रही पिछौंही आय ।
पौढ़त नहिं दृग रस रसे सुगल प्रेम सरसाय ॥
अलप रैन पुनि जान किय रहसि लुभाने सैन ।
तन मन घुरन सुनींद बस ध्यान घुरौहै नैन ॥
हँसिकै श्रीललिता तहां नवल नेह दिस चाहि ।
कहत सु अति नीकी अरी यहै कहानी आय ॥
सुमन माल निज हृदयते दीनी याहि उतार ।
चर्नलगत लखि यहि जु निजकर दिय सिर रिझवार ॥
श्रीमन् मंजुरि जू दई वीरी कृपा जिहाज ।
चर्न लागि बिनही यहै थही सर्न कौं लाज ॥
कृपा दृष्टि सबही जु करि हँसि २ रचि बतरान ।
किहु मुखबास सु अतरकिहु किहु बिंदुली दियपांन ॥
रीझ मौज चहुँ ओर सों सब तें लही बिहाल ।
नवल नेह जिहि भाग बड़ि मानत भई निहाल ॥
श्रीललितादिक आदि सब पौढ़ी तब छकि प्रेम ।
पहरायत बैठी तबै गहल करत नित नेम ॥
अगम बिनोद न कहत पुनि सुमरत क्रिये बिहार ।
बतरावत गावत छकी जुगल प्रेम मतवार ॥
आई पुनि ह्वै भुरहरी कछु प्रकास दरसात ।
चह चहाट पंछिन सुनत जगी सबै लखिप्रात ॥
निज २ कृत करि सबसखिन सुमरि सिंगार रचाय ।
आई मिल परदान ढिग दुहुनि जगावत गाय ॥
गोधन लै सब गोपगन आये बृजपति पौर ।
गावत रसिक बुलात करि केल कलोलन रौर ॥

धुनि कोलाहल सुनि जगे दंपति रसिक सुजान।
आज्ञा लहि सहचरि किती परदन भीतर आन ॥
दर्पन सखी दिखात दुहु प्रेमासव लहि लाह।
जगि २ बैठे सेज पै घुरन नींद घुर जाहि ॥
भूषन बसन सँबारि कै सहचरि गन सम्हराहि।
चितवत लोचन अधखुले चले दये गरबांहि ॥
मुकर महल आये दुही नितकृत किये सनान।
सुमरि सिंगार सु परसपै रचिमन हरन सुजान ॥
ललितादिक ल्याई प्रथम प्रिया सासुके पास।
रसिक कुंवर लड़कांत पुनि आये मात निवास ॥
श्रीजसु प्रेमानन्द लहि जोरै जुगल जिमाय।
मन मोदिक मेवा मधुर मिश्री माखन ल्याय ॥
षटरस बिंजन मन रुचित दुहुन कलेऊ कीन।
अचय सलिल मुखबास जुत बीरी लई प्रबीन ॥
बारि दुहुन पै आरती श्रीजसुमति हित छाय।
पठये हृदै लगाय पुनि कुँवर चरावन गाय ॥
रसिक लड़ैते लाल तब श्रीबृजपति ढिग आय।
करि प्रनाम आज्ञालई पिता लये उरलाय ॥
गहि मुख चूंबन नंद कर पठये गायन संग।
लालबाल गोधन सु लै गवने बनहिं उमंग ॥
इत आज्ञा लहि सासतें प्रिया महल निज आन।
गवनी बनहिं बिहार कों लीने सखी सुजान ॥
कुंज महाछबि पुंज तहँ रुचि २ रचन बिहार।
अद्भुत रचनाते सनी ठौरहिं ठौर अपार ॥
तहां प्रिया प्रिय मिल दुहूँ बिलसें बिबिध प्रकार।
अद्भुत प्रेम उमंग कै अन उतरन मतवार ॥
बात अकथ कहते न बन नेही प्रेम अनन्यि।
नितनव नव आसक्तता त्रपत न बृन्दारन्यि ॥
नित्य नवल सिंगार नित नवल बिहार अपार।
नित नव सोभा बिपुन नित नवल प्रेम मतवार ॥
नवल नेह नित नवल रति नित्य नवल आनंद।
नित थिर चर बसवान नित सबल प्रेम रस धंद ॥
हृदय ध्यान नित नवल यह धरिहैं रसिक सुजान।
पारन जिन नित नवल सुख लहि प्रानन कै प्रान ॥
महा अलौकिक गूढ़ हैं सब सारन कों सार।
निगम अगम भाषत जुगल बृंदा बिपुन बिहार ॥
हरि गुर भक्ति सुभक्तिजन पूरन कृपाप्रकास।
हृदय भावना ध्यान यह नित मम करहु निवास ॥
जे चित नित नव प्रेम यहि बसत निरंतर होय।
करनी कारज पुनि न फिर निर्भय जम डर खोय ॥
जोग जग्य तप दान बृत संजम नियम अपार।
कोटिक तन नहि पाइये बिना भक्ति यह सार ॥
दंपति बिपुन बिहार जहँ नवधा पैरी जास।
गम लछिना पहुँच कौ सुधा निकट ही बास ॥
सुर्ग लहत मुक्तहु लहत बयकुंठहु लहि जाहि।
बृंदा बिपुन बिहार यह दुर्लभ प्रापति पाहि ॥
जिन मन राच्यो याही सुधा प्रगट अनिन्य।
जिन चर्नन के सर्न हौं मान भाग्य धनि धन्य ॥
वृन्दाबिपिन बिहार कै रसिक अनन्य अनंत।
श्रीवृन्दाबन देवजू मम प्रभु भए महंत ॥
ग्राम सलेमाबाद यह भव सागरहि जिहाज।
दासि छाप मुहि दिय तहां सत्य गरीब निबाज ॥
अति दुर्लभ सुर्लभ यहै दीनी आस लगाय।
मो पतितहि अपनाय कै जुगल सर्न लवलाय ॥
जिनके कृपा प्रताप ते ध्यान भावना चित।
निज मति सम क्रीडत कहे बिपिम बिहारी नित्त ॥
कहै सुनै जो यह कथा इहि रस रसे सुजान।
रीझहिं तौ कहियो जु तुव आसा चढ़ौ प्रमाण ॥
हरि गुरु भक्ति सु भक्तजन पूरन कृपा प्रभाव।
मैं छेपन कछु काल किय चित शुभ ठौंर लगाय ॥
काव्य दोष घटि बढ़ि अरथ योग्य अयोग्य बिचारि।
संत बिबेकी रसिक जन पढ़ियौ सबै सँवारि ॥

रूप नगर नृपराजसिंह गोवर्द्धन धर दास । संबत शुभ नवदून सै पैंतालीस गनाय ।
प्रेम भक्ति आश्रय रहत जाको बंस प्रकास ।। शाके सत्रहसैऽरुदस सिद्धारथ नामाय ।।
भक्ति पात्र रानी सुतहिं बांकावत गर्भाय । मास मागसर शुक्ल पष दशमी चन्द्र सु बार ।
सुता सु हौं सुंदरि कुंवरि पोथी रची बनाय ।। संपूरण रँगझर भयो होय चित्त हरियार ।।
प्रेमानंद उमंग घन रहस रंग झर ऐह । जिहि मन राच्यो रंग यहि तिहिं बैकुंठ न भात ।
श्रोताचित हरियार सुख सरसै फल लव लेह ।। रचना सकल त्रिलोक जे चित चरणन ठकुरात ।।

।। इति श्री रंगझर ग्रन्थ सुन्दर कुंवर कृत संपूर्णम् ।।

।। श्री रस्तु ।। आरोग्य मस्तु ।।

'श्रीसर्वेश्वर' के नियम व उद्देश्य—

उद्देश्य—भक्ति, ज्ञान, वैराग्य, धर्म, दर्शन और सदाचार समन्वित लेखों द्वारा पाठकों को कल्याण-पथ पर पहुँचाने का सत् प्रयास करते रहना 'श्रीसर्वेश्वर' का प्रमुख उद्देश्य है।

नियम—(क) भगवद्भक्ति, भक्तचरितावली, ज्ञान-वैराग्यादि ईश्वरपरक एवं कल्याण मार्ग में सहायक, व्यक्तिगत आक्षेप से रहित लेख, कविता, कहानी आदि ही 'श्रीसर्वेश्वर' के लिए भेजनी चाहिए। अन्य विषयों से सम्बन्धित लेख नहीं छापे जाते। लेखों को छापने अथवा न छापने, काटने-छाँटने तथा घटाने-बढ़ाने आदि का अधिकार सम्पादक को है। लेखों में प्रकाशित मत के लिए केवल लेखक ही उत्तरदायी है, सम्पादक नहीं। लेख स्पष्ट अक्षरों में कागज के केवल एक ही ओर हासिया छोड़कर लिखना चाहिए। टाइप किए हों तो और भी उत्तम है। अमुद्रित लेख बिना माँगे लौटाये नहीं जाते। इनके लिए डाक-टिकट भेजना आवश्यक है।

(ख) 'श्रीसर्वेश्वर' का नया वर्ष जनवरी से प्रारम्भ होता है तथा दिसम्बर तक चलता है। जनवरी से ही ग्राहक बनाने का नियम है। बीच में ग्राहक बनने पर विशेषाङ्क सहित पूरे वर्ष के सभी सामान्य अङ्क लेने पड़ते हैं।

(ग) 'श्रीसर्वेश्वर' का वार्षिक चन्दा डाक खर्च एवं विशेषाङ्क सहित भारत में रु. १४.०० तथा विदेश के लिए रु. १८.०० निर्धारित हैं। महँगाई के अनुसार यह शुल्क परिवर्तनीय है।

(घ) आजीवन ग्राहक बनने से अधिक सुविधा मिलती है। 'श्रीसर्वेश्वर' का आजीवन ग्राहक शुल्क केवल रु. २५१ नियत है।

(ङ) वर्ष के प्रारम्भ में 'श्रीसर्वेश्वर' का रंग-बिरंगे चित्रों वाला विशेषाङ्क निकलता है, जो सर्वसाधारण के लिये संग्रहणीय होता है। ग्राहकों को इसका मूल्य अलग से नहीं देना पड़ता।

(च) लागत से भी कम दामों में ग्राहकों को अधिक से अधिक साहित्यिक सामग्री प्रदान करना 'श्रीसर्वेश्वर' की विशेषता है।

(छ) भक्त महानुभावों के आग्रह पर लोक हितार्थ 'श्रीसर्वेश्वर' ने विगत वर्ष से अपने विशेषाङ्क में सीमित संख्या में 'पुण्य स्मारक पृष्ठ' तथा 'कम्पनी विज्ञापन पृष्ठ' देना प्रारम्भ कर दिया है। सम्पर्क साधने पर यह स्वर्ण अवसर उपलब्ध किया जा सकता है।

(ज) 'श्रीसर्वेश्वर' में प्रकाशित ग्रन्थों की समालोचनायें भी मुद्रित की जाती हैं। इसके लिए ग्रन्थों की दो-दो प्रतियाँ आनी आवश्यक हैं।

(झ) किसी प्रकार का पत्र-व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखें। नये ग्राहक बने हों तो स्पष्ट नाम व पता सहित 'नया ग्राहक' लिखकर भेजें। अङ्क प्राप्त न होने पर डाक-घर से लिखा-पढ़ी करनी चाहिए। डाकघर का उत्तर शिकायती-पत्र सहित आने पर ही दूसरी प्रति भेजी जा सकेगी।

(ञ) मनीआर्डर द्वारा पूर्व में ही चन्दा भेज देने पर विशेषाङ्क शीघ्र भेज दिया जाता है। वी. पी. जाने में अधिक विलम्ब हो जाना स्वाभाविक है। वी. पी. वापस नहीं करनी चाहिए। इससे 'श्रीसर्वेश्वर' को भारी नुकसान होता है। भूल से यदि वी. पी. भेज दी गई हो तब भी छुड़ा लेना ही उचित है। बाद में सूचना आने पर सब ठीक कर दिया जाता है। मनीआर्डर व्यवस्थापक—'श्रीसर्वेश्वर', वृन्दावन (उ. प्र.) तथा सम्पादकीय पत्र सम्पादक—'श्रीसर्वेश्वर, वृन्दावन (उ. प्र.) के पते पर भेजना चाहिए। नियमावली सहित 'श्रीसर्वेश्वर' की नमूने की प्रति मुफ्त भेजी जाती है।

व्यवस्थापक—'श्रीसर्वेश्वर', वृन्दावन (उ. प्र.)